उसका रूमाल इसमें फँस कर रह गया, शायद अन्धेरे में उसने इस बात का खयाल न किया हो, और देखो इस कपड़े के फँस जाने के कारण दर्वाजा भी अच्छी तरह बैठा नहीं है, ताज्जुब नहीं कि यह दर्वाजा खटके पर बन्द होता हो और तख्ता अच्छी तरह न बैठने के कारण खटका भी बन्द न हुआ हो।"

वास्तव में जो कुछ अन्ना ने कहा वही बात थी क्योंकि जब उस रूमाल को अच्छी तरह पकड़ कर अपनी तरफ खैंचा तो उसके साथ लकड़ी का तख्ता भी खिंच कर हम लोगों की तरफ चला आया और दूसरी तरफ जाने के लिये रास्ता निकल आया। हम दोनों आदमी उस तरफ चले गये और एक कमरे में पहुंचे। उस तख्ते में जो पेच पर जड़ा हुआ था और जिसे हटा कर हम लोग उस पार चले गये थे दूसरी तरफ एक पीतल का मुट्ठा लगा हुआ था, अन्ना ने उसे पकड़ कर खैंचा और वह तख्ता जहां का तहां खटके में बैठ गया।

अब हम दोनों आदमी जिस कमरे में पहुंचे वह बहुत बड़ा न था, सामने की तरफ एक छोटा सा दर्वाजा नजर आया और उसके पास जाने पर मालूम हुआ कि नीचे उतर जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं। दाहिनी और बाईं तरफ की दीवार में छोटी छोटी कई खिड़कियां बनी हुई थीं, दाहिनी तरफ की खिड़कियों में से एक खिड़की कुछ खुली हुई थी, मैंने और अन्ना ने उसमें से झांक कर देखा तो एक मकान के नीचे छोटा सा चौक नजर आया जिसमें साफ सुथरा फर्श लगा हुआ था, ऊंची गद्दी पर कम्बख्त दारोगा बैठा हुआ था, उसके आगे एक शमादान जल रहा था और उसके पास ही में एक आदमी कलम दावात और कागज लिये बैठा हुआ था।

हम दोनों आदमी दारोगा की सूरत देखते ही चौंके और

डर कर पीछे हट गये। अन्ना ने धीरे से कहा, "यहां भी वही बला नजर आती है, कहीं ऐसा न हो कि यह कम्बख्त हमलोगों को देख ले या ऊपर चढ़ आवे।"

इतना कह कर अन्ना सीढ़ी की तरफ चली गई और धीरे से सीढी का दर्वाजा खैंच कर जञ्जीर चढ़ा दी। वह चिराग जो अपने कमरे में से लेकर यहा तक आये थे एक कोने मे रख कर फिर हम दोनो उसी खिड़की के पास गये और नीचे की तरफ झांक कर देखने लगे कि दारोगा क्या कर रहा है। दारोगा के पास जो आदमी बैठा था उसने एक लिखा हुआ कागज हाथ मे उठा कर दारोगा से कहा, "जहा तक मुझसे बन पड़ा मैंने इस चीठी के बनाने में बड़ी मेहनत की।"

दारोगा०। इसमें कोई शक नहीं कि तुमने ये अक्षर बहुत अच्छे बनाये हैं। इसे देख कर कोई यकायक नहीं कह सकता कि यह सर्यू का लिखा हुआ नहीं है। जब मैंने यह पत्र इन्दिरा को दिखाया तो उसे भी निश्चय हो गया कि यह उसकी मा के हाथ का लिखा हुआ है मगर जो गौर करके देखता हूं तो सर्यू की लिखावट में और इसमे थोड़ा सा फर्क मालूम पड़ता है, इन्दिरा लड़की है, वह इस बात को नहीं समझ सकती, मगर इन्द्रदेव जब इस पत्र को देखेगा तो पहिचान जायगा कि यह सर्यू के हाथ का लिखा नहीं है बल्कि जाल बनाया गया है।

आदमी०। ठीक है. अच्छा तो मैं इसके बनाने मे एक दफे और मेहनत करूंगा, क्या करूं सर्यू की लिखावट ही ऐसी टेढी मेढी है कि ठीक नकल नहीं उतरती, तिसमे इस चीठी में कई अक्षर ऐसे लिखने पडे जो मेरे देखे हुए नहीं हैं केवल अन्दाज ही से लिखे है।

दारोगा०। ठीक है ठीक है, इसमें कोई शक नहीं कि तुमने

बड़ी सफाई से इसे बनाया है, खैर एक दफे और मेहनत कर मुझे आशा है अबकी दफे बहुत ठीक हो जायगा। (लम्बी सांस लेकर) क्या कहूं कम्बख्त सयू किसी तरह मानती ही नहीं। उसे मेरी बातों पर कुछ भी विश्वास नहीं होता, तथापि कल मैं उसे फिर दम दिलासा दूंगा, अगर उसने मेरे कमरे में आकर अपने हाथ से चीठी लिख दी तो बस काम हो गया समझो नहीं तो तुम्हें पुनः मेहनत करनी पड़ेगी। अगर सयू और इन्दिरा ने मेरे कहे मुताबिक चीठी लिख दी तो मैं बहुत जल्द उन दोनों को मार कर बखेड़ा ते करूंगा क्योंकि मुझे गदाधरसिंह (भूतनाथ) का डर बराबर बना रहता है, वह सयू और इन्दिरा की खोज में लगा हुआ है और उसे घड़ी घड़ी मुझी पर शक होता है, यद्यपि मैं उससे कसम खा कर कह चुका हूं कि मुझे उन दोनों का हाल कुछ भी मालूम नहीं है मगर उसे विश्वास नहीं होता। क्या करूं लाखों रुपये दे देने पर भी मैं उसकी मुट्ठी में फसा हुआ हूं, यदि उसे जरा भी मालूम हो जायगा कि सयू और इन्दिरा को मैंने कैद कर रक्खा है तो बड़ा ही ऊधम मचावेगा और मुझे बर्बाद किये बिना न रहेगा।

आदमी०। गदाधरसिंह तो मुझे आज भी मिला था।

दारोगा०। (चौंक कर) क्या वह फिर इस शहर में आया है? मुझसे तो कह गया था कि मैं दो तीन महीने के लिये जाता हूं। मगर वह तो तीन दिन भी गैरहाजिर न रहा।

आदमी०। वह बड़ा ही शैतान है, उसकी बातों का कुछ भी विश्वास नहीं हो सकता, इस बात का जानना तो बड़ा ही कठिन है कि वह क्या करता है क्या करेगा या किस धुन में लगा हुआ है।

दारोगा०। अच्छा तो मुलाकात होने पर उससे क्या क्या बातें हुईं ?

आदमी०। मैं अपने घर की तरफ जा रहा था कि उसने पीछे से आवाज दी, "ओ रघुबरसिंह ! ओ जैपालसिंह !!" *

दारोगा०। बड़ा ही बदमाश है, किसी का अदब लेहाज करना तो जानता ही नहीं, अच्छा तब क्या हुआ ?

रघुबर०। उसकी आवाज सुन कर मैं रुक गया, जब पास आया तो बोला, "आज आधी रात के समय मैं दारोगा साहब से मिलने जाऊंगा, उस समय तुम्हें भी वहां मौजूद रहना चाहिये।" बस इतना कह कर चला गया।

दारोगा०। तो इस समय वह आता ही होगा।

रघुबर०। जरूर आता होगा।

दारोगा०। कम्बख्त ने नाकों दम कर दिया।

इतने ही में बाहर से घन्टी बजने की आवाज आई जिसे सुन दारोगा ने रघुबरसिंह से कहा, "देखो दर्बान क्या कहता है, मालूम होता है गदाधरसिंह आ गया।"

रघुबरसिंह उठ कर बाहर गया और थोड़ी ही देर में गदाधरसिंह को अपने साथ लिये हुए दारोगा के पास आया। गदाधरसिंह को देखते ही दारोगा उठ खडा हुआ और बड़ी खातिरदारी और तपाक के साथ मिल कर उसे अपने पास बैठाया।

दारोगा०। (गदाधरसिंह से) आप कब आये ?

गदाधर०। मैं गया कब और कहां था ?

दारोगा०। आप ही ने न कहा था कि मैं दो तीन महीने के लिये कहीं जाता हूं।

---

* जैपालसिंह बालासिंह और रघुबरसिंह ये सब नाम उसी नक्ली बलभद्रसिंह के हैं।

गदाधर०। हां कहा था मगर एक बहुत बड़ा सबब आ पड़ने से लाचार होकर रुक जाना पड़ा।

दारोगा०। क्या वह सबब मैं भी सुन सकता हूं?

गदाधर०। हां हां आप ही के सुनने लायक तो वह सबब है क्योंकि उसके कर्ता धर्ता भी आप ही हैं।

दारोगा०। तो जल्द कहिये।

गदाधर०। जाते ही जाते एक आदमी ने मुझे निश्चय दिलाया कि सर्यू और इन्दिरा आपही के कब्जे में हैं अर्थात् आप ही ने उन्हें गायब कर के कहीं छिपा रक्खा है।

दारोगा०। (अपने दोनों कानों पर हाथ रख के) राम राम राम! किस कमबख्त ने मुझ पर यह कलंक लगाया? नारायण नारायण! मेरे दोस्त! मैं तुम्हें कई दफे कसमें खाकर कह चुका हूं कि मैं सर्यू और इन्दिरा के विषय में कुछ भी नहीं जानता मगर तुम्हें मेरी बातों का विश्वास नहीं होता।

गदाधर०। न मेरी बातों पर आपको विश्वास करना चाहिये और न आपकी कही हुई बातों को मैं ब्रह्मवाक्य समझ सकता हूं। बात यह है कि इन्द्रदेव को मैं अपने सगे भाई से बढ़ के समझता हूं, चाहे मैंने आपसे रिश्वत लेकर बुरा काम क्यों न किया हो मगर अपने दोस्त इन्द्रदेव को कभी किसी तरह का नुकसान न पहुंचने दूंगा। आप सर्यू और इन्दिरा के बारे में बार बार कसमें खाकर अपनी सफाई दिखाते हैं और मैं जब उन लोगों के बारे में तहकीकात करता हूं तो बार बार यही मालूम पड़ता है कि वे दोनों आपके कब्जे में हैं अस्तु आज मैं एक आखिरी बात आपसे कहने आया हूं, अबकी दफे आप अच्छी तरह समझ बूझ कर जवाब दें।

दारोगा० । कहो कहो क्या कहते हो ? मैं किसी तरह तुम्हारी दिलजमई कर दूंगा ..

गदाधर० । आज मैं इस बात का निश्चय करके आया हूं कि इन्दिरा और सर्यू का हाल आपको मालूम है, अस्तु आज साफ कहे देता हूं कि यदि वे दोनों आपके कब्जे में हों तो ठीक ठीक बता दीजिये, उनको छोड़ देने पर इस काम के बदले में जो कुछ आप कहें मैं करने को तैयार हूं। यदि आप इस बात से इन्कार करेंगे और पीछे साबित होगा कि आपही ने उन्हें कैद किया था तो मैं कसम खाकर कहता हूं कि सब से बढ़ कर बुरी मौत जो कही जाती है वही आपके लिये कायम की जायगी।

दारोगा० । जरा जुबान सम्हाल कर बातें करो, मैं तो दोस्ताना ढंग पर नर्मी के साथ तुमसे बातें करता हूं और तुम तेज हुए जाते हो।

गदाधर० । जी मैं आपके दोस्ताना ढंग को अच्छी तरह समझता हूं। और अपनी कसमों का विश्वास उसे दिलाइये जो आपको केवल दारोगा समझता हो। मैं तो आपको पूरा झूठा बेईमान और विश्वासघाती समझता हूं और आपका कोई हाल मुझसे छिपा हुआ नहीं है। जब मैंने कलमदान आपको वापस किया था तब भी आपने कसम खाई थी कि तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के साथ कभी किसी तरह की बुराई न करूंगा, मगर फिर भी चालबाजी करने से बाज न आये।

दारोगा० । यह सब कुछ ठीक है मगर जब मैं एक दफे कह चुका कि सर्यू और इन्दिरा का हाल मुझे मालूम नहीं है तब तुम्हें अपनी बात पर ज्यादे खींच न करना चाहिये, हां अगर तुम इस बात को साबित कर सको तो जो कुछ कहो मैं जुर्माना देने के लिये तैयार हूं या अगर बेफायदे की तकरार बढ़ा कर

लड़ने का इरादा हो तो बात ही दूसरी है। इसके अतिरिक्त अब तुम्हें जो कुछ कहना हो इस बात को खूब सोच समझ कर कहो कि तुम किसके मकान में कितने आदमियों को साथ लेकर आये हो।

इतना कह कर इन्दिरा रुक गई और एक लम्बी सांस लेकर उसने राजा गोपालसिंह और दोनों कुमारों से कहा :—

इन्दिरा गदाधरसिंह और दारोगा से इस ढङ्ग की बातें हो रही थीं और हम दोनों खिड़की में से सुन रहे थे। मुझे यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि गदाधरसिंह हम दोनों मा बेटियों को छुड़ाने की फिक्र में लगा हुआ है। मैंने अन्ना के कान में मुंह लगा के कहा कि देख अन्ना, दारोगा हमलोगों के बारे में कितना झूठ बोल रहा है, नीचे उतर जाने के लिये रास्ता मौजूद ही है, चलो हम दोनों आदमी नीचे पहुँच कर गदाधरसिंह के सामने खड़े हो जाय। अन्ना ने जवाब दिया कि मैं भी यही सोच रही हू, मगर इस बात का खयाल है कि अकेला भूतनाथ हमलोगों को किस तरह छुड़ा सकेगा, कहीं ऐसा न हो कि हमलोगों को अपने सामने देख कर दारोगा गदाधरसिंह को भी गिरफ्तार कर ले, फिर हमारा छुड़ाने वाला कोई भी न रहेगा।" अन्ना नीचे उतरने में हिचकती थी मगर मैंने उसकी बात न मानी, आखिर लाचार हो कर मेरा हाथ पकड़े हुए अन्ना नीचे उतरी और गदाधरसिंह के पास खड़ी होकर बोली, "दारोगा झूठा है, इस लड़की को इसी ने कैद कर रक्खा है और इसकी मा को भी न मालूम कहां छिपाये हुए है।"

मेरी सूरत देखते ही दारोगा का चेहरा पीला पड़ गया और गदाधरसिंह की आंखें मारे क्रोध के लाल हो गईं। गदाधरसिंह ने दारोगा से कहा, "क्यों बे हरामजादे के बच्चे! क्या अब

भी तू अपनी कसमों पर भरोसा करने के लिये मुझसे कहेगा ॥"

गदाधरसिंह की बातों का जवाब दारोगा ने कुछ भी न दिया और इधर उधर झांकने लगा। इत्तफाक से वह कलमदान भी उसी जगह पड़ा हुआ था जिसके ऊपर मेरी तलवार थी और जो गदाधरसिंह ने रिश्वत लेकर दारोगा को दे दिया था। दारोगा असल में यह देख रहा था कि गदाधरसिंह की निगाह कलमदान पर तो नहीं पड़ी, मगर वह कलमदान गदाधरसिंह की नजरों से दूर न था, अस्तु उसने दारोगा की अवस्था देख कर बड़ी फुर्ती के साथ कलमदान उठा लिया और दूसरे हाथ से तलवार खींच कर सामने खड़ा हो गया। उस समय दारोगा को विश्वास हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती। यद्यपि रघुबरसिंह उसके पास बैठा हुआ था मगर वह इस बात को भी खूब जानता था कि हमारे ऐसे दस आदमी भी गदाधरसिंह को काबू में नहीं कर सकते इसलिये उसने मुका-बला करने की हिम्मत न की और अपनी जगह से उठ कर भागने लगा परन्तु जा न सका, गदाधरसिंह ने उसे एक लात ऐसी जमाई कि वह धम्म से जमीन पर गिर पड़ा और बोला, "मुझे क्यों मारते हो ? मैंने क्या बिगाड़ा है ? मैं तो खुद यहां से चले जाने को तैयार हू ॥"

गदाधरसिंह ने कलमदान कमरबन्द में खोंस कर कहा, "मैं तेरे भागने को खूब समझता हू, तू अपनी जान बचाने की नीयत से नहीं भागता बल्कि बाहर पहरे वाले सिपाहियों को होशियार करने के लिये भागता है। खबरदार ! अपनी जगह से हिलेगा तो अभी मुट्टे की तरह तेरा सर उड़ा दूंगा ! (दारोगा से) बस अब तुम भी अगर अपनी जान बचाया चाहते हो तो चुपचाप बैठे रहो ॥"

गदाधरसिंह की डपट से दोनों हरामखोर जहां के तहां रह गये, अपनी जगह से हिलने या मुकाबिला करने की हिम्मत न पड़ी। हम दोनों को साथ लिये हुए गदाधरसिंह उस मकान के बाहर निकल आया। दरवाजे पर कई पहरेदार सिपाही मौजूद थे मगर किसी ने रोक टोक न की और हमलोग तेजी के साथ कदम बढ़ाते हुए उस गली के बाहर निकल गये। उस समय मालूम हुआ कि हमलोग जमानिया के बाहर नहीं हैं।

गली के बाहर निकल कर जब हमलोग सड़क पर पहुंचे तो [illegible] घोड़ों का एक रथ और दो सवार दिखाई पड़े। गदाधरसिंह ने मुझको और अन्ना को रथ पर सवार कराया और आप भी उसी रथ पर बैठ गया। "हू" कहने के साथ ही रथ तेजी के साथ रवाना हुआ और पीछे पीछे दोनों सवार भी घोड़ा फेंकते हुए जाने लगे।

उस समय मेरे दिल में दो बातें पैदा हुईं, एक तो यह कि गदाधरसिंह ने दारोगा का जीना क्यों छोड़ दिया? दूसरी यह कि हमलोगों को राजा गोपालसिंह के पास न ले जाकर कहीं [illegible] जाता है? मगर मुझे इस विषय में कुछ पूछने की आवश्यकता न पड़ी क्योंकि शहर के बाहर निकल जाने पर गदाधरसिंह ने स्वयम् मुझसे कहा, "बेटी इन्दिरा! निःसन्देह [illegible] दारोगा ने तुझे बड़ा ही कष्ट दिया होगा और तू सोचती होगी कि मैंने दारोगा का जीना क्यों छोड़ दिया तथा तुझे राजा गोपालसिंह के पास न ले जाकर अपने घर क्यों लिये जाता हूं? परन्तु मैं इसका जवाब इसी समय दे देना उचित जानता हूं। दारोगा को मैंने यह सोच कर छोड़ दिया कि अभी तेरी मां का पता लगाना है और निःसन्देह वह भी दारोगा ही के कब्जे में है, इसका पता मुझे लग चुका है तथा राजा साहब के पास मैं

तुझे इसलिये नहीं ले गया कि महल में बहुत से आदमी ऐसे हैं जो दारोगा के मेली हैं और राजा गोपालसिंह तथा मैं भी उन्हें नहीं जानता। ताज्जुब नहीं कि वहां पहुँचने पर तू फिर किसी मुसीबत में पड़ जाय।"

मैं०। आपका सोचना बहुत ठीक है, मेरी मां भी महल ही में से गायब हो गई थी तो क्या आप इस बात की खबर भी राजा गोपालसिंह को न करेंगे ?

गदाधर०। राजा साहब को इस मामले की खबर जरूर की जायगी मगर अभी नहीं।

मैं०। तब कब ?

गदाधर०। जब तेरी मा को भी कैद से छुड़ा लूंगा तब। हां अब तू अपना हाल कह कि दारोगा ने तुझे कैसे गिरफ्तार कर लिया और यह दाई तेरे पास कैसे पहुँची ?

मैं अपना और अपनी अन्ना का किस्सा शुरू से आखीर तक पूरा पूरा कह गई जिसे सुन कर गदाधरसिंह का बचा बचाया शक भी जाता रहा और उसे निश्चय हो गया कि मेरी मा भी दारोगा ही के कब्जे में है।

सवेरा हो जाने पर हम लोग एक जगह सुस्ताने और घोड़ों को आराम देने के लिये कुछ देर तक ठहरे और फिर उसी तरह रथ पर सवार हो रवाना हुए।

दोपहर होते होते हम लोग एक ऐसी जगह पहुँचे जहां दो पहाड़ों की तरहटी (उपत्यका) एक साथ मिली हुई थी, वहा सभों को सवारी छोड़ कर पैदल चलना पड़ा। मैं यह नहीं जानती कि सवारी का रथ और घोड़े किधर रवाना किये गये या उनके लिए अस्तबल कहां बना हुआ था। मुझे और अन्ना को घुमाता और चक्कर देता हुआ गदाधरसिंह पहाड़ के दर्रे

में ले गया जहा एक छोटा सा मकान अनगढ़ पत्थरो के ढोकों से बना हुआ था, कदाचित वह गदाधरसिंह का अड्डा हो। वहा उसके कई आदमी थे जिनकी सूरत आज तक मुझे याद है। अब जो मै उनकी सूरत पर विचार करती हू तो यही कहने की इच्छा होती है कि वे लोग बदमाशी बेरहमी और डकैती के साचे मे ढले हुए थे। उनकी सूरत शक्ल और पोशाक की तरफ ध्यान देने मे डर मालूम होता था।

वहा पहुच कर गदाधरसिंह ने मुझसे और अन्ना से कहा कि तुम दोनो बेखौफ हो कर कुछ दिन तक आराम करो, मै सर्यू को छुड़ाने की फिक्र में जाता हू, जहा तक होगा बहुत जल्द लौट आऊगा। तुम दोनो को किसी तरह की तकलीफ न होगी, खाने पीने का सामान यहा मौजूद ही है और जितने आदमी यहा मौजूद है सब तुम्हारी खिदमत करने के लिये तैयार है।" इत्यादि बहुत सी बाते गदाधरसिंह ने हम दोनों को समझाई और अपने आदमियो से भी बहुत देर तक बाते करता रहा। दो पहर दिन और तमाम रात गदाधरसिंह वहा रहा, सुबह के वक्त फिर हम दोनो को समझा बुझा कर जमानिया की तरफ रवाना हो गया।

मैं तो समझती थी कि अब मुझे पुन किसी तरह की मुसीबत का सामना न करना पड़ेगा और मैं गदाधरसिंह की बदौलत अपनी मा तथा लक्ष्मीदेवी से भी मिल कर सदैव के लिये सुखी हो जाऊंगी, मगर अफसोस! मेरी मुराद पूरी न हुई और उस दिन के बाद मैंने गदाधरसिंह की सूरत भी न देखी। मै नहीं कह सकती कि वह किसी आफत में फस गया या रुपये के लालच ने उसे हम लोगों का भी दुश्मन बना लिया। इसका असल हाल उसी की जुबानी मालूम हो सकता है—यदि वह जीता

हाल ठीक ठीक कह दे तो। अस्तु अब मैं अपना हाल बयान करती हूं कि उस दिन के बाद मुझ पर क्या क्या मुसीबतें गुजरीं और मैं अपनी मा के पास तक क्यों कर पहुँची।

गदाधरसिंह के चले जाने बाद आठ दिन तक तो मैं बेखौफ बैठी रही, नौवें दिन मेरी मुसीबत की घड़ी फिर शुरू हुई। आधी रात का समय था, मैं और मेरी अन्ना एक कोठडी में सोई हुई थीं, यकायक किसी की आवाज सुन कर हम दोनों की आंख खुल गई, तब मालूम हुआ कि दर्वाजे के बाहर कोई किवाड़ खट-खटा रहा है। अन्ना ने उठ कर दर्वाजा खोला तो पण्डित माया-प्रसाद पर निगाह पड़ी। कोठरी के अन्दर चिराग जल रहा था और मैं पण्डित मायाप्रसाद को अच्छी तरह पहचानती थी।

दूसरा बयान

इन्दिरा ने जब अपना किस्सा कहते कहते पण्डित माया-प्रसाद का नाम लिया तो राजा गोपालसिंह चौंके और उन्होंने ताज्जुब में आकर इन्दिरा से पूछा, "पण्डित मायाप्रसाद कौन ?"

इन्दिरा०। आपके कोषाध्यक्ष (खजानची)।

गोपाल०। क्या उसने भी तुम्हारे साथ दगा की ?

इन्दिरा०। सो मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती, मेरा हाल सुन कर कदाचित आप कुछ अनुमान कर सकें। क्या मायाप्रसाद अब भी आपके यहां काम करते हैं ?

गोपाल०। हां है तो सही मगर आज कल मैंने उसे किसी दूसरी जगह भेजा है अस्तु अब मैं इस बात को बहुत जल्द सुना चाहता हूं कि उसने तेरे साथ क्या किया ?

हमारे पाठक महाशय पहले भी मायाप्रसाद का नाम सुन चुके हैं। सन्तति पन्द्रहवें हिस्से के तीसरे बयान में इनका जिक्र आ

में ले गया जहां एक छोटा सा मकान अनगढ़ पत्थरों के ढोकों से बना हुआ था, कदाचित वह गदाधरसिंह का अड्डा हो। वहां उसके कई आदमी थे जिनकी सूरत आज तक मुझे याद है। अब जो मैं उनकी सूरत पर विचार करती हूं तो यही कहने की इच्छा होती है कि वे लोग बदमाशी बेरहमी और डकैती के सांचे में ढले हुए थे। उनकी सूरत शक्ल और पोशाक की तरफ ध्यान देने से डर मालूम होता था।

वहां पहुंच कर गदाधरसिंह ने मुझसे और अन्ना से कहा कि तुम दोनों बेखौफ हो कर कुछ दिन तक आराम करो, मैं सयू को छुड़ाने की फिक्र में जाता हूं, जहां तक होगा बहुत जल्द लौट आऊंगा। तुम दोनों को किसी तरह की तकलीफ न होगी, खाने पीने का सामान यहां मौजूद ही है और जितने आदमी यहां मौजूद हैं सब तुम्हारी खिदमत करने के लिये तैयार हैं।" इत्यादि बहुत सी बातें गदाधरसिंह ने हम दोनों को समझाईं और अपने आदमियों से भी बहुत देर तक बातें करता रहा। दो पहर दिन और तमाम रात गदाधरसिंह वहां रहा, सुबह के वक्त फिर हम दोनों को समझा बुझा कर जमानिया की तरफ रवाना हो गया।

मैं तो समझती थी कि अब मुझे पुनः किसी तरह की मुसीबत का सामना न करना पड़ेगा और मैं गदाधरसिंह की बदौलत अपनी मां तथा लक्ष्मीदेवी से भी मिल कर सदैव के लिये सुखी हो जाऊंगी, मगर अफसोस! मेरी मुराद पूरी न हुई और उस दिन के बाद मैंने गदाधरसिंह की सूरत भी न देखी। मैं नहीं कह सकती कि वह किसी आफत में फंस गया या रुपये की लालच ने उसे हम लोगों का भी दुश्मन बना दिया। इसका असल हाल उसी की जुबानी मालूम हो सकता है—यदि वह अपना

हाल ठीक ठीक कह दे तो। अस्तु अब मैं अपना हाल बयान करती हूं कि उस दिन के बाद मुझ पर क्या क्या मुसीबतें गुजरीं और मैं अपनी मां के पास तक क्यों कर पहुँची।

गदाधरसिंह के चले जाने बाद आठ दिन तक तो मैं बेखौफ बैठी रही, नौवें दिन मेरी मुसीबत की घड़ी फिर शुरू हुई। आधी रात का समय था, मैं और मेरी अन्ना एक कोठड़ी में सोई हुई थीं, यकायक किसी की आवाज सुन कर हम दोनों की आंख खुल गई, तब मालूम हुआ कि दर्वाजे के बाहर कोई किवाड़ खटखटा रहा है। अन्ना ने उठ कर दर्वाजा खोला तो पण्डित मायाप्रसाद पर निगाह पड़ी। कोठरी के अन्दर चिराग जल रहा था और मैं पण्डित मायाप्रसाद को अच्छी तरह पहचानती थी।

दूसरा बयान

इन्दिरा ने जब अपना किस्सा कहते कहते पण्डित मायाप्रसाद का नाम लिया तो राजा गोपालसिंह चौंके और उन्होंने ताज्जुब में आकर इन्दिरा से पूछा, "पण्डित मायाप्रसाद कौन ?"

इन्दिरा०। आपके कोषाध्यक्ष (खजानचीं)।

गोपाल०। क्या उसने भी तुम्हारे साथ दगा की ?

इन्दिरा०। सो मैं ठीक ठीक नहीं कह सकती, मेरा हाल सुन कर कदाचित आप कुछ अनुमान कर सकें। क्या मायाप्रसाद अब भी आपके यहां काम करते हैं ?

गोपाल०। हां है तो सही मगर आज कल मैंने उसे किसी दूसरी जगह भेजा है अस्तु अब मैं इस बात को बहुत जल्द सुना चाहता हूं कि उसने तेरे साथ क्या किया ?

हमारे पाठक महाशय पहले भी मायाप्रसाद का नाम सुन चुके हैं। सन्तति पन्द्रहवें हिस्से के तीसरे बयान में इनका जिक्र आ

चुका है, तारासिंह का एक नौकर ने नानक की स्त्री श्यामा के प्रेमियों के नाम बताये थे उन्हीं में इनका नाम भी दर्ज हो चुका है। ये महाशय जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे और अपने को त्यार भी लगाते थे।

इन्दिरा ने फिर अपना किस्सा कहना शुरू किया।—

इन्दि०। उस समय मैं मायाप्रसाद को देख कर बहुत खुश हुई और समझी कि मेरा हाल राजा साहब (आप) को मालूम हो गया है और राजा साहब ही ने इन्हें मेरे पास भेजा है। मैं जल्दी से उठ कर उनके पास गई और मेरी अन्ना ने उन्हे दण्डवत करके कोठड़ी में आने के लिये कहा जिसके जवाब में पण्डितजी बोले, "मैं कोठड़ी के अन्दर नहीं आ सकता और न इतनी मोहलत है।"

मैं०। क्यों ?

मायाप्रसाद०। मैं इस समय केवल इतना ही कहने आया हूं कि तुम लोग जिस तरह बन पड़े अपनी जान बचाओ और जहां तक जल्दी हो सके यहां से निकल भागो क्योंकि गदाधरसिंह दुश्मनों के हाथ में फंस गया है और थोड़ी ही देर में तुम दोनों भी गिरफ्तार हुआ चाहती हो।"

मायाप्रसाद की बात सुन कर मेरे तो होश उड़ गये। मैंने सोचा कि अब जो किसी तरह दारोगा मुझे पकड़ पावेगा तो कदापि जीता न छोड़ेगा। आखिर अन्ना ने घबड़ा कर पण्डित जी से पूछा, "हमलोग भाग कर कहां जाय और किसके सहारे पर भागें ?" पण्डितजी ने क्षण भर सोच कर कहा, "अच्छा तुम दोनो मेरे पीछे पीछे चली आओ।"

उस समय हम दोनो ने इस बात का जरा भी खयाल न किया कि पण्डितजी सच बोलते हैं या झूठ कहते हैं। हम दोनो

आदमी पण्डितजी को बखूबी जानते थे और उन पर विश्वास करते थे, उसी समय चलने के लिये तुरत तैयार हो गये और कोठड़ी के बाहर निकल कर उनके पीछे पीछे रवाना हुए। जब मकान के बाहर निकले तो दर्वाजे के दोनों तरफ कई आदमियों को टहलते हुए देखा मगर अंधेरी रात होने और जल्दी जल्दी निकल भागने की धुन में लगे रहने के कारण मैं उन लोगों को पहिचान न सकी इस लिये नहीं कह सकती कि वे लोग गदाधरसिंह के आदमी थे या किसी दूसरे के। उन आदमियों ने हम लोगों से कुछ नहीं पूछा और हम लोग विना रुकावट के पण्डितजी के पीछे पीछे रवाना हुए। थोड़ी दूर जा कर दो आदमी और मिले, एक के हाथ में मशाल थी और दूसरे के हाथ में नंगी तलवार। निःसन्देह वे दोनों आदमी मायाप्रसाद के नौकर थे जो हुक्म पाते ही हम लोगों के आगे आगे रवाना हुए। इस पहाड़ी से नीचे उतरने का रास्ता बहुत ही पेचीला और पथरीला था। यद्यपि हम दोनों आदमी एक दफे उस रास्ते को देख चुके थे मगर फिर भी किसी के राह दिखाये विना उस रास्ते से निकल जाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। एक तो हम लोग मायाप्रसाद के पीछे पीछे जा रहे थे दूसरे मशाल की रोशनी साथ थी इसलिये शीघ्रता से हम लोग पहाड़ी के नीचे उतर आये और पण्डितजी की आज्ञानुसार दाहिनी तरफ घूम कर जंगल ही जंगल चलने लगे। सवेरा होते होते तक हमलोग एक खुले मैदान में पहुंचे और वहां एक छोटा सा बागीचा नजर पड़ा। पण्डितजी ने हम दोनों से कहा कि तुम लोग बहुत थक गई हो इस लिये थोड़ी देर तक इस बागीचे में आराम कर लो तब तक हम लोग सवारी का बन्दोबस्त करते हैं जिसमें आज ही तुम राजा गोपालसिंह के पास पहुंच जाओ।

मुझे उस छोटे से बागीचे में किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी, न तो वहां का कोई मालिक नजर आया और न किसी माली या नौकर ही पर नजर पड़ी, मगर बागीचा बहुत साफ और हरा भरा था। पण्डितजी ने अपने दोनों आदमियों को किसी काम के लिये रवाना किया और हम दोनों को उस बागीचे में बेफिक्री के साथ नहाने धोने की आज्ञा देकर खुद भी आधी घड़ी के अन्दर ही लौट आने का वादा करके कहीं चले गये। पण्डितजी और उनके आदमियों को गये हुए अभी चौथाई घड़ी भी न बीती होगी कि दो आदमियों को साथ लिए हुए कम्बख्त दारोगा बाग के अन्दर आता हुआ दिखाई पड़ा।

तीसरा बयान

दारोगा की सूरत देखते ही मेरी और अन्ना की जान सूख गई। हम दोनों को विश्वास हो गया कि पण्डितजी ने हमारे साथ दगा की। उस समय सिवाय जान दे देने के और मैं कर ही क्या सकती थी? इधर उधर देखा पर जान दे देने का कोई जरिया दिखाई न पड़ा। अगर उस समय मेरे पास कोई हर्बा होता तो मैं जरूर अपने को मार डालती। दारोगा ने भी मुझे दूर से देखा और कदम बढ़ाता हुआ हम दोनों के पास पहुंचा। मारे क्रोध के उसकी आंखें लाल हो रही थीं और होंठ कांपते थे। उसने अन्ना की तरफ देख कर कहा, "क्योंकि कम्बख्त लौंडी! अब तू मेरे हाथ से बच कर कहां जायगी? यह सारा फसाद तेरा ही उठाया हुआ है, न तू दर्वाजा खोल कर दूसरे कमरे में जाती न गदाधरसिंह को इस बात की खबर होती। तू ही ने इन्दिरा को ले भागने की नीयत से मेरी जान आफत में डाली

थी अस्तु अब मैं तेरी जान लिये बिना नहीं रह सकता क्योंकि तुझ पर मुझे बड़ा ही क्रोध है।"

इतना कह दारोगा ने म्यान से तलवार निकाल ली और एक ही हाथ में बेचारी अन्ना का सर धड़ से अलग कर दिया, उसकी लाश तड़पने लगी और मैं चिल्ला कर उठ खड़ी हुई।

इतना हाल कहते कहते इन्दिरा की आंखों में आंसू भर आया। इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और राजा गोपालसिंह को भी उसकी अवस्था पर बड़ा दुःख हुआ और बेईमान नमक-हराम दारोगा को क्रोध से याद करने लगे। तीनों भाइयों ने इन्दिरा को दिलासा दिया और चुप करा के अपना किस्सा पूरा करने के लिये कहा। इन्दिरा ने आंसू पोंछ कर पुनः कहना शुरू किया —

इन्दिरा०। उस समय मैं समझी थी कि दारोगा मेरी अन्ना को तो मार ही चुका है अब उसी तलवार से मेरा भी सर काट के बखेड़ा तै करेगा मगर ऐसा न हुआ। उसने रूमाल से तलवार पोंछ कर म्यान में रख ली और अपने नौकर के हाथ से चाबुक ले मेरे सामने आ कर बोला, "अब बुला गदाधरसिंह को आकर तेरी जान बचावे"

इतना कह उसने मुझे उसी चाबुक से मारना शुरू किया। मैं मछली की तरह तड़प रही थी और उसे कुछ भी दया नहीं आती थी, वह बार बार यही कह के चाबुक मारता था कि अब बता मेरे कहे मुताबिक चीठी लिख देगी या नहीं। मगर मैं इस बात का दिल में निश्चय कर चुकी थी कि चाहे कैसी ही दुर्दशा से मेरी जान क्यों न ली जाय मगर उसके कहे मुताबिक चीठी कदापि न लिखूंगी।

चाबुक की मार खा कर मैं जोर जोर से चिल्लाने लगी। उसी समय दाहिनी तरफ से एक औरत दौड़ती हुई आई। उसने डपट कर दारोगा से कहा, "क्यों चाबुक मार मार कर इस बेचारी की जान ले रहे हो? ऐसा करने से तुम्हारा मतलब कुछ भी न निकलेगा। तुम जो कुछ चाहते हो मुझसे कहो, मैं बात की बात में तुम्हारा काम करा देती हूं।"

उस औरत की उम्र का पता बताना कठिन था, न तो वह कमसिन थी और न बूढ़ी ही थी शायद तीस पैंतीस वर्ष की अवस्था हो या इससे कुछ कम ज्यादे हो। उसका रंग काला और बदन गठीला तथा मजबूत था, घुटने के कुछ नीचे तक का पायजामा और उसके ऊपर दक्षिणी ढंग की साड़ी पहरे हुए थी जिसकी लांग पीछे की तरफ खुसी थी। कमर में एक मोटा कपड़ा लपेटे हुए थी, शायद उसमें कोई गठड़ी या और कोई चीज बंधी हो।

उस औरत की बात सुन कर दारोगा ने चाबुक मारना बन्द किया और उसकी तरफ देख कर कहा, "तू कौन है?"

औरत०। चाहे मैं कोई होऊं इससे कुछ मतलब नहीं, तुम जो कुछ चाहते हो मुझसे कहो, मैं तुम्हारी ख्वाहिश पूरी कर दूंगी। चाबुक मारती समय जो कुछ तुम कहते हो उससे मालूम होता है कि इस लड़की से तुम कुछ लिखाया चाहते हो, इससे जो कुछ लिखवाना हो मुझे बताओ मैं लिखा दूं। इस तरह मारने पीटने से कोई काम न चलेगा, इसके एक पक्षपाती ने जिसने अभी तुम्हारे आने की खबर दी थी इसे समझा बुझा के बहुत पक्का कर दिया है और खुद (हाथ का इशारा करके) उस कूए में जा छिपा है, वह जरूर तुम पर वार करेगा। मेरे साथ चलो मैं दिखा दूं। पहिले उसे दुरुस्त करो तब इसके बाद

जो कुछ तुम इस लड़की को कहोगे झख मार के कर देगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

दारोगा०। क्या तूने खुद उस आदमी को देखा था?

औरत०। हां हां कहती तो हूं कि मेरे साथ उस कूए पर चलो मैं उस आदमी को दिखा देती हूं। दस बारह कदम पर कूआं है कुछ दूर तो है नहीं।

दारोगा०। अच्छा चल कर मुझे बताओ (अपने दोनों आदमियों से) तुम इस लड़की के पास खड़े रहो।

वह औरत कूए की तरफ बढ़ी और दारोगा उसके पीछे पीछे गया। वास्तव में वह कूआ बहुत दूर न था। जब दारोगा को लिये हुए वह औरत कूंए पर पहुंची तो अन्दर झांक कर बोली, "देखो वह छिप कर बैठा है।"

दारोगा ने ज्यों ही झांक कर कूए के अन्दर देखा कि उस औरत ने पीछे से धक्का दिया और कम्बख्त दारोगा धड़ाम से कूए के अन्दर जा रहा। यह कैफियत उसके दोनों साथी दूर से देख रहे थे और मैं भी देख रही थी। जब दारोगा के दोनों साथियों ने देखा कि औरत ने जान बूझ कर हमारे मालिक को कूए में ढकेल दिया है तो दोनों आदमी तलवार खैंच कर उस औरत की तरफ दौड़े। जब पास पहुंचे तो वह औरत जोर से हंसी और एक तरफ को भाग चली। उन दोनों ने उसका पीछा किया मगर वह औरत दौड़ने में इतनी तेज थी कि वे दोनों उसे पा न सकते थे। उसी बगीचे के अन्दर वह औरत चक्कर देने लगी और उन दोनों के हाथ न आई। वह समय उन दोनों के लिये बड़ा ही कठिन था, वे दोनों इस बात को जरूर सोचते होंगे कि अगर अपने मालिक को बचाने की नीयत से कूए पर जाते हैं तो वह औरत भाग जायगी या ताज्जुब नहीं कि इन्हें

भी उसी कूए में ढकेल दे। आखिर जब उस औरत ने उन दोनों को खूब दौड़ाया तो उन दोनों ने आपुस में कुछ बातें कीं और एक आदमी तो उस कूए की तरफ चला गया और दूसरे ने उस औरत का पीछा किया। जब उस औरत ने देखा कि अब दो में से एक ही रह गया तो वह खड़ी हो गई और जमीन पर से ईंट का टुकड़ा उठा कर उस आदमी की तरफ जोर से फेंका। उस औरत का निशाना बहुत सच्चा था जिससे वह बच न सका और वह ईंट का टुकड़ा इस जोर से उसके सर में लगा कि सर फट गया और वह दोनों हाथों से सर को पकड़ कर जमीन पर बैठ गया। उस समय उस औरत ने पुन दूसरी ईंट मारी तीसरी मारी और चौथी ईंट खाकर तो वह जमीन पर लेट गया। उसी समय उसने खञ्जर निकाल लिया जो उसकी कमर में छिपा हुआ था और दौड़ती हुई उसके पास जाकर खञ्जर से उसका सर काट डाला। मैं यह तमाशा दूर से देख रही थी। जब एक आदमी को समाप्त कर चुकी तो उस दूसरे के पास आई जो कूए पर खड़ा अपने मालिक को निकालने की फिक्र कर रहा था। एक ईंट का टुकड़ा उसकी तरफ भी जोर से फेंका जो उसकी गरदन में लगा। वह आदमी हाथ में नङ्गी तलवार लिये हुए उस औरत पर झपटा मगर उसे पा न सका, उस औरत ने फिर उस आदमी को दौड़ाना शुरू किया। बीच बीच में ईंट और पत्थरों से उसकी खबर लेती जाती थी, वह आदमी भी ईंट और पत्थर के टुकड़े उस औरत पर फेंकता था मगर औरत इतनी तेज और फुर्तीली थी कि उसके सब वार बराबर बचाती चली गई मगर उसका वार एक भी खाली न जाता था। आखिर उस आदमी ने भी इतनी मार खाई कि खड़ा होना मुश्किल हो गया और वह हताश होकर जमीन पर बैठ गया, बस जमीन

पर बैठने की देर थी कि उस औरत ने धड़ाधड़ पत्थर मारना शुरू किया यहां तक कि वह अधमुआ होकर जमीन पर लेट गया। उस औरत ने उसके पास पहुँच कर उसका सर भी धड़ से अलग कर दिया इसके बाद दौड़ती हुई मेरे पास आई और बोली "बेटी! तूने देखा कि मैंने तेरे दुश्मनों की कैसी खबर ली? मैं तो उस बूढ़े कम्बख्त (दारोगा) को भी पत्थर मार मार कर मार डालती मगर डरती हूं कि विलम्ब हो जाने से उसके और भी संगी साथी न आ पहुँचें. अगर ऐसा हुआ तो बड़ी मुश्किल होगी अस्तु उसे जाने दे और मेरे साथ चल, मैं तुझे हिफाजत से तेरे घर या जहां तू कहेगी पहुँचा दूंगी।"

यद्यपि चाबुक की मार खाने से मेरी बुरी हालत हो गई थी मगर अपने दुश्मनों की ऐसी दुर्दशा देख मैं खुश हो गई और उस औरत को साक्षात् माता समझ कर मैं उसके पैरों पर गिर पड़ी। उसने मुझे बड़े प्यार से उठा कर गले से लगा लिया और हाथ पकड़े हुए बाग के पिछली तरफ ले चली। बाग के पीछे की तरफ भी बाहर निकल जाने के लिये एक खिड़की थी और उसके पास सरपत का एक साधारण जंगल था। वह औरत मुझे लिये हुए सरपत के जंगल में घुस गई, उसी जंगल में उस औरत का घोड़ा बंधा हुआ था। उसने घोड़ा खोला, चारजामा इत्यादि ठीक करके उस पर मुझे बैठाया और पीछे आप भी सवार हो गई। घोड़ा तेजी के साथ रवाना हुआ और तब मैं समझी कि मेरी जान बच गई।

वह औरत पहर भर तक बराबर घोड़ा फेंके चली गई और जब एक घने जंगल में पहुंची तो घोड़े की चाल धीमी की और थोड़ी देर तक धीरे धीरे चल कर एक कुटी के पास पहुंची जिसके दर्वाजे पर दो तीन आदमी बैठे आपुस में कुछ बातें कर

रहे थे। उस औरत को देखते ही वे लोग उठ खड़े हुए और अदब के साथ सलाम करके घोड़े के पास चले आये। औरत ने घोड़े के नीचे उतर कर मुझे भी उतार लिया। उन आदमियों में से एक ने घोड़े की लगाम थाम ली और उसे टहलाने के लिये ले गया, दूसरे आदमी ने कुछ इशारा पा कर कुटी के अन्दर से एक कम्बल ला के जमीन पर बिछा दिया और एक आदमी हाथ में घड़ा लोटा और रस्सी ले कर जल भरने के लिये चला गया। औरत ने मुझे कम्बल पर बैठने का इशारा किया और आप भी कमर हलकी करने के उसी कम्बल पर बैठ गई, तब, उसने मुझसे कहा कि अब तू अपना सच्चा सच्चा हाल बता कि तू कौन है और इस मुसीबत में क्यों कर फसी तथा वह बुड्ढा शैतान कौन था, तब तक मेरा आदमी पानी लाता है और खाने पीने का बन्दोबस्त करता है।

उस औरत ने दया कर के मेरी जान बचाई थी और जहां मैं चाहती थी वहा पहुँचा देने के लिये तैयार थी और मेरे दिल ने भी उसे माता के समान मान लिया था, इस लिये मैंने उससे कोई बात नहीं छिपाई और अपना सच्चा सच्चा हाल शुरू से आखीर तक कह सुनाया। उसे मेरी अवस्था पर बहुत तर्स आया और बहुत देर तक तसल्ली और दिलासा देती रही। जब मैंने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम "चम्पा" बताया।

इतना हाल कह कर इन्दिरा क्षण भर के लिये रुक गई और कुअर आनन्दसिंह ने उससे चौंक कर पूछा, "क्या नाम बताया, चम्पा?"

इन्दिरा०। जी हां।

आनन्द०। (गौर से इन्दिरा की सूरत देख कर) ओफ! अब मैंने तुझे पहिचाना!

इन्दिरा०। जरूर पहिचाना होगा क्योंकि एक दफे आप मुझे उस खोह में देख चुके हैं जहां चम्पा ने छत से लटकते हुए एक आदमी की देह काटी थी, आपने उसमें बाधा डाली थी और योगिन का वेष धरे हाथ में अंगीठी लिये चपला ने आकर आपको और देवीसिंहजी को बेहोश कर दिया था।

इन्द्रजीत०। (ताज्जुब से आनन्दसिंह की तरफ देख कर) तुमने वह हाल मुझसे कहा था। जब तुम मेरी खोज में निकले थे और उस मुसलमानिन औरत की कैद से तुम्हें देवीसिंह ने छुड़ाया था, उस समय का हाल है।

आनन्द०। जी हां, यह वही लड़की है।

इन्द्र०। मैंने तो सुना था कि उसका नाम सरला है।

इन्दिरा०। जी हां चम्पा ने मेरा नाम सरला रख दिया था।

इन्द्रजीत०। वाह वाह! वर्षों के बाद इस बात का पता लगा।

गोपाल०। जरा उस किस्से को मैं भी सुना चाहता हूं।

आनन्दसिंह ने उस समय का बिल्कुल हाल राजा गोपालसिंह से कह सुनाया और इसके बाद इन्दिरा को फिर अपना हाल कहने के लिये कहा।

चौथा बयान

भूतनाथ और असली बलभद्रसिंह तिलिस्मी खंडहर की नई इमारत वाले नम्बर दो के कमरे में उतारे गये। जीतसिंह की आज्ञानुसार पन्नालाल ने उनकी बड़ी खातिर की और हर तरह के आराम का बन्दोबस्त उनकी इच्छानुसार कर दिया। पहर रात बीतने पर जब वे लोग हर तरह से निश्चिन्त हो गये तो जीतसिंह को छोड़ कर बाकी सब ऐयार जो उस खंडहर में मौजूद थे भूतनाथ से गपशप करने के लिये उसके पास आ बैठे

और इधर उधर की बातें होने लगीं। पन्नालाल ने किशोरी कामिनी और कमला की मौत का हाल भूतनाथ से बयान किया जिसे सुन कर बलभद्रसिंह ने हद से ज्यादे अफसोस किया और भूतनाथ उदासी के साथ वहाँ देर तक सोच सागर में गोता खाता रहा। जब लगभग आधी रात के जा चुकी तो सब ऐयार बिदा हो कर अपने अपने ठिकाने चले गये और भूतनाथ तथा बलभद्रसिंह भी अपनी अपनी चारपाई पर जा बैठे। बलभद्रसिंह तो बहुत जल्द निद्रादेवी के आधीन हो गया मगर भूतनाथ की आखों में नींद का नाम निशान न था। कमरे में एक शमादान जल रहा था और भूतनाथ अन्दर वाले रमने की तरफ निगाह किये हुए कुछ सोच रहा था।

जिस कमरे में ये दोनों आराम कर रहे थे उसमें भीतर रमने की तरफ तीन खिड़किया थीं, उन्हीं में से एक खिडकी की तरफ मुंह किये हुए भूतनाथ लेटा हुआ था। उसकी निगाह रमने में से होती हुई ठीक उस दालान में पहुँच रही थी जिसमें वह तिलिस्मी चबूतरा था जिस पर पत्थर का आदमी सोया हुआ था। उस दालान में एक कन्दील जल रही थी जिसकी रोशनी में वह चबूतरा तथा पत्थर वाला आदमी साफ दिखाई दे रहा था।

भूतनाथ को उस दालान और चबूतरे की तरफ देखते हुए घण्टा भर से ज्यादे बीत गया। यकायक उसने देखा कि उस चबूतरे का पत्थर जो भूतनाथ की तरफ पडता था पूरा का पूरा एक पल्ले किवाड की तरह खुल कर जमीन के साथ लग गया और उसके अन्दर किसी तरह की रोशनी मालूम पड़ने लगी जो धीरे धीरे ज्यादे होती जाती थी।

भूतनाथ को यह बात मालूम थी कि यह चबूतरा किसी तिलिस्म से सम्बन्ध रखता है और उस तिलिस्म को राजा वीरे

न्द्रसिंह के दोनों लड़के तोड़ेंगे। अस्तु इस समय उस चबूतरे की ऐसी अवस्था देख कर भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह आखें मल कर उस तरफ देखने लगा। थोड़ी देर बाद चबूतरे के अन्दर से एक आदमी निकलता हुआ दिखाई पड़ा मगर यह निश्चय नहीं हो सकता था कि वह मर्द है या औरत, क्योंकि वह एक स्याह लबादा सर से पैर तक ओढ़े हुए था और उसके बदन का कोई हिस्सा भी दिखाई नहीं देता था। उसके बाहर निकलने के साथ ही चबूतरे के अन्दर वाली रोशनी बन्द हो गई मगर वह पत्थर जो हट कर जमीन के साथ लग गया था ज्यों का त्यों खुला ही रहा। वह आदमी बाहर निकल कर इधर उधर देखने लगा और थोड़ी देर तक कुछ सोचने के बाद बाहर रमने में आ गया। धीरे धीरे चल कर उसने एक दफे चारो तरफ का चक्कर लगाया। चक्कर लगाती समय वह आदमी कई दफे भूतनाथ की निगाहों की ओट में हुआ मगर भूतनाथ ने उसे उठ कर देखने का उद्योग इस लिये नहीं किया कि कहीं उस आदमी की निगाह मुझ पर न पड़ जाय। जिस कमरे में भूतनाथ सोया हुआ था वह एक मञ्जिल ऊपर था और वहां से रमना तथा दालान साफ साफ दिखाई दे रहा था।

वह आदमी घूम फिर कर फिर उसी तिलिस्मी चबूतरे के पास जा खड़ा हुआ और कुछ दम लेकर चबूतरे के अन्दर घुस गया। थोड़ी देर बाद वही आदमी फिर चबूतरे के बाहर निकला। अबकी दफे वह अकेला न था बल्कि उसी ढङ्ग का लबादा ओढ़े चार आदमी और भी उसके साथ थे अर्थात् पांच आदमी चबूतरे के बाहर निकले और पूरब तरफ वाले कोने में जाकर सीढ़ियों की राह ऊपर की मञ्जिल पर चढ़ गये। ऊपर की मञ्जिल में चारों तरफ इमारत बनी हुई थी इस लिये भूतनाथ को यह

न जान पड़ा कि वे लोग किधर गये या किस कोठड़ी में घुसे, मगर इस बात का शक जरूर हो गया कि कहीं वे लोग कोठडी ही कोठडी घूमते हुए हमारे कमरे में न आ जाय। अस्तु उसने एक महीन चादर मुंह पर ओढ़ ली और इस ढङ्ग से लेट गया कि दरवाजे की तरफ तथा तिलिस्मी चबूतरे की तरफ जिधर चाहे बिना सर हिलाये देख सके। आधे घन्टे के बाद भूतनाथ के कमरे का दर्वाजा खुला और उन्हीं पाचों में से एक आदमी ने कमरे के अन्दर झाक कर देखा तथा जब उसे मालूम हो गया कि दोनों आदमी बेखबर सो रहे हैं तो धीरे से कमरे के अन्दर चला आया और उसके बाद बाकी के चारो आदमी कमरे के अदर चले आये। वे पाचों आदमी (या जो हों) एक ही रंग का लबादा या बुर्का ओढ़े हुए थे, केवल आख की जगह जाली बनी हुई थी जिसमें देखने में किसी तरह की अरुडस न पडे। उन पाचों ने बडे गौर से बलभद्रसिंह की सूरत देखी और एक ने कागज का एक लिफाफा उसके सिहाने की तरफ रख दिया, फिर भूतनाथ के पास आया और उसके सिहाने पर भी एक लिफाफा रख कर अपने साथियों के पास चला गया। कई क्षण और ठहर कर वे पाचों आदमी कमरे के बाहर निकल गये और दर्वाजे को उसी तरह घुमा दिया जैसा पहिले था। उसी समय भूतनाथ भी उन पाचों से किसी को पकड लेने की नीयत से चारपाई पर से उठ खडा हुआ और कमरे के बाहर निकला मगर कोई दिखाई न पड़ा। उसी जगह नीचे उतर जाने के लिये सीढ़िया थीं, भूतनाथ ने समझा कि वे लोग इन्हीं सीढ़ियों की राह नीचे उतर गये होंगे, अस्तु वह भी शीघ्रता के साथ नीचे उतर गया और घूमता हुआ बीच वाले कमरे में पहुँचा मगर उन पाचों में से कोई भी दिखाई न दिया। उस समय भूतनाथ ने सोचा कि आखिर वे लोग घूम

फिर कर उसी तिलिस्मी चबूतरे के पास पहुँचेंगे इस लिये पहिले ही से वहा चल कर छिप रहना चाहिये।

भूतनाथ अपने को छिपाता हुआ उस तिलिस्मी चबूतरे के पास जा पहुँचा और पीछे की तरफ जा कर उसकी आड़ मे छिप कर बैठ गया।

भूतनाथ को उसकी आड़ में छिप कर बैठे हुए आधे घण्टे से ज्यादे बीत गया मगर किसी की सूरत दिखाई न पड़ी, तब वह उठ कर चबूतरे के सामने की तरफ आया जिधर का मुंह खुला हुआ था। वह पत्थर का तख्ता जो हट कर जमीन के साथ लग गया था अभी तक खुला हुआ था। भूतनाथ ने उसके अन्दर की तरफ झाक कर देखा मगर अन्धकार के सबब कुछ दिखाई न पड़ा हां उसके अन्दर से कुछ बारीक आवाज आ रही थी जिसे समझना कठिन था। भूतनाथ पीछे की तरफ हट गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। इतने ही में अन्दर की तरफ से कुछ खटखटाहट की आवाज आई और वह पत्थर का तख्ता हिलने लगा जो चबूतरे से पल्ले की तरह अलग हो गया था। भूतनाथ उसके पास से हट गया और वह पत्थर का पल्ला चबूतरे के साथ धीरे से लग कर ज्यों का त्यों बन्द हो गया। उस समय भूतनाथ यह कहता हुआ वहा से रवाना हुआ, "मालूम होता है वे लोग किसी दूसरी राह से इसके अन्दर पहुंच गये।"

भूतनाथ घूमता हुआ फिर अपने कमरे में चला आया और अपनी चारपाई पर से उस लिफाफे को उठा लिया जो उन लोगों में से एक ने उसके सिरहाने रख दिया था। शमादान के पास जाकर लिफाफा खोला और उसके अन्दर से खत निकाल कर पढ़ने लगा। यह लिखा हुआ था —

"कल बारह बजे रात को इसी कमरे में मेरा इन्तजार करो, और जागते रहो।"

भूतनाथ ने दो तीन दफे उस लेख को पढ़ा और फिर लिफाफे में रख कर कमर में खोंस लिया, इसके बाद बलभद्रसिंह की चारपाई के पास गया और चाहा कि उसके सिरहाने जो पत्र रक्खा गया है उसे उठा कर पढ़े मगर उसी समय बलभद्रसिंह की आंख खुल गई और अपनी चारपाई पर किसी को झुके हुए देख वह उठ बैठा, भूतनाथ पर निगाह पड़ी और ताज्जुब में आ कर पूछा, "यह क्या मामला है ?

भूतनाथ०। इस समय एक ताज्जुब की बात देखने में आई है।

बलभद्र०। वह क्या ?

भूत०। तुम जरा सावधान हो जाओ और मुझे अपने पास बैठने दो तो कहू।

बलभद्र०। (भूतनाथ के लिये अपनी चारपाई पर जगह कर के) आओ बैठ जाओ और कहो कि क्या मामला है ?

भूतनाथ बलभद्रसिंह की चारपाई पर बैठ गया और उसने जो कुछ देखा था पूरा पूरा बयान किया तथा अन्त में कहा कि पढ़ने के लिये मैं तुम्हारे सिर्हाने से चीठी उठाने लगा था कि तुम्हारी आख खुल गई, अब तुम खुद उस चीठी को पढ़ो तो मालूम हो कि क्या लिखा हुआ है।"

बलभद्रसिंह लिफाफा उठा कर शमादान के पास चला गया और अपने हाथ से लिफाफा खोला। उसके अन्दर एक अंगूठी थी जिस पर निगाह पड़ते ही वह चिल्ला उठा और बिना कुछ कहे अपनी चारपाई पर आकर बैठ गया।

पांचवां बयान

कुमार की आज्ञानुसार इन्दिरा ने पुनः अपना हाल कहना शुरू किया :—

इन्दि० । चम्पा ने मुझे दिलासा देकर बहुत समझाया और मेरी मदद करने का वादा किया और यह भी कहा कि आज से तू अपना नाम बदल दे। मैं तुझे अपने घर ले चलती हू मगर इस बात का खूब ध्यान रखियो कि यदि कोई तुझसे तेरा नाम पूछे तो "सरला" बताइयो और यह सब हाल जो तूने मुझसे कहा है अब और किसी से बयान न कीजियो। मैंने चम्पा की बात कबूल कर ली और वह मुझे अपने साथ चुनारगढ़ ले गई। वहां पहुँचने पर जब मुझे चम्पा की इज्जत और उसके मर्तबे का हाल मालूम हुआ तो मैं अपने दिल में बहुत खुश हुई और विश्वास हो गया कि यहां रहने में मुझे किसी तरह का डर नहीं है और चम्पा की मेहरबानी से मैं अपने दुश्मनों से बदला भी ले सकूगी।

चम्पा ने मुझे हिफाजत और आराम से अपने यहा रक्खा और मेरा सच्चा हाल अपनी प्यारी सखी चपला के सिवाय और किसी से भी न कहा। निःसन्देह चम्पा ने मुझे अपनी लड़की के समान रक्खा और ऐयारी की विद्या भी दिल लगा कर सिखाने लगी, मगर अफसोस! किस्मत ने मुझे बहुत दिनों तक उसके पास न रहने दिया और थोड़े ही जमाने के बाद (इन्द्रजीतसिंह की तरफ इशारा कर के) आपको गया की रानी माधवी ने धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया। चम्पा और चपला आपकी खोज में निकलीं और मुझे भी उनके साथ जाना पड़ा। उसी जमाने में मेरा और चम्पा का साथ छूटा।

आनन्द०। तुम्हे यह कैसे मालूम हुआ कि भैया को माधवी ने गिरफ्तार कराया था ?

इन्दिरा०। माधवी के दो आदमियों को चम्पा और चपला ने अपने काबू में कर लिया था। पहिले छिप कर उन दोनो की बाते सुनी थीं जिससे विश्वास हो गया था कि ये दोनो माधवी के नोकर हैं और कुअर साहब को गिरफ्तार कर लेने में ये दोनो भी शरीक थे, मगर यह समझ में न आया कि जिस माधवी के ये लोग नौकर हैं वह माधवी कौन है और कुंअर साहब को ले जा कर उसने कहा रक्खा है। लाचार चम्पा ने धोखा दे कर उन दोनों को अपने काबू में कर लिया और कुंअर साहब का हाल उनसे पूछा। मैंने उन दोनो आदमियों के ऐसा जिद्दी कोई भी न देखा होगा, आपने स्वयम् देखा था कि चम्पा ने उस खोह मे उसे कितना दुःख दे कर मारा मगर उस कम्बख्त ने ठीक ठीक पता नही दिया। उस समय वहा चम्पा का एक नौकर भी हबशी के रूप में काम कर रहा था, आपको याद होगा।

आनन्द०। वह माधवी ही का आदमी था ?

इन्दिरा०। जी हा और उसकी बातो का आपने दूसरा ही मतलब लगा लिया था।

आनन्द०। ठीक है, फिर दूसरे आदमी की क्या दशा हुई, क्योंकि चम्पा ने तो दो आदमियो को पकडा था ?

इन्दिरा०। दूसरा आदमी भी चम्पा के हाथ से उसी रोज उसके थोड़ी देर पहिले मारा गया था।

आनन्द०। हा ठीक है, उसके थोड़ी देर पहिले चम्पा ने एक और आदमी को मारा था, वही होगा जिसके मुह से निकले हुए टूटे फूटे शब्दो ने हमें धोखे में डाल दिया था, अच्छा उसके बाद क्या हुआ ? तुम्हारा साथ कैसे छूटा ?

यही खयाल पैदा हुआ होगा अस्तु अब आप क्षण भर भी विलम्ब न कीजिये।

कुमार०। बेशक ऐसी ही बात है, आप भी यहा से शीघ्र चले जाइये, मगर इन्दिरा का क्या होगा ?

गोपाल०। इन्दिरा को इस समय मैं अपने साथ ले जाता हू फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

कुमार०। अफसोस कि इन्दिरा का कुल हाल हम सुन न सके, खैर लाचारी है।

गोपाल०। अस्तु कोई चिन्ता नहीं, आप तिलिस्म का काम तमाम करके इसकी मा को छुड़ाइये फिर सब हाल सुन लीजियेगा। हा मैंने आपसे वादा किया था कि अपनी तिलिस्मी किताब आपको पढने के लिये दूगा मगर वह किताब गायब हो गई थी इसलिये दे न सका, अब (किताब दिखा कर) इन्दिरा के हाथ से यह किताब मुझे मिल गई है और पढ़ने के लिये मैं आपको दे भी सकता हू, यदि आप इसे अपने साथ ले जाना चाहे तो ले जायें।

इन्द्रजीत०। समय की लाचारी इस समय हमलोगों को आपसे जुदा करती है और यह निश्चय नहीं हो सकता कि पुनः कब आपसे मुलाकात होगी और यह किताब हमलोग ले जायंगे तो कब वापस आने की नौबत आयेगी। तिलिस्मी किताब जो मेरे पास है उसके पढ़ने और बाजे की आवाज के सुनने से मुझे विश्वास होता है कि आपकी किताब पढ़े बिना भी हमलोग तिलिस्म तोड सकेंगे। यदि मेरा यह खयाल ठीक है तो आपके पास से यह किताब ले जाकर आपका बहुत बड़ा हर्ज करना समयानुकूल न होगा।

गोपाल०। इस किताब के बिना आपका कोई काम हर्ज

नहीं हो सकता और इसमें भी कोई शक नहीं कि इस किताब के बिना मैं बे हाथ पैर का हो जाऊंगा।

इन्द्रजीत०। तो इस किताब को आप अपने पास रहने दीजिये फिर जब मुलाकात होगी तो देखा जायगा, अब हमलोग बिदा होते हैं।

गोपाल०। खैर जाइये, हम आप दोनों भाइयों को दया-निधि ईश्वर के सुपुर्द करते हैं।

इसके बाद राजा गोपालसिंह ने कुछ बातें दोनों कुमारों को जल्दी जल्दी समझा कर बिदा किया और आप भी इन्दिरा को साथ ले महल की तरफ रवाना हुए।

छठवां बयान

जिस राह से कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को राजा गोपालसिंह इस बाग में लाये थे उसी राह से जाकर ये दोनों भाई उस कमरे मे पहुँचे जो बाजे वाले कमरे में जाने के पहिले पड़ता था और जिसमें महराबदार चार खम्भों के सहारे एक बनावटी आदमी फांसी लटक रहा था। इस कमरे का खुलासा हाल एक दफे लिखा जा चुका है इसलिये यहां पुन लिखने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती। पाठकों को यह भी याद होगा कि इन्दिरा का किस्सा सुनने के पहिले ही कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उस तिलिस्मी बाजे की आवाज ताली दे दे कर अच्छी तरह सुन समझ चुके हैं। यदि याद न हो तो तिलिस्म सम्बन्धी पिछला किस्सा पुनः पढ़ जाना चाहिये क्योंकि अब ये दोनों भाई तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाते हैं।

कमरे में पहुचने के बाद दोनों भाइयों ने देखा कि फांसी

लटकते हुए आदमी के नीचे जो मूरत (इन्दिरा के ढङ्ग की) खड़ी थी वह इस समय तेजी के साथ नाच रही है। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खञ्जर का एक वार करके उस मूरत को दो टुकड़े कर दिया अर्थात् कमर से ऊपर वाला हिस्सा काट कर गिरा दिया। उसी समय उस मूरत का नाचना बन्द हो गया और वह भयानक आवाज भी जो बड़ी देर से तमाम बाग में और इस कमरे में भी गूंज रही थी एकदम बन्द हो गई। इसके बाद दोनों भाइयों ने उस बची हुई आधी मूरत को भी जोर करके जमीन से उखाड़ डाला। उस समय मालूम हुआ कि उसके दाहिने पैर के तलवे में लोहे की एक जंजीर जड़ी है जिसके खींचने से दाहिनी तरफ वाली दीवार में एक नया दर्वाजा निकल आया।

तिलिस्मी खंजर की रोशनी के सहारे दोनों भाई उस नये दर्वाजे के अन्दर चले गये और थोड़ी दूर जाने के बाद एक और खुला हुआ दर्वाजा लांघ कर छोटी सी कोठड़ी में पहुँचे जिसके ऊपर चढ़ जाने के लिये दस बारह सीढ़ियां बनी हुई थीं। दोनों भाई सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर के कमरे में पहुँचे जिसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई चालीस हाथ से कम न होगी। यह कमरा कोठे का था एक छोटा सा बनावटी बगीचा मन मोहने वाला था। यद्यपि इसमें फूल बूटों के जितने पेड़ लगे हुए थे सब बनावटी थे मगर फिर भी जान पड़ता था कि फूलों की खुशबू से वह कमरा अच्छी तरह बसा हुआ है। उस कमरे की छत में छोटे छोटे शीशे बहुत से लगे हुए थे जिसमें से बे रोक टोक पहुँचने वाली रोशनी के कारण कमरे में भर उजाला हो रहा था। वे शीशे चौड़े या चिपटे न थे बल्कि गोल गुम्बज की तरह बने हुए थे।

इस छोटे से बनावटी बगीचे में छोटी छोटी मगर बहुत खूबसूरत क्यारियां बनी हुई थीं और उन क्यारियों के चारो तरफ की जमीन पत्थर के छोटे छोटे रंग बिरंगी टुकड़ों से हुई बनी थी। बीच में एक गोलाम्बर (चबूतरा) बना हुआ था और उसके ऊपर एक औरत खड़ी हुई मालूम पड़ती थी जिसके बायें हाथ में एक तलवार और दाहिने हाथ मे हाथ भर लम्बी एक ताली थी।

कुमार इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी बन्द करके आनन्दसिंह की तरफ देखा और कहा, "यह औरत निःसन्देह लोहे या पीतल की बनी हुई होगी और यह ताली भी वही होगी जिसकी हमलोगों को जरूरत है मगर तिलिस्मी बाजे ने तो यह कहा था कि ताली किसी चलती फिरती से प्राप्त करोगे, यह औरत कहीं चलती फिरती नहीं है खड़ी है।"

आनन्द०। उसके पास तो चलिये देखें वह ताली कैसी है।

इन्द्रजीत०। चलो।

दोनों भाई उस गोलाम्बर की तरफ बढ़े मगर उसके पास न जा सके। तीन चार हाथ इधर ही थे कि एक प्रकार की आवाज के साथ वहां की जमीन हिली और गोलाम्बर (जिस पर पुतली थी) तेजी से चक्कर खाने लगा और उसी के साथ वह नकली औरत (पुतली) भी घूमने लगी जिसके हाथ में तलवार और ताली थी। घूमने के समय उसका ताली वाला हाथ ऊंचा हो गया और तलवार हाथ आगे की तरफ बढ़ गया जो अपने चक्कर की तेजी में चक्र का काम कर रहा था।

आनन्द०। कहिये भाईजी! अब यह औरत या पुतली चलती फिरती हो गई या नहीं?

इन्द्रजीत०। हां हो तो गई।

आनन्द०। अब जिस तरह हो सके इसके हाथ से ताली ले

जेनी चाहिये, गोलाम्बर पर जाने वाला तो तुरत दो टुकडे हो जायगा।

इन्द्रजीत०। (पीछे हटते हुए) देखें हट जाने पर इसका घूमना बन्द होता है या नहीं।

आनन्द०। (पीछे हट कर) देखिये गोलाम्बर का घूमना बन्द हो गया! बस यही काला पत्थर चार हाथ के लगभग चौडा जो इस गोलाम्बर के चारो तरफ लगा है असल करामात है, इस पर पैर रखने ही से गोलाम्बर घूमने लगता है। (काले पत्थर के ऊपर जा कर) देखिये घूमने लग गया (हट कर) वह बन्द हो गया, अच्छा अब समझ गया, इस पुतली के हाथ से ताली और तलवार ले लेना कोई बड़ी बात नहीं है।

इतना कह कर आनन्दसिंह ने एक छलांग मारी और काले पत्थर पर पैर रक्खे बिना ही कूद कर गोलाम्बर के ऊपर चले गये। गोलाम्बर ज्यों का त्यों अपने ठिकाने जमा रहा और आनन्दसिंह पुतली के हाथ से ताली तथा तलवार लेकर जिस तरह वहां गये थे उसी तरह कूद कर अपने भाई के पास चले आये और बोले—"कहिये क्या मजे में ताली ले आये!"

इन्द्रजीत०। बेशक! (ताली हाथ में लेकर) अजब ढंग की ताली बनी हुई है (गौर से देख कर) इस पर कुछ अक्षर भी खुदे मालूम पड़ते हैं मगर बिना तेज रोशनी के इनका पढ़ा जाना मुश्किल है।

आनन्द०। तिलिस्मी खंजर की रोशनी करता हूं आप पढ़िये।

इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी में उसे पढ़ा और आनन्दसिंह को समझाया। इसके बाद दोनों भाई कूद कर उस गोलाम्बर पर चढ़ गये जिस पर हाथ में ताली लिये हुए वह

तली थी। ढूंढने और गौर से देखने पर दोनों भाइयों को मालूम हुआ कि उस पुतली के दाहिने पैर में एक छेद ऐसा है जिसमें वह तलवार जो पुतली के हाथ में से ले ली गई थी बखूबी घुस जाय। भाई की आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने वही पुतली वाली तलवार उस छेद में डाल दी, यहां तक कि पूरी तलवार छेद के अन्दर चली गई केवल उसका कब्जा बाहर रह गया। उस समय दोनों भाइयों ने मजबूती के साथ उस पुतली को पकड़ लिया। थोड़ी ही देर बाद गोलाम्बर के नीचे से एक आवाज आई और पहिले की तरह वह गोलाम्बर पुतली सहित घूमने लगा। पहिले धीरे धीरे क्रमशः तेजी के साथ गोलाम्बर घूमने लगा। उस समय दोनों भाइयों के हाथ उस पुतली के साथ ऐसे चिपक गये कि मालूम होता था छुड़ाने से कभी छूटेंगे नहीं।

गोलाम्बर घूमता हुआ जमीन के अन्दर धसने लगा और सर में चक्कर आने के कारण दोनों भाई बेहोश हो गये। जब वे होश में आये तो आंखें खोल कर चारों तरफ देखने लगे मगर अन्धकार के सिवाय और कुछ भी दिखाई न दिया। उस समय इन्द्रजीतसिंह ने अपने तिलिस्मी खंजर के जरिये से रोशनी की और इधर उधर देखने लगे। अपने छोटे भाई को पास में बैठे पाया और उस पुतली को टुकड़े टुकड़े भई हुई देखा जिसके कुछ टुकड़े गोलाम्बर के ऊपर ही थे और कुछ जमीन पर छितरे हुए थे।

इस समय भी दोनों भाइयों ने अपने को उसी गोलाम्बर पर पाया, समझे कि यह गोलाम्बर ही धसता हुआ इस नीचे वाली जमीन के साथ आ लगा है मगर जब छत की तरफ निगाह की तो किसी तरह का निशान या छेद न देख कर छत को बराबर और

लेनी चाहिये, गोलाम्बर पर जाने वाला तो तुरत दो टुकड़े हो जायगा।

इन्द्रजीत०। (पीछे हटते हुए) देखें हट जाने पर इसका घूमना बन्द होता है या नहीं।

आनन्द०। (पीछे हट कर) देखिये गोलाम्बर का घूमना बन्द हो गया! बस यही काला पत्थर चार हाथ के लगभग चौड़ा जो इस गोलाम्बर के चारो तरफ लगा है असल करामात है, इस पर पैर रखने ही से गोलाम्बर घूमने लगता है। (काले पत्थर के ऊपर जा कर) देखिये घूमने लग गया (हट कर) वह बन्द हो गया, अच्छा अब समझ गया, इस पुतली के हाथ से ताली और तलवार ले लेना कोई बड़ी बात नहीं है।

इतना कह कर आनन्दसिंह ने एक छलांग मारी और काले पत्थर पर पैर रक्खे बिना ही कूद कर गोलाम्बर के ऊपर चले गये। गोलाम्बर ज्यों का त्यों अपने ठिकाने जमा रहा और आनन्दसिंह पुतली के हाथ से ताली तथा तलवार लेकर जिस तरह वहां गये थे उसी तरह कूद कर अपने भाई के पास चले आये और बोले—"कहिये क्या मजे में ताली ले आये।"

इन्द्रजीत०। बेशक! (ताली हाथ में लेकर) अजब ढंग की ताली बनी हुई है (गौर से देख कर) इस पर कुछ अक्षर भी खुदे मालूम पड़ते हैं मगर बिना तेज रोशनी के इनका पढ़ा जाना मुश्किल है।

आनन्द०। तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी करता हूं आप पढ़िये।

इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी में उसे पढ़ा और आनन्दसिंह को समझाया। इसके बाद दोनों भाई कूद कर उस गोलाम्बर पर चले गये जिस पर हाथ में ताली लिये हुए वह

पुतली थी। ढूंढने और गौर से देखने पर दोनों भाइयों को मालूम हुआ कि उस पुतली के दाहिने पैर में एक छेद ऐसा है जिसमें वह तलवार जो पुतली के हाथ में से ले ली गई थी बखूबी घुस जाय। भाई की आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने वही पुतली वाली तलवार उस छेद में डाल दी, यहां तक कि पूरी तलवार छेद के अन्दर चली गई केवल उसका कब्जा बाहर रह गया। उस समय दोनों भाइयों ने मजबूती के साथ उस पुतली को पकड़ लिया। थोड़ी ही देर बाद गोलाम्बर के नीचे से एक आवाज आई और पहिले की तरह वह गोलाम्बर पुतली सहित घूमने लगा। पहिले धीरे धीरे क्रमशः तेजी के साथ गोलाम्बर घूमने लगा। उस समय दोनों भाइयों के हाथ उस पुतली के साथ ऐसे चिपक गये कि मालूम होता था छुड़ाने से कभी छूटेंगे नहीं।

गोलाम्बर घूमता हुआ जमीन के अन्दर धसने लगा और सर में चक्कर आने के कारण दोनों भाई बेहोश हो गये। जब वे होश में आये तो आंखें खोल कर चारों तरफ देखने लगे मगर अन्धकार के सिवाय और कुछ भी दिखाई न दिया। उस समय इन्द्रजीतसिंह ने अपने तिलिस्मी खंजर के जरिये से रोशनी की और इधर उधर देखने लगे। अपने छोटे भाई को पास में बैठे पाया और उस पुतली को टुकड़े टुकड़े भई हुई देखा जिसके कुछ टुकड़े गोलाम्बर के ऊपर ही थे और कुछ जमीन पर छितरे हुए थे।

इस समय भी दोनों भाइयों ने अपने को उसी गोलाम्बर पर पाया, समझे कि यह गोलाम्बर ही धसता हुआ इस नीचे वाली जमीन के साथ आ लगा है मगर जब छत की तरफ निगाह की तो किसी तरह का निशान या छेद न देख कर छत को बराबर और

बिल्कुल साफ पाया। अब जहा पर दोनो भाई थे वह कोठरी बनिस्बत ऊपर वाले (या पहिले) कमरे के बहुत छोटी थी। चारो तरफ तरह तरह के कल पुर्जे दिखाई दे रहे थे जिनमें से निकल कर फैले हुए लोहे के तार और लोहे की जंजीरे जाल की तरह बिल्कुल कोठडी को घेरे हुए थी। बहुत सी जंजीरे ऐसी थीं जो छत में, बहुत सी दीवारो में, और बहुत सी जमीन के अन्दर घुसी हुई थी। इन्द्रजीतसिंह के सामने की तरफ एक छोटा सा दर्वाजा था जिसके अन्दर दोनो कुमारो को जाना पडेगा अस्तु दोनों कुमार गोलाम्बर के नीचे उतरे और तारो तथा जजीरो से बचते हुए उस दर्वाजे के अन्दर गये। यह रास्ता सुरंग की तरह था जिसकी छत जमीन और दोनो तरफ की दीवारे मजबूत पत्थर की बनी हुई थी। दोनों कुमार थोडी दूर तक उसमें बरा-बर चले गये और इसके बाद ऐसी जगह पहुँचे जहा ऊपर की तरफ निगाह करने से आसमान दिखाई देता था। गौर करने से दोनो कुमारो को मालूम हुआ कि यह स्थान वास्तव में कूए की तरह है। इसकी जमीन (किसी कारण से) बहुत ही नरम और गुदगुदी थी। बीच में एक पतला लोहे का खंभा था खभे के नीचे जजीर के सहारे एक खटोली बंधी हुई थी जिस पर दो तीन आदमी बैठ सकते थे। खटोली से अढ़ाई तीन हाथ ऊचे (खभे मे) एक चर्खी लगी हुई थी और चर्खी के साथ एक ताम्रपत्र बधा हुआ था। इन्द्रजीतसिह ने ताम्रपत्र को पढ़ा, बारीक हरफो मे यह लिखा हुआ था —

"यहा से बाहर निकल जाने वाले को खटोली के ऊपर बैठ कर यह चर्खी सीधी तरफ घुमाना चाहिये। चर्खी सीधी तरफ घुमाने से यह खंभा खटोली को लिये हुए ऊपर की तरफ जायगा और उलटी तरफ घुमाने से नीचे उतरेगा। पीछे हटने वाले

वह रास्ता खुला हुआ नहीं मिलेगा जिधर से वह होगा।"

पत्र पढ कर इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "यहां से बाहर निकल चलने के लिये यह अच्छी तर्कीब है, अब हम लोगों को भी इसी तरह बाहर हो जाना चाहिये, तुम भी इसे पढ़ लो।"

आनन्द०। (पत्र पढ़ कर) आइये इस खटोली में बैठ जाइये।

दोनों कुमार उस खटोली में बैठ गये और इन्द्रजीतसिंह चर्खी घुमाने लगे। जैसे जैसे चर्खी घुमाते थे तैसे तैसे वह खंभा खटोली को लिये हुए ऊपर की तरफ उठता जाता था। जब वह खम्भा कूए के बाहर निकल गया तब अपने चारो तरफ की जमीन और इमारतों को देख कर दोनों कुमार चौंके और इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर आनन्दसिंह ने कहा :—

आनन्द०। यह तो वही तिलिस्मी बाग का चौथा दर्जा है जिसमें हम लोग कई दिन तक रह चुके हैं।

इन्द्रजीत०। बेशक वही है, मगर यह खम्भा हम लोगों को (हाथ का इशारा करके) उस तिलिस्मी इमारत में पहुँचावेगा।

पाठक! हम सन्तति के नवें हिस्से के पहिले बयान में इस बाग के चौथे हिस्से का हाल जो कुछ लिख चुके हैं शायद आपको याद होगा, यदि भूल गये हों तो उसे पुनः पढ़ जाइये। उस बयान में यह भी लिखा जा चुका है कि इस बाग के पूरब तरफ वाले मकान के चारो तरफ पीतल की दीवार थी इसलिये उस मकान का केवल ऊपर वाला हिस्सा दिखाई देता था और कुछ मालूम नहीं होता था कि उसके अन्दर क्या है, हां छत के ऊपर लोहे का एक पतला खम्भा महराबदार था जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कूए के अन्दर गया हुआ था। उस मकान के

चारो तरफ जो पीतल की दीवार थी उसमें एक बन्द दर्वाजा भी दिखाई देता था और उसके दोनो तरफ पीतल ही के दो आदमी हाथ में नगी तलवार लिये खडे थे, इत्यादि।

यह उसी मकान के साथ वाला कुआ था जिसमें से इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिह निकले थे। धीरे धीरे ऊचे होकर दोनों भाई उस मकान की छत पर जा पहुॅचे जिसके चारो तरफ पीतल की दीवार थी। खटोली को मकान की छत तक पहुंचा कर वह खम्भा अड़ गया और दोनो कुमारों को उस पर से उतर जाना पडा। पहिले जब दोनों कुमार इस बाग के (चौथे दरजे के) अन्दर आये थे तब इस मकान के अन्दर का हाल कुछ जान नहीं सकते थे मगर अब तो इत्तफाक ने खुद इन दोनो को उस मकान में पहुँचा दिया इस लिये बडे उत्साह से दोनो भाई इस मकान का तमाशा देखने के लिये तैयार हो गये।

इस मकान की छत पर से एक रास्ता नीचे उतर जाने के लिये था, उसी राह से दोनो भाई नीचे वाली मजिल में उतर कर एक छोटे से कमरे में पहुॅचे जहा की छत जमीन और चारो तरफ की दीवारो में कलई किये हुये डलदार शीशे बड़ी कारीगरी से जड़े हुए थे। अगर एक आदमी भी उस कमरे में जाकर खड़ा हो तो अपनी हजारों सूरते * देख कर घवड़ा जाय। सिवाय इस बात के उस कमरे में और कुछ भी न था, न यह मालूम होता था कि यहा से किसी और जगह जाने के लिये कोई रास्ता है। उस कमरे की अवस्था देख कर इन्द्रजीतसिंह हसे और आनन्दसिह की तरफ देख कर बोले —

---

* यदि दो वडे वड़े शीशे आमने सामने रख कर देखिये तो शीशे के अन्दर दो या चार ही नहीं वल्कि हजारो शीशे एक दूसरे के अन्दर दिखाई देगे।

ां जीत०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस कमरे में इन शीशो
ो गलत एक प्रकार की दिल्लगी है, मगर आश्चर्य है कि
तिलिस्म बनाने वाले ने यह फजूल कार्रवाई क्यों की है। इन
शीशों के लगाने से कोइ फायदा या नतीजा मालूम नहीं होता।

आनन्द०। मैं यही सोच रहा हू मगर विश्वास नहीं होता
कि तिलिस्म बनाने वाले ने इसे व्यर्थ ही बनाया हो। कोई न
कोई बात इसमें जरूर होगी। इसके सिवाय इस मकान
में अभी तक कोई अनूठी बात दिखाई नहीं दी, अगर यहा कुछ है
तो केवल यही एक कमरा है, अस्तु इस कमरे को फजूल समझना
इस इमारत भर को फजूल समझना है, मगर ऐसा नहीं हो
सकता। देखिये इसी मकान से उस लोहे वाले खम्भे का सम्बन्ध
है जिसकी बदौलत हम लोग (रुक कर) सुनिये सुनिये,
यह आवाज कैसी और कहा से आ रही है।

बात करते करते आनन्दसिंह रुक गये और ताज्जुब भरी
निगाहों से अपने भाई की तरफ देखने लगे क्योंकि उन्हे दो आद-
मियों के जोर से बातचीत करने की आवाज सुनाई देने लगी।
वह आवाज यह थी :—

एक०। तो दोनों कुमार उस कूंए से निकल कर यहा आ
जायगे ?

दूसरा०। जरूर आ जायंगे। उस कूंए में जो लोहे का खम्भा
गया हुआ है उसमें एक खटोली बंधी हुई है, उसी खटोली पर
बैठ कर एक कल घुमाते हुए दोनों आदमी यहा आ जायंगे।

पहिला०। तब तो बड़ी मुश्किल होगी। हम लोगों को यह
जगह छोड़ देनी पड़ेगी।

दूसरा०। हम लोग इस जगह को क्यों छोडने लगे ? जिसके
भरोसे पर हम लोग यहा बैठे हैं क्या वह दोनों कुमारों से कम-

जोर है ? खैर उसे जाने दो पहिले तो हमी लोग उन्हे तग करने के लिये बहुत हैं।

पहिला०। इसमें तो कोई शक नही कि हम लोग उनकी ताक़त और जवामर्दी को हवा खिला सकते हैं मगर एक काम जरूर करना चाहिये।

दूसरा०। वह क्या?

पहिला०। इस कमरे का वह दर्वाजा खोल देना चाहिये जिसमें भयानक अजगर रहता ह, जब दोनो उस दर्वाजे को खुला देख कर उसके अन्दर जायगे तो नि सन्देह वह अजगर उन दोनो को निगल जायगा।

दूसरा०। और बाकी के दर्वाजे मजबूती के साथ बन्द कर देने चाहिये जिसमें वे और किसी तरफ जा न सके।

पहिला०। वेशक! इसके अतिरिक्त एक काम और भी जरूर करना चाहिये जिसमें वे दोनो उस दर्वाजे के अन्दर जरूर जाय अर्थात् उन दोनो लड़कियो को भी उस अजगर वाली कोठडी में हाथ पैर बाध कर पहुचा देना चाहिये जिन पर दोनो कुमार आशिक हैं।

दूसरा०। यह तो तुमने बहुत अच्छी बात कही। जब वह अजगर उन लडकियो को निगलना चाहेगा तो वे जरूर चिल्लायेगी, उस समय आवाज पहिचानने पर वे दोनों अपने को किसी तरह रोक न सकेंगे और उस दर्वाजे के अन्दर जरूर चले जायगे और अजगर की खुराक बनेगे।

पहिला०। यह भी अच्छी बात कही, अच्छा उन दोनो को पकड़ लाओ और हाथ पैर बाध कर उस कोठडी मे डाल दो। अगर इस कार्रवाई से काम न चलेगा तो दूसरी कार्रवाई की जायगी मगर उन्हे इस मकान के बाहर जाने न देगे।

इसके बाद वह बातचीत की आवाज बन्द हो गई और यकायक सामने वाले आईने में कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्द-सिंह ने अपने प्यारे ऐयार भैरोसिंह और तारासिंह की सूरत देखी, सो भी इस ढङ्ग से कि दोनों ऐयार अकड़ते हुए एक तरफ से आए और दूसरी तरफ चले गये। इसके बाद दो औरतों की सूरत नजर आई। पहिले तो पहिचानने में शक हुआ मगर तुरन्त ही मालूम हो गया कि वे दोनों कमलिनी और लाडिली हैं। उन दोनों की कमर में लोहे की जंजीर बधी हुई थी और उसे एक मजबूत आदमी अपने हाथ में पकड़े हुए उन दोनों के पीछे पीछे जा रहा था। यह भी देखा कि कमलिनी और लाडिली चलते चलते रुकी और उसी समय पिछले आदमी ने उन दोनों को धक्का दिया जिससे वे झुक गई और सर हिला कर आगे बढ़ती हुई नजरों की ओट हो गई।

भैरोसिंह और तारासिंह यहा कैसे आ पहुँचे? कमलिनी और लाडिली को कैदियों की तरह ले जाने वाला कौन था? इस शीशे के अन्दर उन सभों की सूरतें कैसे दिखाई पडीं? और चारो तरफ से बद रहने पर भी यहा आवाज कैसे आई? इन बातो को सोचते हुए वे दोनों बहुत ही दुखी हुए।

आनन्द०। भैया, यह तो बडे आश्चर्य की बात मालूम पडती है। यह लोग (अगर वास्तव में कोई हों तो) कहते हैं कि अजगर कुमारो को निगल जायगा। मगर हमलोग तो खुद अजगर के मुंह में जाने के लिये तैयार हैं क्योंकि तिलिस्मी बाजे की यही आज्ञा है। अब कहिये तिलिस्मी बाजे की बात झूठी है या ये लोग धोखा देना चाहते हैं?

इन्द्रजीत०। मैं भी इन्हीं बातो को सोच रहा हू। तिलिस्मी बाजे की आवाज को झूठा समझना बुद्धिमानी की बात नहीं है

क्योंकि उसी आवाज के भरोसे पर हमलोग तिलिस्म तोड़ने के लिये तैयार हुए हैं। मगर हां इस बात का पता लगाये बिना अजदहे के मुंह में जाने की भी इच्छा नहीं होती कि यह आवाज कैसी थी। इस आईने में जिन लोगों की सूरतें दिखाई दी हैं या जिन लोगों के बातचीत की आवाज सुनाई दी है वे वास्तव में कोई हैं या बिल्कुल तिलिस्मी खेल ही है? कलई किये हुए आईने में किसी ऐसे आदमी की सूरत क्योंकर दिखाई दे सकती है जो उसके सामने न हो?

आनन्द०। यह एक नई बात है। अगर किसी के सामने हम यह किस्सा बयान करें तो वह यही कहेगा कि तुमको धोखा हुआ, जिन लोगों को तुमने आईने में देखा था वे तुम्हारे पीछे की तरफ से निकल गये होंगे और तुमने उस बात का ख्याल न किया होगा, मगर नहीं, अगर वास्तव में ऐसा होता तो आईने में भी हम उन्हें अपने पीछे की तरफ से निकल जाते हुए देखते। वास्तव में इसका सबब कोई दूसरा ही है जो हमलोगों की समझ में नहीं आता।

इन्द्रजीत०। खैर अब क्या किया जाय? इस मंजिल से नीचे उतर जाने या किसी और तरफ जाने के लिये रास्ता भी तो दिखाई नहीं देता। (उंगली का इशारा करके) सिर्फ वह एक निशान है जहां से आप ही आप एक दर्वाजा पैदा होगा या हम लोग दर्वाजा पैदा कर सकते हैं मगर वह दर्वाजा उसी अजदहे वाली कोठड़ी का है जिसमें जाने के लिये हम लोग यहां आये हैं।

आनन्द०। ठीक है मगर क्या हम लोग तिलिस्मी खंजर से इस शीशे को तोड़ या काट नहीं सकते?

इन्द्रजीत०। जरूर काट सकते हैं मगर यह कार्रवाई अपने मन की होगी।

आनन्द०। तो क्या हर्ज है, आज्ञा दीजिये तो मैं एक हाथ शीशे पर लगाऊं ?

इन्द्रजीत०। इस शीशे को तोड़ कर देखो क्या नतीजा निकलता है। कहीं कोई बखेड़ा न पैदा हो ॥

"अब जो होनी हो सो हो ॥" इतना कह कर आनन्दसिंह तिलिस्मी खंजर लिये हुए आईने की तरफ बढ़े। उसी वक्त बायें तरफ की शीशे वाली दीवार में एक आवाज हो कर छोटा सा दर्वाजा उसी जगह निकल आया जहां कुमार ने हाथ का इशारा करके आनन्दसिंह को बताया था, मगर दोनों कुमारों ने उसके अन्दर जाने का ख्याल भी न किया और आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खंजर का एक भरपूर हाथ अपने सामने वाले शीशे पर लगाया जिसका नतीजा यह हुआ कि शीशे का एक बहुत बड़ा टुकड़ा भारी आवाज दे कर पीछे की तरफ हट गया और आनन्दसिंह इस तरह उसके अन्दर घुस गये जैसे किसी हवा के खिंचाव या बवन्डर ने उन्हें अपनी तरफ खींच लिया हो। इसके बाद वह शीशे का टुकड़ा ज्यों का त्यों बराबर मालूम होने लगा।

हवा के खिंचाव का असर कुछ कुछ इन्द्रजीतसिंह पर भी पड़ा मगर यह दूर खड़े थे इसलिये खिंच कर वहां तक न जा सके मगर आनन्दसिंह उसके पास होने के कारण खिंच कर दर्वाजे के अन्दर चले गये।

आनन्दसिंह का यकायक इस तरह आफत में फंस जाना बहुत ही बुरा हुआ। इस बात का जितना रंज इन्द्रजीतसिंह को हुआ सो वे ही जान सकते थे। उनकी आंखों में आंसू भर आया और वे बेचैन हो कर धीरे से बोले—"जब तक मैं भी इस शीशे के अन्दर न चला जाऊंगा अपने भाई को न छुड़ा सकूंगा या इस बात का पता न लगा सकूंगा कि उस पर क्या मुसीबत

आई।" इतना कह तिलिस्मी खजर लिये हुए शीशे की तरफ बढे मगर दो कदम जाकर फिर रुक गये और सोचने लगे, "कहीं ऐसा न हो कि जिस मुसीवत में आनन्दसिह पड गया है उसी मुसीवत मे मैं भी फंस जाऊं। यदि ऐसा हुआ तो हम दोनों इसी तिलिस्म मे मर कर रह जायगे। यहा कोई ऐसा है भी नहीं जो हम लोगो की सहायता करेगा। अगर ईश्वर की कृपा से तिलिस्म के इस दर्जे को हम अकेले तोड सके तो नि सन्देह आनन्द को छुड़ा लेंगे। कहीं ऐसा न हो कि जब तक हम तिलिस्म तोड़े तब तक आनन्द की जान पर आ बने। बेशक इस आवाज ने हम लोगो को धोखे मे डाल दिया। हमें तिलिस्मी बाजे पर भरोसा करके वेखौफ अजदहे के मुह में चले जाना चाहिये था।" इत्यादि तरह तरह की बातें सोच कर इन्द्रजीतसिंह रुक गये और आनन्दसिंह की जुदाई मे आसू गिराते हुए उसी अजदहे वाली कोठरी में चले गए जिसका दर्वाजा पहिले ही खुल चुका था।

उस कोठरी में सिवाय अजदहे के और कुछ भी न था। अजदहे की मोटाई दो गज घेरे से कम न होगी। उसका खुला हुआ मुंह इस योग्य था कि उद्योग करने से आदमी उसके पेट में बखूबी घुस जाय। वह अजदहा एक सोने के चबूतरे के ऊपर कुण्डली मारे बैठा था। अपने डील डौल और खुले हुए भयानक मुह के कारण वह बहुत ही डरावना मालूम पड़ता था। झूठा और बनावटी मालूम हो जाने पर भी उसके पास जाना या खड़े होना बडे जीवट का काम था।

इन्द्रजीतसिह बेखौफ उस अजदहे के मुह में घुस गये और कोशिश करके आठ या नौ हाथ के लगभग नीचे उतर गए। इस बीच में उन्हे गर्मी और सास लेने की तंगी से बहुत तकलीफ हुई और इसके बाद उन्हे नीचे उतर जाने के लिये बारह

सीढियां मिलीं। नीचे उतर जाने पर कई कदम सुरंग में चलना पड़ा और इसके बाद वह उजाले में पहुँचे।

अब जिस जगह इन्द्रजीतसिंह पहुँचे वह एक छोटा सा तिमञ्जिला मकान संगमर्मर के पत्थरों से बना हुआ था और उसका ऊपरी हिस्सा बिल्कुल खुला था अर्थात् चौक में खड़े होने से आसमान दिखाई देता था। नीचे वाले खण्ड में जहां इन्द्रजीतसिंह खड़े थे चारों तरफ चार दालान थे और चारों दालान अच्छे अच्छे बेशकीमती जवाहिरात, सोने के जड़ाऊ नुमाइशी बरतनों, तथा हर्बों से भरे हुए थे। कुमार उस बेहिसाब दौलत तथा अनमोल चीजों को देखते हुए बाईं तरफ वाले दालान में पहुँचे और वहां की दीवार में एक छोटा सा दर्वाजा देखा। झांकने से मालूम हुआ कि ऊपर के खण्ड में जाने के लिये सीढ़ियां हैं। कुंअर इन्द्रजीतसिंह सीढ़ियों की राह ऊपर चढ़ गये। उस खण्ड में भी चारों तरफ चार दालान थे। पूरब तरफ वाले दालान में कल पुरजे लगे हुए थें, उत्तर तरफ वाले दालान में एक चबूतरे के ऊपर लोहे का सन्दूक ठीक उसी ढंग का था जैसा कि तिलिस्मी बाजा कुमार देख चुके थे। दक्खिन तरफ वाले दालान में कई पुतलियां खड़ी थीं जिनके पैरों में गड़ाड़ीदार पहिये की तरह बना हुआ था, जमीन में लोहे की नालियां जड़ी हुई थीं और उन नालियों में वह पहिया चढ़ा हुआ था अर्थात् वह पुतलियें इस लायक थीं कि पहियों और नालियों की बरकत से बंधे हुए (महदूद) स्थान तक चल फिर सकती थीं, और पच्छिम तरफ वाले दालान में एक शीशे की दीवार के सिवाय और कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

उन पुतलियों में कुमार ने अपने जान पहिचान और संगी साथियों की मूरतें देखीं। इन्हीं में भैरोसिंह, तारासिंह, कमलिनी,

लाडिली, राजा गोपालसिंह और अपनी तथा अपने छोटे भाई की भी मूरत देखी जो डील डौल और नक्शे में बहुत साफ बनी हुई थी। कमलिनी और लाडिली की मूरत के कमर में लोहे की जंजीर बंधी हुई थी और एक मजबूत आदमी उसे थामे हुए था। कुमार ने मूरत को हाथ का धक्का देकर चलाना चाहा मगर वह अपनी जगह से एक अंगुल भी न हिली। कुमार ताज्जुब से उसकी तरफ देखने लगे।

कुमार इन सब चीजों को गौर और ताज्जुब की निगाह से देख रहे थे कि यकायक दो आदमियों के बातचीत की आवाज इनके कान मे पडी। चौंक कर चारो तरफ देखने लगे मगर किसी आदमी की सूरत न दिखाई पडी। थोडी ही देर मे मालूम हो गया कि उत्तर तरफ वाले दालान में चबूतरे के ऊपर जो लोहे वाला सन्दूक है उसी में से आवाज निकल रही है। कुमार समझ गए कि यह सन्दूक भी उसी तरह का तिलिस्मी बाजा है जैसा कि पहले देख चुके है अस्तु वे तुरत उस बाजे के पास चले गये और आवाज सुनने लगे। वह बातचीत (आवाज) ठीक वही थी जो कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह शीशे वाले कमरे मे सुन चुके थे अर्थात् एक ने कहा, 'तो क्या दोनो कुमार उस कूए मे से निकल कर यहा आ जायेगे ?" उसी के बाद दूसरे आदमी के बोलने की आवाज आई मानो दूसरे ने जवाब दिया, "जरूर आ जायगे। उस कूए में जो लोहे का खम्भा गडा हुआ है उसमें एक खटोली बंधी हुई है, उसी खटोली पर बैठ कर एक कल घुमाते हुए दोनो आदमी यहा आ जायगे।" इत्यादि जो जो बाते दोनो कुमारों ने उस शीशे वाले कमरे में सुनी थी ठीक वे ही बाते उसी ढग की आवाज में कुमार ने इस बाजे मे सुनी। बडा ताज्जुब हुआ और उन्होने इस बात का

निश्चय कर लिया कि अगर वह शीशे वाला कमरा इस दीवार के बगल ही में है तो निःसन्देह यही आवाज हम दोनों भाइयों ने सुनी थी। इसके साथ ही कुमार की निगाह पश्चिम तरफ वाले दालान में शीशे की दीवार के ऊपर पड़ी और वे धीरे से बोल उठे, "बेशक इसी शीशे वाली दीवार के उस तरफ वह कमरा है और ताज्जुब नहीं कि उस कमरे में इस तरफ यही शीशे की दीवार हम लोगों ने देखी हो।"

इतने ही में दक्खिन तरफ वाले दालान में से धीरे धीरे कुछ कल पुर्जों के घूमने की आवाज आने लगी। कुमार ने उस तरफ देखा तो भैरोसिंह और तारासिंह की मूरत को अपने ठिकाने से चलते हुए पाया। उन दोनों मूरतों की अकड़ कर चलने वाली चाल भी ठीक वैसी ही थी जैसी कुमार उस शीशे के अन्दर देख चुके थे। ये दोनों मूरतें चलती हुई उस शीशे वाली दीवार के पास पहुँचीं। उसी समय दीवार में एक दर्वाजा निकल आया और दोनों मूरतें उसके अन्दर घुस गईं। इसके बाद कमलिनी और लाडिली की मूरत चली और उनके पीछे वाला आदमी जो जंजीर थामे हुए था पीछे पीछे चला, और उसी तरह शीशे वाली दीवार के अन्दर जाकर थोड़ी देर में अपने ठिकाने लौट आया और वह दर्वाजा ज्यों का त्यों बन्द हो गया। अब कुँअर इन्द्रजीतसिंह के दिल में किसी तरह का शक नहीं रहा, उन्हें निश्चय हो गया कि उस शीशे वाले कमरे में जो कुछ हम दोनों ने सुना और देखा वास्तव में कुछ भी न था या अगर कुछ था तो वही जो कि यहां आने से मालूम हुआ है, साथ ही इसके कुमार यह भी सोचने लगे कि ये हमारे संगी साथियों और मुलाकातियों की मूरतें पुरानी बनी हुई हैं या तस्वीरों की तरह इन्हें भी राजा गोपालसिंह ने स्थापन किया

है ? और इन मूरतों का चलना फिरना तथा इस बाजे का बोलना किसी खास वक्त पर मुकर्रर है या घण्टे घण्टे दो दो घण्टे पर ऐसा ही हुआ करता है ? मगर नहीं, घड़ी घड़ी व्यर्थ ऐसा होना अनुचित है। तो क्या जब शीशे वाले कमरे में कोई जाता है तभी ऐसी बातें होती हैं ? क्योंकि हमलोगों के भी वहां पहुंचने पर यही दृश्य देखने में आया था। अगर मेरा यह खयाल ठीक है तो अब भी उस शीशे वाले कमरे में कोई पहुंचा होगा। गैर आदमी का वहां पहुंचना तो असम्भव है अगर कोई वहां पहुंचा है तो चाहे वह आनन्दसिंह हो या राजा गोपाल-सिंह हों। कौन ठिकाना फिर किसी कारण से आनन्दसिंह वहां जा पहुंचे हों। अगर ऐसा हो तो जिस तरह इस बाजे की आवाज उस कमरे में पहुंचती है उसी तरह मेरी आवाज भी वहां वाला सुन सकता है। इत्यादि बातें कुमार ने बहुत जल्दी जल्दी सोचीं और इसके बाद ऊंचे स्वर में बोले, "शीशे वाले कमरे में कौन है ?"

जवाब०। मैं हूं आनन्दसिंह, क्या मैं भाई साहब की आवाज सुन रहा हूं ?

इन्द्रजीत०। हां, मैं यहां आ पहुंचा हूं, तुम भी जहां तक जल्दी हो सके उस अजदहे के मुंह में चले जाओ और हमारे पास पहुंचो।

जवाब०। बहुत अच्छा।

सातवाँ बयान

किस्मत जब चक्कर खिलाने लगती है तो दम भर भी सुख की नींद सोने नहीं देती। इसकी बुरी निगाह के नीचे पड़े हुए आदमी को तभी कुछ निश्चिन्ती होती है जब इसका पूरा दौरा

(जो कुछ करना हो कर धर के) बीत जाता है। इस किस्से को पढ कर पाठक जान गए होंगे कि इन्द्रदेव भी सुखियों की पंक्ति में गिने जाने लायक नहीं है। वह भी जमाने के हाथों से अच्छी तरह सताया जा चुका है, परन्तु उस जवामर्द की आंखों में बहुत सी रातें उन दिनों की भी बीत चुकी हैं जब कि उसका मजबूत दिल कई तरह की खुशियों से नाउम्मीद हो कर "हरि-इच्छा" का मन्त्र जपता हुआ एक तरह से बेफिक्र हो बैठा था। मगर आज उसके आगे वही दु:खदाई घड़ी पहिले से दूना विकराल रूप धारण करके आ खड़ी हुई है। इतने दिनों तक तो वह यह समझ कर कि उसकी स्त्री और लड़की इस दुनिया से कूच कर गईं सब्र कर के बैठा हुआ था लेकिन जब से उसे अपनी स्त्री और लड़की के इस दुनिया में मौजूद रहने का कुछ कुछ हाल और आपुस वालों की बेईमानी का पता मालूम हुआ है तब से अफसोस रञ्ज और गुस्से से उसके दिल की अजब हालत हो रही है।

लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को समझा बुझा कर जब इन्द्रदेव जमानिया की तरफ बलभद्रसिंह को छुड़ाने की नीयत से रवाना हुआ तो पहाड़ी के नीचे पहुंच कर अपने अस्तबल में से एक उम्दा घोड़ा लिया और उस पर सवार हो पांच ही सात कदम आगे बढ़ा था कि राजा गोपालसिंह का भेजा हुआ एक सवार आ पहुंचा जिसने सलाम कर के एक चीठी इन्द्रदेव के हाथ में दी और इन्द्रदेव ने उसे खोल कर पढ़ा।

इस चीठी में राजा गोपालसिंह ने यही लिखा था कि आप पत्र पढ़ते ही अकेले मेरे पास चले आइये। यह सुन कर आपको बड़ा आश्चर्य होगा कि आज कल इन्दिरा मेरे घर में है और उसकी मां भी जीती है जो यद्यपि तिलिस्म में फंसी हुई है मगर मैं उसे अपनी आंखों से देख आया हूं।

इस चीठी को पढ़ कर इन्द्रदेव कितना खुश हुआ होगा यह हमारे पाठक स्वयम् समझ सकते हैं। अस्तु वह तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुआ और समय से पहिले ही जमानिया जा पहुंचा। जब राजा गोपालसिंह को उसके आने की खबर हुई तो वह दर्वाजे तक आ कर बड़ी मुहब्बत से इन्द्रदेव को घर के अन्दर ले गये और गले से मिल कर अपने पास बैठाया और इन्दिरा को बुलवा भेजा। जब इन्दिरा ने अपने बाप के आने की खबर पाई दौड़ती हुई राजा गोपालसिंह के पास आई और अपने बाप के पैरों पर गिर कर रोने लगी। इस समय कमरे के अन्दर राजा गोपालसिंह इन्द्रदेव और इन्दिरा के सिवाय और कोई भी न था। एकान्त कर दिया गया था यहां तक कि जो लौंडी इन्दिरा को बुला कर लाई थी वह भी बाहर कर दी गई थी।

इन्दिरा के रोने ने राजा गोपालसिंह और इन्द्रदेव का कलेजा हिला दिया। वे दोनों भी रोने से अपने को बचा न सके। मुश्किल से दिल को सम्हाला और इन्दिरा को दिलासा देने लगे। थोड़ी देर बाद जब इन्दिरा का जी ठिकाने हुआ और इन्द्रदेव ने उसका हाल पूछा तो उसने अपना दर्दनाक किस्सा कहना शुरू किया।

इन्दिरा का हाल जो कुछ हम ऊपर के बयानों में लिख चुके हैं वह और उसके बाद अपना तथा अपनी मा का बचा हुआ किस्सा भी इन्दिरा ने बयान किया जिसे सुन कर इन्द्रदेव की आंखें खुल गईं और उसने एक लम्बी सांस ले कर कहा —

"अफसोस ! हर दम साथ रहने वालों की जब यह दशा है तो किस पर विश्वास किया जाय ! अस्तु, कोई चिन्ता नहीं ॥"

गोपाल०। मेरे प्यारे दोस्त ! जो कुछ होना था सो हो गया,

अब अफसोस करना वृथा है। क्या उन राक्षसों से मैं कुछ कम सताया गया हूं? मगर नहीं, ईश्वर न्याय करने वाला है, तुम देखोगे कि उनका पाप उन्हें किस तरह खाता है। रात बीत जाने पर इन्दिरा की मां से भी तुम्हारी मुलाकात कराऊंगा। अफसोस, दुष्ट दारोगा ने उसे ऐसी जगह पहुंचा दिया है कि जहां से वह स्वयं तो निकल ही नहीं सकती मगर मैं खुद तिलिस्म का राजा कहला कर भी उसे छुडा नहीं सकता। अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तिलिस्म तोड़ रहे हैं, आशा है कि वह बेचारी भी बहुत जल्द इस मुसीबत से छूट जायगी।

इन्द्रदेव०। क्या इस समय मैं उसे नहीं देख सकता?

गोपाल०। नहीं, यदि दोनों कुमार तिलिस्म तोड़ने में हाथ न लगा चुके होते तो शायद मैं ले भी चलता मगर अब रात के वक्त वहां जाना असम्भव है।

जिस समय इन्द्रदेव और गोपालसिंह की मुलाकात हुई थी चिराग जल चुका था। यद्यपि इन्दिरा ने अपना किस्सा संक्षेप में बयान किया था मगर फिर भी इस काम में डेढ़ पहर का समय बीत गया था। इसके बाद राजा गोपालसिंह ने अपने सामने इन्द्रदेव को खिलाया पिलाया और तब इन्द्रदेव ने अपना तथा रोहतासगढ़ का हाल कहना शुरू किया और इस समय तक जो मामले हो चुके थे सब खुलासा बयान किये। तमाम रात बातचीत में बीत गई, सवेरा होने पर जरूरी कामों से छुट्टी पाकर तीनों आदमी तिलिस्म के अन्दर जाने के लिये तैयार हुए।

इस जगह हमें यह कह देना चाहिये कि इन्दिरा को तिलिस्म के अन्दर से निकाल कर अपने घर में ले आना राजा गोपालसिंह ने बहुत गुप्त रक्खा था और ऐयारी के ढंग पर उसकी सूरत भी बदलवा दी गई थी।

आठवां बयान

आनन्दसिंह की आवाज सुनने पर इन्द्रजीतसिंह का शक जाता रहा और वह आनन्दसिंह के आने का इन्तजार करते हुए नीचे उतर आए। थोड़ी ही देर बाद अपने छोटे भाई को उसी राह से आते देखा जिस राह से वह स्वयं इस मकान में आए थे।

इन्द्रजीतसिंह अपने भाई के लिये बहुत ही दुखी थे। उन्हें विश्वास हो गया था कि आनन्दसिंह किसी आफत में फंस गये और बिना तरद्दुद के उनका छूटना कठिन है मगर थोड़ी ही देर में बिना तरद्दुद के उनके आ मिलने से भी उन्हें कम ताज्जुब न हुआ। उन्होंने आनन्दसिंह को गले से लगा लिया और कहा :—

इन्द्रजीत०। मैं तो समझता था कि तुम किसी आफत में फंस गये हो और तुम्हारे छुड़ाने के लिये बहुत ज्यादे तरद्दुद करना पड़ेगा।

आनन्द०। जी नहीं, वह मामला तो बिल्कुल खेल ही निकला। सच तो यह है कि इस तिलिस्म में दिल्लगी और मसखरेपन का हिस्सा भी मिला हुआ है।

इन्द्रजीत०। तो तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई ?

आनन्द०। कुछ भी नहीं! हवा के खिंचाव के कारण जब मैं शीशे के अन्दर चला गया तो वह शीशे का टुकड़ा जिसे दर्वाजा कहना चाहिये बन्द हो गया और मैंने अपने को पूरे अन्धकार में पाया। तिलिस्मी खंजर का कब्जा दबा कर रोशनी की तो सामने एक छोटा सा दर्वाजा एक पल्ले का दिखाई पड़ा जिसमें खैंचने के लिये लोहे की दो कड़िया लगी हुई थी। मैंने

ने हाथ से एक कड़ी पकड़ कर दर्वाजा खैंचना चाहा मगर यह थोड़ा सा खिच कर रह गया, सोचा कि इसमें दो कड़ियां इसी लिये लगी हैं कि दोनो हाथो से पकड कर दर्वाजा खैंचा जाय, अस्तु तिलिस्मी खंजर म्यान में रख लिया जिससे पुनः अन्धकार हो गया और इसके वाद दोनों हाथो से दोनों कड़ियों को पकड़ कर अपनी तरफ खैंचना चाहा मगर मेरे दोनों हाथ उन कडियो में चपक गये और दर्वाजा भी न खुला। उस समय मैं वहुत ही घवड़ा गया और हाथ छुड़ाने के लिये जोर करने लगा। दस बारह पल के वाद वह कड़ी पीछे की तरफ हटी और मुझे खींचती हुई दूर तक ले गई। मैं यह नहीं कह सकता कि कड़ियो के साथ ही साथ दर्वाजे का कितना वड़ा हिस्सा पीछे की तरफ हटा था मगर इतना मालूम हुआ कि मैं ढालवीं जमीन की तरफ जा रहा हूं। आखिर जव उन कडियों का पीछे हटना वन्द हो गया तो मेरे दोनों हाथ भी छूट गये, इसके वाद थोड़ी देर तक घड़घड़ाहट की आवाज आती रही और तव तक मैं चुपचाप खडा रहा।

जब घड़घड़ाहट की आवाज वन्द हो गई तो मैंने तिलिस्मी खंजर निकाल कर रोशनी की और अपने चारो तरफ गौर करके देखा। जिधर से ढालवीं जमीन पर उतरता हुआ यहा तक पहुँचा था उस तरफ अर्थात् पीछे की तरफ विना चौखट का दर्वाजा वन्द पाया जिससे मालूम हुआ कि अव मैं पीछे की तरफ नहीं हट सकता मगर दाहिनी तरफ एक और दर्वाजा देख कर मैं उसके अन्दर चला गया और दो कदम के वाद घूम कर फिर मुझे ऊंची जमीन अर्थात् चढ़ाव पर चढ़ना पड़ा जिससे साफ मालूम हो गया कि मैं जिधर से उतरता हुआ आया था अव उसी तरफ पुनः जा रहा हू। कई कदम जाने के

बाद पुनः एक बन्द दर्वाजा मिला मगर वह आप से आप खुल गया। जब मैं उसके अन्दर गया तो अपने को उसी शीशे वाले कमरे में पाया और घूम कर पीछे की तरफ देखा तो साफ दीवार नजर पड़ी। यह नहीं मालूम होता था कि मैं किस दर्वाजे को लांघ कर कमरे में आ पहुंचा। इसी से मैं कहता हूं कि तिलिस्म बनाने वाले मसखरे भी थे क्योंकि उन्हीं की चालाकियों ने मुझे घुमा फिरा कर पुनः उसी कमरे में पहुंचा दिया जिसे एक तरह की जबर्दस्ती कहनी चाहिये।

मैं उस कमरे में खड़ा हुआ ताज्जुब से उसी शीशे की तरफ देख रहा था कि पहिले की तरह दो आदमियों के बातचीत की आवाज सुनाई दी। मैं आपके साथ उस कमरे में था तब जो जो बातें सुनने में आई थीं वे ही बाते सुनी और जिन लोगों को उस आईने के अन्दर आते जाते देखा था उन्हीं को पुनः देखा। निःसन्देह मुझे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और मैं बड़े गौर से उन बातों को सोचने लगा कि इतने ही में आपकी आवाज सुनाई दी और आपकी आज्ञानुसार अजदहे के मुंह में जाकर मैं यहां तक आ पहुंचा। आप यहां किस राह से आये हैं?

इन्द्रजीत०। मैं भी उसी अजदहे के मुंह में से होता हुआ आया हूं। यहां आने पर मुझे जो जो बाते मालूम हुई हैं उनसे शीशे वाले कमरे का कुल भेद मालूम हो गया।

आनन्द०। सो क्या?

इन्द्रजीत०। मेरे साथ आओ, मैं सब तमाशा तुम्हें दिखाता हूं।

अपने छोटे भाई को साथ लिये कुंअर इन्द्रजीतसिंह नीचे के खण्ड वाली सब चीजों को दिखा कर ऊपर वाले खण्ड में गये और वहां का बिल्कुल हाल कहा। बाजा और मूरत इत्यादि भी दिखाया और बाजे के बोलने तथा मूरत के चलने फिरने के

...ज में भी अच्छी तरह समझाया जिससे इन्द्रजीतसिंह की तरह आनन्दसिंह का भी शक जाता रहा। इसके बाद आनन्दसिंह ने पूछा कि अब क्या करना चाहिये ?

इन्द्रजीत०। यहां से बाहर निकलने के लिये दर्वाजा खोजना चाहिये। यह तो हम निश्चय कर चुके हैं कि इस खण्ड के ऊपर जाने के लिये कोई रास्ता नहीं है और न ऊपर जाने से कुछ काम ही चलेगा अतएव हमें पुन नीचे वाले खण्ड में चल कर कोई दर्वाजा ढूंढना चाहिये या तुमने अगर कोई और बात सोची हो तो कहो।

आनन्द०। मैं तो यह सोचता हूं कि हम लोग तिलिस्म तोड़ने के लिये यहा आये हैं इस लिये जहा तक बन पड़े यहा की चीजों को तोड़ फोड़ और नष्ट भ्रष्ट करना चाहिये, इसी बीच में कहीं न कहीं कोई न कोई दर्वाजा दिखाई दे ही जायगा।

इन्द्रजीत०। (मुस्कुरा कर) यह भी एक बात है, खैर तुम अपने ही खयाल के मुताबिक कार्रवाई करो, हम तमाशा देखते हैं।

आनन्द०। बहुत अच्छा, तो आइये पहिले उस दरवाजे को खोलें जिसमें पुतलिया जाती हैं।

इतना कह कर आनन्दसिंह उस दालान में गये जिसमें कमलिनी लाडिली तथा और ऐयारों की मूरते थी। हम ऊपर लिख चुके हैं कि मूरते लोहे की नालियों पर चल कर शीशे वाली दीवार के पास पहुचती थी और वहा का दर्वाजा आप से आप खुल जाता था। आनन्दसिंह भी उसी दर्वाजे के पास गये और कुछ सोच कर उन्हीं नालियों पर पैर रक्खा जिन पर पुतलिया चलती थीं।

नालियों पर पैर रखने के साथ ही दरवाजा खुल गया और दोनों भाई उस दर्वाजे के अन्दर चले गये। इन्हे वहा दो रास्ते

दिखाई पड़े, एक का तो दर्वाजा बन्द था और जञ्जीर में एक भारी ताला लगा हुआ था और दूसरा रास्ता शीशे वाली दीवार की तरफ गया हुआ था जिसमें पुतलियों के लिये नालियां बनी हुई थी। पहिले दोनों कुमार पुतलियों के आने का हाल मालूम करने की नीयत से उसी तरफ गये और वहा अच्छी तरह घूम फिर कर देखने और जाच करने पर जो कुछ उन्हे मालूम हुआ उसका तत्व हम नीचे लिखते हैं।

वहा शीशे की तीन दीवारे थी और हर एक के बीच में आदमियो के चलने फिरने लायक रास्ता छूटा हुआ था। पहिली शीशे की दीवार जो कमरे की तरफ थी सादी थी अर्थात् उस शीशे के पीछे पारे की कलई न थी, हा उसके बाद वाली दूसरी शीशे वाली दीवार में कलई की हुई थी और जमीन पर पुतलियो के चलने के लिये नालिया इस ढङ्ग से बनी हुई थीं कि बाहर वालो को दिखाई न पडे और पुतलिया कलई वाले शीशे के साथ सट सकें। यही सबब था कि कमरे की तरफ देखने वालों को शीशे के अन्दर आदमी चलता हुआ मालूम पडता था और उन नकली आदमियो की परछाहीं जो शीशे मे पडती थी साथ सटे रहने के कारण देखने वाले को मालूम नही पड़ती थी। मूरतें आगे जा कर घूमती हुई दीवार के पीछे चली जाती थीं। उसके बाद फिर शीशे की दीवार थी और उस पर नकली कलई की हुई थी। इस गली में भी नाली बनी हुई थी और उसी राह से मूरतें लौट कर अपने ठिकाने जा पहुँचती थीं।

इन सब चीजों को देख कर जब कुमार लौटे तो उस बन्द दर्वाजे के पास आये जिसमे बड़ा सा ताला लगा हुआ था और दर्वाजा खोल कर दोनो भाई उसके अन्दर गए। तीन चार कदम जाने बाद नीचे उतरने के लिये सीढिया मिली। इन्द्रजीतसिंह

ने हाथ में तिलिस्मी खंजर लिये हुए रोशनी कर रहे थे।

दोनों भाई सीढ़ियां उतर कर नीचे चले गए और इसके बाद उन्हें एक बारीक सुरंग में चलना पड़ा। थोड़ी दूर बाद एक और दर्वाजा मिला, उसमें भी ताला लगा हुआ था। आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खंजर से उसकी भी जंजीर काट डाली और दर्वाजा खोल कर दोनों भाई उसके पार चले गए।

इस समय दोनों कुमारों ने अपने को एक बाग में पाया। यह बाग छोटे छोटे जंगली पेड़ों और लताओं से भरा हुआ था। यद्यपि यहां की क्यारियां निहायत खूबसूरत और संगमरमर के पत्थर से बनी हुई थीं मगर उनमें सिवाय झाड़ झंखाड़ के और कुछ भी न था। इसके अतिरिक्त और भी चारो तरफ एक प्रकार का जंगल हो रहा था, हां दो चार पेड़ फल के वहां जरूर थे और एक छोटी सी नहर भी एक तरफ से आ कर बाग में घूमती हुई दूसरी तरफ निकल गई थी। बाग के बीचोबीच में एक छोटा सा बंगला भी बना हुआ था जिसकी जमीन दीवार और छत इत्यादि सब पत्थर की और मजबूत बनी हुई थी मगर फिर भी उसका कुछ हिस्सा टूट फूट कर खराब हो गया था।

जिस समय दोनों कुमार इस बाग में पहुंचे थे उस समय दिन बहुत कम बाकी था और ये दोनों भी भूख प्यास और थकावट से परेशान हो रहे थे अस्तु नहर के किनारे जा कर दोनों ने हाथ मुंह धोया और जरा आराम लेकर जरूरी काम के लिए चले गये। उससे भी छुट्टी पाने बाद दो चार फल तोड़ कर खाए और नहर का जल पीकर इधर उधर घूमने फिरने लगे। उसी समय उन दोनों को यह भी मालूम हो गया कि जिस दर्वाजे की राह से वे दोनों इस बाग में आये थे वह आप से आप ऐसा बन्द हो गया कि उसके खुलने की उम्मीद भी न रही।

दोनों भाई घूमते हुए बीच वाले बगले में आये। देखा कि तमाम जमीन कूड़े कर्कट से खराब हो रही है। एक पेड़ से बड़े बड़े पत्तों वाली छोटी सी डाली तोड़ कर थोड़ी सी जमीन साफ की और रात भर उसी जगह रह कर गुजारा किया।

सुबह को जरूरी कामों से छुट्टी पा कर दोनों भाइयों ने नहर में दुपट्टा (कमरबन्द) धो कर सूखने डाला और जब वह सूख गया तो स्नान पूजा से निश्चिन्त हो दो चार फल खा कर पानी पीया और बाग में घूमने लगे।

इन्द्रजीत०। जहां तक मैं सोचता हूं यह वही बाग है जिसका हाल तिलिस्मी बाजे से मालूम हुआ था मगर उस पिण्डी का कहीं पता नहीं लगता।

आनन्द०। निःसन्देह यह वही बाग है, यह बीच वाला बगला हमारा शक दूर करता है, इसलिये जल्दी करके इस बाग से बाहर हो जाने की फिक्र न करनी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि मनुवाटिका इसी का नाम हो और हम लोग धोखे में आ कर इसके बाहर हो जाय। बाजे ने भी यही कहा था कि यदि अपना काम किये बिना 'मनुवाटिका' के बाहर हो जाओगे तो तुम्हारे किये कुछ भी न होगा। न तो पुनः 'मनुवाटिका' में जा सकोगे और न अपनी जान ही बचा सकोगे।

इन्द्रजीत०। रिक्तगन्थ में भी तो यही बात लिखी हुई है, इस लिये मैं भी यहां से बाहर निकल चलने के लिये नहीं कह सकता, जिस तरह हो उस पिण्डी का पता लगाना ही चाहिये।

पाठक, तिलिस्मी किताब (रिक्तगन्थ) और तिलिस्मी बाजे से दोनों कुमारों को यह मालूम हुआ था कि मनुवाटिका में किसी जगह जमीन पर एक छोटी सी पिण्डी बनी हुई मिलेगी, उसका पता लगा कर उसी को अपने मतलब का दर्वाजा सम-

झना। यही सबब था कि दोनों कुमार उस पिण्डी को खोज निकालने की फिक्र में लगे हुए थे मगर उस पिण्डी का पता नहीं लगता था। लाचार उन्हें कई दिनों तक उस बाग में रहना पड़ा। आखिर एक घनी झाड़ी के अन्दर एक छोटी सी पिण्डी का पता लगा। वह पिण्डी हाथ भर ऊंची और तीन हाथ के घेरे में होगी। यह किसी तरह भी मालूम नहीं हो सकता था कि पिण्डी पत्थर की है या लोहे पीतल इत्यादि किसी धातु की बनी हुई है। जिस चीज से वह पिण्डी बनी हुई थी उसी चीज से बना हुआ एक सूर्यमुखी का फूल उसके ऊपर जड़ा हुआ था और वही फूल उस पिण्डी की पूरी पहिचान थी। आनन्दसिंह ने खुश हो कर इन्द्रजीतसिंह से कहा —

आनन्द०। खैर किसी तरह ईश्वर की कृपा से इस पिण्डी का पता तो लग गया। मैं समझता हूं इसमें आपको भी किसी तरह का शक न होगा?

इन्द्र०। हमें किसी तरह का शक नहीं है। यह पिण्डी निःसन्देह वही है जिसे हम लोग खोज रहे थे। अब इस जमीन को अच्छी तरह साफ करके अपने सच्चे सहायक रिक्तगन्थ से हाथ धो बैठने के लिये तैयार हो जाना चाहिये।

आनन्द०। जी हां ऐसा ही होना चाहिये, यदि रिक्तगन्थ में कुछ सन्देह हो तो उसे पुनः देख जाइये।

इन्द्रजीत०। यद्यपि उस ग्रन्थ में मुझे किसी तरह का सन्देह नहीं है और जो कुछ उसमें लिखा है मुझे अच्छी तरह याद है ...र शक मिटाने के लिये एक दफे उलट पुलट कर देख लूंगा।

आनन्द०। मेरा भी यही इरादा है और यह काम घन्टे दो घन्टे ...न्दर हो भी जायगा। अस्तु आप पहिले रिक्तगन्थ देख ...ये तब तक मैं इस झाड़ी को साफ कर डालता हूं।

इतना कह कर आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खञ्जर से काट काट के पिण्डी के चारो तरफ के झाड़ झखाड़ को साफ करना शुरू किया और इन्द्रजीतसिंह नहर के किनारे बैठ कर तिलिस्मी किताब को उलट पुलट कर देखने लगे। थोड़ी देर के बाद इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह के पास आये और बोले—"लो अब तुम भी इसे देख कर अपना शक मिटा लो तब तक तुम्हारे काम को मैं पूरा कर डालता हूं।"

आनन्दसिंह ने अपना काम छोड़ दिया और अपने भाई के हाथ से रिक्तगन्थ लेकर नहर के किनारे चले गये तथा इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खंजर से पिन्डी के चारो तरफ की सफाई करनी शुरू कर दी। थोड़ी ही देर में जो कुछ घास फूस झाड़ झंखाड़ पिन्डी के चारो तरफ था साफ हो गया और आनन्दसिंह भी तिलिस्मी किताब देख कर अपने भाई के पास चले आये और बोले, "अब क्या आज्ञा है?"

इसके जवाब में इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "बस अब नहर के किनारे चलो और रिक्तगन्थ का आटा गूंधो।"

दोनो भाई नहर के किनारे आये और एक ठिकाने साएदार जगह देख कर बैठ गये। उन्होंने नहर के किनारे वाले एक पत्थर की चट्टान को जल से अच्छी तरह धोकर साफ किया और इसके बाद रिक्तगन्थ पानी में डुबो कर उस पत्थर पर रख दिया। देखते ही देखते जो कुछ पानी रिक्तगन्थ में लगा था सब उसी में पच गया। फिर हाथ से उस पर पानी डाला, वह भी पच गया। इसी तरह बार बार चुल्लू भर भर कर उस पर पानी डालने लगे और ग्रन्थ पानी पी पी कर मोटा होने लगा। थोड़ी देर के बाद वह मुलायम हो गया और तब आनन्दसिंह ने उसे हाथ से मल मल के आटे की तरह गूंधना शुरू किया। शाम

होते होते तक उसकी सूरत ठीक गूंधे हुए आटे की तरह हो गई मगर रंग उसका काला था। आनन्दसिंह ने उस आटे को उठा लिया और अपने भाई के साथ उस पिन्डी के पास आकर उनकी आज्ञानुसार तमाम पिन्डी पर उस आटे का लेप कर दिया। इसके बाद दोनों भाई वहां से किनारे हो गये और जरूरी कामों से छुट्टी पाने के काम में लगे।

नौवां बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है और दोनों कुमार उसी बाग के बीच वाले बंगले के दालान में सोये हुए हैं। यकायक किसी तरह की भयानक आवाज सुन कर दोनों भाइयों की नींद टूट गई और वे दोनों उठ कर बंगले के नीचे चले आये। चारो तरफ देखने पर जब उनकी निगाह उस तरफ गई जिधर पिन्डी थी तो कुछ रोशनी मालूम पड़ी, दोनों भाई उसके पास गए तो देखा कि उस पिन्डी में से हाथ भर ऊंची लाट निकल रही है। यह लाट (आग की ज्योति) नीले और कुछ पीले रंग की मिली जुली थी। साथ ही इसके यह भी मालूम हुआ कि लाह या राल की तरह वह पिन्डी गलती हुई जमीन के अन्दर धसती चली जाती है, या यों कहना चाहिये कि जल कर छोटी होती जाती है। उस पिन्डी में से जो धूआं निकलता था उसमें धूप या लोबान की सी खुशबू आती थी।

थोड़ी देर तक दोनों कुमार वहां खड़े रह कर तमाशा देखते रहे इसके बाद इन्द्रजीतसिंह यह कहते हुए बंगले की तरफ लौटे कि ऐसा तो होना ही था, मगर उस भयानक आवाज का पता न लगा, शायद इसी में से वह आवाज भी निकली हो! इसके जवाब में आनन्दसिंह ने कहा, "शायद ऐसा ही हो।।"

दोनों कुमार अपने ठिकाने चले आए और बची हुई रात बातचीत में काटी क्योंकि खटका हो जाने के कारण फिर उन्हें नींद न आई। सवेरा होने पर जब वह दोनों पुनः उस पिण्डी के पास गये तो देखा कि आग बुझी हुई है और पिण्डी की जगह पीले रंग की राख मौजूद है। यह देख दोनों भाई वहां से लौट आए और अपने नित्य कर्म से छुट्टी पा कर पुन. वहां गये और उसी पीले रंग की राख को निकाल कर जगह साफ करने लगे। मालूम हुआ कि वह पिण्डी जो जल कर राख हो गई है लग भग तीन हाथ के जमीन के अन्दर थी इसीलिये राख साफ हो जाने पर तीन हाथ का गड़हा इतना लम्बा चौड़ा निकला कि उसमें दो आदमी बखूबी जा सकते थे। गड़हे के अन्त में लोहे का एक तख्ता था जिसमें कड़ी लगी हुई थी। इन्द्रजीतसिंह ने कड़ी में हाथ डाल कर वह लोहे का तख्ता उठा लिया और आनन्दसिंह को देकर कहा, "इसे किनारे रख दो।"

लोहे का तख्ता हटा देने बाद ताले के मुंह की तरह एक सूराख नजर आया जिसमें इन्द्रजीतसिंह ने वही तिलिस्मी ताली डाली जो पुतली के हाथ में से ली थी। कुछ तो वह ताली ही विचित्र बनी हुई थी और कुछ ताला खोलती समय इन्द्रजीतसिंह को भी बुद्धि से काम लेना पड़ा। ताला खुल जाने बाद दर्वाजे की तरह एक पल्ला हटाया गया, उस समय नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां नजर आईं। तिलिस्मी खंजर की रोशनी के सहारे दोनों भाई नीचे उतरे और भीतर से वह दर्वाजा बन्द कर लिया क्योंकि ताली का छेद दोनों तरफ था और वही ताली दोनों तरफ काम देती थी।

पन्द्रह या सोलह सीढ़ियां उतर जाने बाद दोनों कुमारों को थोड़ी दूर तक सुरङ्ग में चलना पड़ा। इसके बाद ऊपर चढ़ने के

थे पुनः सीढ़ियां मिलीं और उसी ताली से खुलने लायक एक दर्वाजा। सीढ़ियां चढ़ने और दर्वाजा खोलने बाद कुमारों को कुछ मिट्टी हटानी पड़ी और इसके बाद दोनों कुमार जमीन के बाहर निकले।

इस समय दोनों कुमारों ने अपने को एक और ही बाग में पाया जो लम्बाई चौड़ाई में उस बाग से कुछ छोटा था जिसमें से कुमार आये थे। पहिले बाग की तरह यह बाग भी एक प्रकार से जंगल हो रहा था। इन्दिरा की मा अर्थात् इन्द्रदेव की स्त्री इसी बाग में मुसीबत की घड़िया काट रही थी और इस समय भी इसी बाग में मौजूद थी इसलिये बनिस्बत पहिले बाग के इस बाग का नक्शा कुछ खुलासे तौर पर लिखना आवश्यक है।

इस बाग में किसी तरह की इमारत न थी, न तो कोई कमरा था और न कोई बङ्गला या दालान था, इसलिये बेचारी सर्यू को जाड़े के मौसिम की कलेजा दहलाने वाली सर्दी, गर्मी की कड़कड़ाती हुई धूप, और बर्सात का मूसलधार पानी अपने कोमल शरीर ही के ऊपर बर्दाश्त करना पड़ता था। हां कहने के लिये ऊंचे ऊंचे बड़ और पीपल के पेड़ों का कुछ सहारा हो तो हो मगर बड़े लाड़ प्यार से पाली जा कर दिन रात सुख ही से बिताने वाली एक पतिव्रता के लिये जंगली और भयानक पेड़ों का सहारा सहारा नहीं कहा जा सकता बल्कि वह भी उसके लिये डराने और सताने का सामान माना जा सकता है। हां थोड़े से पेड़ ऐसे भी थे जिनके फलों को खा कर पतिमिलाप की आशालता में उलझी हुई अपनी जान को वह बचा सकती थी और प्यास दूर करने के लिये उस नहर का पानी भी मौजूद था जो मनुवाटिका में से होती हुई इस बाग में भी आ कर बेचारी सर्यू की जिन्दगी का सहारा हो रही थी। तिलिस्म बनाने वालों ने उस नहर को

इस योग्य नहीं बनाया था कि कोई उसके मुहाने को दम भर के लिये सुरंग मान कर एक बाग से दूसरे बाग में जा सके। इस बाग की चारदीवारी में भी विचित्र कारीगरी की गई थी। दीवार नाघ कर पार हो जाना तो दूर रहे कोई उसकी दीवार को छू भी नहीं सकता था। कई प्रकार की धातुओं से उस बाग की सात हाथ ऊंची दीवार बनाई गई थी। जिस तरह रस्सियों के सहारे कनात खड़ी की जाती है शक्ल सूरत में वह दीवार वैसी ही मालूम पड़ती थी अर्थात् एक एक दो दो कहीं कहीं तीन तीन हाथ की दूरी पर दीवार में लोहे की जंजीरें लगी हुई थीं जिनका एक सिरा तो दीवार के अन्दर घुसा हुआ था और दूसरा सिरा जमीन के अन्दर। चारो तरफ की दीवार में से किसी भी जगह हाथ लगाने से आदमी के बदन में बिजली का असर हो जाता था और वह बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ता था, यही सबब था कि बेचारी सयू उस दीवार के पार हो जाने के लिये कोई उद्योग न कर सकी बल्कि इस आशा मे उसे कई दफे तकलीफ उठानी पड़ी थी।

इस बाग के उत्तर तरफ की दीवार के साथ सटा हुआ एक छोटा सा मकान था। इस बाग में खड़े हो कर देखने वालों को तो वह मकान ही मालूम पड़ता था मगर यह नहीं कह सकते थे कि दूसरी तरफ से उसकी क्या सूरत थी। सात खिड़कियां इस बाग की तरफ थीं जिनसे मालूम होता था कि वह इस मकान का एक खुलासा कमरा है। इस बाग में आने पर सब के पहिले जिस चीज पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह की निगाह पड़ी वह यही कमरा था और उसकी तीन खिड़कियों में से इन्दिरा इन्द्रदेव और राजा गोपालसिंह इसी बाग की तरफ झांक कर किसी को देख रहे थे और इसके बाद जिस पर निगाह पड़ी वह जमाने के हाथों

ज०। अफसोस की कोई बात नहीं है, ईश्वर की कृपा से ोगों को यह बात पहिले ही मालूम हो गई थी कि मनोरमा लश्कर के साथ है।

भैरो०। अगर यह बात मालूम हो गई थी तो आपने इसका ाम क्यों नहीं किया और इन तीनों की तरफ से बेफिक्र रहे?

ज०। हम लोग बेफिक्र नहीं रहे बल्कि जो कुछ इन्तजाम ा वाजिब था किया गया। तुम यह सुन कर ताज्जुब करोगे िशोरी कामिनी और कमला मरी नहीं बल्कि ईश्वर की से जीती हैं, लौंडी की सूरत में हर दम पास रहने पर भी ोरमा ने धोखा खाया।

भैरो०। मनोरमा ने धोखा खाया और वे तीनों जीती हैं!!

तेज०। हां ऐसा ही है। इसका खुलासा हाल हम तुमसे कहते हैं मगर पहिले यह बताओ कि तुमने मनोरमा को कैसे हिचाना? हम तो कई दिनों से पहिचानने की फिक्र में लगे ए थे मगर पहिचान न सके क्योंकि मनोरमा के कब्जे में तलिस्मी खञ्जर के जोड़ की अंगूठी देखने की नीयत से निगाह खते थे।

भैरो०। मैं उसका पता लगाता हुआ इस लश्कर में आ हुंचा था। उस समय टोह लेता हुआ जब मैं किशोरी के खेमे पास पहुंचा तो पहरे के सिपाहियों को बेहोश और खेमे का र्दा कटा हुआ देख मुझे किसी दुश्मन के अन्दर जाने का गुमान आ और मैं भी उसी राह से खेमे के अन्दर चला गया। जब ा की अवस्था देखी और उसके मुंह से निकली हुई बातें सुनीं र शक हुआ कि यही मनोरमा है मगर निश्चय तब ही हुआ ब उसका चेहरा साफ किया गया और आपने भी पहिचाना।

अब आप कृपा कर बताइये कि किशोरी कामिनी और कमला क्योंकर जीती बचीं और ये तीनों जो मारी गईं कौन थीं?

तेजसिंह०। हमें इस बात का पता लग चुका था कि भेष बदले हुए मनोरमा हमारे लश्कर के साथ है मगर जैसा कि तुम से कह चुके हैं उद्योग करने पर भी हम उसे पहिचान न सके। एक दिन हम और राजा साहब सन्ध्या के समय टहलते हुए खेमे से कुछ दूर चले गये और एक छोटे टीले पर चढ कर अस्त होते हुए सूर्य की शोभा देखने लगे। उसी समय कृष्णाजिन्न का भेजा हुआ एक सवार हमारे पास आया और उसने एक चीठी राजा साहब के हाथ में दी। राजा साहब ने चीठी पढ़ कर मुझे दी। उसमें यह लिखा हुआ था—"मुझे इस बात का पूरा पूरा पता लग चुका है कि कई सहायकों को साथ लिये और भेष बदले हुए मनोरमा आपके लश्कर में मौजूद है और उसके अतिरिक्त और भी कई दुष्ट किशोरी और कामिनी के साथ दुश्मनी किया चाहते हैं। इस लिये मेरी राय है कि बचाव तथा दुश्मनों का धोखा देने के लिये किशोरी कामिनी और कमला को कुछ दिन तक छिपा देना चाहिये और उनकी जगह लौंडियों को सूरत बदल कर रख देना चाहिये। इस काम के लिये मेरा एक तिलिस्मी मकान जो आपके रास्ते ही में कुछ दूर हट कर पड़ेगा मुनासिब है और मैंने इस काम के लिये वहां पूरा इन्तजाम भी कर दिया है और लौंडियां भी सूरत बदलने और खिदमत करने के लिये भेज दी हैं क्योंकि आपकी लौंडियों की सूरत बदलना ठीक न होगा और लश्कर में लौंडियों की कमी से लोगों को शक हो जायगा। अस्तु आप बहुत जल्द इन्तजाम करके उन तीनों को वहां पहुंचाइये, मैं भी इन्तजाम करने के लिये पहिले ही से उस मकान में जाता हूं—" इत्यादि। इसके बाद उस मकान का

पूरा पूरा पता लिख कर अपना दस्तखत एक खास निशान के साथ कर दिया था जिसमें हम लोगों को चीठी लिखने वाले पर किसी तरह का शक न हो और उस मकान के अन्दर जाने की तर्कीब भी लिख दी थी।

कृष्णाजिन्न की राय को राजा साहब ने भी स्वीकार किया और पत्र का उत्तर देकर वह सवार विदा कर दिया गया। रात के समय किशोरी कामिनी और कमला को ये बातें समझा दी गईं और उन्होंने उसी दुष्ट मनोरमा की जुबानी दोपहर के बाद यह कहला भेजा कि हमने सुना है कि यहां से थोड़ी ही दूर पर कोई तिलिस्मी मकान है, यदि आप चाहें तो हम लोग उस मकान की सैर कर सकते हैं, इत्यादि। मतलब यह कि इसी बहाने से मैं खुद उन तीनों को रथ पर सवार करा के उस मकान में ले गया और कृष्णाजिन्न को वहां मौजूद पाया। उसने अपने हाथ से अपनी तीन लौंडियों को किशोरी कामिनी और कमला बना कर हमारे रथ पर सवार कराया और हम उन्हें लेकर इस लश्कर में लौट आये। तुम जानते ही हो कि कृष्णाजिन्न कितना बड़ा बुद्धिमान और होशियार तथा हम लोगों का दोस्त आदमी है।

भैरो०। बेशक बेशक, उनकी हिफाजत में किशोरी कामिनी और कमला को किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती। यह आपने बड़ी खुशी की बात सुनाई मगर मैं समझता हूं कि इन भेदों को अभी आप गुप्त रक्खेंगे और यह बात जाहिर न होने देंगे कि वे तीनों जो मारी गई हैं वास्तव में किशोरी कामिनी और कमला न थीं।

तेज०। नहीं नहीं, अभी इस भेद का खुलना उचित नहीं है। सभों को यही मालूम रहना चाहिये कि वास्तव में किशोरी

कामिनी और कमला मारी गईं। अच्छा अब दो चार बातें तुम्हें और कहना है वह भी सुन लो।

भैरो०। जो आज्ञा।

तेज०। कृष्णाजिन्न तो कामकाजी आदमी ठहरा और वह ऐसे ऐसे बखेड़ों में फंसा है कि उसे दम मारने की भी फुरसत नहीं।

भैरो०। निःसन्देह ऐसा ही है। इतना काम जो वह करते हैं सो भी उन्हीं की बुद्धिमानी का नतीजा है, दूसरा नहीं कर सकता।

तेज०। अस्तु कृष्णाजिन्न तो ज्यादे दिनों तक उस मकान में रह नहीं सकता जिसमें किशोरी कामिनी और कमला हैं। वह अपने ठिकाने चला गया होगा मगर उन तीनों की हिफाजत का पूरा पूरा बन्दोबस्त कर गया होगा। अब तुम भी इसी समय उस मकान की तरफ चले जाओ और जब तक हमारा दूसरा हुक्म न पहुँचे या कोई आवश्यक काम न आ पड़े तब तक उन तीनों के साथ रहो, हम उस मकान का पता तथा उसके अन्दर जाने की तर्कीब तुम्हें बता देते हैं।

भैरो०। जो आज्ञा, मैं अभी जाने के लिये तैयार हूं।

तेजसिंह ने उस मकान का पूरा हाल भैरोसिंह को बता दिया और भैरोसिंह उसी समय अपने बाप का चरण छू कर विदा हुए।

भैरोसिंह के जाने बाद सवेरा होने पर एक ब्राह्मण द्वारा नकली किशोरी कामिनी और कमला के मृत देह की दाह क्रिया करा दी गई। इसके पहिले ही लश्कर में जितने पढ़े लिखे ब्राह्मण थे सभों को बटोर कर तेजसिंह ने यह व्यवस्था करा ली थी कि इन तीनों का कोई नातेदार यहां मौजूद नहीं है इस लिये

किसी ब्राह्मण द्वारा इनकी क्रिया करा देनी चाहिये। इस काम से छुट्टी पाने बाद लश्कर कूच कर दिया गया और सब कोई धीरे धीरे चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए।

ग्यारहवां बयान

दोनो कुमार यद्यपि सयू को पहिचानते न थे मगर इन्दिरा की जुबानी उसका हाल सुन चुके थे इसलिये इन्हें शक हो गया कि यह सयू है। दूसरे राजा गोपालसिंह ने भी पुकार कर दोनों कुमारों से कहा कि इन्दिरा की मा यही सयू है और इन्द्र-देव ने कुमारों की तरफ बता कर सयू से कहा कि राजा वीरेन्द्र-सिंह के दोनों लड़के यही कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्द-सिंह हैं जो तिलिस्म तोड़ने के लिये यहां आये हैं और इन्हीं की बदौलत तुम इस आफत से छूटोगी।

दोनों कुमारों को देखते ही सयू दौड कर पास चली आई और कुअर इन्द्रजीतसिंह के पैरों पर गिर पड़ी। सयू उम्र में कुअर इन्द्रजीतसिंह से बहुत बड़ी थी मगर इज्जत और मर्तबे के ख्याल से दोनों को अपना अपना हक अदा करना पड़ा। कुमार ने उसे पैर पर से उठाया और दिलासा देकर कहा, "सयू! मैं तुम्हारा हाल पूरा पूरा तो नहीं मगर इन्दिरा की जुबानी बहुत कुछ सुन चुका हूं। हम लोगों का तुम्हारी अवस्था पर बहुत ही रंज है। परन्तु अब तुम्हें चाहिए कि अपने दिल से दुःख को दूर करके ईश्वर को धन्यवाद दो क्योंकि तुम्हारी मुसीबत का जमाना अब बीत गया। ईश्वर तुम्हें इस कैद से बहुत जल्द छुड़ाने वाला है। जब तक हम इस तिलिस्म में हैं तुम्हें बराबर अपने साथ रक्खेंगे। जिस दिन हम दोनों भाई तिलिस्म के बाहर निकलेंगे उस दिन तुम भी दुनिया की हवा खाती हुई

मालूम करोगी कि तुम्हे सताने वालों में से अब कोई भी स्वतन्त्र नहीं रह गया और न अब तुम्हे किसी तरह का दुःख भोगना पड़ेगा। तुम्हे ईश्वर को बहुत बहुत धन्यवाद देना चाहिए कि इतना ऊधम मचाने पर भी तुम अपने पति और अपनी प्यारी लड़की को सिवाय तुम्हारी जुदाई के और हर तरह के रंज और दुःख से खाली पाती हो। ईश्वर तुम लोगों का कल्याण करे।"

इसके बाद कुमार ने कमरे की तरफ सर उठा कर देखा। राजा गोपालसिंह ने इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके कहा, "इन्दिरा के पिता इन्द्रदेव को हमने बुलवा भेजा है, शायद आज के पहिले आपने इन्हे देखा न होगा।"

उस समय पुनः इन्द्रदेव ने झुक कर कुमार को सलाम किया और कुमार इन्द्रजीतसिंह ने सलाम का जवाब दे कर कहा, "आपका आना बहुत अच्छा हुआ। आप इन दोनों को अपनी आंखों से देख कर प्रसन्न हुए होगे। कहिये रोहतासगढ़ का क्या हाल है?"

इन्द्रदेव०। सब कुशल है। मायारानी और दारोगा तथा और कैदियों को साथ ले कर राजा बीरेन्द्रसिंह चुनारगढ़ की तरफ रवाना हो गये। किशोरी कामिनी और कमला को अपने साथ लेते गये। लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली तथा नकली बलभद्रसिंह को उनसे माग कर मैं अपने घर ले गया और उन्हे उसी जगह छोड कर राजा गोपालसिंह की आज्ञानुसार यहां चला आया हूं। यह हाल संक्षेप में मैंने इसलिये बयान किया कि राजा गोपालसिंह की जुबानी वहां का कुल हाल आपको मालूम हो गया है यह मैं सुन चुका हूं।

इन्द्रजीत०। लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को आप यहां क्यों न ले आये?

इसका जवाब इन्द्रदेव ने तो कुछ भी न दिया मगर राजा गोपालसिंह ने कहा, "यह असली बलभद्रसिंह का पता लगाने के लिये अपने मकान से रवाना हो चुके थे जब रास्ते में मेरा पत्र इन्हें मिला। परसों एक पत्र मुझे कृष्णाजिन्न का भेजा हुआ पहुँचा था। उसके पढ़ने से मालूम हुआ कि मनोरमा भेष बदल कर राजा साहब के लश्कर में जा मिली थी जिसका पता लगाना बहुत ही कठिन था और वह किशोरी कामिनी को मार डालने की सामर्थ रखती थी क्योंकि उसके पास तिलिस्मी खंजर भी था। इसलिये कृष्णाजिन्न ने राजा साहब को लिख भेजा था कि बहाना करके गुप्त रीति से किशोरी कामिनी और कमला को हमारे फलाने तिलिस्मी मकान मे (जिसका पता ठिकाना और हाल भी लिख भेजा था) शीघ्र भेज दीजिये, मैं वहां मौजूद रहूंगा और उनके बदले में अपनी तीन लौंडियों का किशोरी कामिनी और कमला बना कर भेज दूंगा जो आपके लश्कर में रहेंगी। ऐसा करने से यदि मनोरमा का वार चल भी गया तो हमारा कुछ नुक्सान न होगा। राजा साहब ने भी यह बात पसन्द कर ली और कृष्णाजिन्न के लिखे मुताबिक किशोरी कामिनी और कमला को खुद तेजसिंह रथ पर सवार करा के कृष्णाजिन्न के तिलिस्मी मकान में छोड़ आये तथा उनकी जगह भेष बदली हुई लौंडियों को अपने लश्कर में ले गये। आज रात को कृष्णाजिन्न का दूसरा पत्र मुझे मिला जिससे मालूम हुआ कि राजा साहब के लश्कर में नकली किशोरी कामिनी और कमला मनोरमा के हाथ से मारी गईं और मनोरमा भी गिरफ्तार हो गई। आज के पत्र में कृष्णाजिन्न ने यह भी लिखा है कि तुम इन्द्रदेव को एक पत्र लिख दो कि वह लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को भी बहुत जल्द उसी तिलिस्मी मकान में

पहुँचा दे जिसमें किशोरी कामिनी और कमला है, मैं (कृष्णाजिन्न) स्वयं वहां मौजूद रहूंगा और दो तीन दिन के बाद दुश्मनों का रंगढंग देख कर किशोरी कामिनी कमला लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को जमानिया पहुंचा दूंगा। इसके बाद जब राजा वीरेन्द्रसिंह की आज्ञा होगी या जब उचित होगा तो सभों को चुनार पहुंचाया जायगा और उन लोगों के सामने वहां भूतनाथ का मुकद्दमा होगा। कृष्णाजिन्न का यह लिखना मुझे बहुत पसन्द आया क्योंकि वह बड़ा ही बुद्धिमान और नेक आदमी है, जो काम करता है उसमें कुछ न कुछ फायदा समझ लेता है अस्तु मैं चाहता हूं कि (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इन्हें आज ही यहां से विदा कर दूं जिसमें ये तीनों औरतों को लेकर बहुत जल्द कृष्णाजिन्न के तिलिस्मी मकान में पहुंचा दें। वहां दुश्मनों का डर कुछ भी नहीं है और किशोरी तथा कामिनी को भी इन लोगों से मिलने की बड़ी चाह है जैसा कि कृष्णाजिन्न के पत्र से मालूम होता है।"

ये बातें जो राजा गोपालसिंह ने कहीं दोनों कुमारों को खुश करने के लिये वैसी ही थीं जैसी चातक के लिये स्वाती की बूंद। दोनों कुमारों को किशोरी और कामिनी के मिलने की आशा ने हद से ज्यादे प्रसन्न कर दिया। इन्द्रजीतसिंह ने मुस्कुरा कर गोपालसिंह से कहा, "कृष्णाजिन्न की बात मानना आपके लिये उतना ही आवश्यक है जितना हम दोनों भाइयों के लिये तिलिस्म तोड़ कर चुनारगढ पहुँचना। आप बहुत जल्द इन्द्रदेव को यहां से रवाना कीजिये।"

गोपाल०। ऐसा ही होगा।

आनन्द०। कृष्णाजिन्न का वह तिलिस्मी मकान कहां पर है और यहां से कै दिन की राह

गोपाल०। यहां से कुल पन्द्रह सोलह कोस पर है।

इन्द्रजीत०। वाह वाह! तब तो बहुत ही नजदीक है! (इन्द्रदेव से) मेरी तरफ से कृष्णाजिन्न को प्रणाम करके बहुत बहुत धन्यवाद दीजियेगा क्योंकि उन्होंने बड़ी चालाकी से किशोरी कामिनी और कमला को बचा लिया।

इन्द्रदेव०। बहुत अच्छा।

इन्द्रजीत०। आप तो असली बलभद्रसिंह का पता लगाने के लिये घर से निकले थे, उनका......

इन्द्रदेव०। (राजा गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) आप कहते हैं कि नकली बलभद्रसिंह ने तुम्हें धोखा दिया, तुम अब उसकी खोज मत करो क्योंकि भूतनाथ ने असली बलभद्रसिंह का पता लगा लिया और उन्हें छुड़ा कर चुनारगढ़ ले गया।

इन्द्रजीत०। (गोपालसिंह से) क्या यह बात सच है?

गोपाल०। हां कृष्णाजिन्न ने मुझे यह भी लिखा था।

इन्द्रजीत०। (मुस्कुरा कर) तब तो इस खबर में किसी तरह का शक नहीं हो सकता।

इसके बाद दुनिया के पुराने नियमानुसार और बहुत दिनों से बिछुड़े हुए प्रेमियों के मिलने पर जैसा हुआ करता है उसी के मुताबिक इन्द्रदेव और सर्यू में कुछ बातें हुईं, इन्दिरा ने भी मां से कुछ बातें कीं, और तब राजा गोपालसिंह इन्दिरा और इन्द्रदेव को साथ ले कर कमरे के बाहर हो गए।

बारहवां बयान

किशोरी कामिनी और कमला जिस मकान में रक्खी गई थीं वह नाम ही को तिलिस्मी मकान था। वास्तव में न तो उस मकान में कोई तिलिस्म था और न किसी तिलिस्म से उसे कुछ

सम्बन्ध ही था। तथापि वह मकान और स्थान बहुत सुन्दर और दिलचस्प था। ऊंची ऊंची चार पहाड़ियों के बीच में बीस बाईस बिगहे के लगभग जमीन थी जिसमें तरह तरह के कुदरती गुल बूटे लगे हुए थे जो केवल जमीन ही की तरावट से सरसब्ज बने रहते थे। पूरब तरफ वाली पहाड़ी के ऊपर से साफ और मीठे जल का झरना गिरता था जो उस जमीन में चक्कर देता हुआ पश्चिम की तरफ की पहाड़ी के नीचे जा कर लोप हो जाता था और इस सबब से वहां की जमीन हमेशा तर बनी रहती थी। बीच में एक छोटा सा दो मञ्जिल का मकान बना हुआ था और उत्तर तरफ वाली पहाड़ी पर सौ सवा सौ हाथ ऊंचे जाकर एक छोटा सा बंगला था, शायद बनाने वाले ने इसे जाड़े के मौसिम के लिये आवश्यक समझा हो क्योंकि नीचे वाले मकान में तरी ज्यादे रहती थी। किशोरी कामिनी और कमला इसी बंगले रहती थी और उनकी हिफाजत के लिये जो दो चार सिपाही और लौंडिया थीं उन सभों का डेरा नीचे वाले मकान में था तथा खाने पीने का समान तथा बन्दोबस्त भी उसी में था।

उन तीनों की हिफाजत के लिये जो सिपाही और लौंडिया वहां थीं उन सभों की सूरत भी ऐयारी ढग से बदली हुई थी और यह बात किशोरी कामिनी तथा कमला से कह दी गई थी जिसमें उन तीनों को किसी तरह का खुटका न रहे।

ये तीनों जानती थीं कि ये सिपाही और लौंडिया हमारी नहीं है फिर भी समय और अवस्था पर ध्यान दे कर इन्हें उन सभों पर भरोसा करना पड़ता था। इस मकान में आने के कारण इन तीनों की तबीयत बहुत ही उदास थी। रोहतासगढ़ से रवाना होती समय इन तीनों को निश्चय हो गया था कि अब हम लोग बहुत जल्द चुनारगढ़ पहुंचने वाले हैं जहां न तो किसी दुश्मन का डर

रहेगा और न किसी तरह की तकलीफ ही रहेगी, इससे भी बढ़ कर बात यह होगी कि उसी चुनारगढ़ में हम लोगों की मुराद पूरी होगी। मगर निराशा ने रास्ते ही में पल्ला पकड़ लिया और दुश्मन के डर से इन्हें इस विचित्र स्थान में आ कर रहना पड़ा जहा सिवाय गैर के अपना कोई भी दिखाई नही पड़ता था।

जिस दिन ये तीनो यहा आई थी उस दिन कृष्णाजिन्न भी यहा मौजूद था। ये तीनो कृष्णाजिन्न को बखूबी जानती थी और यह भी उनको विश्वास था कि कृष्णाजिन्न हमारा सच्चा पक्ष-पाती और सहायक है तिस पर तेजसिंह ने भी उन तीनों को अच्छी तरह समझा कर कह दिया था कि यद्यपि तुम लोगों को यह नहीं मालूम कि वास्तव में कृष्णाजिन्न कौन है और कहां रहता है तथापि तुम लोगों को उस पर उतना ही भरोसा रखना चाहिये जितना हम पर रखती हो और उसकी आज्ञा भी उतना ही इज्जत के साथ माननी चाहिये जितनी इज्जत के साथ हमारी आज्ञा मानने की इच्छा रखती हो। किशोरी कामिनी और कमला ने यह बात बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार की थी।

जिस समय ये तीनो इस मकान में आई थी उसके दो ही घण्टे बाद सब सामान ठीक करके कृष्णाजिन्न और तेजसिंह चले गये थे और जाती समय इन तीनों को कृष्णाजिन्न कहता गया था कि तुम लोग अकेले रहने के कारण घबराना नहीं, मैं बहुत जल्द लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को तुम लोगों के पास भेज-वाऊंगा और तुम लोग बड़ी प्रसन्नता के साथ यहा रह सकोगी। मैं भी जहां तक जल्द हो सकेगा तुम लोगो को लेने के लिये आऊंगा।

तीसरे ही दिन भैरोसिंह भी उस विचित्र स्थान में जा पहुंचे जिन्हें देख किशोरी कामिनी और कमला बहुत खुश हुईं।

हमारे प्रेमी पाठक जानते हैं कि कमला और भैरोसिंह का दिल घुल मिल कर एक हो रहा था अस्तु इस समय यह स्थान उन्हीं दोनों के लिये मुबारक हुआ और उन्हीं दोनों को यहां आने की विशेष प्रसन्नता भी हुई मगर उन दोनों को अपने मालिकों का ज्यादे ख्याल था। उनकी प्रसन्नता के बिना अपनी प्रसन्नता वे नहीं चाहते थे और उनके मालिक भी इस बात को अच्छी तरह जानते थे।

उस स्थान में पहुंच कर भैरोसिंह ने वहां के रास्ते की बड़ी तारीफ की और कहा कि इन्द्रदेव के मकान में जाने का रास्ता जैसा गुप्त और टेढ़ा है वैसा ही यहां का भी है। अनजान आदमी यहां कदापि नहीं आ सकता। इसके बाद भैरोसिंह ने राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर का हाल बयान किया।

भैरोसिंह की जुबानी लश्कर का हाल और मनोरमा के हाथ से भेष बदले हुए तीनों लौंडियों के मारे जाने की खबर सुन कर किशोरी और कामिनी के रोंगटे खड़े हो गये। किशोरी ने कहा, "निःसन्देह कृष्णाजिन्न देवता है। उसकी अद्भुत शक्ति उसकी बुद्धि और उसके विचार की जहां तक तारीफ की जाय उचित है। उसने जो कुछ सोचा ठीक ही निकला।"

भैरो०। इसमें कोई शक नहीं। तुम लोगों को यहां बुलवा कर उसने बड़ा ही काम किया। मनोरमा तो गिरफ्तार हो ही गई और भाग जाने लायक भी न रही, उसके मददगार भी अगर लश्कर के साथ होंगे तो अब गिरफ्तार हुए बिना नहीं रह सकते। इसके अतिरिक्त . . .

कमला०। हम लोगों को मरा जान कर कोई पीछा भी न करेगा और जब दोनों कुमार तिलिस्म को तोड़ कर चुनारगढ़ में आ जायंगे तब तो यही दुनिया हम लोगों के लिये स्वर्ग हो जायगी।

वहुत देर तक इन चारो में बातचीत होती रही। इसके वाद भैरोसिंह ने वहा की अच्छी तरह सैर की और खा पी कर निश्चिन्त होने बाद इधर उधर की बातों से उन तीनों का दिल वहलाने लगे और जब तक वहा रहे उन लोगो को उदास होने न दिया।

तेरहवां बयान

सन्ध्या होने में अभी दो घण्टे से ज्यादे देर है मगर सूर्य भगवान पहाड़ की आड़ में हो गये इसलिये उस स्थान में जिसमे किशोरी कामिनी और कमला हैं पूरव तरफ वाली पहाड़ी के ऊपरी हिस्से के सिवाय और कहीं धूप नहीं है। समय अच्छा और स्थान बहुत ही रमणीक मालूम पडता है। भैरोसिंह एक पेड़ के नीचे वैठे कुछ वना रहे हैं और किशोरी कामिनी तथा कमला वगले से कुछ दूर हट कर एक पत्थर की चट्टान पर वैठी बातें कर रही हैं।

कमला ने कहा, "वैठे वैठे मेरा तो जी घवड़ा गया।"

कामिनी०। तो तुम भी भैरोसिह के पास जा वैठो और पेड़ की छाल छील छील कर रस्सा वटो।

कमला०। जी मैं ऐसे गन्दे काम नही करती। मेरा मतलव यह था कि अगर हुक्म हो तो मैं इस पहाड़ी के वाहर जा कर इधर उधर की कुछ खवर ले आऊ या जमानिया में जाकर इसी बात का पता लगाऊं कि राजा गोपालसिंह के दिल से लक्ष्मीदेवी की मुहब्बत एक दम क्यों जाती रही जो आज तक उस वेचारी को पूछने के लिये एक चिड़िया का वच्चा भी नहीं भेजा।

किशोरी०। वहिन इस वात का तो मुझे भी वड़ा रञ्ज है। मैं

सच कहती हू कि हम लोगो में से कोई भी ऐसा नहीं है जो उसके दुःख की बराबरी करे। राजा गोपालसिंह ही की बदौलत उसने जो जो तकलीफें उठाई हैं उसे सुनने और याद करने से कलेजा काप जाता है मगर अफसोस राजा गोपालसिंह ने उसकी कुछ भी कदर न की।

कामिनी०। मुझे तो सब से ज्यादे केवल इसी बात का ध्यान रहता है कि बेचारी लक्ष्मीदेवी ने जो जो कष्ट सहे हैं उन सभो से बढ़ कर उसके लिये यह दुःख है कि राजा गोपालसिंह ने पता लग जाने पर भी उसकी कुछ सुध न ली। सब दुःखों को तो वह सह गई मगर यह दुःख उसके सहे न सहा जायगा। हाय हाय, राजा गोपालसिंह का भी कैसा पत्थर का कलेजा है!

किशोरी०। ऐसी मुसीबत कहीं मुझे सहनी पड़ती तो मैं पल भर भी इस दुनिया मे न रहती। क्या जमाने से मुहब्बत एक दम जाती रही? या राजा गोपालसिंह ने लक्ष्मीदेवी में कोई ऐब देख लिया है?

कमला०। राम राम! वह बेचारी ऐसी नहीं है कि किसी ऐब को अपने पास आने दे। देखो उसने अपनी छोटी बहिन की लौंडी बन कर मुसीबत के दिन किस ढंग से बिताये। मगर उसके पतिव्रत धर्म का नतीजा कुछ भी न निकला!

किशोरी०। इस दुःख से बढ़ कर दुनिया में कोई भी दुःख नहीं है। (पेड पर बैठे हुए एक काले कौवे की तरफ इशारा करके) देखो बहिन, यह काग हम लोगो की तरफ मुंह करके बार बार बोल रहा है। (जमीन पर से एक तिनका उठा कर) यह कहता है कि तुम्हारा कोई प्रेमी यहा चला आ रहा है।

कामिनी०। (ताज्जुब से) सो तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

क्या कौवे की बोली तुम पहिचानती हो ? या इस तिनके में कुछ लिखा है ? या यों ही दिल्लगी करती हो ?

किशोरी० । मैं दिल्लगी नहीं करती सच कहती हू, इसका पहिचानना कोई मुश्किल बात नहीं है।

कामिनी० । बहिन मुझे भी बताओ। तुम्हें इसकी तर्कीब किसने सिखाई थी ?

किशोरी० । मेरी मा ने मुझे एक श्लोक याद करा दिया था। उसका मतलब यह है कि जब काले कौवे (काग) की बोली सुने तो एक बड़ा सा साफ तिनका जमीन पर से उठा ले और अपनी उंगलियों से नाप के देखे कि के अंगुल है, जै अंगुल हो उसमें तेरह और मिला कर सात का भाग दे जाय, अर्थात् सात सात करके जहा तक उसमें से निकाल सके निकाल दे और फिर जो कुछ बचे उसका हिसाब लगाये। एक बचे तो लाभ होगा, दो बचे तो कुछ नुकसान होगा, तीन बचे तो सुख मिलेगा, चार बचे तो भोजन की कोई चीज मिलेगी, पाच बचे तो किसी मित्र का दर्शन होगा, छ: बचे तो कलह होगी, और सात बचे या यों कहो कि कुछ भी न बचे तो समझो कि अपने या अपने किसी प्रेमी का मरना होगा, बस इतना ही तो हिसाब है।

कामिनी० । तुम तो इतना कह गई लेकिन मेरी समझ मे कुछ भी न आया। यह तिनका जो तुमने अपनी उंगली से नापा है इसका हिसाब करके समझा दो तो समझ जाऊ गी।

किशोरी० । अच्छा देखो, यह तिनका जो मैने नापा था छ अंगुल का है, इसमें तेरह मिला दिया तो कितना हुआ ?

कामिनी० । उन्नीस हुए।

किशोरी० । अच्छा इसमें से के सात निकल सकते है ?

कामिनी० । (सोच कर) सात और सात चौदह, दो सात

निकल गए और पाच वचे। अच्छा अव मैं समझ गई, तुम अभी कह चुकी हो कि अगर पाच वचे तो किसी मित्र का दर्शन हो। अच्छा अव वह श्लोक सुना दो क्योंकि मुझे श्लोक वड़ी जल्दी याद हो जाया करता है।

किशोरी०। सुनो —

काकस्य वचन श्रुत्वा गृहीत्वा तृणमुत्तमम्,
त्रयोदश समायुक्ता मुनिभि. भागमाचरेत्।
१ २ ३ ४ ५
लाभ नष्ट महासौख्य भोजन प्रियदर्शनम्
६ ७
कलहो मरण चैव काको वदति नान्यथा॥

कमला०। (हंस कर) श्लोक तो अशुद्ध है।

किशोरी०। अच्छा अच्छा रहने दीजिये, अशुद्ध है तो तुम्हारी वला से, तुम वडी पण्डिता वन कर आई हो तो अपना शुद्ध करा लेना।

कामिनी०। (कमला से) खैर तुम्हारे कहने से अगर मान भी लिया जाय कि श्लोक अशुद्ध है मगर उसका मतलव तो अशुद्ध नहीं है।

कमला०। नहीं नहीं मतलव को कौन अशुद्ध कह सकता है, मतलव तो ठीक और सच है।

कामिनी०। तो वस फिर हो चुका। वीवी! दुनिया में श्लोक की वडी कदर होती है, पण्डित लोग अगर कोई झूठी वात भी समझाना चाहते हैं तो झट श्लोक वना कर पढ़ देते हैं, सुनने वाले को विश्वास हो जाता है, और यह तो वास्तव मे सच्चा श्लोक है।

कामिनी ने इतना कहा ही था कि सामने से किसी को आते देख चौंक पड़ी और बोली, "अहाहा! देखो किशोरी बहिन की बात कैसी सच निकली! लो कमला रानी देख लो और अपना कान पकड़ो !!"

जिस जगह किशोरी कामिनी और कमला बैठी बातें कर रही थीं उसके सामने ही की तरफ इस स्थान में आने का रास्ता था। यकायक जिस पर निगाह पड़ने से कामिनी चौंकी वह लक्ष्मीदेवी थी, उसके बाद कमलिनी और लाडिली दिखाई पड़ी और सब के बाद इन्द्रदेव पर नजर पड़ी।

किशोरी०। देखो बहिन हमारी बात कैसी सच निकली !!

कामिनी०। बेशक बेशक!

कमला०। कृष्णाजिन्न सच ही कह गये थे कि मैं उन तीनों को भी यहां भेजवा दूंगा।

किशोरी०। (खड़ी होकर) चलो हम लोग आगे चल कर उन्हें ले आवें।

ये तीनों लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली को देख कर बहुत ही खुश हुई और वहां से उठ कर कदम बढ़ाती हुई उनकी तरफ चलीं। वे तीनों बीच वाले मकान के पास पहुंचने भी न पाई थीं कि ये सब उनके पास जा पहुँचीं और इन्द्रदेव को प्रणाम करने बाद आपुस में बारी बारी से एक दूसरे के गले मिलीं। भैरोसिंह भी उसी जगह आ पहुंचा और कुशल क्षेम पूछ कर प्रसन्न हुआ। इसके बाद सब कोई मिल कर उसी बंगले में आये जिसमें किशोरी कामिनी और कमला रहती थीं, इन्द्रदेव बीच वाले दोमञ्जिले मकान में चले गये जिसमें भैरोसिंह का डेरा था।

यद्यपि वहां खिदमत करने के लिये लौंडियों की कमी न थी तथापि कमला ने अपने हाथ से तरह तरह की खाने की चीजें

तैयार कर के सभों को खिलाया पिलाया और मुहब्बत भरी हंसी दिल्लगी की बातों से सभों का दिल बहलाया। रात के समय जब हर एक कामों से निश्चिन्त हो कर एक कमरे में सब बैठी तो बातचीत होने लगी :—

किशोरी०। (लक्ष्मीदेवी से) जमाने ने तो हम लोगों को जुदा कर दिया था मगर ईश्वर ने कृपा करके बहुत जल्द मिला दिया।

लक्ष्मीदेवी०। हां बहिन इसके लिये मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हू। मगर मेरी समझ में अभी तक नहीं आता कि कृष्णाजिन्न कौन है जिसके हुक्म से कोई भी मुंह नहीं मोडता। देखो तुम भी उसी की आज्ञानुसार यहां पहुँचाई गई और हम लोग भी उसी की आज्ञा से यहा लाए गये। जो हो मगर इसमें कोई शक नहीं कि कृष्णाजिन्न बहुत ही बुद्धिमान और दूरदर्शी है। यह सुन कर हम लोगों को बड़ी खुशी हुई कि कृष्णाजिन्न की चालाकियों ने तुम लोगों की जान बचा ली।

कामिनी०। यह खबर तुम्हें कब मिली ?

लक्ष्मीदेवी०। इन्द्रदेवजी जमानिया गये थे उसी जगह उन्हें कृष्णाजिन्न की चीठी मिली जिससे सब हाल मालूम हुआ और उसी चीठी के मुताबिक हम लोग यहा पहुँचाए गये।

किशोरी०। जमानिया गये थे ? राजा गोपालसिंह ने बुलाया होगा ?

लक्ष्मीदेवी०। (ऊंची सांस ले कर) वह क्यों बुलाने लगे थे, उन्हें क्या गर्ज पडी थी ? हां हमारे पिता का पता लगाने गये थे सो वहा जाने पर कृष्णाजिन्न की चीठी ही से यह भी मालूम हुआ कि भूतनाथ उन्हें छुडा कर चुनारगढ़ ले गया। ईश्वर उसका भला करे, भूतनाथ बात का धनी निकला।

किशोरी०। (खुश हो कर) भूतनाथ ने यह बहुत बड़ा काम किया। फिर भी उसके मुकद्दमे में बड़ी उलझन निकलेगी।

लाडिली०। इसमें क्या शक है।

किशोरी०। अच्छा तो जमानिया में जाने से और भी किसी का हाल मालूम हुआ ?

कमलिनी०। हा दोनों कुमारों से भी दूर की मुलाकात और बातचीत हुई क्योंकि वह तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई कर रहे थे। वहा इन्द्रदेव ने अपनी लड़की इन्दिरा को पाया और अपनी स्त्री सयू को भी देखा।

किशोरी०। (चौंक कर और खुश हो कर) यह बड़ा काम हुआ। वे दोनों इतने दिनों तक कहा थीं और कैसे मिलीं ?

लक्ष्मी०। वे दोनों तिलिस्म में फंसी हुई थीं, दोनों कुमारों की बदौलत उनकी जान बची।

इस जगह लक्ष्मीदेवी ने सर्यू और इन्दिरा का किस्सा पूरा पूरा बयान किया जिसे सुन कर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुईं और कमला ने कहा, "विश्वासघातियों और दुष्टों के लिये जमानिया वैकुन्ठ हो रहा था।"

लक्ष्मी०। तभी तो मुझे ऐसे ऐसे दुःख भोगने पड़े जिनसे अभी तक छुटकारा नहीं मिलता। मगर मैं नहीं कह सकती कि अब मेरी क्या गति होगी और मुझे क्या करना होगा॥

किशोरी०। क्या जमानिया में इन्द्रदेव से राजा गोपालसिंह ने तुम्हारे विषय में कोई बातचीत नहीं की ?

लक्ष्मी०। कुछ भी नहीं, सिर्फ इतना कहा कि तुम उन तीनों बहिनों को कृष्णाजिन्न की आज्ञानुसार वहा पहुँचा दो जहा कि किशोरी कामिनी और कमला हैं। वहा स्वयं कृष्णाजिन्न जायगे,

तैयार कर के सभों को खिलाया पिलाया और मुहब्बत भरी हंसी दिल्लगी की बातों से सभों का दिल बहलाया। रात के समय जब हर एक कामों से निश्चिन्त हो कर एक कमरे में सब बैठीं तो बातचीत होने लगी :—

किशोरी०। (लक्ष्मीदेवी से) जमाने ने तो हम लोगों को जुदा कर दिया था मगर ईश्वर ने कृपा करके बहुत जल्द मिला दिया।

लक्ष्मीदेवी०। हां बहिन इसके लिये मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूं। मगर मेरी समझ में अभी तक नहीं आता कि कृष्णाजिन्न कौन है जिसके हुक्म से कोई भी मुंह नहीं मोड़ता। देखो तुम भी उसी की आज्ञानुसार यहां पहुँचाई गई और हम लोग भी उसी की आज्ञा से यहां लाए गये। जो हो मगर इसमें कोई शक नहीं कि कृष्णाजिन्न बहुत ही बुद्धिमान और दूरदर्शी है। यह सुन कर हम लोगों को बड़ी खुशी हुई कि कृष्णाजिन्न की चालाकियों ने तुम लोगों की जान बचा ली।

कामिनी०। यह खबर तुम्हें कब मिली ?

लक्ष्मीदेवी०। इन्द्रदेवजी जमानिया गये थे उसी जगह उन्हें कृष्णाजिन्न की चीठी मिली जिससे सब हाल मालूम हुआ और उसी चीठी के मुताबिक हम लोग यहां पहुँचाए गये।

किशोरी०। जमानिया गये थे ? राजा गोपालसिंह ने बुलाया होगा ?

लक्ष्मीदेवी०। (ऊंची सांस ले कर) वह क्यों बुलाने लगे थे, उन्हें क्या गर्ज पड़ी थी ? हां हमारे पिता का पता लगाने गये थे सो वहां जाने पर कृष्णाजिन्न की चीठी ही से यह भी मालूम हुआ कि भूतनाथ उन्हें छुड़ा कर चुनारगढ़ ले गया। ईश्वर उसका भला करे, भूतनाथ बात का धनी निकला।

किशोरी०। (खुश हो कर) भूतनाथ ने यह बहुत बड़ा काम किया। फिर भी उसके मुकद्दमे में बड़ी उलझन निकलेगी।

लाडिली०। इसमें क्या शक है।

किशोरी०। अच्छा तो जमानिया में जाने से और भी किसी का हाल मालूम हुआ?

कमलिनी०। हा दोनों कुमारो से भी दूर की मुलाकात और बातचीत हुई क्योंकि वह तिलिस्म तोडने की कार्रवाई कर रहे थे। वहा इन्द्रदेव ने अपनी लडकी इन्दिरा को पाया और अपनी स्त्री सर्यू को भी देखा।

किशोरी०। (चौंक कर और खुश हो कर) यह बड़ा काम हुआ। वे दोनों इतने दिनो तक कहा थीं और कैसे मिलीं?

लक्ष्मी०। वे दोनों तिलिस्म में फंसी हुई थीं, दोनों कुमारो की बदौलत उनकी जान बची।

इस जगह लक्ष्मीदेवी ने सर्यू और इन्दिरा का किस्सा पूरा पूरा बयान किया जिसे सुन कर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुईं और कमला ने कहा, "विश्वासघातियों और दुष्टों के लिये जमानिया वैकुन्ठ हो रहा था।"

लक्ष्मी०। तभी तो मुझे ऐसे ऐसे दुःख भोगने पड़े जिनसे अभी तक छुटकारा नहीं मिलता। मगर मैं नही कह सकती कि अब मेरी क्या गति होगी और मुझे क्या करना होगा॥

किशोरी०। क्या जमानिया में इन्द्रदेव से राजा गोपालसिंह ने तुम्हारे विषय मे कोई बातचीत नही की?

लक्ष्मी०। कुछ भी नहीं, सिर्फ इतना कहा कि तुम उन तीनों बहिनों को कृष्णाजिन्न की आज्ञानुसार वहा पहुंचा दो जहा कि किशोरी कामिनी और कमला हैं। वहा स्वयं कृष्णाजिन्न जायगे,

उस समय जो कुछ वह कहे सो करना। शायद कृष्णाजिन्न उन सभों को यहा लेने आवे।

कामिनी०। (हाथ मल कर) वस।

लक्ष्मी०। वस और कुछ भी नहीं पूछा और न इन्द्रदेव ही ने कुछ कहा, क्योंकि उन्हे भी इस बात का बड़ा रज है।

किशोरी०। रंज हुआ ही चाहे, जो कोई सुनेगा उसी को इस बात का रज होगा, वह तो बेचारे तुम्हारे पिता ही के बराबर ठहरे क्यों न रंज करेगे! (कमलिनी से) तुम तो अपने जीजा जी के मिजाज की बड़ी तारीफ करती थी?

कमलिनी०। बेशक वह तारीफ के लायक हैं। मगर इस मामले में तो मैं आप हैरान हो रही हू कि उन्होने ऐसा क्यों किया! उनके सामने ही दोनो कुमारो ने बड़े शौक से तुम लोगों का हाल इन्द्रदेव से पूछा और सभो को जमानिया मे बुला लेने के लिये कहा मगर उस पर भी राजा साहब ने हमारी दुखिया बहिन को याद न किया! आशा है कि कल तक कृष्णाजिन्न भी यहा आ जायगे, देखे वह क्या कहते हैं।

लक्ष्मी०। कहेंगे क्या? अगर वह मुझे जमानिया चलने के लिये कहेंगे भी तो मैं इस वेइज्जती के साथ जाने वाली नहीं हू। जब मेरा मालिक मुझे पूछता ही नहीं तो मै कौन सा मुह लेकर उसके पास जाऊ और किस सुख के लिये या किस आशा पर इस शरीर को रक्खू॥

कमला०। नहीं नहीं तुम्हे इतना रज न करना चाहिये

कामिनी०। (बात काट कर) रज क्यो न करना चाहिये! भला इससे बढ़ कर भी कोई रज दुनिया में है। जिसके लिए से और जिसके ख्याल से इस बेचारी ने इतने दुःख भोगे और ऐसी अवस्था में रही वही जब एक बात न पूछे तो कहो

रंज हो कि न हो ? और नहीं तो इस बात का तो खयाल करते कि इसी की वहिन या उनकी साली की बदौलत उनकी जान बची, नहीं तो दुनिया से उनका नाम निशान ही उठ गया था।

लाडिली०। वहिन ! ताज्जुब तो यह है कि इनको खबर न ली तो न सही अपनी उस अनोखी मायारानी की सूरत तो आन कर देख जाते जिसने उनके साथ . . . .

कामिनी०। (जल्दी से) हां और क्या ? उसे भी देखने न आये ! उन्हें चाहिये था कि रोहतासगढ़ में पहुंच कर उसकी बोटी बोटी अलग कर देते !

इसी तरह से ये सब वड़ी देर तक आपुस में बातें करती रहीं। लक्ष्मीदेवी की अवस्था पर सभों को रंज, अफसोस और ताज्जुब था। जब रात ज्यादे वीत गई तो सभों ने चारपाई की शरण ली। दूसरे दिन उन्हें कृष्णाजिन्न के आने की खबर मिली।

चौदहवां बयान

किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लक्ष्मीदेवी, कमला और लाडिली सभी को कृष्णाजिन्न के आने का इन्तजार था। सभों के दिल में तरह तरह की बातें पैदा हो रही थीं और सभों को इस बात की आशा लग रही थी कि कृष्णाजिन्न के आने पर इस बात का पता लग जायगा कि कृष्णाजिन्न कौन है और राजा गोपालसिंह ने लक्ष्मीदेवी की सुध क्यों भुला दी।

आखिर दूसरे दिन कृष्णाजिन्न भी वहां आ पहुंचा। यद्यपि वह एक ऐसा आदमी था जिसकी किसी को भी खबर न थी, कोई भी नहीं कह सकता था कि वह कौन और कहां का रहने वाला है, न तो कोई उसकी जात बता सकता था और न कोई उसकी ताकत और सामर्थ्य के विषय में कुछ वादाविवाद कर सकता

उस समय जो कुछ वह कहे सो करना। शायद कृष्णाजिन्न उन सभों को यहा लेने आवे।

कामिनी०। (हाथ मल कर) बस।

लक्ष्मी०। बस और कुछ भी नहीं पूछा और न इन्द्रदेव ही ने कुछ कहा, क्योंकि उन्हे भी इस बात का बडा रज है।

किशोरी०। रंज हुआ ही चाहे, जो कोई सुनेगा उसी को इस बात का रज होगा, वह तो बेचारे तुम्हारे पिता ही के बराबर ठहरे क्यो न रंज करेगे ! (कमलिनी से) तुम तो अपने जीजा जी के मिजाज की बड़ी तारीफ करती थी ?

कमलिनी०। बेशक वह तारीफ के लायक हैं। मगर इस मामले में तो मै आप हैरान हो रही हू कि उन्होंने ऐसा क्यों किया ! उनके सामने ही दोनो कुमारो ने बड़े शौक से तुम लोगो का हाल इन्द्रदेव से पूछा और सभो को जमानिया में बुला लेने के लिये कहा मगर उस पर भी राजा साहब ने हमारी दुखिया बहिन को याद न किया ! आशा है कि कल तक कृष्णाजिन्न भी यहा आ जायगे, देखे वह क्या कहते हैं !

लक्ष्मी०। कहेंगे क्या ? अगर वह मुझे जमानिया चलने के लिये कहेगे भी तो मै इस बेइज्जती के साथ जाने वाली नहीं हू ! जब मेरा मालिक मुझे पूछता ही नहीं तो मै कौन सा मुह लेकर उसके पास जाऊ और किस सुख के लिये या किस आशा पर इस शरीर को रक्खू !!

कमला०। नहीं नहीं तुम्हे इतना रज न करना चाहिये

कामिनी०। (बात काट कर) रज क्यो न करना चाहिये ! भला इससे बढ़ कर भी कोई रज दुनिया में है। जिसके सबब से और जिसके ख्याल से इस बेचारी ने इतने दुःख भोगे और ऐसी अवस्था में रही वही जब एक बात न पूछे तो कहो

रंज हो कि न हो ? और नहीं तो इस बात का तो खयाल करते कि इसी की बहिन या उनकी साली की बदौलत उनकी जान बची, नहीं तो दुनिया से उनका नाम निशान ही उठ गया था।

लाडिली०। बहिन! ताज्जुब तो यह है कि इनको खबर न ली तो न सही अपनी उस अनोखी मायारानी की सूरत तो आन कर देख जाते जिसने उनके साथ.. ...

कामिनी०। (जल्दी से) हां और क्या ? उसे भी देखने न आये! उन्हें चाहिये था कि रोहतासगढ़ में पहुंच कर उसकी बोटी बोटी अलग कर देते।

इसी तरह से ये सब बड़ी देर तक आपुस में बातें करती रहीं। लक्ष्मीदेवी की अवस्था पर सभों को रंज, अफसोस और ताज्जुब था। जब रात ज्यादे बीत गई तो सभों ने चारपाई की शरण ली। दूसरे दिन उन्हें कृष्णाजिन्न के आने की खबर मिली।

चौदहवां बयान

किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लक्ष्मीदेवी, कमला और लाडिली सभी को कृष्णाजिन्न के आने का इन्तजार था। सभों के दिल में तरह तरह की बातें पैदा हो रही थीं और सभों को इस बात की आशा लग रही थी कि कृष्णाजिन्न के आने पर इस बात का पता लग जायगा कि कृष्णाजिन्न कौन है और राजा गोपालसिंह ने लक्ष्मीदेवी की सुध क्यों भुला दी।

आखिर दूसरे दिन कृष्णाजिन्न भी वहां आ पहुंचा। यद्यपि वह एक ऐसा आदमी था जिसकी किसी को भी खबर न थी, कोई भी नहीं कह सकता था कि वह कौन और कहां का रहने वाला है, न तो कोई उसकी जात बता सकता था और न कोई उसकी ताकत और सामर्थ्य के विषय में कुछ वादाविवाद कर सकता

था तथापि उसकी हमदर्दी और कार्रवाई से सभी खुश थे और इसलिये कि राजा बीरेन्द्रसिंह उसे मानते थे सभी उसकी कदर करते थे। गुप्त से गुप्त स्थान में पहुंच वह सभों को चौकन्ना कर चुका था इस लिये किशोरी और लक्ष्मीदेवी इत्यादि को उससे पर्दा करने की कोई आवश्यकता न थी और न ऐसा करने का उन्हें हुक्म था। अस्तु कृष्णाजिन्न के आने की खबर पा कर सब खुश हुईं और बीच वाले दोमंजिले मकान में जिसमें सब के पहिले आकर उसने इन्द्रदेव से मुलाकात की थी चलने के लिये तैयार हो गईं मगर उसी समय भैरोसिंह ने बंगले पर आ कर लक्ष्मीदेवी इत्यादि से कहा कि कृष्णाजिन्न स्वयं यहां चले आ रहे हैं।

थोड़ी देर बाद कृष्णाजिन्न बंगले पर आ पहुँचा। लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, लाडिली, किशोरी, कामिनी और कमला ने आगे बढ़ कर उसका इस्तकबाल (अगुआनी) किया और इज्जत के साथ ला कर एक ऊंची गद्दी के ऊपर बैठाया। उनकी इच्छानुसार इन्द्रदेव और भैरोसिंह गद्दी के नीचे दाहिनी तरफ बैठे और लक्ष्मीदेवी इत्यादि को सामने बैठने के लिये कृष्णाजिन्न ने आज्ञा दी और सभों ने खुशी से उसकी आज्ञा स्वीकार की। कृष्णाजिन्न ने सभों का कुशल मंगल पूछा और फिर यों बातचीत होने लगी —

किशोरी०। आपकी बदौलत हम लोगों की जान बच गईं मगर उन लौंडियों के मारे जाने का रंज है।

कृष्णा०। यह सब ईश्वर की माया है, वह जो चाहता है करता है। यद्यपि मनोरमा ने कई शैतानों को साथ ले कर तुम लोगों का पीछा किया था मगर उसके गिरफ्तार हो जाने ही से सभों का [illegible] जाता रहा। अब जो मैं ख्याल करके देखता हूं

तो तुम लोगों का दुश्मन कोई भी दिखाई नही देता, क्योंकि जिन दुष्टो की बदौलत लोग दुश्मन हो रहे थे या यों कहो कि जो लाग उनके मुखिया थे सब गिरफ्तार हो गये यहा तक कि अब उन लोगों को कैद से छुडाने वाला भी कोई न रहा।

कमलिनी०। ठीक है, तो अब हम लोगों को छिप कर यहा रहने की क्या जरूरत है ?

कृष्णा०। (हंस कर) तुम्हें तो तब- भी छिप कर रहने की जरूरत नहीं पड़ी जब चारो तरफ दुश्मनो का जोर बधा हुआ था आज की कौन कहे ? मगर हा (हाथ का इशारा करके) इन बेचारियों को अब यहा रहने की कोई जरूरत नहीं और अब इसीलिये मैं यहां आया भी हू कि तुम लोगो को जमानिया ले चलू और वहा से फिर जिसको जिधर जाना होगा चला जायगा।

लक्ष्मी०। तो आप हम लोगो को चुनारगढ़ क्यो नही ले चलते ? या वहा जाने की आज्ञा क्यो नही देते ?

कृष्णा०। नहीं, तुम लोगो को पहिले जमानिया चलना चाहिये। यह केवल मेरी आज्ञा ही नहीं है बल्कि मैं समझता हू कि तुम लोगो की भी यही इच्छा होगी। (लक्ष्मीदेवी से) तुम तो जमानिया की रानी ही ठहरीं, तुम्हारी रिआया खुशी मनाने के लिये उस दिन का इन्तजार कर रही है जिस दिन तुम्हारी सवारी शहर के अन्दर पहुँचेगी, और कमलिनी तथा लाडिली तुम्हारी बहिन ही ठहरीं . ..

लक्ष्मीदेवी०। (बात काट कर) बस बस, मैं बाज आई जमानिया की रानी बनने से। वहां जाने की मुझे कोई जरूरत नहीं, और मेरी दोनों बहिनें भी जहां मैं रहूंगी वहीं मेरे साथ रहेंगी।

कृष्णा०। क्यो क्यो ऐसा क्यो ?

लक्ष्मी०। मैं इसलिये विशेष बात कहा नहीं चाहती कि आपने यद्यपि हम लोगों की बडी सहायता की है और हम लोग जन्म भर आपकी ताबेदारी करके भी उसका बदला नहीं चुका सकते तथापि आप का परिचय न पाने के कारण

कृष्णा०। ठीक है ठीक है, अपरिचित पुरुष से दिल खोल कर बातें करना कुलवती स्त्रियों का धर्म्म नहीं है, मगर मैं यद्यपि इस समय अपना परिचय नहीं दे सकता तथापि यह कहे देता हू कि नाते मे राजा गोपालसिह का मै छोटा भाई हूं इसलिये तुम्हें भावज मान कर बहुत कुछ कहने और सुनने का हक रखता हू। तुम निश्चय रक्खो कि मेरे विषय में राजा गोपालसिह तुम्हे कभी उलाहना न देगे चाहे तुम मुझसे किसी तरह पर बातचीत क्यों न करो। (कुछ सोच कर) मैं समझता हू कि तुम जमानिया जाने से क्यों इनकार करती हो। शायद तुम्हें इस बात का रज है कि यकायक तुम्हारे जीते रहने की खबर पा कर भी गोपालसिह तुम्हे देखने के लिये न आये .

कमलिनी०। देखने के लिये आना तो दूर रहे अपने हाथ से एक पुर्जा लिख कर यह भी न पूछा कि तेरा मिजाज कैसा है !

लाडिली०। आने जाने वाले आदमी तक से भी हाल न पूछा !!

लक्ष्मी०। (धीरे से) एक कुत्ते की भी इतनी बेकदरी नहीं की जाती !!

कमलिनी०। ऐसी हालत मे रञ्ज हुआ ही चाहे ! जब आप यह कहते हैं कि हम राजा गोपालसिह के छोटे भाई हैं और मैं समझती हू कि आप झूठ भी नहीं कहते होंगे, तभी हम लोगों

को इतना कहने का हौसला भी होता है। आप ही कहिये कि राजा साहब को क्या यही उचित था ?

कृष्णा०। मगर तुम इस बात का क्या सबूत रखती हो कि राजा साहब ने इनकी बेकदरी की ? औरतों की भी विचित्र बुद्धि होती है! असल बात को तो जानती नहीं और उलाहना देने को तैयार हो जाती हैं।

कमलिनी०। सबूत अब इससे बढ़ कर क्या होगा जो मैं कह चुकी हूं ? अगर एक दिन के लिये चुनारगढ़ आ जाते तो क्या पैर की मेंहदी छूट जाती ?

कृष्णा०। अपने बड़े लोगों के सामने अपनी स्त्री को देखने के लिये आना क्या यह उचित होता ? मगर अफसोस! तुम लोगों को तो इस बात की खबर ही नहीं कि राजा गोपालसिंह महाराज वीरेन्द्रसिंह के भतीजे होते हैं और इसी सबब से लक्ष्मीदेवी को अपने घर में आ गई जान कर उन्होंने किसी तरह की जाहिरदारी न की।

सब०। (ताज्जुब से) क्या महाराज उनके चाचा होते हैं ?

कृष्णा०। हां! यह बात पहिले केवल हमीं दोनों आदमियों को मालूम थी और तिलिस्म तोड़ती समय दोनों कुमारों को मालूम हुई, या आज मेरी जुबानी तुम लोगों ने सुनी! खुद महाराज वीरेन्द्रसिंह को अभी तक यह बात मालूम नहीं है।

लक्ष्मी०। अच्छा अच्छा जब नातेदारी इतनी छिपी हुई थी तो.

कमलिनी०। (लक्ष्मीदेवी को रोक कर) बहिन, तुम रहने दो, मैं इनकी बातों का जवाब दे लूंगी। (कृष्णाजिन्न से) तो क्या गुप्त रीति से वह एक चीठी भी नहीं भेज सकते थे ?

कृष्णा०। चीठी भेजना तो दूर रहे गुप्त रीति से खुद कई दफे आ कर वे इनको देख गये।

लाडिली०। अगर ऐसा ही होता तो रंज काहे का था।

कमलिनी०। इस बात को तो वह कदापि साबित नहीं कर सकते।

कृष्णा०। यह बात तो बहुत सहज में साबित हो जायगी और तुम लोग सहज ही में मान भी जाओगी मगर जब उनका और तुम्हारा सामना होगा तब।

कमलिनी०। तो आपकी राय है कि बिना सन्तोष हुए और बिना बुलाये बेइज्जती के साथ हमारी बहिन जमानिया चली जाय?

कृष्णा०। बिना बुलाये कैसे? आखिर मैं यहां किस लिये आया हूं। (जेब से एक चीठी निकाल कर और लक्ष्मीदेवी के हाथ में दे कर) देखो उनके हाथ की लिखी हुई चीठी पढ़ो।

चीठी में यह लिखा हुआ था :—

'चिरंजीव कृष्णा योग्य लिखी गोपालसिंह का आशीर्वाद—आज तीन दिन हुए एक पत्र तुम्हें भेज चुका हूं। तुम छोटे भाई हो इसलिये विशेष लिखना उचित नहीं समझते, केवल इतना लिखते हैं कि तुम चीठी देखते ही चले जाओ और अपनी भावज को तथा उनकी दोनों बहिनों को जहां तक जल्द हो सके यहां ले आओ।"

इस चीठी को बारी बारी से सभों ने पढ़ा।

कमलिनी०। मगर इस चीठी में कोई ऐसी बात नहीं लिखी है जिसमें लक्ष्मीदेवी के साथ हमदर्दी पाई जाती हो। जब हाथ दुखाने बैठे ही थे तो एक चीठी इनके नाम की भी लिख डाली होती। इन्हें नहीं तो मुझी को कुछ लिख भेजा होता, मेरा उनका

सामना हुए भी तो बहुत दिन नहीं हुए। मालूम होता है कि थोड़े ही दिनों में वे बेमुरौवत और कृतघ्न भी हो गये।

कृष्णा०। कृतघ्न का शब्द तुमने बहुत ठीक कहा। मालूम होता है कि तुम उन पर अपनी कार्रवाइयों का अहसान डाला चाहती हो।

कमलिनी०। (क्रोध से) क्यों नहीं? क्या मैंने उनके लिये थोड़ी मेहनत की है? और इसका क्या यही बदला था?

कृष्णा०। जब अहसान और उसके बदले का ख्याल आ गया तो मुहब्बत कैसी और प्रेम कैसा? मुहब्बत और प्रेम में अहसान और बदला चुकाने का तो खयाल ही न होना चाहिये। यह तो रोजगार और लेनदेन का सौदा हो गया। और अगर तुम इसी बदला चुकाने वाली कार्रवाई को प्रेमभाव समझती हो तो घबराती क्यों हो? समझ लो कि दूकानदार नादेहन्द है मगर बदला देने योग्य है, कभी न कभी बदला चुक ही जायगा। हाय हाय!! औरतें भी कितनी जल्द अहसान जताने लगती हैं। क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि तुम पर किस किस ने अहसान किया और तुम उसका बदला किस तरह चुका सकती हो? अगर तुम्हारा ऐसा ही मिजाज है और बदला चुकाये जाने की तुम ऐसी ही भूखी हो तो बस हो चुका, तुम्हारे हाथों से किसी गरीब असमर्थ या दीन दुखिया का भला कैसे हो सकता है? क्योंकि उसे तो तुम बदला चुकाने लायक कदापि न समझोगी!!

कमलिनी०। (कुछ शर्मा कर) क्या राजा गोपालसिंह भी असमर्थ और दीन हैं?

कृष्णा०। नहीं हैं, तो तुमने राजा समझ के उन पर अहसान

[illegible] था ? अगर ऐसा है तो मैं तुम्हे उनसे बहुत सा रुपैया दिलवा सकता हूं।

कमलिनी०। जी मैं रुपये की भूखी नहीं हूं।

कृष्णा०। बहुत ठीक, तब तो तुम प्रेम का भूखी ठहरी।

कमलिनी०। बेशक।

कृष्णा०। अच्छा तो जो आदमी प्रेम का भूखा है उसे दीन असमर्थ और समर्थ में अहसान करती समय भेद क्यों दीखने लगा और इसके देखने की उसे जरूरत ही क्या है ? ऐसी अवस्था मे भी यही जान पडता है कि तुम्हारे हाथों से गरीब और दुखियों को लाभ नहीं पहुंच सकता क्योंकि वे न तो समर्थ हैं और न तुम उनसे उस अहसान के बदले में प्रेम ही पा कर खुश हो सकती हो।

कमलिनी०। आपके इस कहने से मेरी बात नहीं कटती। प्रेम भाव का बर्ताव करके तो अमीर और गरीब बल्कि गरीब से गरीब आदमी भी अहसान का बदला उतार सकता है। और नहीं तो वह अपने ऊपर अहसान करने वाले का कुशल मंगल ही चाहेगा। इसके अतिरिक्त अहसान और अहसान का जस माने बिना दोस्ती भी तो नहीं हो सकती। दोस्ती की तो बुनियाद ही नेकी है। क्या आप उनके साथ भी दोस्ती कर सकते हैं जो आपके साथ बदी करें ?

कृष्णा०। अगर तुम केवल उपकार मान लेने ही से खुश हो सकती हो तो चल कर राजा साहब से पूछो कि वह तुम्हारा उपकार मानते हैं या नहीं, या उनको कहो कि उपकार मानते हैं तो इसकी मुनादी करवा दें जैसा कि लक्ष्मीदेवी ने इन्द्रदेव का उपकार मान के किया था।

कमलिनी०। (शर्मा कर) मैं भला उनके अहसानों का बदला

क्यो कर अदा कर सकती हूं। और मुनादी कराने से होता ही क्या है?

कृष्णा०। शायद राजा गोपालसिंह भी यही सोच कर चुप बैठ रहे हों और दिल में तुम्हारी तारीफ करते हो।

लक्ष्मी०। (कमलिनी से) तुम तो व्यर्थ की बातें कह रही हो इस वादाविवाद से क्या फायदा होगा? मतलब तो इतना ही है कि मैं उस घर में नहीं जाना चाहती जहां अपनी इज्जत नहीं, पूछ नहीं, चाह नहीं, और जहा एक दिन भी रही नहीं।

कृष्णा०। अच्छा इन सब बातों को जाने दो, मैं एक दूसरी बात कहता हूं उसका जवाब दो।

कमलिनी०। कहिये।

कृष्णा०। जरा विचार करके देखो कि तुम उनको तो बेमुरौवत कहती हो और इसका खयाल भी नहीं करतीं कि तुम लोग उनसे कहीं बढ़ कर बेमुरौवत हो। राजा गोपालसिंह एक चीठी अपने हाथ से लिख कर तुम्हारे पास भेज देते तो तुम्हे सतोष हो जाता मगर चीठी के बदले में मुझे भेजना तुम लोगों को पसन्द न आया। अच्छा, अहसान जताने का रास्ता तो तुमने खोल ही दिया है, खुद ही गोपालसिंह पर अहसान जता चुकी हो तो अगर मैं भी यह कहू कि मैंने तुम लोगों पर अहसान किया है तो क्या बुराई है?

कमलिनी०। कोई बुराई नही है। और इसमें कोई सन्देह भी नहीं है कि आपने हम लोगों पर बहुत बड़ा अहसान किया है और बड़े वक्त पर ऐसी मदद की है कि कोई दूसरा कर ही नहीं सकता। हम लोगो का बाल बाल आपके अहसानो से बधा हुआ है।

कृष्णा०। तो अगर मैं ही राजा गोपालसिंह बन जाऊं तो?

कृष्णाजिन्न की इस आखिरी बात ने सभों को चौंका दिया लक्ष्मीदेवी कमलिनी और लाडिली कृष्णाजिन्न का मुंह देखने लगीं, मगर कृष्णाजिन्न इस समय भी ठीक उसी सूरत में था जिस सूरत में आज के पहिले कई दफे हमारे पाठक उसे देख चुके हैं।

कृष्णाजिन्न ने अपने चेहरे पर से एक झिल्ली सी उतार कर अलग रख दी और उसी समय कमलिनी ने चिल्ला कर कहा, "अहा ! यह तो स्वयं राजा गोपालसिंह हैं !!" और यह कह कर उनके पैरों पर गिर पड़ी, "आपने तो हम लोगों को अच्छा धोखा दिया !"

❀ सोलहवां हिस्सा समाप्त ❀

॥ श्री: ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

सत्रहवां हिस्सा

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित



लहरी बुक डिपो

बनारस सिटी

प्रकाशक—

दुर्गाप्रसाद खत्री

प्रोप्रा० लहरी बुक डिपो

बनारस सिटी

मुद्रक—

दुर्गाप्रसाद खत्री

लहरी प्रेस

काशी

॥ श्री ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति

सत्रहवां हिस्सा

पहिला बयान

हमारे पाठक "लीला" को भूले न होंगे, तिलिस्मी दारोगा वाले बगले की बर्बादी के पहिले तक इसका नाम आया है जिसके बाद फिर इसका जिक्र नहीं आया *।

लीला को जमानियां की खबरदारी पर मुकर्रर कर के माया रानी नागर के मकान में काशी चली गई थी और वहां से दारोगा का सयोग हो जाने पर दारोगा के साथ इन्द्रदेव के यहां चली गई, जब इन्द्रदेव के यहा से भी वह भाग गई और दारोगा तथा शेरअलीखा की मदद से रोहतासगढ़ के अन्दर घुसने का प्रबन्ध किया गया, जैसा कि सन्तति बारहवे हिस्से तेरहवे बयान मे लिखा गया है, तब लीला भी मायारानी के साथ थी मगर रोह-

* देखिये सन्तति नौवां हिस्सा आठवां बयान।

तासगढ़ में जाने के पहिले मायारानी ने उसे अपनी हिफाजत का जरिया बना कर पहाड़ के नीचे ही छोड़ दिया था। मायारानी ने अपना तिलिस्म तमचा, जिसमें बेहोशी के बारूद की गोली चलाई जाती थी, लीला को दे कर कह दिया था कि "मैं शेर अलीखां की मदद से और उन्ही के भरोसे पर रोहतासगढ़ के अन्दर जाती हू मगर ऐयारो के हाथ में मेरा गिरफ्तार हो जाना कोई आश्चर्य नही क्योकि वीरेन्द्रसिंह के ऐयार बड़े ही चालाक है, यद्यपि उनसे बचे रहने की पूरी पूरी तर्कीब की गई है मगर फिर भी मै बेफिक्र नहीं रह सकती, अस्तु यह तिलिस्मी तमंचा तू अपने पास रख और इस पहाड़ के नीचे ही रह कर हम लोगों के बारे में टोह लेती रह, अगर हम लोग अपना काम कर के राजी खुशी के साथ लौट आये तब तो कोई बात ही नहीं ईश्वर न करे कहीं मैं गिरफ्तार हो गई तो तू मुझे छुड़ाने का बन्दोबस्त कीजियो और इस तमचे से काम निकालियो इसमे चलाने वाली गोलियां और ताम्रपत्र भी मैं तुझे दिये जाती हू जिसमे गोली बनाने की तर्कीब लिखी हुई है।

जब दारोगा और शेरअलीखा सहित मायारानी गिरफ्तार हुई और यह खबर शेरअलीखा के लश्कर में पहुँची जो पहाड़ के नीचे था तो लीला ने भी सब हाल सुना और वह उसी समय वहा से टल कर कहीं छिप रही मगर जब तक राजा वीरेन्द्रसिंह वहा से चुनारगढ़ की तरफ रवाना न हुए, वह भी उस इलाके के बाहर न गई और इसी से शिवदत्त और कल्याणसिंह (जो बहुत से आदमियों को ले कर रोहतासगढ़ के तहखाने में घुसे थे) वाला मामला भी उसे बखूबी मालूम हो गया था।

माधवी, मनोरमा और शिवदत्त ने उन ऐयारों की मदद

से कल्याणसिंह को छुड़ाया था तो भीमसेन भी उसी के साथ ही छुड़ाया गया मगर भीमसेन कुछ बीमार था इसलिये शिवदत्त के साथ मिलजुल कर रोहतासगढ़ के तहखाने में न जा सका था, शिवदत्त ने अपने ऐयारों की हिफाजत में उसे शिवदत्तगढ़ भेज दिया था।

सब बखेड़ों से छुट्टी पाकर जब राजा बीरेन्द्रसिंह कैदियों को लिये हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए तो मायारानी को कैद से छुड़ाने की फिक्र में लीला भी उन्हीं के लश्कर के साथ भेष बदले हुए रवाना हुई। सफर में नकली किशोरी, कामिनी और कमला के मारे जाने वाला मामला उसके सामने ही हुआ और तब तक उसे अपनी कार्रवाई करने का मौका न मिला, मगर जब नकली किशोरी, कामिनी और कमला की दाह क्रिया करके राजा साहब आगे बढ़े और दुश्मनों की तरफ से कुछ बेफिक्र हुए तब लीला को भी अपनी कार्रवाई का मौका मिला और वह उस खेमे के चारो तरफ ज्यादे फेरे लगाने लगी जिसमें मायारानी कैद थी और चालीस आदमी नंगी तलवार लिये बारी बारी से उसके चारो तरफ पहरा दिया करते थे। एक दिन इत्तफाक से आंधी पानी का जोर था और इसी से उस कम्बख्त को अपने काम का अच्छा मौका मिला।

बीरेन्द्रसिंह का लश्कर एक सुहावने जंगल में पड़ा हुआ था। समय बहुत अच्छा था, सन्ध्या होने के पहिले ही से बादलों का शामियाना खड़ा हो गया था, बिजली चमकने लग गई थी और हवा के झपेटे पेड़ पत्तों के साथ हाथापाई कर रहे थे। पहर रात जाते जाते पानी अच्छी तरह बरसने लग गया और उसके बाद तो आंधी पानी ने एक भयानक तूफान का रूप धारण कर लिया। उस समय लश्कर वालों को बहुत ही

तकलीफ हुई। हजारों सिपाही, गरीब, बनिये, बसिगारे और शागिर्दपेशे वाले जो मैदान में सोया करते थे इस तूफान से दुःखी होकर जान बचाने की फिक्र करने लगे। यद्यपि राजा बीरेन्द्रसिंह की रहमदिली और रिआयापरवरी ने बहुतों को आराम दिया और बहुत से आदमी खेमों और शामियानों के अन्दर घुस गये यहां तक कि राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह के खेमों में भी सैकड़ों को पनाह मिल गई थी मगर फिर भी हजारों आदमी ऐसे रह गये थे जिनकी भूँडी किस्मत में दुःख भोगना बदा था। यह सब कुछ था मगर लीला को ऐसे समय में भी चैन न था और वह इस दुःख को दुःख नहीं समझती थी क्योंकि उसे अपना काम साधने के लिये बहुत दिनों के बाद आज यही एक मौका अच्छा मालूम हुआ।

जिस खेमे में मायारानी और दारोगा वगैरह कैद थे उससे चालीस या पचास हाथ की दूरी पर एक सलई का बहुत बड़ा और पुराना दरख्त था। इस आंधी पानी और तूफान का खौफ न करके लीला उसी पेड़ पर चढ़ गई और कैदियों के खेमे की तरफ मुंह करके तिलिस्मी तमंचे का निशाना साधने लगी, जब जब बिजली चमकती तब तब वह अपने निशाने को ठीक करने का उद्योग करती। सम्भव था कि बिजली की चमक में उसे भी कोई पेड़ पर चढ़ा हुआ देख ले मगर जिन सिपाहियों के पहरे में वह खेमा था उस (कैदियोंवाले) खेमे के आस पास जो लोग रहते थे, वे सब इस तूफान से घबड़ा कर उसी खेमे के अन्दर घुस गये थे जिसमें मायारानी और दारोगा वगैरह कैद थे। खेमे के बाहर या उस पेड़ के आस पास कोई भी न था जिस पर लीला चढ़ी हुई थी।

लीला जब अपने निशाने को ठीक कर चुकी तब उसने एक

गोली (बेहोशीवाली) चलाई। हम पहिले के किसी बयान में लिख चुके हैं कि "इस तिलिस्मी तमंचे के चलाने में किसी तरह की आवाज नहीं होती थी मगर जब गोली जमीन पर गिरती थी तब कुछ हलकी सी आवाज पटाखे की तरह पर होती थी।"

लीला की चलाई हुई गोली खेमे को छेद कर अन्दर चली गई और एक सिपाही के बदन पर गिर कर फूटी। उस सिपाही का कुछ नुक्सान नहीं हुआ जिस पर गोली गिरी थी न तो उसका कोई अंगभंग हुआ और न कपड़ा जला केवल हलकी आवाज हुई और बेहोशी का बहुत ज्यादे धूआं चारो तरफ फैलने लगा। मायारानी उस वक्त बैठी हुई अपनी किस्मत पर रो रही थी। पटाखे की आवाज से वह चौंक कर उस तरफ देखने लगी और बहुत जल्द समझ गई कि यह हमारे उसी तिलिस्मी तमंचे की चलाई हुई गोली है जो मैं लीला के सुपुर्द कर आई थी।

मायारानी यद्यपि जान से हाथ धो बैठी थी और उसने निश्चय कर लिया था कि अब इस कैद से मुझे किसी तरह छुटकारा नहीं मिल सकता मगर इस समय तिलिस्मी तमंचे की गोली ने खेमे के अन्दर पहुंच कर उसे विश्वास दिला दिया कि "अब भी तेरा एक दोस्त मदद करने लायक मौजूद है जो यहां आ पहुंचा और तुझे इस कैद से छुड़ाया ही चाहता है।"

वह मायारानी, जिसकी आंखों के आगे मौत की सूरत घूम रही थी और जो हर तरह से नाउम्मीद हो चुकी थी चौंक कर सम्हल बैठी, बेहोशी का असर करने वाला धूआं बच रहने की मुबारकबाद देता हुआ आंखों के सामने फैलने लगा और तरह तरह की उम्मीदों ने उसका कलेजा ऊंचा कर दिया, यद्यपि वह जानती थी कि यह धूंआ मुझे भी बेहोश कर देगा, मगर फिर

भी वह खुशी की निगाहों से चारो तरफ देखने लगा और इतने ही में दूसरी गोली भी उसी ढंग की वहां आ कर गिरी।

मायारानी और दारोगा को छोड़ कर जितने आदमी उस खेमे में थे सभों को उन दोनो गोलियों ने ताज्जुब में डाल दिया। अगर गोला चलाती समय तमचे में से किसी तरह की आवाज निकल कर उनके कानो तक पहुंचती तो शायद कुछ पता लगाने की नीयत से दो चार आदमी खेमे के बाहर निकलते मगर उस समय सिवाय एक दूसरे के मुंह देखने के किसी को किसी तरह का गुमान न हुआ और धूए ने तेजी के साथ फैल कर अपना असर जमाना शुरू कर दिया। बात की बात में जितने आदमी उस खेमे के अन्दर थे सभों का सर घूमने लगा और एक दूसरे के ऊपर गिरते हुए सब के सब बेहोश हो गये, मायारानी और दारोगा को भी दीन दुनिया की सुध न रही।

पेड़ पर चढ़ी हुई लीला ने थोड़ी देर तक इन्तजार किया। जब खेमे के अन्दर से किसी को निकलते न देखा और उसे विश्वास हो गया कि खेमे के अन्दर वाले अब बेहोश हो गये होंगे तब वह पेड़ से उतरी और खेमे के पास आई। आंधी पानी का जोर अभी तक वैसा ही था मगर लीला ने उसे अच्छी तरह सह लिया और कनात के नीचे से झांक कर खेमे के अन्दर देखा और सभों को बेहोश पाया।

पाठकों को यह मालूम है कि "लीला ऐयारी भी जानती थी" कनात काट कर वह खेमे के अन्दर चली गई, आदमी बहुत ज्यादे भरे हुए थे इसलिये उसे मायारानी के पास तक पहुंचने में बड़ी कठिनाई हुई, आखिर उसके पास पहुंची और हाथ पैर खोलने बाद लखलखा सुंघा कर होश में लाई। मायारानी ने होश में आकर लीला को देखा और धीरे से कहा, 'शाबाश !

खूब पहुंची। बस दारोगा को छुड़ाने की कोई जरूरत नहीं।"
इतना कह कर मायारानी उठ खड़ी हुई और लीला के हाथ का सहारा लेती हुई खेमे के बाहर निकल।

लीला ने चाहा कि लश्कर में से दो घोड़े भी सवारी के लिये चुरा लावे मगर मायारानी ने इसे स्वीकार न किया और उसी तूफान मे दोनों कम्बख्तों ने एक तरफ का रास्ता लिया।

दूसरा बयान

पाठकों को मालूम है कि शिवदत्त और कल्याणसिंह ने जब रोहतासगढ़ पर चढ़ाई की थी तब उनके साथ मनोरमा और माधवी भी मौजूद थी, भूतनाथ और सर्यूसिंह ने शिवदत्त और कल्याणसिंह को डरा धमका कर मनोरमा को तो गिरफ्तार कर लिया* मगर माधवी कहा गई और क्या हुई इसका हाल कुछ लिखा नहीं गया अस्तु अब हम थोड़ा सा हाल माधवी का लिखना उचित समझते हैं।

जिस जमाने में माधवी गया और राजगृही की रानी कहलाती थी उस जमाने मे उसका राज्य केवल तीन ही आदमियो के भरोसे पर चलता था एक दीवान अग्निदत्त, दूसरा कोतवाल धर्म्मसिंह और तीसरा सेनापति कुबेरसिंह, बस यही तीनों उसके राज्य का आनन्द लेते थे और इन्हीं तीनों का माधवी को भरोसा भी था। यद्यपि ये तीनोंही माधवी की चाह में डूबनेवाले थे मगर कुबेरसिंह और धर्म्मसिंह प्यासे ही रह गये जिसका कि उन दोनों को बहुत ही रंज रहा

जब राजगृही और गया की किस्मत ने पलटा खाया तब धर्म्मसिंह कोतवाल को तो चपला ने माधवी की सूरत बन

* हिस्सा चौदहवां बयान दूसरा।

धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और दीवान अग्निदत्त बहुत दिनों तक बचा रह कर अन्त में किशोरी के कारण एक खोह के अन्दर मारा गया परन्तु अभी तक यह न मालूम हुआ कि उसके मारे जाने का सबब क्या था। हां सेनापति कुबेरसिंह जिसने माधवी के राज्य में सब से ज्यादे दौलत पैदा की थी, बचा रह गया क्योंकि उसने जमाने को पलटा खाते देख चुपचाप अपने घर (मुर्शिदाबाद) का रास्ता लिया मगर माधवी के हाल चाल की खबर बराबर लेता रहा, क्योंकि यद्यपि उसने माधवी का साथ छोड़ दिया था मगर माधवी के इश्क ने उसके दिल में से अपना दखल नहीं उठाया था।

माधवी की बिगड़ी हुई अवस्था देख कर भी उसकी मुहब्बत में डूबे रहने का यही सबब था, एक तो माधवी वास्तव में सुन्दर, हसीन और नाजुक थी, दूसरे राजगृही और गया के राज्य से खारिज हो जाने पर भी वह माधवी को अमीर और बेहिसाब दौलत का मालिक समझता था और इसीलिये वह बराबर घर बैठ कर माधवी के हाल चाल की बराबर खबर लेता रहा और वक्त पर काम देने के लिये थोड़ी सी फौज का मालिक भी बना रहा।

मनोरमा के गिरफ्तार हो जाने बाद जब शिवदत्त और कल्याणसिंह के साथ वह रोहतासगढ़ की तराई में पहुंची तो एक आदमी ने गुप्त रीति पर उसे एक चीठी दी और बहुत जल्द उसका जवाब मांगा। वह चीठी कुबेरसिंह की थी और उसमें यह लिखा हुआ था —

"मुझे आपकी अवस्था पर बहुत ही रंज और अफसोस है क्योंकि आपकी हालत बदल गई है और आप मुझसे बहुत दूर हैं मगर मैं अभी तक आपकी ख्याली तस्वीर अपने दिल के अन्दर

कायम रख कर दिन रात उसकी पूजा किया करता हूं। यही सबब है कि बहुत दिनों तक मेहनत करके मैंने इतनी ताकत पैदा कर ली है कि आपकी मदद कर सकूं और आपको पुनः राजगृही की गद्दी का मालिक बनाऊं। आप अपने ही दिल से पूछ देखिये कि अग्निदत्त, जिसके साथ आपने सब कुछ किया कैसा बेइमान और बेमुरौवत निकला और मैं, जिसे आपने हद से ज्यादे तरसाया कैसी हालत में आपकी मदद करने को तैयार हूं? यदि आप मुनासिब समझें तो इसके साथ मेरे पास चली आवें या मुझी को अपने पास बुलावें। यह आदमी जो चीठी लेकर जाता है मेरा ऐयार है।"

आपका कुबेर

माधवी ने उस चीठी को बड़े गौर से दोहरा और तेहरा कर पढ़ा और देर तक तरह तरह की बातें सोचती रही। हम नहीं जानते कि उसका दिल किन किन बातों का फैसला करता रहा, या वह किस विचार में देर तक डूबी रही? हां थोड़ी देर बाद उसने सर उठा कर चीठी लाने वाले की तरफ देखा और कहा, "कुबेरसिंह कहां पर है?"

ऐयार०। यहां से थोड़ी ही दूर पर।

माधवी०। फिर वह खुद यहां क्यों न आया?

ऐयार०। इस लिये कि आप इस समय दूसरों के साथ हैं जिन्होंने आपको न मालूम किस तरह का भरोसा दिया होगा या आप ही ने शायद उनसे किसी तरह का एकरार किया हो ऐसी अवस्था में आप से दरियाफ्त किये बिना इस लश्कर में आना मुनासिब नहीं समझा।

माधवी०। ठीक है, अच्छा तुम जाकर उसे बहुत जल्द मेरे पास ले आओ, कितनी देर में आओगे?

धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और दीवान अग्निदत्त बहुत दिनों तक बचा रह कर अन्त में किशोरी के कारण एक खोह के अन्दर मारा गया परन्तु अभी तक यह न मालूम हुआ कि उस के मारे जाने का सबब क्या था। हां सेनापति कुबेरसिह जिसने माधवी के राज्य में सब से ज्यादे दौलत पैदा की थी, बचा रह गया क्योंकि उसने जमाने को पलटा खाते देख चुपचाप अपने घर (मुर्शिदाबाद) का रास्ता लिया मगर माधवी के हाल चाल की खबर बराबर लेता रहा, क्योंकि यद्यपि उसने माधवी का राज्य छोड दिया था मगर माधवी के इश्क ने उसके दिल में से अपना दखल नहीं उठाया था।

माधवी की बिगडी हुई अवस्था देख कर भी उसकी मुहब्बत से हाथ न धोने का दो सबब था, एक तो माधवी वास्तव में खूबसूरत, हसीन और नाजुक थी, दूसरे राजगृही और गया के राज्य से खारिज हो जाने पर भी वह माधवी को अमीर और बेहिसाब दौलत का मालिक समझता था और इसीलिये वह समय पर ध्यान रख कर माधवी के हाल चाल की बराबर खबर लेता रहा और वक्त पर काम देने के लिये थोडी सी फौज का मालिक भी बना रहा।

मनोरमा के गिरफ्तार हो जाने बाद जब शिवदत्त और कल्याणसिंह के साथ वह रोहतासगढ़ की तराई में पहुंची तो एक आदमी ने गुप्तरीति पर उसे एक चीठी दी और बहुत जल्द उसका जवाब मांगा। वह चीठी कुबेरसिंह की थी और उसमें यह लिखा हुआ था —

'मुझे आपकी अवस्था पर बहुत ही रंज और अफसोस है यद्यपि आपकी हालत बदल गई है और आप मुझसे बहुत दूर हैं मगर मैं अभी तक आपकी खयाली तस्वीर अपने दिल के अन्दर

कायम रख कर दिन रात उसकी पूजा किया करता हूं। यही सबब है कि बहुत दिनों तक मेहनत करके मैंने इतनी ताकत पैदा कर ली है कि आपकी मदद कर सकूं और आपको पुनः राजगृही की गद्दी का मालिक बनाऊं। आप अपने ही दिल में पूछ देखिये कि अग्निदत्त, जिसके साथ आपने सब कुछ किया कैसा बेइमान और बेमुरौवत निकला और मैं, जिसे आपने हद से ज्यादे तरसाया कैसी हालत में आपकी मदद करने को तैयार हूं? यदि आप मुनासिब समझें तो इसके साथ मेरे पास चली आवें या मुझी को अपने पास बुलावें। यह आदमी जो चीठी लेकर जाता है मेरा ऐयार है।"

आपका कुबेर

माधवी ने उस चीठी को बड़े गौर से दोहरा और तेहरा कर पढ़ा और देर तक तरह तरह की बातें सोचती रही। हम नहीं जानते कि उसका दिल किन किन बातों का फैसला करता रहा, या वह किस विचार में देर तक डूबी रही? हां थोड़ी देर बाद उसने सर उठा कर चीठी लाने वाले की तरफ देखा और कहा, "कुबेरसिंह कहां पर है?"

ऐयार०। यहां से थोड़ी ही दूर पर।

माधवी०। फिर वह खुद यहां क्यों न आया?

ऐयार०। इस लिये कि आप इस समय दूसरों के साथ हैं जिन्होंने आपको न मालूम किस तरह का भरोसा दिया होगा या आप ही ने शायद उनसे किसी तरह का एकरार किया हो ऐसी अवस्था में आप से दरियाफ्त किये बिना इस लश्कर में आना मुनासिब नहीं समझा।

माधवी०। ठीक है, अच्छा तुम जाकर उसे बहुत जल्द मेरे पास ले आओ, कितनी देर में आओगे?

ऐयार०। (सलाम करके) आधे घंटे के अन्दर।

वह ऐयार तेजी के साथ दौड़ता हुआ वहां से चला गया और माधवी उसी जगह टहलती हुई उसका इन्तजार करने लगी।

दिन आधे घंटे से कुछ ज्यादे बाकी था और इस समय माधवी कुछ खुश मालूम होती थी, शिवदत्त और कल्याणसिंह का लश्कर एक जंगल में छिपा हुआ था और माधवी अपने डेरे से निकल कर सौ सवा सो कदम की दूरी पर चली गई थी। माधवी कुबेरसिंह के अक्षर अच्छी तरह पहिचानती थी इसलिये उसे किसी के धोखा देने का शक कुछ भी न हुआ और वह बेखौफ उसके आने का इन्तजार करने लगी।

सन्ध्या होने के पहिले ही अपने उसी ऐयार को साथ लिये हुए कुबेरसिंह माधवी की तरफ आता दिखाई दिया जो थोडी ही देर पहिले उसकी चीठी लेकर आया था, उस समय वह ऐयार भी एक घोड़े पर सवार था और कुबेरसिंह अपनी सूरत शक्ल तथा हैसियत को अच्छी तरह सजाए हुए था। माधवी के पास पहुंच कर दोनों आदमी घोड़े से नीचे उतर पड़े और कुबेरसिंह ने माधवी को सलाम करके कहा, "आज बहुत दिनों के बाद ईश्वर ने मुझे आप से मिलाया, मुझे इस बात का बहुत ही रंज है कि आप ने चुपचाप लौंडियों के भड़काने से घर छोड़ जंगल का रास्ता लिया और खैरखाह कुबेरसिंह (हम) को याद तक न किया !! मैं खूब जानता हूं कि आपने अपने दीवान अग्निदत्त से डर कर ऐसा किया था मगर उनके बाद भी तो मुझे याद करने का मौका जरूर मिला होगा।"

माधवी०। (मुसकुराती हुई कुबेरसिंह का हाथ पकड़ के) मैं घर से निकलने के बाद ऐसी मुसीबत में पड़ गई थी कि अपनी भलाई बुराई पर कुछ भी ध्यान न दे सकी और जब मैंने

सुना कि गया और राजगृही में वीरेन्द्रसिंह का राज्य हो गया तब और भी हताश हो गई, फिर भी मैं अपने उद्योग की बदौलत बहुत कुछ कर गुजरती मगर गयाजी में अग्निदत्त की लड़की कामिनी ने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया और मुझे किसी लायक न रक्खा (अपनी कटी हुई कलाई दिखा कर) यह उसी की बदौलत है।

कुबेर०। वह खान्दान का खान्दान ही निमकहराम निकला और इसी फेर में अग्निदत्त मारा भी गया।

माधवी०। हां उसके मरने का हाल मायारानी की सखी मनोरमा की जुबानी मैंने सुना था (पीछे की तरफ देख के) कौन आ रहा है?

कुबेर०। आपही के लश्कर का कोई आदमी है शायद आप को बुलाने आता हो, नहीं, वह दूसरी तरफ घूम गया, मगर अब आपको कुछ सोच विचार करना, किसी से मिलना या इस जगह खड़े खड़े बातों में समय नष्ट करना न चाहिये और यह मौका भी बातचीत करने का नहीं है आप (घोड़े की तरफ इशारा करके) इस घोड़े पर शीघ्र सवार होकर मेरे साथ चली चलें, मैं आपका ताबेदार सब लायक और सब कुछ करने के लिये तैयार हूं, फिर किसी के खुशामद की जरूरत ही क्या है? यदि कल्याणसिंह के लश्कर में आपका कुछ असबाब हो भी तो उसकी परवाह न कीजिये।

माधवी०। नहीं अब मुझे किसी की परवाह नहीं रही, मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं।

इतना कह माधवी कुबेरसिंह के घोड़े पर सवार हो गई कुबेरसिंह अपने ऐयार के घोड़े पर सवार हुआ, पैदल ऐयार को साथ लिये हुए दोनों एक तरफ रवाना हुए।

२

यही सबब था कि शिवदत्त वगैरह के साथ माधवी रोहतासगढ़ के तहखाने में दाखिल नहीं हुई।

तीसरा बयान

कैद से छुटकारा मिलने बाद बीमारी के सबब से यद्यपि भीमसेन को घर जाना पड़ा और वहा उसकी बीमारी बहुत जल्द जाती रही मगर घर में रहने का जो सुख उसको मिलना चाहिये वह न मिला, क्योंकि एक तो मा के मरने का रंज और गम उसे हद से ज्यादे था और अब वह घर काटने को दौड़ता था, दूसरे थोड़े ही दिन बाद बाप के मरने की खबर भी उसे पहुँची जिससे वह बहुत ही उदास और बेचैन हो गया। इस समय उसके ऐयार लोग भी वहा मौजूद थे जो बाहर से दुःखदाई खबर लेकर लौट आये थे। पहिले तो उसके ऐयारों ने उसे बहुत समझाया और राजा वीरेन्द्रसिंह से सुलह कर लेने में बहुत सी भलाइया दिखलाईं मगर उस नालायक के दिल में एक न बैठी और वह राजा वीरेन्द्रसिंह से बदला लेने तथा किशोरी को जान से मार डालने की कसम खा कर घर से बाहर निकल पड़ा। बाकरअली, खुदाबक्स, अजायबसिंह और यारअली इत्यादि उसके लालची ऐयारों ने भी लाचार हो कर उसका साथ दिया।

अबकी दफे भीमसेन ने अपने ऐयारों के सिवाय और किसी को भी साथ न लिया, हा रुपै अशर्फी या जवाहिरात की किस्म में से जहा तक उससे बना या जो कुछ उसके पास था ले कर अपने ऐयारों को लालच भरी उम्मीदों का सब्ज बाग दिखलाता हुआ रवाना हुआ और थोड़ी दूर जाने बाद ऐयारों के साथ ही साथ अपनी भी सूरत बदल ली।

"राजा वीरेन्द्रसिंह को किस तरह नीचा दिखाना चाहिये और क्या करना चाहिये ?" इस विषय पर तीन दिन तक उन लोगों में बहस होती रही और अन्त में यह निश्चय किया गया कि "राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके खान्दान तथा आपुस वालों का मुकाबला करने के पहिले उनके दुश्मनों से दोस्ती बढ़ा कर अपना बल पुष्ट कर लेना चाहिये।" और इस इरादे पर वे लोग कुछ कायम भी रहे और माधवी, मायारानी तथा तिलस्मी दारोगा वगैरह से मुलाकात करने की फिक्र करने लगे।

कई दिनों तक सफर करने और घूमने फिरने के बाद एक दिन ये लोग दोपहर होते होते एक घने जंगल में पहुँचे। चार पांच घन्टे आराम कर लेना इन लोगों को बहुत जरूरी मालूम हुआ क्योंकि गर्मी के चलाचली का जमाना था और धूप बहुत ही कड़ी और दुःखदाई थी, मुसाफिरों को तो जाने दीजिये, जगली जानवरों और आकाश में उड़ने तथा बात की बात में दूर दूर की खबर लाने वाली चिड़ियाओं को भी पत्तों की आड़ से निकलना बुरा मालूम होता था।

इस जगल में एक जगह पानी का झरना भी जारी था और उसके दोनों तरफ पेड़ों की घनाहट के सबब बनिस्बत और जगहों के ठंढक ज्यादे थी अस्तु ये पांचों मुसाफिर भी झरने के किनारे पत्थर की साफ चट्टान देख कर बैठ गए और आपुस में इधर उधर की बातें करने लगे। उसी समय बातचीत की आहट पाने और निगाह दौड़ाने पर इन लोगों की निगाह दस बारह सिपाहियों पर पड़ी जिन्हें देख भीमसेन चौंका और उनका पता लगाने के लिये अजायबसिंह से कहा, क्योंकि दोस्तों और दुश्मनों के ख्याल से उसका जी एकदम के वास्ते भी ठिकाने नहीं रहता था और वह "पत्ता खड़का बन्दा भड़का" की कहा-

चत का नमूना बन रहा था।

भीमसेन की आज्ञानुसार अजायबसिंह ने उन आदमियों का पीछा किया और दो घन्टे तक लौट कर न आया। तब दूसरे ऐयारों को भी चिन्ता हुई और अजायबसिंह की खोज में जाने के लिये तैयार हुए मगर इसकी नौबत न पहुँची क्योंकि उसी समय अजायबसिंह अपने साथ कई सिपाहियों को लिये हुए भीमसेन की तरफ आता दिखाई दिया।

अजायबसिंह के इस तरह आने ने पहिले तो सभों को खुटके में डाल दिया, मगर अजायबसिंह ने दूर ही से खुशी का इशारा किया तब सभों का जी ठिकाने हुआ और उसके आने का इन्तजार करने लगे। पास आने पर अजायबसिंह ने भीमसेन से कहा, "इस जंगल में आ कर टिक जाना हम लोगों के लिये बहुत अच्छा हुआ क्योंकि रानी माधवी से मुलाकात हो गई, आजकल उनका डेरा भी इस जंगल में आया है। कुबेरसिंह सेनापति और चार पांच सौ सिपाही उनके साथ हैं, जिन लोगों का मैंने पीछा किया था वे भी उन्हीं के सिपाहियों में से थे और ये भी उन्हीं के सिपाही हैं जो मेरे साथ आपको बुलाने के लिये आए हैं।"

माधवी की खबर सुन कर भीमसेन उतना ही खुश हुआ जितना अजायबसिंह की जुबानी भीमसेन के आने की खबर पाकर माधवी खुश हुई थी। अजायबसिंह की बात सुनते ही भीमसेन उठ खड़ा हुआ और अपने ऐयारों को साथ लिये हुए घड़ी भर के अन्दर ही अपनी बहिन माधवी से जा मिला, वे दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए मगर इन दोनों की मुलाकात कुबेरसिंह को अच्छी न मालूम पड़ी। इसका सबब क्या था सो हमारे पाठक लोग खुद ही समझ सकते हैं।

थोड़ी देर तक भीमसेन और माधवी ने कुशल मंगल पूछने में बिताया। माधवी ने खाने पीने की चीजें तैयार करने का हुक्म दिया क्योंकि उसे अपने अनूठे भाई की खातिरदारी आज मंजूर थी और इसी लिये बड़ी मुहब्बत के साथ देर तक बातें होती रहीं।

माधवी को इस जंगल में आए आज पांच दिन हो चुके हैं, पांचवें दिन दो पहर के समय भीमसेन से मुलाकात हुई थी, उसका (कुबेरसिंह का) ऐयार दुश्मनों की खोज खबर लगाने के लिये कहीं गया हुआ था क्योंकि माधवी और कुबेरसिंह ने इस जंगल में पहुंच कर निश्चय कर लिया था कि पहिले दुश्मनों का हाल चाल मालूम करना चाहिये इसके बाद जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा।

चौथा बयान

कैद से छूटने के बाद लीला को साथ लिये हुए मायारानी ऐसी भागी कि उसने पीछे की तरफ फिर के भी नहीं देखा, आंधी और पानी के कारण उन दोनों को भागने में बड़ी तकलीफ हुई, कई दफे वे दोनों गिरीं और उन दोनों को चोट भी लगी मगर प्यारी जान को बचा कर ले भागने के खयाल ने उन्हें किसी तरह दम न लेने दिया। दो घण्टे के बाद आंधी पानी का जोर जाता रहा, आसमान साफ हो गया और चन्द्रमा भी निकल आया, उस समय उन दोनों को भागने में सुबीता हुआ और सवेरा होते तक वे दोनों बहुत दूर निकल गईं।

मायारानी यद्यपि खूबसूरत थी, नाजुक थी और अमीरी परले सिरे की कर चुकी थी मगर इस समय वे सब बातें हवा हो गईं, पैर में छाले पड़ जाने पर भी उसने भागने में कसर न

की ओर सवेरा हो जाने पर भी उसने दम न लिया, बराबर भागी चली गई। दूसरा दिन भी उसके लिये बहुत अच्छा था आसमान पर बदली छाई हुई थी और धूप को जमीन तक पहुंचने का मौका न मिला था। अब मायारानी बातचीत करती हुई और पिछली बातें लीला को सुनाती हुई रुक रुक कर चलने लगी, थोड़ी दूर जाती, फिर जरा दम ले लेती पुनः उठ कर चलती और कुछ दूर बाद दम ले लेने के लिये बैठ जाती। इसी तरह दूसरा दिन भी मायारानी ने सफर ही में बिता दिया और खाने पीने की कुछ विशेष परवाह न की, सन्ध्या होने के कुछ पहिले वे दोनों एक पहाड़ी की तराई में पहुंची जहां साफ पानी का सुन्दर चश्मा बह रहा था और जंगली बेर तथा मकोय के पेड़ भी बहुतायत से थे। वहां पर लीला ने मायारानी से कहा कि "अब डरने तथा चलते चलते जान देने की कोई जरूरत नहीं, हम लोग बहुत दूर निकल आये हैं और ऐसे रास्ते से आये हैं कि जिधर से किसी मुसाफिर की आमदरफ्त नहीं होती अस्तु अब हम लोगों को कुछ देर बेफिक्री के साथ आराम करना चाहिये, यह जगह इस लायक है कि हम लोग कुछ खा पी कर अपनी आत्मा को सन्तोष दे लें और अपनी सूरत भी अच्छी तरह बदल कर पहिचाने जाने का खटका मिटा लें।"

लीला की बात मायारानी ने स्वीकार की और चश्मे के पानी से हाथ मुंह धोने और जरा दम लेने बाद सब के पहिले सूरत बदलने का बन्दोबस्त करने लगी क्योंकि दिन नाम मात्र को रह गया था और रात हो जाने पर बिना रोशनी के सहारे यह काम अच्छी तरह नहीं हो सकता था।

सूरत शक्ल के हेर फेर से छुट्टी पाने बाद दोनों ने जंगली बेर और मकोय को अच्छे से अच्छा मेवा समझ कर भोजन किया

और चश्मे का जल पी कर आत्मा को सन्तोष दिया तब निश्चिन्त हो कर बैठीं और यो बातचीत करने लगीः—

माया०। अब जरा जी ठिकाने हुआ है, मगर शरीर चूर चूर हो गया। खैर किसी तरह तेरी बदौलत जान बच गई, नही तो मैं हर तरह से नाउम्मीद हो चुकी थो और राह देखती थी कि मेरी जान किस तरह ली जाती है।

लीला०। चाहे तुम्हारे बिल्कुल नौकर चाकर तुम्हारे अहसानों को भूल जाये और तुम्हारे नमक का खयाल न करे मगर मैं कब ऐसा कर सकती हूं, मुझे दुनियां में तुम्हारे बिना चैन कब पड़ सकता है, जब तक तुम्हे कैद से छुडा न लिया अन्न का दांना मुंह में न डाला बल्कि अभी तक जंगली बैर और मकोय पर गुजारा कर रही हूं।

माया०। शाबाश! मैं तुम्हारे इस अहसान को जन्म भर नहीं भूल सकती, जिस तरह आप रहूंगी उसी तरह तुम्हे भी रक्खूंगी यह जान तुमने बचाई है इस लिये जब तक इस दुनिया में रहूंगी इस जान का मालिक तुम्ही को समझूंगी।

लीला०। (तिलिस्मी तमचा और गोली मायारानी के सामने रख कर) यह अपनी अमानत आप लीजिये और अब इसे अपने पास रखिये, इसने बड़ा काम दिया।

माया०। (तमंचा उठा कर और थोड़ी सी गोली लीला को देकर) इन गोलिया को अपने पास रक्खो, बिना तमचे के भी ये बडा काम देगी, जिस जगह फेंक दोगी या जहा जमीन पर पटकोगी उसी जगह ये अपना गुन दिखलावेगी।

लीला० (गोली रख कर) बेशक ये बड़े वक्त पर काम दे सकती हैं। अच्छा यह कहिये कि अब हम लोगो को क्या करना और कहा जाना चाहिये ?

माया० । इस का जवाब तो तुम्हीं बहुत अच्छा दे सकती हो, मैं केवल इतना ही कहूंगी कि गोपालसिंह और कमलिनी को इस दुनिया से उठा देना सब से पहिला और जरूरी काम समझना चाहिये । किशोरी, कामिनी और कमला को मार कर मनोरमा ने कुछ भी न किया इतनी ही मेहनत गोपालसिंह और कमलिनी को मारने के लिए करती तो इस समय मैं पुनः तिलिस्म की रानी कहलाने लायक हो सकती ।

लीला० । ठीक है मगर मुझे (कुछ रुक कर देखो तो वह कौन सवार जा रहा है ! मुझे तो उस छोकड़े रामदीन की छटा मालूम पड़ती है ! यह पचकल्यान मुश्की घोड़ी भी अपने ही अस्तबल की मालूम पड़ती है

माया० । वही है जिस पर मैं सवार हुआ करती थी, बेशक वह सवार भी रामदीन ही है, उसे पकड़ो तो गोपालसिंह का ठीक हाल मालूम हो ।

लीला० । पकड़ना तो कोई कठिन नहीं है । क्योंकि तिलिस्मी तमंचा तुम्हारे पास मौजूद है मगर वह कम्बख्त कुछ बताने वाला नहीं है ।

माया० । खैर जो हो मैं गोली चलाती हूं ।

इतना कह कर मायारानी ने फुर्ती से तिलिस्मी तमंचे में गोली भर कर सवार की तरफ चलाई । गोली घोड़ी की गर्दन में लगी और तुरत फट गई, घोड़ी भड़की और उछली कूदी मगर गोली से निकले हुए बेहोशी के धूंए ने अपना असर करने में उससे भी ज्यादे तेजी और फुर्ती दिखाई । घोड़े और सवार दोनों ही पर बेहोशी का असर हो गया । सवार जमीन पर गिर पड़ा और दो कदम आगे बढ़ कर घोड़ी भी लेट गई । मायारानी और लीला ने दूर से यह तमाशा देखा और दौड़ती

हुई सवार के पास पहुंची।

लीला०। पहिले इसकी मुश्कें कसनी चाहिये।

माया०। क्या जरूरत है।

लीला०। क्यों, फिर इसे बेहोश किस लिये किया?

माया०। तुम खुद ही कह चुकी हो कि यह कुछ बताने वाला नहीं है फिर मुश्कें बांधने से मतलब?

लीला०। आखिर फिर किया क्या जाय?

माया०। पहिले तुम इसकी तलाशी ले लो फिर जो कुछ करना होगा मैं बताऊंगी।

लीला०। बहुत खूब, यह तुमने ठीक कहा।

इस समय सन्ध्या पूरे तौर पर हो चुकी थी परन्तु चन्द्रदेव के दर्शन हो रहे थे इसलिये यह नहीं कह सकते कि अन्धकार पल पल में बढ़ता जाता था। लीला उस सवार की तलाशी लेने लगी और पहिले ही दफे जेब में हाथ डालने से उसे दो चीज मिलीं। एक तो हीरे की कीमती अंगूठी जिस पर राजा गोपालसिंह का नाम खुदा हुआ था और दूसरी चीज एक चीठी थी जो लिफाफे के तौर पर लपेटी हुई थी।

चाहे अन्धकार न हो मगर चीठी और अंगूठी पर खुदे हुए नाम को पढ़ने के लिये रोशनी की जरूरत थी और जब तक चीठी का हाल मालूम न हो जाय तब तक और कुछ काम करना या तलाशी लेना उन दोनों को मंजूर न था, अस्तु लीला ने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी पैदा की और मायारानी ने सब के पहिले अंगूठी पर निगाह दौड़ाई। अंगूठी पर "श्रीगोपाल' खुदा हुआ देख उसके रोंगटे खड़े हो गये। अपनी तबीयत सम्हाल कर चीठी पढ़ने लगी। चीठी में यह लिखा हुआ था:—

वेनीराम जोग लिखा गोपालसिंह :—

आज हमने अपना पर्दा खोल दिया, कृष्णाजिन्न के नाम का अन्त हो गया, जिनके लिये यह स्वांग रचा गया था उन्हें मालूम हो गया कि गोपालसिंह और कृष्णाजिन्न में कोई भेद नहीं है अस्तु अब हमने काम काज के लिये इस छोकड़े को अपनी अंगूठी देकर विश्वास का पात्र बनाया है। जब तक यह अंगूठी इसके पास रहेगी तब तक इसका हुक्म हमारे हुक्म के बराबर सभो को मानना होगा। इसका बन्दोबस्त कर देना और दो सौ सवार तथा चार रथ बहुत जल्द पिपलिया घाटी में भेज देना। हम किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी, और कमलिनी वगैरह का लेकर आते हैं। थोड़ा सा जलपान का सामान उम्दा अलग भेजना। परसों रविवार को शाम तक हम लोग वहा पहुंच जायगे।

उस चीठी ने मायारानी का कलेजा दहला दिया और उसने घबड़ा कर वह चीठी पढ़ने के लिये लीला के हाथ में दे दी।

माया०। ओफ! मुझे स्वप्न में भी इस बात का गुमान न था कि कृष्णाजिन्न वास्तव में गोपालसिंह है! आह! जब मैं पिछली बातें याद करती हूं तो कलेजा कांप जाता है और अब मालूम होता है कि गोपालसिंह ने मेरी तरफ से लापरवाही नहीं कि बल्कि उसने मुझे बुरी तरह से दुःख देने का इरादा कर लिया था। किशोरी कामिनी और कमला के बारे मे भी , .ओफ! बस अब मैं इस जगह दम भर भी नहीं ठहर सकती और ठहरना उचित भी नहीं है।

लीला०। बेशक ऐसा ही है मगर कोई हर्ज नहीं। आज यदि कृष्णाजिन्न का भेद खुल गया है तो यह (अगूठी और चीठी दिखा कर) चीज भी बड़ी ही अनूठी मिल गई है। तुम बहुत

जल्द देखोगी कि इस चीठी और अगूठी की बदौलत मैं कैसे कैसे नामी ऐयारों की आखो में धूल डालती हूं और गोपालसिह तथा उसके सहायकों को किस तरह तडपा तड़पा कर मारती हू। तुम यह भी देखोगी कि तुम्हारे उन लोगों ने जो ऐयारी का बाना पहिने हुए थे और नामी ऐयार कहलाते थे उसका पासगा भी नहीं किया जो मैं अब कर दिखाऊंगी। हा तो अब यहा से चलना चाहिये।

माया०। बहुत जल्द चलना चाहिये, मगर क्या इस छोकड़े को जीता ही छोड़ जाओगी ?

लीला०। नहीं नहीं कदापि नहीं। क्या इसे मैं इसलिये जीता छोड जाऊगी कि यह होश में आ कर जमानियां या गोपालसिह के पास चला जावे और मेरी कार्रवाइयों में बट्टा लगावे।

इतना कह कर लीला ने खजर निकाला और एक ही हाथ मे बेचारे रामदीन का सिर काट दिया और लाश को उसी तरह छोड़ घोडी को होश में लाने का उद्योग करने लगी।

थोडी देर में घोडी भी चैतन्य हो गई, उस समय लीला के कहे अनुसार मायारानी उस घोडी पर सवार हुई और वहा से हट कर एक घने जगल का रास्ता लिया। लीला घोड़ी की रिकाब थाम्हे साथ साथ बातें करती हुई जाने लगी।

माया०। यह मदद मुझे गैब से मिली है यकायक रामदीन का मिल जाना और उसकी जेब में से अगूठी तथा चीठी का निकल आना कहे देता है कि अब मेरे बुरे दिन बहुत जल्द दूर हुआ चाहते हैं।

लीला०। इसमें क्या शक है अब की दफे तो राजा गोपाल-सिह सचमुच हमारे कब्जे में आ गये हैं। अफसोस इतना ही

है कि हम लोग अकेले हैं, अगर सौ पचास आदमियों की भी मदद होती तो आज गोपालसिंह तथा किशोरी, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को सहज ही में गिरफ्तार कर लेती।

माया०। अब उन लोगों को गिरफ्तार करने का खयाल तो बिल्कुल जाने दे और एक दम से उन लोगों को मार कर बखेड़ा निपटा डालने की फिक्र कर। इस अंगूठी और चीठी के मिल जाने पर यह काम कोई मुश्किल नहीं है।

लीला०। ठीक है जो कुछ तुम चाहती हो मैं पहिले ही से समझे बैठी हूं। मेरा इरादा है कि तुम्हें किसी अच्छी और हिफाजत की जगह पर छोड़ कर जमानिया जाऊं और दीवान साहब से मिलूं जिनके नाम राजा गोपालसिंह ने यह चीठी लिखी है।

माया०। अब रामदीन छोकड़े की सूरत बना ले और इसी घोड़ी पर सवार हो कर चली जा। इस चीठी के अलावे भी तू जो कुछ दीवान साहब को कहेगी वह उससे इन्कार न करेगा। गोपालसिंह के लिखे अनुसार जो कुछ खाने पीने की चीजें तू लेकर उस घाटी की तरफ जायगी उसमें जहर मिला देना तेरे लिये कोई मुश्किल न होगा और इस तरह एक साथ ही कई दुश्मनों की सफाई हो जायगी, मगर इसमें भी मुझे एक बात का खटका होता है।

लीला०। वह क्या ?

माया०। जिस वक्त से मुझे यह मालूम हुआ है कि गोपालसिंह ने कृष्णाजिन्न का रूप धारण किया था, उस वक्त से मैं उसे बहुत ही चालाक और धूर्त ऐयार समझने लग गई हूं। ताज्जुब नहीं कि वह तेरा भेद मालूम कर जाय या वह खाने पीने की चीजें जो उसने मंगाई हैं उसमें से स्वयम् कुछ भी न खाय।

लीला०। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। मेरा दिल भी यही कहता है कि उसने खाने पीने का बहुत बड़ा ध्यान रक्खा होगा, सिवाय अपने हाथ के और किसी का बनाया कदापि न खाता होगा। क्योंकि वह बड़ी बड़ी तकलीफें उठा चुका है, अब उसे धोखा देना जरा टेढ़ी खीर है मगर फिर भी तुम देखोगी कि इस अंगूठी की बदौलत मैं उसे कैसा धोखा देती हूं और किस तरह अपने पंजे में फंसाती हूं।

माया०। खैर जो मुनासिब समझ कर मगर इसमें तो कोई शक नहीं है कि रामदीन छोकरे की सूरत बन और इस घोड़ी पर सवार हो कर तू दीवान साहब के पास जायगी।

लीला०। जाऊंगी और जरूर जाऊंगी, नहीं तो इस अंगूठी और चीठी के मिलने का फायदा ही क्या हुआ? बस तुम्हें किसी अच्छे ठिकाने पर रख देने भर की देर है।

माया०। मगर मैं एक बात और कहा चाहती हूं।

लीला०। वह क्या?

माया०। मैं इस समय बिल्कुल कंगालिनी हो रही हूं और ऐसे मौके पर रुपै की बहुत बड़ी जरूरत है। इस लिये मैं चाहती हूं कि दीवान साहब के पास तुझे न भेज कर मैं खुद ही जाऊं और किसी तरह तिलिस्मी बाग में घुस कर कुछ जवाहिरात और सोना जहां तक ला सकूं ले आऊं क्योंकि मुझे वहां के खजाने का हाल बिल्कुल मालूम है और यह काम तेरे किये नहीं हो सकता। जब मुझे रुपै की मदद मिल जायगी तब कुछ सिपाहियों का भी बन्दोबस्त कर सकूंगी और

लीला०। यह सब कुछ ठीक है मगर मैं तुम्हें दीवान साहब के पास कदापि न जाने दूंगी। कौन ठिकाना कहीं तुम गिरफ्तार हो जाओ तो फिर मेरे किये कुछ भी न हो सकेगा। बाकी रही

रुपे पैसे वाली बात सो इसके लिये तरद्दुद करना वृथा है क्या यह नहीं हो सकता कि जब मैं दीवान साहब के पास जाऊं और सवारी इत्यादि तथा खाने पीने की चीजें लूं तो एक रथ पर थोड़ी सी अशर्फिया और कुछ जवाहिरात भी रख देने के लिये कहूं ? क्या वह इस अगूठी के प्रताप से मेरी बात न मानेगा ? और अगर अशर्फियो और जवाहिरात का बन्दोबस्त कर देगा तो क्या मैं उन्हें रास्ते में से नहीं गुम कर सकती ? इसे भी जाने दो, अगर तुम मुझे पता ठिकाना ठीक ठीक बताओ तो क्या मैं तिलिस्मी बाग में जा कर जवाहिरात और अशर्फियो को नहीं निकाल ला सकती ?

माया० । निकाल ला सकती है और दीवान साहब से भी जो कुछ मागेगी सम्भव है कि बिना कुछ विचारे दे दे मगर इसमें मुझे दो बातो की कठिनाई मालूम पडती है ।

लीला० । वह क्या ?

माया० । एक तो दीवान साहब के पास अन्दाज से ज्यादे रुपे अशर्फियो की तहवील नहीं रहती । जवाहिरात तो बिल्कुल ही उसके पास नहीं रहता शायद आज कल गोपालसिंह के हुक्म से रहता हो मगर मुझे उम्मीद नहीं है अस्तु जो चीज तू उनसे मागेगी वह अगर उनके पास न हुई तो उन्हें तुझ पर शक करने की जगह मिलेगी और ताज्जुब नहीं कि काम में विघ्न पड जाय ।

लीला० । अगर ऐसा है तो जरूर खटके की जगह है । अच्छा दूसरी बात क्या है ?

माया० । दूसरे यह कि तिलिस्मी बाग के खजाने मे घुस कर वहा से कुछ निकाल लाना नये आदमी का काम नहीं है खैर, मैं तुझे रास्ता बता दूगी फिर जो कुछ करते बने कर लीजियो ।

लीला० । खैर जैसा होगा देखा जायगा, मैं यह राय नहीं दे सकती कि तुम दीवान साहब के सामने या खास बाग में जाओ, ज्यादे नहीं तो थोड़ा बहुत मैं ले ही आऊंगी।

माया० । अच्छा यह बता कि मुझे कहां छोड़ जायगी और तेरे जाने बाद मैं क्या करूंगी ?

लीला० । इतनी जल्दी में कोई अच्छी जगह तो मिलती नहीं, किसी पहाड़ की कन्दरा में दो दिन गुजारा करो और चुप चाप बैठी रहो इसी बीच में मैं अपना काम करके लौट आऊंगी। मुझे जमानिया जाने में अगर देर हो जायगी तो काम चौपट हो जायगा। ताज्जुब नहीं कि देर हो जाने के कारण गोपालसिंह किसी दूसरे को भेज दे और इस अंगूठी का भेद खुल जाय।

इत्तफाक अजब चीज है। उसने यहां भी एक बेढब सामान कर दिया। इत्तफाक से लीला और मायारानी भी उसी जङ्गल में जा पहुंची जिसमें माधवी और भीमसेन का मिलाप हुआ था और वे लोग अभी तक वहां टिके हुए थे।

पांचवां बयान

आधी रात का समय था जब लीला और मायारानी उस जङ्गल में पहुंची जिसमें माधवी और भीमसेन टिके हुए थे। जब ये दोनों उनके पास पहुंचीं और लीला को वहां टिके हुए बहुत से आदमियों की आहट मिली तो वह मायारानी को एक ठिकाने खड़ा कर के पता लगाने के लिये उनकी तरफ गई।

हम ऊपर बयान कर चुके हैं कि "सेनापति कुबेरसिंह के साथ थोड़ी सी फौज भी थी।" अस्तु लीला को थोड़ी ही कोशिश से मालूम हो गया कि यहां सैकड़ों आदमियों का डेरा

पडा हुआ है और वे लोग इस ढङ्ग से घने जङ्गल में आड देकर कर टिके हुए है जैसे डाकुओ का गरोह या छिप कर धावा मारने वाले टिकते है और हर वक्त होशियार रहते हैं। लीला खूब जानती थी कि राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके साथी या सम्बन्धी अगर किसी काम के लिये कहीं जाते हैं या चढ़ाई करते हैं तो छिप कर या आड पकड कर डेरा नहीं डालते हां, अगर अकेले दुकले या ऐयार लोग हों तो शायद ऐसा करें मगर जब उनके साथ सौ पचास आदमी या कुछ फौज होगी तब कदापि न ऐसा करेंगे। इस लिये गुमान हुआ कि ये लोग जरूर कोई गैर है बल्कि ताज्जुब नहीं कि हमारा साथ देने वाले हों। अस्तु बहुत सी बातों को सोच विचार और अपनी ऐयारी पर भरोसा कर के लीला माधवी की फौज मे घुस गई और वहा बहुत से सिपाहियों को होशियार तथा पहरा देते हुए देखा।

पहिले लिखा जा चुका है कि लीला भेष बदले हुए थी और यह भी दर्साया गया है कि माधवी और कुबेरसिंह अपनी असली सूरत में सफर कर रहे थे।

लीला को कई सिपाहियों ने देखा और एक ने टोका कि "कौन है!"

लीला०। एक मुसाफिर परदेसी औरत।

सिपाही०। यहा क्यों चली आती है?

लीला०। अपनी भलाई की आशा से।

सिपाही०। क्या चाहती है?

लीला०। आपके सर्दार से मिलना।

सिपाही०। अपना परिचय दे तो सर्दार के पास भेजवा दूं।

लीला०। परिचय देने में कोई हर्ज तो नहीं है मगर डरती हूं कि आपलोग भी कहीं उनमें से न हों जिन्होंने मुझे लूट लिया

है, यद्यपि अब मैं बिल्कुल खाली हो रही हूं मगर ..

इतने में और भी कई सिपाही वहां जुट आये और सभों ने लीला को घेर कर सवाल करना शुरू किया और लीला ने भी गौर कर के जान लिया कि ये लोग राजा बीरेन्द्रसिंह के दल वाले नहीं हैं क्योंकि उनके फौजी सिपाही अक्सर जर्द पौशाक काम में लाते हैं, इसी तरह से जमानिया वाले भी नहीं मालूम हुए क्योंकि उनकी बातचीत और चाल ढाल को लीला खूब पहिचानती थी, अस्तु कुछ और बातचीत होने पर लीला को विश्वास हो गया कि ये लोग उनमें से नहीं हैं जिनका मुझे डर है।

उन सिपाहियों को भी एक अकेली लीला से डरने की कोई जरूरत न थी इसलिए उन्होंने अपने मालिक का नाम जाहिर कर दिया और लीला को लिये हुए उस जगह जा पहुंचे जहां माधवी और भीमसेन का बिस्तरा लगा हुआ था और ये दोनों इस समय भी बैठे बातचीत कर रहे थे। लालटैन जलाया गया और लीला की सूरत अच्छी तरह देखी गई, लीला ने उसी रोशनी में माधवी को पहिचान लिया और खुश हो कर बोली "अहा! आप तो गया की रानी माधवी देवी हैं!!"

माधवी०। और तू कौन है?

लीला०। मैं प्रसिद्ध मायारानी की ऐयारा हूं और उन्हीं के साथ यहां तक आई भी हूं। यह दुनिया का कायदा है कि एक से दूसरे को मदद पहुंचती है अस्तु जिस तरह आपको मायारानी से मदद पहुंच सकती है उसी तरह आप मायारानी की भी मदद कर सकती हैं। वाह! वाह!! यह समागम तो बहुत ही अच्छा हुआ। अगर आजकल मायारानी मुसीबत के दिन काट रही है तो क्या हुआ मगर फिर भी वह तिलिस्म की रानी

रह चुकी हे जो कुछ वह कर सकती है किसी दूसरे से नहीं हो सकता, आप लोगों का मिल कर एक हो जाना बहुत ही मुनासिब होगा और तब आपलोग जो चाहेंगी कर सकेंगी।

माधवी०। (खुश होकर) मायारानी कहां हैं? उन्हें तो राजा वीरेन्द्रसिंह कैद करके चुनार ले गये थे।

लीला०। जी हां मगर मैं अभी कह चुकी हूं कि "मायारानी आखिर तिलिस्म की रानी है इसलिये जो कुछ वह कर सकती है किसी दूसरे के किये नहीं हो सकता।" राजा वीरेन्द्रसिंह ने उन्हें कैद कर लिया तो क्या हुआ उनका छूटना कोई मुश्किल न था।

माधवी०। बेशक बेशक अच्छा यह बताओ वह कहां है?

लीला०। यहां से थोड़ी ही दूर पर खड़ी है, किसी सरदार को भेजिये उनका इस्तकबाल कर के यहां ले आवे, दो तीन सौ क़दम से ज़ियादे न चलना पड़ेगा।

माधवी०। मैं खुद उन्हें लेने के लिये चलूंगी।

लीला०। इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है? अगर आप उनकी इज्जत करेंगी तो वह भी आपके लिये जान तक देना जरूरी समझेंगी।

लीला ने अपनी लम्बी चौड़ी बातों में माधवी को खूब ही उलझाया यहां तक कि माधवी अपने साथ भीमसेन और कुबेरसिंह तथा कई सिपाहियों को ले कर मायारानी के पास गई और उसे बड़ी खातिर और इज्जत के साथ अपने डेरे पर ले गई। जल मंगवा कर हाथ मुंह धुलवाया और फिर बात चीत करने लगी।

माधवी०। (मायारानी से) आप को वीरेन्द्रसिंह की कैद से छूट जाने पर मैं मुबारकबाद देती हूं, यद्यपि आपके लिये यह

कोई बड़ी बात न थी।

माया०। बेशक यह कोई बड़ी बात न थी, इस काम को तो अकेली मेरी सखी या ऐयारा लीला ही ने कर दिखाया। इस समय आपसे मिल कर मैं बहुत खुश हुई और इसमें अब शक करने की कोई जगह न रही कि आप पुनः गया की रानी और मैं जमानिया की मालिक बन जाऊंगी। दुनिया में एक का काम दूसरे से हुआ ही करता है और जब हम आप एक दिल हो जायगे तो वह कौन सा काम है जिसे नहीं कर सकते। मुझे आप के कैद होने की भी खबर लगी थी और मुझे इस बात का बहुत रञ्ज था कि आपको मेरी छोटी बहिन कमलिनी ने कैदखाने की सूरत दिखाई थी।

माधवी०। इधर तो यह सुनने में आया है कि आपसे और कमलिनी से कोई नाता नहीं है और लक्ष्मीदेवी भी प्रगट हो गई है तथा उसे राजा वीरेन्द्रसिंह चुनार ले गये हैं।

माया०। (मुसकुरा कर) बेशक ऐसा ही है, मगर जिस जमाने का मैं जिक्र कर रही हूं उस जमाने में वह मेरी ही बहिन कहलाती थी और लक्ष्मीदेवी को राजा वीरेन्द्रसिंह चुनार नहीं ले गये हैं वह तो किशोरी, कामिनी, कमलिनी, लाडिली और कमला के सहित किसी दूसरी ही जगह छिपाई गई है मगर इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि कल शाम को गोपालसिंह उन सभों को जमानिया की तरफ ले जायगे और हमलोग उन्हें गोपालसिंह के सहित रास्ते ही में गिरफ्तार कर लेंगे।

माधवी०। (ताज्जुब से) हां! क्या कल मैं उस दुष्टा किशोरी की नापाक सूरत देख सकूंगी! उस पर मुझे बड़ा ही रञ्ज है और कमलिनी ने तो मुझे कैद ही किया था।

माया०। बेशक कल किशोरी और कमलिनी इत्यादि तु-

म्हारे कब्जे मे होगी और गोपालसिंह भी तुम्हारे काबू में होगए जो वीरेन्द्रसिंह और उनके लडको की बदौलत तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन हो रहा है।

माधवी०। नि सन्देह वह मेरा और तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन है, तो क्या उसकी गिरफ्तारी का इन्तजाम हो चुका है?

माया०। हां चौदह आना इन्तजाम हो चुका है और दो आना बाकी है सो वह भी हो जायगा।

माधवी०। क्या क्या बन्दोबस्त हुआ है और किस समय तथा किस तरह वे लोग गिरफ्तार किये जायगे?

माया०। (इधर उधर देख कर) बहुत सी बाते ऐसी है जो मै केवल तुम्ही से कहूंगी क्योंकि कोई दूसरा उनके सुनने का अधिकारी नही है।

माधवी०। बहुत अच्छा यह कोई बडी बात नही है।

इतना कह कर माधवी ने भीमसेन और कुबेरसिंह की तरफ देखा क्योंकि माधवी मायारानी और लीला के सिवाय केवल ये ही दो आदमी वहा मौजूद थे। भीमसेन ने कहा, "हम दोनो यहा से हट जाते है तुम लोग बेधडक बात करो मगर (मायारानी से) मेरे एक सवाल का जवाब पहिले मिलना चाहिये।

माया०। वह क्या?

भीम०। आप अभी कह चुकी है कि "कल किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह गिरफ्तार हो जायगी।" मगर मैने सुना था कि राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर मे पहुच कर मनोरमा ने किशोरी, कामिनी और कमला को जान से मार डाला। अ। इस समय कुछ और ही बात सुनने मे आती है॥

माधवी०। हां यह सवाल तो मै भी करने वाली थी लेकिन

बातों का सिलसिला दूसरी तरफ चला गया और मैं पूछना भूल ही गई।

माया०। हां यह बात अच्छी तरह सुनने में आई थी और मुझे विश्वास भी हो गया था कि वास्तव में ऐसा ही हुआ है मगर आज यह बात खुद गोपालसिंह की लिखावट से खुल गई कि वास्तव में वे तीनों मारी नहीं गईं। परन्तु मुझे यह मालूम नहीं है कि इस विषय मे किस तरह की चालाकी खेली गई या मनोरमा ने जिन्हे मारा वे कौन थी।

भीम०। तो यह निश्चय है कि वे तीनो मारी नही गईं ?

माया०। बेशक वे तीनो जीती हैं (गोपालसिंह वाली चीठी दिखा कर) देखो एक ही सबूत में तुम्हारी दिलजमई कर देती हू, इसे पढ़ो और माधवी रानी को सुनाओ (माधवी से) देखो बहिन, तुम इस बात का खयाल न करना कि मै तुम्हें "आप" कह कर सम्बोधन नहीं करती, मेरा तुम्हारा अब दोस्ती और मुहब्बत का नाता हो चुका है इसलिये अब इन बातो का खयाल नहीं हो सकता।

माधवी०। मैं भी यही पसन्द करती हू और इस बारे में अपने लिये भी तुमसे पहिले ही माफी माग लेती हू।

भीमसेन ने पत्र पढा और माधवी को सुनाया।

भीम०। इस पत्र से तो बडा काम निकल सकता है। यह कब का लिखा है और तुम्हारे हाथ क्योकर लगा ? तथा जिस अंगूठी का इसमें जिक्र किया गया है वह कहां है ?

माया०। वह (अगूठी दिखाकर) अगूठी भी मुझे मिल गई है और यह चीठी आज ही मेरे हाथ लगी है अभी इसकी कार्रवाई बिल्कुल बाकी है।

भीम०। अफसोस इतनाही है कि मेरे ऐयारों में से कोई भी

रामदीन को नहीं जानता . .

माया० । क्या हर्ज है यह मेरी ऐयारा लीला बखूबी उसकी तरह बन कर काम निकाल सकती है, तुम्हारे ऐयार उसकी मदद में मुस्तैद रह सकते हैं और जब यह रामदीन की सूरत बनेगी तो हम अच्छी तरह देख भी सकते हैं।

भीम० । (चीठी मायारानी के हाथ में देकर) अच्छा अब तुम दोनों को जो कुछ गुप्त बातें करनी हैं कर लो तो पीछे मैं इस विषय में कुछ कहूँ सुनूँगा।

इतना कह कर भीमसेन उठ खड़ा हुआ और कुबेरसिंह को साथ लिये हुए कुछ दूर चला गया और मौका समझ कर लीला भी कुछ हट गई।

माधवी० । हाँ बहिन ! कहो क्या कहती हो ?

माया० । जो कुछ तुम पीछे कहो सुनोगी उसे मैं पहिले ही निपटा देना चाहती हूँ। सच पूछो तो मेरी और तुम्हारी अवस्था बराबर है तुम भी विधवा हो और मैं भी विधवा हूँ क्योंकि मैं वास्तव में गोपालसिंह की स्त्री नहीं हूँ और यह बात सभी को मालूम हो गई है तुम सुन ही चुकी होगी।

माधवी० । हाँ मैं सुन चुकी हूँ, मैंने यह भी सुना था कि 'राजा गोपालसिंह को वर्षों तक तुमने कैद कर रक्खा था आखिर कमलिनी ने उसे छुड़ा दिया।" तो तुमने ऐसा क्यों किया उसे मार क्यों न डाला ?

माया० । यही मुझसे एक भूल हो गई, तिलिस्म के दो चार जो भेद मुझे मालूम न थे जानने के लिये मैंने ऐसा किया था, मुझे उम्मीद थी कि कैद की तकलीफ उठा कर वह बता देगा, तब उसे मार डालूँगी मगर ऐसा न हुआ अगर मैं उसे मार डालती तो आज यह दिन देखना नसीब न होता, मैं तिलिस्म

की बदौलत अकेली ही राजा वीरेन्द्रसिंह ऐसे दस को जहन्नुम में पहुँचा देने की ताकत रखती थी। अब भी अगर गोपालसिंह को मैं पकड़ पाऊं और मार सकूं तो पुनः तिलिस्म की रानी होने से मुझे कोई भी नहीं रोक सकता और फिर मैं बात की बात मे तुम्हे राजगृही और गया की रानी बना दू। उस बात का सिलसिला तो टूटा ही जाता है। तुम भी विधवा हो और मैं भी विधवा हू, तुम भी नौजवान और आशिक मिजाज हो तथा मैं भी नौजवान और आशिक मिजाज हू, तुम भी इन्द्रजीतसिंह के फेर में पड कर दु ख भोग रही हो और मै भी आनन्दसिंह की मुहब्बत में इस दशा तक आ पहुंची हू, अब भी मेरी और तुम्हारी किस्मत का फैसला एक साथ और एक ही ठिकाने हो सकता है क्योंकि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी आज कल जमानिया ही में तिलिस्म तोड़ रहे हैं, अगर आज हम तुम एक होकर काम करे तो बहुत जल्द दुश्मनो का नामोनिशान मिटा कर अपने अपने प्यारे के साथ दुनिया का सुख भोग सकती हैं मगर मुझे इस समय तुम्हारे साथ दो कटक दिखाई देते है।

माधवी०। हा एक तो मेरा भाई भीमसेन दूसरा मेरा सेनापति कुबेरसिंह, मगर तुम इन दोनो का कुछ खयाल न करो इस समय हमें उन दोनो को मिलाजुला कर काम ले लेना चाहिये फिर तुम जैसा कहोगी वैसा किया जायगा।

माया०। शाबाश! शाबाश! यही मालूम करने के लिये मैं तुम से निराले में बातचीत किया चाहती थी, ये बाते ऐसी हैं कि सिवाय मेरे और तुम्हारे किसी तीसरे का न जानना ही अच्छा है।

माधवी०। नि.सन्देह ऐसा ही है, हमदोनो के दिल की बाते

हवा को भी न मालूम होनी चाहिये, आज बडी खुशी का दिन है कि हम दोनों जो एक ही तरह का दिल रखती है यहा पर आ मिली है अब हम दोनों को हमेशा मेल मिलाप रखने और समय पडने पर एक दूसरे की मदद करने के लिये कसम खा कर मजबूत हो जाना चाहिये।

माया०। यही मैं भी चाहती हू।

पाठक! मायारानी और माधवी दोनों ही अपना अपना मतलब देख रही हैं, दोनों ही धूर्त, दोनों ही खुदगरज और दोनों ही विश्वासघातिनी हैं। इस समय कुछ देर तक दोनों में घुल घुल कर बाते होती रही, वादे भी हुए और कसमे भी खाई गई और इसके बाद फिर भीमसेन और कुबेरसिंह बुलाये गये तथा लीला भी आ गई और आपुस में बाते होने लगी।

भीम०। अच्छा तो अब क्या निश्चय किया जाता है? राजा गोपालसिंह की चीठी लेकर जमानिया कौन जायगा और क्या होगा?

माया०। पहिले तुम अपनी राय दो।

भीम०। मेरी राय तो यह है कि लीला रामदीन की सूरत बन दीवान साहब के पास जाय और वहा से उनकी फरमाइश लेकर "पिपलियाघाटी" पहुँचे हमलोग अपनी फौज लेकर वहा मौजूद रहें, लीला को यह करना चाहिये कि उन दो सौ सवारों का जिन्हें जमानिया से अपने साथ लायेगी किसी बहाने से पीछे टिकवा दे जिसमें गोपालसिंह के पहुँचते ही हमलोग बात की बात में उन सभों को गिरफ्तार कर ले या मार डाले।

माया०। मगर यह बात मुझे नापसन्द है क्योंकि एक तो उनके लिखे अनुसार फौज "पिपलियाघाटी" तक जरूरी जायगी अगर मान लिया जाय कि नकली रामदीन के हुक्म से फौज

पीछे रह भी जाय और तुम लोग सभों को गिरफ्तार कर लो तो भी हमारा काम न निकल सकेगा क्योंकि राजा गोपालसिंह के पकड़े या मारे जाने की खबर दीवान साहब को तुरत लग जायगी और वह अपनी फौज को दुरुस्त करने के लिये तैयार हो जायगा और हम लोगों को जमानिया के अन्दर घुसने न देगा। कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी जमानिया ही में तिलिस्म के अन्दर हैं वे दोनों भी लड़ने भिड़ने के लिये तैयार हो जायेंगे उस समय हमलोग फिर लङ्डूरे ही रह जायेंगे इतना बखेड़ा करने का कुछ फायदा न निकलेगा न तो जमानिया की गद्दी मिलेगी और न गया का राज्य।

भीम०। तब आपही कहिये क्या करना चाहिये?

माया०। (कुबेर से) इस वक्त आपके पास कितनी फौज है?

कुबेर०। पांच सौ।

माया०। (माधवी से) ऐसा करना चाहिये कि हम, तुम भीमसेन और कुबेरसिंह चारो आदमी जमानिया वाले तिलिस्मी बाग के अन्दर जा घुसें और इन पांच सौ आदमियों को इस तरह तिलिस्मी बाग के अन्दर ले लें और छिपा रक्खें कि किसी को कानों कान खबर भी न हो क्योंकि उस बाग में इतने आदमियों को छिपा रखने की जगह है और वह बाग भी इस लायक है कि अगर मैं उसके अन्दर मौजूद रहूं तो चाहे कैसा ही जबरदस्त दुश्मन हो और चाहे कितनी ज्यादे फौज लेकर क्यों न चढ़ आवे मगर बाग के अन्दर किसी की नजर तक पहुंचने न दूं।

माधवी०। बेशक वह बाग ऐसा ही सुनने में आया है और तुम तो वहां की रानी ही ठहरी और तुम्हें वहां के सब भेद

मालूम ही है, अच्छा तब ?

माया० । जब किशोरी और कमलिनी इत्यादि को लेकर गोपालसिंह जमानिया जायगा तो निःसन्देह सभी को लिये हुए उसी बाग में पहुँचेगा बस उस समय हम लोग जो छिपे हुये रहेंगे निकल आवेंगे और बात की बात में सभी को मार लेंगे। ऐसा होने से जमानिया में दखल भी बना रहेगा और इन्द्रजीतसिंह तथा आनन्दसिंह भी कब्जे में आ जायगे।

माधवी० । (खुश होकर) बात तो बहुत ठीक है मगर हम लोग इतने आदमियों को लेकर चुपचाप उस बाग के अन्दर किस तरह पहुँच सकते हैं।

माया० । इसका बन्दोबस्त इस तरह हो सकता है कि हम तुम, भीमसेन और कुबेरसिंह एक साथ ही भेष बदल कर लीला के साथ जमानिया जाय और लीला दीवान साहब से कहे कि 'गोपालसिंह ने इन सभों को अर्थात् हमलोगों को खास बाग के अन्दर पहुँचा देने का हुक्म दिया है।" बस इतना कह कर हम लोगों को उस बाग के अन्दर पहुँचा दे क्योंकि दीवान इस नकली रामदीन की बात को अंगूठी की बरकत से टाल न सकेगा और रामदीन पहिले भी खास बाग के अन्दर आता जाता था यह बात दीवान जानता है। जब हम लोग उस बाग के अन्दर जा पहुँचेंगे तो एक गुप्त रास्ते से कुल फौज को बाग के अन्दर ले लेंगे। इन फौजी सिपाहियों को उस सुरंग के मुहाने का पता बता दिया जायगा जिस सुरंग की राह से हम इन सभों को खास बाग के अन्दर पहुँचावेंगे।

माधवी० । यह बात बहुत ही अच्छी सोची।

भीम० । इससे बढ़ कर और कोई तरकीब फतह पाने के लिये हो ही नहीं सकती।

कुबेर० । और ऐसा करने में कोई टन्टा भी नहीं है ।

लीला० । बस अब इसी राय को पक्की रखिये ।

इसके बाद फिर उन सभा में बातचीत और राय होती रही यहां तक कि सवेरा हो गया । मायारानी, माधवी, भीमसेन और कुबेरसिंह ने सूरतें बदल लीं, लीला भी रामदीन बन बैठी और भीमसेन के चारों ऐयारों को सुरंग का पता ठिकाना अच्छी तरह बता दिया गया और कह दिया गया कि उसी ठिकाने सुरंग के मुहाने पर फौजी सिपाहियों को लेकर इन्तजार करना । इसके बाद मायारानी, माधवी, भीमसेन, कुबेरसिंह और लीला ने घोड़े पर सवार होकर जमानिया का रास्ता लिया ।

छठवाँ बयान

दिन दोपहर से कुछ ज्यादे ढल चुका था जब जमानिया में दीवान साहब को रामदीन के आने की इत्तला मिली । दीवान ने रामदीन को अपने पास बुलाया और रामदीन ने उनके सामने पहुँच कर गोपालसिंह की चीठी उनके हाथ में दे दी और वे चीठी पढ़ चुके तो अंगूठी भी दिखाई । दीवान साहब ने नकली रामदीन से कहा, "महाराज का हुक्म हम लोगों के सर आंखों पर, तुम इस अंगूठी को पहिर लो और सभों को अपने हुक्म का पाबन्द समझो । सवारी और सवारों का इन्तजाम दो घड़ी के अन्दर हो जायगा । तुम यहां रहोगे या सवारी के साथ जाओगे ।

रामदीन ने कहा, "हां मैं सवारी के साथ ही राजा साहब के पास जाऊंगा मगर इस समय चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुँचा कर उनके खाने पीने का इन्तजाम कर

देना है जैसा कि हमारे राजा साहब का हुक्म है।

दीवान०। (ताज्जुब से) खास बाग के अन्दर !!

रामदीन०। जी हां।

दीवान०। और वे चारो आदमी हैं कहां पर!

रामदीन०। उन्हें मैं बाहर छोड़ आया हूं।

दीवान०। (कुछ सोच कर) खैर जो राजा साहब ने हुक्म दिया हो या जो तुम्हारे जी में आवे करो, अब हम लोगों को तो रोकने टोकने का अधिकार ही नहीं रहा।

रामदीन सलाम करके उठ खड़ा हुआ और अपने चारो साथियों को लेकर खास तिलिस्मी बाग के अन्दर चला गया जहां इस समय बिल्कुल ही सन्नाटा था। अंगूठी के खयाल से उसे किसी ने भी नहीं रोका और मायारानी बेखटके अपने ठिकाने पहुंच गई तथा लुकने छिपने और दर्वाजों को बन्द करने का उद्योग करने लगी।

अब हम रामदीन के साथ राजा गोपालसिंह की तरफ रवाना होते हैं और देखते हैं कि बनी बनाई बात क्योंकर चौपट होती है ?

सन्ध्या होने के पहिले खाने पीने का सामान, चार रथ और दो सौ सवारों को लेकर नकली रामदीन पिपलिया घाटी की तरफ रवाना हुआ और दूसरे दिन दोपहर के बाद वहां पहुंचा।

आज ही सन्ध्या होने के पहिले राजा गोपालसिंह यहां पहुंचने वाले थे और यह बात रामदीन की जुबानी सभों को मालूम हो चुकी थी और सभी आदमी उनके आने का इन्तजार कर रहे थे।

सन्ध्या हो गई चिराग जल गया पहर रात गई दो पहर

रात गुजरी, तमाम रात बीत गई मगर राजा गोपालसिंह न आये इसलिये नकली रामदीन के ताज्जुब का तो कहना ही क्या है उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। इसके अतिरिक्त जितने फौजी सवार तथा और लोग साथ आये थे सभों को ताज्जुब हुआ। और घड़ी घड़ी राजा साहब के न आने का सबब उससे पूछने लगे। रामदीन क्या जवाब देता? उसे इन बातों की खबर ही क्या थी।

दूसरे दिन सन्ध्या के समय राजा गोपालसिंह घोड़े पर सवार वहां आ पहुंचे मगर अकेले थे, साईस तक साथ में न था। सिपाहियाना ठाठ से बेशकीमत कपड़ों के ऊपर तिलिस्मी कवच, खंजर और ढाल तलवार लगाये बहुत ही सुन्दर तथा रोआबदार मालूम होते थे। सभों ने झुक झुक कर सलाम किया और नकली रामदीन ने आगे बढ़ कर घोड़े की लगाम थाम ली और उसकी गर्दन पर दो चार थपकी देकर कहा, "आश्चर्य है कि आप के आने में पूरे आठ पहर की देर हो गई और फिर भी अकेले।"

यह सुन कर राजा साहब ने कई पल तक रामदीन का मुंह देखा और कहा, "हां, किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह ने हमारे साथ आने से इन्कार किया इस लिये हम अकेले आए हैं मगर फिर भी हमारे जाने में अभी रात भर की देर है, इस समय हम किसी काम को जाते हैं सवेरे यहां आवेंगे तब तक तुम सभों को इस घाटी में टिके रहना होगा।

रामदीन०। घोड़ों का दाना तो सिर्फ एक ही दिन का साथ आया था और सवार लोग भी

गोपाल०। खैर क्या हर्ज है घोड़े चराई पर गुजारा कर लेंगे और सवार लोग रात भर फाका करेंगे।

इतना कह कर राजा गोपालसिंह ने घोड़े की बाग मोड़ी और जिधर से आये थे उसी तरफ तेनों के साथ रवाना हो गये। रामदीन चुपचाप ज्यों का त्यों खड़ा उनकी तरफ देखता ही रह गया और जब वे जनरों की ओट हो गये तब नकली रामदीन ने सभों को राजा साहब का हुक्म सुनाया और इसके बाद अपने बिछावन पर जाकर यह सोचने लगा —

'गोपालसिंह की बातें कुछ समझ में नहीं आतीं और न उनके इरादे का पता लगता है, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को न मालूम क्यों छोड़ आए! और जब उन्होंने इनके साथ जाने से इन्कार किया तो इन्होंने मान क्यों लिया? क्या अब लक्ष्मीदेवी का और इनका साथ न होगा? अगर ये अकेले जमानिया गये तो केवल इन्हीं के साथ वह सलूक किया जायगा जो हम लोग सोच चुके हैं, कमलिनी वगैरह का बचे रह जाना अच्छा नहीं हुआ मगर क्या किया जाय लाचारी है, हां एक बात का इन्तजाम तो कुछ किया ही नहीं गया और न पहिले इस बात का विचार ही हुआ! जमानिया पहुंचने पर जब दीवान साहब की जुबानी गोपालसिंह को यह मालूम होगा कि रामदीन ने चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुंचाया है तब वह क्या सोचेगा? और पूछने पर मुझसे क्या जवाब पावेगा? कुछ भी नहीं, इस बात का जवाब देना मेरे लिए कठिन होगा तब क्या किया जाय? क्या खास बाग में पहुंचने के पहिले ही मेरा भाग जाना उचित होगा? ओफ! बड़ी भूल हो गई, यह बात पहिले न सोच ली, दीवान साहब को चिट्ठी लिख कर दी उन सभों को खास बाग में पहुंचा देना मुनासिब होता। मगर ऐसा करने पर भी तो काम नहीं चलता अगर दीवान साहब हो नहीं तो खास बाग के पहरेदारों को

रात गुजरी, तमाम रात बीत गई मगर राजा गोपालसिंह न आये इसलिये नकली रामदीन के ताज्जुब का तो कहना ही क्या है उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। इसके अतिरिक्त जितने फौजी सवार तथा और लोग साथ आये थे सभों को ताज्जुब हुआ। और घड़ी घड़ी राजा साहब के न आने का सबब उससे पूछने लगे। रामदीन क्या जवाब देता? उसे इन बातों की खबर ही क्या थी।

दूसरे दिन सन्ध्या के समय राजा गोपालसिंह घोड़े पर सवार वहां आ पहुंचे मगर अकेले थे, साईस तक साथ में न था। सिपाहियाना ठाठ से बेशकीमत कपड़ों के ऊपर तिलिस्मी कवच, खजर और ढाल तलवार लगाये बहुत ही सुन्दर तथा रोआबदार मालूम होते थे। सभों ने झुक झुक कर सलाम किया और नकली रामदीन ने आगे बढ़ कर घोड़े की लगाम थाम ली और उसकी गर्दन पर दो चार थपकी देकर कहा, "आश्चर्य है कि आप के आने में पूरे आठ पहर की देर हो गई और फिर भी अकेले।"

यह सुन कर राजा साहब ने कई पल तक रामदीन का मुंह देखा और कहा, "हां, किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह ने हमारे साथ आने से इन्कार किया इस लिये हम अकेले आए है मगर फिर भी हमारे जाने मे अभी रात भर की देर है, इस समय हम किसी काम को जाते है सवेरे यहां आवेंगे तब तक तुम सभों को इस घाटी मे टिके रहना होगा।

रामदीन०। घोड़ों का दाना तो सिर्फ एक ही दिन का साथ आया था और सवार लोग भी ..

गोपाल०। खैर क्या हर्ज है घोड़े चराई पर गुजारा कर लेंगे और सवार लोग रात भर फाका करेंगे।

इतना कह कर राजा गोपालसिंह ने घोड़े की बाग मोड़ी और जिधर से आये थे उसी तरफ तेजी के साथ रवाना हो गये। रामदीन चुपचाप ज्यों का त्यों खड़ा उन की तरफ देखता ही रह गया और जब वे नजरों की ओट हो गये तब नकली रामदीन ने सभों को राजा साहब का हुक्म सुनाया और इसके बाद अपने ठिकाने पर जाकर यह सोचने लगा —

'गोपालसिंह की बातें कुछ समझ में नहीं आतीं और न उनके इरादे का पता लगता है, लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को न मालूम क्यों छोड़ आए! और जब उन्होंने इनके साथ जाने से इनकार किया तो उन्होंने मान क्यों लिया? क्या अब किशोरी का और उनका साथ न होगा? अगर ये अकेले जमानिया गये तो बेशक इन्हीं के साथ वह सलूक किया जायगा जो और लोग भोग चुके हैं, कमलिनी वगैरह का बचे रह जाना अच्छा नहीं हुआ मगर क्या किया जाय लाचारी है, हां एक बात का इन्तजाम तो कुछ किया ही नहीं गया और न पहिले इस बात का विचार ही हुआ! जमानिया पहुंचने पर जब दीवान साहब की जुबानी गोपालसिंह को यह मालूम होगा कि रामदीन ने चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुंचाया है तब वह क्या सोचेगा? और पूछने पर मुझसे क्या जवाब पावेगा? कुछ भी नहीं, इस बात का जवाब देना मेरे लिये कठिन होगा तब क्या किया जाय? क्या खास बाग में पहुंचने के पहिले ही मेरा भाग जाना उचित होगा? ओफ! बड़ी भूल हो गई यह बात पहिले न सोच ली, दीवान साहब को बिना कुछ कहे ही उन सभों को खास बाग में पहुंचा देना मुनासिब होता। मगर ऐसा करने पर भी तो काम नहीं चलता अगर दीवान साहब का नहीं तो खास बाग के पहरेदारों का तो

मालूम होता कि रामदीन चार आदमियों को बाग के अन्दर छोड़ गया है, उन्हीं की जुबानी राजा साहब को मालूम हो जाता। बात एक ही है, सब से अच्छा तो तब होता जब वे लोग किसी गुप्त राह से बाग के अन्दर जाते मगर असम्भव था क्योंकि भीतर से सभी रास्ते गोपालसिंह ने बन्द किये होंगे। तब क्या करना चाहिये? हां भाग ही जाना सब से अच्छा होगा। मगर मायारानी को भी तो इस बात की खबर कर देनी चाहिये। अच्छा तो जमानिया होकर और मायारानी को कह सुन कर भागना चाहिये, नहीं अब तो यह भी नहीं हो सकता क्योंकि मायारानी फौजी सिपाहियों को बाग के अन्दर करके साथियों समेत कहीं छिप गई होगी, मैं उस बाग के गुप्त भेदों के न जानने के कारण इस लायक नहीं हूं कि मायारानी को खोज निकालूं और अपने दिल का हाल उससे कहूं या उसी के साथ आप भी छिप रहूं। ओफ! वह तो मजे में अपने ठिकाने पहुंच गई मगर मुझे आफत में डाल गई। खैर अभी तो नहीं, मगर गोपालसिंह को जमानियां की हद में पहुंचा कर जरूर भाग जाना पड़ेगा फिर जब मायारानी उसे मार कर अपना दखल जमा लेगी तब फिर उससे मुलाकात हो रहेगी।"

इन्हीं, विचारों में लीला (नकली रामदीन) ने तमाम रात आंखों में बिता दी और सवेरा होने के पहिले ही जरूरी कामों से छुट्टी पाने के लिये घोड़े पर सवार हो कर दूर चली गई और घण्टे भर के बाद लौट आई।

सातवां बयान

दिन अनुमान दो घड़ी के चढ़ चुका होगा जब राजा गोपालसिंह दो आदमियों को साथ लिये हुए धीरे धीरे आते दिखाई

पड़े, वे दोनों भैरोसिंह और इन्द्रदेव थे और पैदल थे। जब वे तेनों उस ठिकाने पहुँच गये जहां राजा साहब के रथ और सवार लोग थे तब राजा साहब ने अपना घोड़ा छोड़ दिया और उस पर भैरोसिंह को सवार होने के लिये कहा तथा और सवारों को म. ने .ार हो जाने के लिये इशारा किया। इसके बाद आप एक रथ पर सवार हो गये और इन्द्रदेव को भी उसी पर अपने पास बैठा लिया, बाकी के तीन रथ खाली ही रह गये। सवारी धीरे धीरे जमानिया की तरफ रवाना हुई और फौजी सवार सब खूबसूरती के साथ राजा साहब को घेरे हुए धीरे धीरे जैसा कि रथ जा रहा था जाने लगे। भैरोसिंह अपना घोड़ा बढ़ा कर नकली रामदीन के पास चला गया जो उसी पहलवान घोड़ी पर सवार था और उसके साथ साथ जाने लगा, यह बात लीला को बहुत बुरी मालूम हुई क्योंकि वह राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों से बहुत डरती थी। थोड़ी देर तक चुप रहने बाद बोली :—

लीला०। (भैरो से) आपने राजा साहब का साथ क्यों छोड़ दिया ?

भैरो०। (हँस कर) तुम्हारा साथ करने के लिये, क्योंकि मैं अपने दोस्त रामदीन को अकेला नहीं छोड़ सकता।

लीला०। और जब मुझे राजा साहब ने अकेले जमानिया भेजा था तब आप कहां डूब गए थे।

भैरो०। तब भी मैं तुम्हारे साथ था मगर तुम्हारी नजरों से छिपा हुआ था।

लीला०। (डर कर, मगर अपने को सम्हाल कर) परसों तुम कहां थे ? कल कहां थे ? और आज सवेरा होने के पहिले तक कहां गायब थे ? क्यों झूठी बातें बना रहे हो ?

भैरो० । परसो भी, कल भी और आज रात भर भी तुम्हारे साथ था मगर तुम्हारी नजरों से छिपा हुआ था, हां जब दो घंटे रात बाकी थी तब मैंने तुम्हारा साथ छोड़ दिया और राजा साहब से जा मिला, अब मैं फिर तुम्हारे साथ साथ जा रहा हूं क्यों कि राजा साहब का ऐसा ही हुक्म है (हंस कर) और राजा साहब ने सुना है कि तुम्हारा इरादा जमानिया पहुँचने के पहिले ही भाग जाने का है।

लीला० । (अपने उछलते कलेजे को रोक कर) यह उन्हें किसने कहा ?

भैरो० । मैंने।

लीला० । और तुम्हे किसने खबर दी ?

भैरो० । तुम्हारे दिल ने ?

लीला० । मानो मेरे दिल के आप भेदिया ठहरे।

भैरो० । बेशक ऐसा ही है, अगर तुम्हें ऐयारी का ढंग पूरा पूरा मालूम होता तब तुम्हारा दिल मजबूत होता मगर तुम्हारी ऐयारी बिल्कुल कच्ची है। अहा ! एक बात तुमसे कहना तो मैं भूल ही गया। जिस रात मायारानी राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर से भाग गई थी उसी रात सवेरा होने के पहिले ही यह खबर राजा गोपालसिंह को मालूम हो गई।

लीला० । (कांपती हुई लड़खड़ाई आवाज से) यह तो मुझे भी मालूम है, तुम्हारे इस कहने का मतलब क्या है सो समझ में नहीं आता ?

भैरो० । मतलब यही है कि तुम अपनी सूरत साफ करो और मेरे साथ राजा साहब के पास चलो क्योंकि अब असली रामदीन के सामने तुम्हारा रामदीन बने रहना मुनासिब नहीं है।

लीला०। असली रामदीन अब कहां ... ...

लीला कहने को तो इतना कह गई मगर फिर उसने जुबान बन्द करली, भैरोसिंह की चलती फिरती बातों ने उसका कलेजा हिला दिया और वह समझ गई कि अब मेरा नसीबा मुझे धोखा दिया चाहता है मेरा भेद खुल गया और अब मेरे कैद होने मे ज्यादे देर नहीं है। अब उसके दिलने भी कहा कि वास्तव में कलही राजा साहब को तुझ पर शक होगया था अगर तू कलही भाग जाती तो अच्छा था मगर अब तेरा भागना भी कठिन है। लीला ने कुछ और सोच विचार के भैरोसिंह से कहा, "तुम जरा निराले मे चल कर मेरी एक बात सुनलो, बेहतर होगा हम दोनों आदमी घोडा बढा कर आगे निकल चले, मैं जो बात कहा चाहता हूं उसे सुन कर तुम बहुत खुश होवोगे।"

भैरो०। न तो मैं तुम्हारी कुछ सुन सकता हूं और न तुम्हे छोड सकता हूं। हां एक बात तुम्हे और भी कहे देता हु जिसे सुन कर तुम्हारे दिल का खटका निकल जायगा और तुम्हे तुम्हारे पहिचाने जाने का कारण भी मालूम हो जायगा, वह यह है कि जब राजा साहब ने दीवान साहब के नाम की चीठी देकर असली रामदीन को जमानिया भेजा था तो जुबानी कह दिया था कि "इस चीठी में हमने दो सौ सवार भेजने के लिये लिखा है मगर तुम केवल बीस सवार अपने साथ लाना और जिस दिन हमने मांगा है उसके एक दिन बाद लाना।" कहो अब तो बहुत सी बातें तुम्हारे समझ में आ गई होंगी।

इतना कह भैरोसिंह ने लीला का हाथ पकड लिया और राजा साहब की तरफ चलने के लिए कहा मगर लीला का उधर जाना मञ्जूर न था इसलिये उसने अपनी घोडी को न रोका और झटका देकर अपना हाथ छुडाना चाहा मगर ऐसा न कर

सकी, भैरोसिंह ने उसे खैंचकर जमीन पर गिरा दिया और आप भी घोड़े से नीचे कूद कर दाहिना पैर उसकी छाती पर रख दिया, उस समय भैरोसिंह को मालूम हुआ कि यह मर्द नहीं औरत है।

भैरोसिंह की यह कार्रवाई देख कर सभों के कान खड़े हो गये, सवारों ने घोड़ा रोक दिया, राजा साहब की सवारी (रथ) खड़ी हो गई और कई सवार अपने अपने घोड़े पर से कूद कर भैरोसिंह के पास चले गये और इन्द्रदेव भी रथ पर से उतर कर उसके पास जा पहुंचे। आज्ञानुसार लीला की मुश्कें बांध ली गईं और पानी मंगा कर उसका चेहरा साफ किया गया और तब लीला को सभों ने पहिचान लिया लीला राजा गोपालसिंह के पास लाई गई और भैरोसिंह ने सब हाल कहा। जिसे सुन राजा साहब हंस पड़े और बोले, "अब इन्द्रदेव जैसा कहें वैसा करो।"

इन्द्रदेव की आज्ञानुसार लीला रस्सियों से जकड़ कर एक खाली रथ पर बैठा दी गई और कई सवार उसकी निगरानी पर मुस्तैद किए गए।

अब सवारी तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुई। दोपहर के बाद जब सवारी जमानिया के पास पहुंची तब इन्द्रदेव ने राजा साहब से धीरे धीरे कुछ कहा और रथ से उतर कर पैदल मैदान का रास्ता लिया और देखते देखते न मालूम कहां चले गये। सवारी खास बाग के दर्वाजे पर पहुंची और राजा साहब रथ से उतर कर भैरोसिंह को साथ लिये हुए बाग के अन्दर चले गये।

आठवाँ बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तिलिस्म तोड़ने की धुन में लगे हुए थे मगर उनके दिल से किशोरी, कमलिनी और कामिनी तथा लाडिली की मोहब्बत एक सायत के लिये भी बाहर नहीं होती थी। जब दोनों कुमारों ने बाग के उत्तर तरफ वाले मकान की खिड़की (छोटा दर्वाजा) में से झांकते हुए राजा गोपालसिंह की जुबानी किशोरी कामिनी और लाडिली का सब हाल सुना और यह भी सुना कि अब वे सब बहुत जल्द जमानिया में लाई जावेंगी, तब बहुत खुश हुए और उन लोगों से जल्द मिलने के लिये तिलिस्म तोड़ने की फिक्र बहुत ज्यादे हो गई। जब गोपालसिंह इन्दिरा और इन्द्रदेव बातचीत करके चले गये तब बड़े कुमार ने सर्यू से कहा, "सर्यू! हम लोग बहुत जल्द तुम्हें अपने साथ लिये हुए इस तिलिस्म के बाहर होंगे, हम लोगों को तिलिस्म तोड़ने और दौलत पाने का इतना खयाल नहीं है जितना तिलिस्म से बाहर निकलने का ध्यान है। हाँ इस तिलिस्म से हम लोगों को एक किताब मिलने वाली है जिसके लिए हम लोग जरूर उद्योग करेंगे क्योंकि उसी किताब की बदौलत हम लोग चुनारगढ़ का वह भारी तिलिस्म तोड़ सकेंगे जिसे हमारे पिता ने हमारे लिए छोड़ रक्खा है और जिसका तोड़ना हम दोनों भाइयों को आवश्यक कहा जाता है।

सर्यू०। मेरे दिल ने इन्हीं लोगों में रह कर इसी समय। विश्वास दिला दिया कि 'अब तेरा दुर्दिन गया और कलि ने तेरा पीछा छोड़ दिया।' जब आप दोनों भाइयों के दर्शन हुए या आप दोनों का परिचय मिला। अब मैं अपना दुःख भूल कर बिल्कुल

बेफिक्र हो रही हूं और सिवाय आपकी आज्ञा मानने के कोई दूसरा खयाल मेरे दिल में नहीं है।

इन्द्रजीत०। अच्छा तो अब तुम हमलोगों के लिये कुछ फल तोड़ो तब तक हमलोग इस बाग में घूम कर कोई दर्वाजा ढूंढते हैं, ताज्जुब नहीं कि हमलोगों को इस बाग में कई दिन रहना पड़े।

सयू०। जो आज्ञा।

इतना कह कर सयू फल तोड़ने और नहर के किनारे छाया देख कर कुछ जमीन साफ करने के खयाल में पड़ी और दोनों कुमार बाग में इधर उधर घूम कर दर्वाजा खोजने का उद्योग करने लगे।

पहर भर से ज्यादे देर तक घूमने और पता लगाने के बाद जब कुमार उत्तर तरफ वाली दीवार के नीचे पहुंचे जिधर मकान था तब उन्हें पूरब तरफ के कोने की तरफ हटकर जमीन में एक हौज का निशान मालूम हुआ और उसी के पास दीवार में एक छोटे से दर्वाजे का चिन्ह भी देखा, निश्चय हो गया कि हम लोगों का काम इन्हीं दोनों निशानों से चलेगा। इतना सोच कर वे दोनों भाई वहां चले आये जहां सयू फल तोड़ कर और जमीन साफ करके बैठी हुई दोनों भाइयों के आने का इन्तजार कर रही थी। सयू ने अच्छे अच्छे और पके हुए फल दोनों भाइयों के लिये तोड़े थे और जल से धोकर साफ पत्थर की चट्टान पर रक्खे थे। दोनों भाइयों ने उसे खाकर नहर का जल पीया और इसके बाद सयू को भी खाने के लिये कह के उसी ठिकाने चले गये जहां हौज और दर्वाजे का निशान पाया था। हौज में मिट्टी भरी हुई थी जिसे दोनों भाइयों ने खंजर से खोद खोद के निकालना शुरू किया और थोड़ी देर में सयू भी उनके

पास पहुँच कर मिट्टी फेंकने में मदद करने लगी। सन्ध्या हो जाने पर इन सभों ने उस काम से हाथ खैंचा और नहर के किनारे जाकर आराम किया। उस हौज की सफाई में इन लोगों को चार दिन लग गए, पाचवें दिन दोपहर होते होते तक वह हौज साफ हुआ और मालूम होने लगा कि यह वास्तव में एक फौव्वारा है। वह हौज संगमर्मर का बना हुआ था और फौव्वारा सोने का। अब दोनों कुमारों ने खजर के सहारे उस हौज की जमीन का पत्थर उखाड़ना शुरू किया और जब दो तीन दिन की मेहनत में सब पत्थर उखड़ गए तब वह फौव्वारा भी सहज ही में निकल गया और उसके नीचे दर्वाजे का निशान दिखाई दिया। दर्वाजे में पल्ला हटाने के लिये कड़ी लगी हुई थी और जिस जगह ताला जड़ा हुआ था उसके मुंह पर लोहे की एक पतली चादर रक्खी हुई थी जिसे कुंवर इन्द्रजीतसिंह ने हटा दिया और उसी तिलिस्मी ताली से ताला खोला जो पुतली के हाथ में से उन्हें मिली थी।

दर्वाजा हटाने पर नीचे उतरने के लिये सीढ़िया दिखाई पड़ी, आनन्दसिंह तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर रोशनी करते हुए नीचे उतरे और उनके पीछे पीछे इन्द्रजीतसिंह और मयूं भी गई। नीचे पहुँचने पर उन्होंने अपने को एक छोटी सी कोठड़ी में पाया जिसके बीचोबीच में एक हौज बना हुआ था, उस हौज के चारो तरफवाली दीवार कई तरह की धातुओं से बनी हुई थी और हौज के बीच में किसी तरह की राख भरी हुई थी। कोठड़ी के चारो तरफ की दीवारों में से तांबे की बहुत सी तारें आई हुई थीं और वे सब एक साथ होकर उसी हौज के बीच में चली गई थीं। इन्द्रजीतसिंह ने मयूं से कहा, "जब ये सब तारें काट दी जायगी तब आग के चारो तरफ की दीवार

करामात से खाली हो जायगी अर्थात् उसमें वह गुन न रहेगा कि उसके छूने से किसी को किसी तरह की तकलीफ हो। बाद इसके हमलोग उस दीवार वाले दर्वाजे के निशान को साफ करके रास्ता निकालेंगे और इस बाग से निकल कर किसी दूसरी ही जगह जायगे, अस्तु तुम यहां से निकल कर ऊपर चली जाओ तब हम लोग तार काटने में हाथ लगावें।

इन्द्रजीतसिंह के आज्ञानुसार सर्यू काठड़ी से बाहर निकल गई और दोनों कुमारों ने तिलिस्मी खजर से शीघ्रही उन वारों का काट डाला और बाहर निकल आये। वह दर्वाजा पहिले की तरह बन्द कर दिया और ऊपर से मिट्टी डाल दी और फिर नहर के किनारे आकर तीनों आदमी बैठ गए और बातचीत करने लगे।

सर्यू०।अब दीवार छूने मे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती ?

इन्द्र०। अभी नहीं, धीरे धीरे दो पहर में उसका गुन जायगा और तब तक हमलोगो को व्यर्थ बैठे रहना पडेगा।

आनन्द०। तब तक (सर्यू की तरफ बता कर) इनका बचा हुआ किस्सा सुन लिया जाता तो अच्छा होता।

इन्द्र०। नहीं, अब इनका किस्सा पिताजी के सामने ही सुनेंगे।

सर्यू०। अब तो मैं आप के साथ ही रहूंगी। इसलिये तिलिस्म तोड़ते समय जो कुछ आप कार्रवाई करेंगे या जा तमाशा दिखाई देगा देखूंगी यदि आज के पहिले का हाल, जब से आप इस तिलिस्म में आये हैं सुना देते तो बड़ी कृपा होती। मैं भी समझती कि आपकी बदौलत इस तिलिस्म का पूरा पूरा तमाशा देख लिया।

इन्द्र०। (आनन्द से) अच्छी बात है, तुम इस तिलिस्म का हाल इन्हें सुना दो।

थोड़ी देर आराम करने तथा जरूरी कामों से छुट्टी पाने बाद भाई के आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने अपना और तिलिस्म का हाल तथा जिस ढंग से इन्दिरा की मुलाकात हुई थी वह सब सर्यू को कह सुनाया, इसके साथ ही साथ तिलिस्म के बाहर आज कल का जैसा जमाना हो रहा था वह सब भी बयान किया। यह सब हाल कहते सुनते रात आधी से कुछ ज्यादे चली गई और उस समय उन लोगों ने एक विचित्र तमाशा देखा।

उस बाग के उत्तर तरफ सटा हुआ जो मकान था जिसमें से राजा गोपालसिंह और कुमार में बातचीत हुई थी, हम पहिले लिख आये हैं कि "उसमें आगे की तरफ सात खिड़कियां थीं।" उस मकान में एक आवाज आने से दोनों कुमार और सर्यू की निगाह उस तरफ चली गई, देखा कि बीचवाली बड़ी खिड़की (दर्वाजा) खुली है और उसके अन्दर रोशनी मालूम होती है, इन लोगों को ताज्जुब मालूम हुआ और सोचा कि शायद राजा गोपालसिंह आये हैं और हमलोगों से बातचीत करने का इरादा है मगर ऐसा न था थोड़ी ही देर बाद उसके अन्दर दो तीन नकाबपोश चलते फिरते दिखाई दिये और इनके बाद एक नकाबपोश खिड़की में कमन्द अड़ाकर नीचे उतरने लगा। पहिले तो दोनों कुमार और सर्यू को गुमान हुआ था कि राजा गोपालसिंह या इन्द्रदेव दिखाई देंगे या होंगे मगर जब एक नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतरने लगा तब उनका खयाल बदल गया और सोचने लगे कि यह काम इन्द्रदेव या गोपालसिंह का नहीं है क्योंकि गोपालसिंह और इन्द्रदेव तथा इन्दिरा को भी मालूम है कि इस बाग की दीवार छूने या कमन्द के साथ लगाने वाला

नहीं है, तभी तो इन्दिरा अपनी मां के पास नहीं पहुँच सकी और सर्यू ने भी यह बात इन्दिरा से कही होगी।

इन्द्रजीतसिंह ने इसी समय सर्यू से पूछा कि इस बाग की दीवार का हाल इन्दिरा को मालूम है? इसके जवाब में सर्यू ने कहा कि "जरूर मालूम है मैंने खुद इन्दिरा से कहा था और इसी सबब से वह मेरे पास आज तक न आ सकी, निःसन्देह इन्दिरा ने यह बात राजा गोपालसिंह से कही होगी बल्कि वह खुद जानते होंगे, इसी से मैं सोचती हूं कि ये लोग कोई दूसरे ही हैं जो इस भेद को नहीं जानते अब तो इस दीवार का वह गुन जाता ही रहा।"

तीनों को ताज्जुब हुआ और तीनों आदमी टकटकी लगा कर उस तरफ देखने लगे। जब वह नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतर आया तब दूसरे नकाबपोश ने वह कमन्द ऊपर खैंच ली और उसी कमन्द में एक गठड़ी बांध कर नीचे लटकाई। दोनों कुमारों और सर्यू को विश्वास होगया कि इस गठड़ी में कोई आदमी जरूर है।

जो नकाबपोश नीचे आ चुका था उसने गठड़ी थाम ली और खोलकर कमन्द खाली कर दी मगर जिस कम्बल में वह गठड़ी बांधी हुई थी उसी कमन्द के साथ बांध दिया और ऊपर-वाले नकाबपोश ने खैंच लिया। थोड़ी देर बाद दूसरी गठड़ी लटकाई गई और नीचेवाले नकाबपोश ने पहिले की तरह उसे भी थाम लिया और खोल कर खाली कम्बल कमन्द के साथ बांध दिया।

इसी तरह बारी बारी से सात गठड़ियां नीचे उतारी गईं और इसके बाद वह नकाबपोश जो सब के पहिले नीचे उतरा था उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गया और खिड़की बन्द हो गई।

इन्द्र०। (आनन्द से) अच्छी बात है, तुम इस तिलिस्म का हाल इन्हें सुना दो।

थोड़ी देर आराम करने तथा जरूरी कामों से छुट्टी पाने बाद भाई के आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने अपना और तिलिस्म का हाल तथा जिस ढंग से इन्दिरा की मुलाकात हुई थी वह सब सर्यू को कह सुनाया, इसके साथ ही साथ तिलिस्म के बाहर आज कल का जैसा जमाना हो रहा था वह सब भी बयान किया। वह सब हाल कहते सुनते रात आधी से कुछ ज्यादे चली गई और उस समय उन लोगों ने एक विचित्र तमाशा देखा।

इस बाग के उत्तर तरफ सटा हुआ जो मकान था जिसमें से राजा गोपालसिंह और कुमार में बातचीत हुई थी, हम पहिले लिख आये हैं कि "उसमें आगे की तरफ सात खिड़कियां थीं।" इस समय यकायक आवाज आने से दोनों कुमार और सर्यू की निगाह उस तरफ चली गई, देखा कि बीचवाली बड़ी खिड़की (दर्वाजा) खुली है और उसके अन्दर रोशनी मालूम होती है, इन लोगों को ताज्जुब मालूम हुआ और सोचा कि शायद राजा गोपालसिंह आये हैं और हमलोगों से बातचीत करने का इरादा है मगर ऐसा न था, थोड़ी ही देर बाद उसके अन्दर दो तीन नकाबपोश चलते फिरते दिखाई दिये और इनके बाद एक नकाबपोश खिड़की में कमन्द अड़ाकर नीचे उतरने लगा। पहिले तो दोनों कुमार और सर्यू को गुमान हुआ था कि राजा गोपालसिंह या इन्द्रदेव दिखाई देंगे या होंगे मगर जब एक नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतरने लगा तब उनका खयाल बदल गया और सोचने लगे कि यह काम इन्द्रदेव या गोपालसिंह का नहीं है क्योंकि गोपालसिंह और इन्द्रदेव तथा इन्दिरा को भी मालूम है कि इस बाग की दीवार छूने या बदन के साथ लगने लायक

नौवां बयान

[illegible] गोपालसिंह नाम बाग के दर्वाजे प[illegible]
[illegible] दीवान साहब भी वहां हाजिर [illegible]
[illegible] के हवाले कर दी गई थी औ[illegible]
[illegible] उन्होंने कहा था कि "उस लीत[illegible]
[illegible] बाग के अन्दर पहुँचाया है, ह[illegible]
[illegible] वे कौन थे।" अस्तु राजा साह[illegible]
[illegible] मालूम हो गया था कि चार आद[illegible]
[illegible] हमारे दुश्मन होंगे मगर ब[illegible]
[illegible] की आमद ही खबर हो जि[illegible]
[illegible] बाग के अन्दर कर लिया था
[illegible] को गोपालसिंह ने [illegible]
[illegible] बाग में रक्खी थी और अबकी
[illegible] भी गायब हुई है
[illegible] दीवान साहब ने राजा [illegible]
[illegible] बाग में [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] का [illegible]
[illegible] बाग के [illegible]

नहीं है, तभी तो इन्दिरा अपनी मां के पास नहीं पहुंच सकी और सर्यू ने भी यह बात इन्दिरा से कही होगी।

इन्द्रजीतसिंह ने इसी समय सर्यू से पूछा कि इस बाग की दीवार का हाल इन्दिरा को मालूम है? इसके जवाब में सर्यू ने कहा कि "जरूर मालूम है मैंने खुद इन्दिरा से कहा था और इसी सबब से वह मेरे पास आज तक न आ सकी, निःसन्देह इन्दिरा ने यह बात राजा गोपालसिंह से कही होगी बल्कि वह खुद जानते होंगे, इसी से मैं सोचती हूं कि ये लोग कोई दूसरे ही हैं जो इस भेद को नहीं जानते अब तो इस दीवार का वह गुन जाता ही रहा।"

तीनों को ताज्जुब हुआ और तीनों आदमी टकटकी लगा कर उस तरफ देखने लगे। जब वह नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतर आया तब दूसरे नकाबपोश ने वह कमन्द ऊपर खैंच ली और उसी कमन्द में एक गठड़ी बांध कर नीचे लटकाई। दोनों कुमारों और सर्यू को विश्वास होगया कि इस गठड़ी में कोई आदमी जरूर है।

जो नकाबपोश नीचे आ चुका था उसने गठड़ी थाम ली और खोलकर कमन्द खाली कर दी मगर जिस कम्बल में वह गठड़ी बांधी हुई थी उसी कमन्द के साथ बांध दिया और ऊपर-वाले नकाबपोश ने खैंच लिया। थोड़ी देर बाद दूसरी गठड़ी लटकाई गई और नीचेवाले नकाबपोश ने पहिले की तरह उसे भी थाम लिया और खोल कर खाली कम्बल कमन्द के साथ बांध दिया।

इसी तरह बारी बारी से सात गठड़ियां नीचे उतारी गईं और इसके बाद वह नकाबपोश जो सब के पहिले नीचे उतरा था उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गया और खिड़की बन्द हो गई।

ज्यादे रहता था यहां तक कि इस बाग के पेड़ पत्तों को सींचने और छिड़काव करने का काम इन दोनों में से किसी एक कूंए ही से चल सकता था मगर सींचने के समय दूर और नजदीक का खयाल करके या और किसी सबब से बनवाने वाले ने दो बड़े बड़े जगी कूंए बनवाए थे परन्तु ये दोनों कूए भी कारीगरी और ऐयारी से खाली न थे।

भैरोसिंह और गोपालसिंह छिपते और घूमते हुए पूरब तरफ वाले कूए पर पहुंचे जिसका घेरा बहुत बड़ा था और नीचे उतरने तथा चढ़ने के लिए कूए की दीवार में लोहे की कड़िया लगी हुई थीं। भैरोसिंह और गोपालसिंह दोनों आदमी कड़ियो के सहारे उस कूए में उतर गये।

किसी ठिकाने छिपी हुई मायारानी इस तमाशे को देख रही थी, गोपालसिंह और भैरोसिंह को आते देख वह बहुत खुश हुई और उसे निश्चय हो गया कि अब हम लोग गोपालसिंह को मार लेंगे। जिस जगह वह बैठी हुई थी वहा पर माधवी, कुबेरसिंह, भीमसेन और ऐयारों के अतिरिक्त बीस आदमी फौजी सिपाहियों में से भी मौजूद थे और बाकी फौजी सिपाही तहखाने में छिपाये हुए थे। पहिले तो मायारानी ने चाहा कि केवल हम ही लोग बीस सिपाहियों के साथ जा कर गोपालसिंह का गिरफ्तार कर ले मगर जब उसे कृष्णाजिन्न-वाली बात याद आई और यह खयाल हुआ कि गोपालसिंह के पास तिलिस्मी खञ्जर और कवच जरूर होगा जो कि रोहतास-गढ़ में उसके पास उस समय मौजूद था जब शेरअली और दारोगा के साथ हम लोग वहां गये हुए थे, तब उसकी हिम्मत टूट गई और बिना कुल फौजी सिपाहियों को साथ लिये गोपा-लसिंह के पास जाना उचित न जाना। इसी बीच में उसके देखते

नौवां बयान

जिस समय राजा गोपालसिंह खास बाग के दर्वाजे पर पहुँचे थे उस समय उनके दीवान साहब भी वहां हाजिर थे, नकली रामदीन अर्थात् लीला उनके हवाले कर दी गई थी और भैरोसिंह के सवाल करने पर उन्होंने कहा था कि "इस लीला ने चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुँचाया है, हम नहीं कह सकते कि वास्तव में वे कौन थे।" अस्तु राजा साहब और भैरोसिंह को तो यह मालूम हो गया था कि चार आदमी भी इस बाग क अन्दर घुसे हैं जो हमारे दुश्मन होंगे मगर उन्हे उन पाच सौ फौजी सिपाहियों की शायद ही खबर हो जिन्हे मायारानी ने गुप्त रीति से बाग के अन्दर कर लिया था। पहिली दफे जब मायारानी को गोपालसिंह ने छकाया था तब वह खुले तौर पर बाग में रहती थी और अबकी दफे तो वह उस भूलभुलैयें बाग में जा कर ऐसी गायब हुई है कि उसका पता लगाना कठिन हो गया। दीवान साहब ने राजा साहब से पूछा भी था कि "अगर हुक्म हो तो बाग में तलाशी ली जाय और उन आदमियों का पता लगाया जाय जिन्हे लीला ने इस बाग में पहुँचाया है।" मगर राजा साहब ने उसके जवाब में सिर हिला कर जाहिर कर दिया था कि यह बात उन्हे स्वीकार नहीं है।

कुछ दिन रहते ही गोपालसिंह बाग के दूसरे दर्जे में केवल भैरोसिंह को साथ लेकर गये और बाग के अन्दर चारो तरफ सन्नाटा पाया। इस समय भैरोसिंह और गोपालसिंह दोनों ही के हाथ में तिलिस्मी खंजर मौजूद था।

खास बाग के दूसरे दर्जे मे दो कुंए थे जिसमें पानी बहुत

ज्यादे रहता था यहा तक कि इस बाग के पेड़ पत्तों को सींचने और छिड़काव करने का काम इन दोनों में से किसी एक कूंए ही से चल सकता था। मगर सींचने के समय दूर और नजदीक का खयाल करके या और किसी सबब से बनवाने वाले ने दो बड़े बड़े जगी कूंएं बनवाए थे परन्तु ये दोनों कूए भी कारीगरी और ऐयारी से खाली न थे।

" भैरोसिह और गोपालसिंह छिपते और घूमते हुए पूरब तरफ वाले कूए पर पहुंचे जिसका घेरा बहुत बडा था और नीचे उतरने तथा चढ़ने के लिए कूए की दीवार में लोहे की कड़िया लगी हुई थी। भैरोसिंह और गोपालसिंह दोनों आदमी कड़ियों के सहारे उस कूए मे उतर गये।

किसी ठिकाने छिपी हुई मायारानी इस तमाशे को देख रही थी, गोपालसिंह और भैरोसिह को आते देख वह बहुत खुश हुई और उसे निश्चय हो गया कि अब हम लोग गोपालसिंह को मार लेंगे। जिस जगह वह बैठी हुई थी वहा पर माधवी, कुबेरसिंह, भीमसेन और ऐयारों के अतिरिक्त बीस आदमी फौजी सिपाहियों में से भी मौजूद थे और बाकी फौजी सिपाही तहखाने में छिपाये हुए थे। पहिले तो मायारानी ने चाहा कि केवल हम ही लोग बीस सिपाहियों के साथ जा कर गोपालसिंह का गिरफ्तार कर लें मगर जब उसे कृष्णाजिन्न-वाली बात याद आई और यह खयाल हुआ कि गोपालसिह के पास तिलिस्मी खञ्जर और कवच जरूर होगा जो कि रोहतास-गढ़ में उसके पास उस समय मौजूद था जब शेरअली और दारोगा के साथ हम लोग वहां गये हुए थे, तब उसकी हिम्मत टूट गई और बिना कुल फौजी सिपाहियों को साथ लिये गोपा-लसिंह के पास जाना उचित न जाना। इसी बीच में उसके देखते

देखते गोपालसिंह कूए के अन्दर चले गये।

इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आने तथा यहां से बाहर जाने वाला दर्वाजा जिस तरह बन्द होता है उसका हाल उस समय लिखा जा चुका है जब पहिली दफे इस बाग में मायारानी के ऊपर आफत आई थी और मायारानी ने सिपाहियों के बागी हो जाने पर बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया था। अस्तु इस समय भी उसी ढंग से मायारानी ने बाग का दर्वाजा बन्द कर दिया और इसके बाद कुल सिपाहियों को तहखानों में से निकाल कर माधवी, भीमसेन और कुबेरसिंह तथा ऐयारों को साथ लिये हुए उस कूए पर पहुंची जिसके अन्दर भैरोसिंह को साथ लिए हुए राजा गोपालसिंह उतर गये थे।

यहां पर मायारानी ने सोचा था कि "आखिर गोपालसिंह इस कूंए के बाहर निकलेंगे उस समय हमलोग उन्हें सहज ही में मार लेंगे बल्कि उन्हें कूए से बाहर निकलने की मोहलत ही न देंगे इत्यादि।" मगर जब बहुत देर हो गई और रात हो जाने पर भी गोपालसिंह कूए के बाहर न निकले तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह खुद कूए के अन्दर झांक कर देखने लगी और चौंक कर माधवी से बोली —

माया०। क्यों बहिन! आज ही तुमने भी देखा था कि इस कूए में पानी कितना ज्यादे था?

माधवी०। बेशक मैंने देखा कि बीस हाथ से ज्यादे दूरी पर पानी नहीं है, तो क्या इस समय पानी कम जान पड़ता है?

माया०। कम क्या मैं समझती हूं इस समय इसमें कुछ भी पानी नहीं है और कूंआ सूखा पड़ा है।

माधवी०। (ताज्जुब से) ऐसा नहीं हो सकता! एक पत्थर

इसमे फेक कर देखो।

माया०। आओ तुम ही देखो।

माधवी अपने हाथ में ईंट का एक टुकड़ा लेकर कूए के ऊपर गई और झांक कर देखने बाद ईंट का टुकड़ा कूए के अन्दर फेंका और उसकी आवाज पर गौर करके बोली:—

माधवी०। बेशक इसमें पानी कुछ भी नहीं है केवल कीचड़ मात्र है क्या तुम नहीं जानती कि इसके अन्दर पानी के निकास का कोई रास्ता तथा आदमियों के आने जाने के लिये कोई सुरंग वा दर्वाजा है या नहीं?

माया०। मुझे एक दफे गोपालसिंह ने कहा था कि इस कूए के नीचे एक तहखाना है जिसमें तरह तरह के तिलिस्मी हर्बे और और ऐयारो के काम की अपूर्व चीजें है।

माधवी०। बेशक यही बात ठीक होगी और उन्हीं चीजों मे से कुछ लाने के लिये गोपालसिंह गए होगे।

माया०। शायद ऐसा ही हो।

माधवी०। तो बस इससे बढ़ कर और कोई तर्कीब नहीं हो सकती कि यह कूंआ पाट दिया जाय जिसमे गोपालसिंह को फिर दुनिया का मुंह देखना नसीब न हो।

माया०। निःसन्देह यह बहुत अच्छी राय है अस्तु जहा तक हो सके इसे कर ही देना चाहिये।

इस समय कुंवरसिंह की फौज टिड्डियों की तरह बाग मे फैली हुई हुक्म का इन्तजार कर रही थी। माधवी ने अपनी राय भीमसेन और कुंवरसिंह से कही और उनके आज्ञानुसार फौजी आदमियो ने जमीन खोद कर मिट्टी निकालने और कूआ पाटने में हाथ लगा दिया।

पहर रात जाते जाते तक कूआ बिल्कुल पट गया और उस

समय मायारानी के दिल में यह बात पैदा हुई कि "अब मुझे गोपालसिंह का कुछ भी डर न रहा।"

फौजी सिपाहियों को खुले मैदान बाग में पड़े रहने की आज्ञा देकर भीमसेन, कुबेरसिंह और माधवी तथा ऐयारों को साथ लिए हुए मायारानी अपने उस खास कमरे की छत पर बेफिक्री और खुशी के साथ चली गई जिसमें आज के कुछ दिन पहिले मालिकाना ढंग पर रहती थी।

दसवां बयान

रात अनुमान दो पहर के जा चुकी है। खास बाग के दूसरे दर्जे में दीवानखाने की छत पर कुबेरसिंह, भीमसेन और उनके चारो ऐयार तथा माधवी के साथ बैठी हुई मायारानी बड़ी प्रसन्नता से बातें कर रही है, चांदनी खूब छिटकी हुई है और बाग की हर एक चीज जहां तक निगाह बिना ठोकर खाए जा सकती है, साफ दिखाई दे रही है। बातचीत का विषय अब यह था कि "राजा गोपालसिंह से तो छुट्टी मिल ही गई अस्तु राज्य तथा राजकर्मचारियों के लिये क्या प्रबन्ध करना चाहिये।"

जिस छत पर ये लोग बैठे हुए थे उसके दाहिनी तरफ वाली पट्टी में भी एक सुन्दर इमारत और उसके पीछे ऊंची दीवार के बाद तिलिस्मी बाग का तीसरा दर्जा पड़ता था। इस समय मायारानी का मुंह ठीक उसी इमारत और दीवार की तरफ था और उस तरफ की चांदनी दर्वाजों और कमरों के अन्दर घुस कर बड़ी बहार दिखा रही थी। बात करते करते मायारानी चौंकी और उस तरफ हाथ का इशारा करके बोली "हैं! उस छत पर कौन जा पहुंचा है?"

माधवी० । हां एक आदमी हाथ में नंगी तलवार लिये टहल तो रहा है ।

भीम० । चेहरे पर नकाब डाले हुए है ।

कुबेर० । हमारे फौजी सिपाहियों में से शायद कोई ऊपर चला गया होगा मगर उन्हे बिना हुक्म ऐसा करना तो न चाहिये ।

माया० । नही नहीं, उस मकान में सिवाय मेरे और कोई नहीं जा सकता ।

माधवी० । लेकिन वह गया कौन ?

माया० । यही तो ताज्जुब है । देखिये एक और भी आ पहुँचा । यह तीसरा भी आया । मामला क्या है ?

अजायब० । कहीं राजा गोपालसिंह कूए मे घुस कर वहां न जा पहुँचे हों । मगर वे तो केवल दो ही आदमी थे ।।

माया० । और वे तीन हैं (कुछ रुक कर) लीजिये अब पाच हो गए ।

मायारानी और उसके संगी साथियों के देखते ही देखते उस छत पर पचीस आदमी हो गए । सभो के हाथ में नङ्गी तलवारें थीं । जिस छत पर वे सब थे वहां से ऊपर मायारानी के पास तक आने में यद्यपि कई तरह की रुकावटें थीं मगर ऐयारों के लिए यह कोई मुश्किल बात न थी, इसलिये, मायारानी के पक्ष-वालों को भय हुआ और उन्होंने चाहा कि अपने फौजी आद-मियों में से थोड़ों को ऊपर बुला लें और ऐसा करने के लिये अजायबसिंह को कहा गया ।

अजायबसिंह फौजी सिपाहियों को लाने के लिये चले तो गए मगर मकान के नीचे न जा सके और तुरत लौट आ कर बोले, "नीचे जाने का हर एक दर्वाजा बन्द है, कोई तर्कीब माया-

रानी करे तो शायद वहां तक पहुंचने की नौबत आवे।"

अजायबसिंह की इस बात ने सभों को चौंका दिया और साथ ही इसके सभों को अपनी अपनी जान की फिक्र पड़ गई। मायारानी के दिलाये हुये भरोसे से जो कुछ उम्मीद की जड़ लोगों के दिलों में जमी थी वह हिल गई और अब अपने किये पर पछताने की नौबत आई, मगर मायारानी अब भी बात बनाने से न चूकी और वह यह कहती हुई अपनी जगह से उठी कि "कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह इस तिलिस्म को तोड़ रहे हैं इसलिए ताज्जुब नहीं कि ये सब बातें कुछ उन्हीं से सम्बन्ध रखती हों।"

मायारानी स्वयं नीचे उतरी मगर जा न सकी और अजायबसिंह की तरह लाचार होकर बैरंग लौट आई। उस समय उसके दिल में भी तरह तरह के खुटके पैदा हुए और ताज्जुब की निगाह से उन लोगों की तरफ देखने लगी जो उसके मुकाबिल में यकायकी आकर गिनती में पच्चीस हो गये थे।

थोड़ी देर के बाद वे लोग ऊपर ही ऊपर कूदते फांदते मायारानी की तरफ आते हुए दिखाई दिये। उस समय माया-रानी और उसके संगी साथी सब भी उठ खड़े हुए और अपनी जान बचाने की नीयत से तलवारें खैंच खैंच कर मुस्तैद हो गये।

बात की बात में पचीसों आदमी उस छत पर चले आये जिस पर मायारानी थी मगर मायारानी या उसके साथियों से किसी ने कुछ भी न कहा बल्कि उनकी तरफ आंख उठाकर देखा भी नहीं और मस्तानी चाल चलते हुए छत के नीचे उतर गये। इन लोगों ने भी यह सोचकर कि वे लोग गिनती में हमसे ज्यादे हैं रोक टोक न किया मगर इस बात का खयाल जरूर रहा कि नीचे जाने के रास्ते तो सब बन्द ही हैं खुद मायारानी

न जा सकी और लौट आई, इन सभों को भी नि.सन्देह लौट आना पड़ेगा मगर थोड़ी ही देर में यह गुमान जाता रहा जब कि वे पचीसो नीचे उतरकर बाग के बीच मे चलते हुए दिखाई दिये।

माधवी ने समझा कि हमारे फौजी सिपाही उन लोगो को जरूर रोके टोकेंगे और वास्तव में बात भी ऐसी ही थी, उन पच्चीसो को बाग में देख फौजी सिपाहियों में खलबली सी पड़ गई और बहुतो ने उठकर उन लोगों को रोकना चाहा मगर वे लोग देखते ही देखते पेड़ों की झुरमुट में घूम कर ऐसे गायब हुए कि किसी को पता भी न लगा और सब लोग आश्चर्य के साथ देखते ही रह गये। उस समय माधवी ने मायारानी से कहा, "बहिन! यहा तो मामला बेढब नजर आता है॥

माया०। कुछ समझ मे नहीं आता कि वे लोग कौन थे यहा क्यो आये और हमलोगों को बिना रोके टोके इस तरह क्यों और कहां गायब हो गये॥

माधवी०। यह तो ठीक हुई है मगर मैं पूछती हूं कि आप तिलिस्मी रानी कहला कर भी इस बाग का हाल क्या जानती हैं? मैं समझती हू कि कुछ भी नहीं जानतीं, अपने कमरे का मामूली दर्वाजा भी आपसे नहीं खुलता और हम लोगों की जाने मुफ्त में जाया चाहती हैं।

भीम०। अब आप की कोई कार्रवाई हम लोगो को भरोसा नहीं दिला सकती॥

माया०। इस समय मैं मजबूर हो रही हू इसलिये टेढी सीधी जो जी में आवे सुनाओ, अगर इस मकान के नीचे उतरने की नौबत आवेगी तो दिखा दूगी कि मैं क्या कर सकती हू।

कुंवर०। नीचे जाने की नौबत ही क्यों आवेगी। गैर लोग

आवे और चले जाय मगर यहा की रानी हो कर तुम कुछ न कर सको यह बड़े शर्म की बात है।

मायारानी इसका जवाब कुछ दिया ही चाहती थी कि सीढ़ी की तरफ से आवाज आई, "तुम लोगों के कलपने पर मुझे दया आती है, अच्छा आओ हम दर्वाजा खोल देते हैं तुम लोग नीचे उतर आओ और अपनी जान बचाओ।" इसके बाद सीढ़ी वाले दर्वाजे के खुलने की आवाज आई।

सभों को ताज्जुब और सीढ़ी की तरफ जाते डर मालूम हुआ मगर यह सोच कर कि यहा पड़े रहने से भी जान बचने कि आशा नहीं है सभों ने जी कड़ा करके नीचे उतर जाने का इरादा किया।

वास्तव में दर्वाजे जो बन्द हो गये थे खुले हुए दिखाई दिये और सब कोई जल्दी के साथ नीचे उतर गये, उस समय माया-रानी ने एक लम्बी सास लेकर कहा, "अब कोई चिन्ता नहीं।"

बाकर०। मगर यह न मालूम हुआ कि दर्वाजा खोलनेवाला कौन था।।

यारअली०। और उसने हम लोगों के साथ नेकी का बर्ताव क्यों किया।

इतने ही में ऊपर से आवाज आई, "दर्वाजा खोलनेवाला मैं हू।"

सभों ने घबड़ा कर ऊपर की तरफ देखा। एक आदमी मुह पर नकाब डाले बरामदे में झाकता हुआ दिखाई दिया। कुंवर-सिंह ने उससे पूछा, "तुम कौन हो?"

नकाबपोश०। मैं इस तिलिस्म का दारोगा हू।

माया०। इस तिलिस्म का दारोगा तो राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे में है।

नक़ाबपोश०। वह तुम्हारा दारोगा था और मैं राजा गोपालसिंह का दारोगा हू, आज कल यह बाग मेरे ही कब्जे में है।

माया०। जिस समय हमलोग यहा आए थे तुम कहा थे?

नक़ाब०। इसी बाग में।

माया०। फिर हमलोगों को रोका क्यों नहीं?

नकाब०। रोकने की जरूरत ही क्या थी? यह तो मैं जानता ही था कि तुम लोग अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मार रहे हो, तुम लोगो की बेवकूफी पर तो मुझे हंसी आती है।

माया०। बेवकूफी काहे का?

नक़ाब०। एक तो यही कि तुम लोगों ने इतनी फौज को बाग के अन्दर घुसेड तो लिया मगर यह न सोचा कि इतने आदमी यहा आकर खायंगे क्या? अगर घास और पेड पत्तों को भी खाकर गुजारा किया चाहे तौ भी एक दिन काम नहीं चल सकता। क्या तुम लोगों ने समझा था कि बाग में पहुंचते ही गोपालसिंह को मार लेंगे?

माया०। गोपालसिंह को तो हमलोगों ने मार ही लिया इसमें शक ही क्या है? बाकी रही हमारी फौज सो एक दिन का खाना अपने पास रखती है, कल तो हमलोग इस बाग के बाहर हो ही जायगे।

नक़ाब०। दोनों बातें शेखचिल्ली की सी हैं न तो राजा गोपालसिंह का तुम लोग कुछ बिगाड़ सकते हौ और न इस बाग के बाहर की हवा ही खा सकते हौ।

माया०। तो क्या गोपालसिंह किसी दूसरी राह से निकल जायेंगे?

नक़ाब०। बेशक।

आवे और चले जाय मगर यहा की रानी हो कर तुम कुछ न कर सको यह वड़े शर्म की वात है।

मायारानी इसका जवाब कुछ दिया ही चाहती थी कि सीढ़ी की तरफ से आवाज आई, "तुम लोगो के कलपने पर मुझे दया आती है, अच्छा आओ हम दर्वाजा खोल देते हैं तुम लोग नीचे उतर आओ और अपनी जान बचाओ।" इसके बाद सीढ़ी वाले दर्वाजे के खुलने की आवाज आई।

सभों को ताज्जुब और सीढ़ी की तरफ जाते डर मालूम हुआ अगर यह सोच कर कि यहा पड़े रहने से भी जान बचने कि आशा नहीं है सभो ने जी कड़ा करके नीचे उतर जाने का इरादा किया।

वास्तव में दर्वाजे जो बन्द हो गये थे खुले हुए दिखाई दिये और सब कोई जल्दी के साथ नीचे उतर गये, उस समय माया-रानी ने एक लम्बी सास लेकर कहा, "अब कोई चिन्ता नहीं।"

बाकर०। मगर यह न मालूम हुआ कि दर्वाजा खोलनेवाला कौन था॥

यारअली०। और उसने हम लोगो के साथ नेकी का वर्ताव क्यो किया।

इतने ही में ऊपर से आवाज आई, "दर्वाजा खोलनेवाला मैं हू।"

सभो ने घवडा कर ऊपर की तरफ देखा। एक आदमी मुह पर नकाब डाले वरामदे में झाकता हुआ दिखाई दिया। कुंवर-सिंह ने उससे पूछा, "तुम कौन हो?"

नकावपोश०। मै इस तिलिस्म का दारोगा हू।

माया०। इस तिलिस्म का दारोगा तो राजा वीरेन्द्रसिंह के कब्जे में है।

नकाबपोश०। वह तुम्हारा दारोगा था और मैं राजा गोपालसिंह का दारोगा हूं, आज कल यह बाग मेरे ही कब्जे में है।

माया०। जिस समय हमलोग यहा आए थे तुम कहा थे ?

नकाब०। इसी बाग में।

माया०। फिर हमलोगों को रोका क्यों नहीं ?

नकाब०। रोकने की जरूरत ही क्या थी ? यह तो मैं जानता ही था कि तुम लोग अपने पैर में आप ही कुल्हाड़ी मार रहे हो, तुम लोगों की बेवकूफी पर तो मुझे हंसी आती है।

माया०। बेवकूफी काहे की ?

नकाब०। एक तो यही कि तुम लोगो ने इतनी फौज को बाग के अन्दर घुसेड़ तो लिया मगर यह न सोचा कि इतने आदमी यहा आकर खायंगे क्या ? अगर घास और पेड़ पत्तों को भी खाकर गुजारा किया चाहें तो भी एक दिन काम नहीं चल सकता। क्या तुम लोगों ने समझा था कि बाग में पहुंचते ही गोपालसिंह को मार लेंगे ?

माया०। गोपालसिंह को तो हमलोगों ने मार ही लिया इसमें शक ही क्या है ? बाकी रही हमारी फौज सो एक दिन का खाना अपने पास रखती है, कल तो हमलोग इस बाग के बाहर हो ही जायगे।

नकाब०। दोनो बातें शेखचिल्ली की सी हैं न तो राजा गोपालसिंह का तुम लोग कुछ बिगाड़ सकते हो और न इस बाग के बाहर की हवा ही खा सकते हो।

माया०। तो क्या गोपालसिंह किसी दूसरी राह से निकल जायेंगे ?

नकाब०। बेशक।

माया०। और हम लोग बाहर न जा सकेंगे ?

नकाब०। कदापि नहीं, क्योंकि मैंने सब दर्वाजे अच्छी तरह बन्द कर दिये हैं। तुम तो तिलिस्म की रानी बनने का दावा व्यर्थ ही करती हो, तुम्हे तो यहा का हाल रुपे में एक पैसा भी नही मालूम है, अभी मैंने तुम लोगों के उतरने की राह रोक दी थी सो तुम्हारे किये कुछ भी न बन पड़ा। जब तुम लोग छत पर थे पचीस आदमी तुम्हारे सामने से होकर नीचे चले आये अगर तुम्हे तिलिस्म की रानी होने का दावा था तो उन्हे रोक लेती। मगर हमारे राजा साहब के हौसले को देखो कि तुम लोगों के यहा आने की खबर पा कर भी अकेले भैरोसिंह को साथ लेकर इस बाग में चले आए।

माया०। उन्हें हमारे आने की कैसे खबर मिली ?

नकाब०। (जोर से हंसकर) इसके जवाब में इतना ही कहना काफी है कि तुम्हारी लीला इस बाग में आने के पहिले ही गिरफ्तार कर ली गई।

माधवी०। तो क्या हम लोग किसी तरह अब इस बाग के बाहर नहीं जा सकते ?

नकाब०। जीते जी तो नहीं जा सकते मगर जब तुम लोग मर जाओगे तब सभो की लाशें बाहर फेंक दी जायेंगी।

जिस मकान में मायारानी उतरी थी उसी के बरामदे में वह नकाबपोश टहल रहा था, बरामदे के आगे किसी तरह की आड़ या रुकावट न थी। मायारानी उससे बातें करती जाती थी और छिपे ढंग से अपने तिलिस्मी तमञ्चे को भी दुरुस्त करती जाती थी और रात होने के सबब यह बात उस नकाब-पोश को मालूम न हुई। जब वह माधवी से बातें करने लगा उस समय मौका पा कर मायारानी ने तिलिस्मी तमञ्चा उस

पर चलाया। गोली उसकी छाती में लगकर फट गई और बेहोशी का धुआं बहुत जल्द उसके दिमाग में चढ़ गया, साथ ही वह आदमी बेहोश होकर लुड़कता हुआ मायारानी के आगे जमीन पर जा रहा। भीमसेन ने झपट कर उसकी नकाब हटा दी और चौंककर बोल उठा, "वाह वाह यह तो राजा गोपालसिंह हैं।"

ग्यारहवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और सर्यू को बड़ाही ताज्जुब हुआ जब इन्होंने यकायकी सात आदमियों को तिलिस्मी बाग में पहुंचाए गए देखा। जब उस मकान की खिड़की बन्द हो गई और चारों तरफ सन्नाटा छा गया तब इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "उस तरफ चल कर देखना चाहिये कि ये लोग कौन हैं?"

आनन्द०। जरूर चलना चाहिये।

सर्यू०। कहीं हम लोगों के दुश्मन न हों।

आनन्द०। अगर दुश्मन भी होंगे तो हमें कुछ परवाह न करना चाहिये, हम लोग हजारों में लड़ने वाले हैं।

इन्द्र०। अगर हम लोग दस बीस आदमियों से डरा करेंगे तो कुछ भी न कर सकेंगे।

इतना कहकर इन्द्रजीतसिंह ने उस तरफ कदम बढ़ाया। आनन्दसिंह उनके पीछे पीछे रवाना हुए मगर सर्यू को साथ आने की आज्ञा न दी और वह उसी जगह खड़ी रह गई।

पास पहुंचकर कुमार ने देखा कि सात आदमी जमीन पर बेहोश पड़े हैं सभों के बदन पर स्याह लबादा और चेहरों पर स्याह नकाब थी। थोड़ी देर तक दोनों भाई ताज्जुब की निगाह से उन सभों की तरफ देखते रहे और इसके बाद एक के चेहरे

पर से नकाव हटाने का इरादा किया मगर उसी समय ऊपर से पुन. दर्वाजा या खिड़की खुलने की आवाज आई।

आनन्द०। मालूम होता है कि और भी दो चार आदमी यहा उतारे जायगे।

इन्द्र०। शायद ऐसाही है, यहा से हटकर और आड में होकर देखना चाहिये।

आनन्द०। (सातो वेहोशो की तरफ इशारा करके) यदि इन लोगो को इनके दुश्मनो ने यहा पहुचाया हो और अबकी दफे कोई आकर इनकी जान .....

इन्द्र०। नहीं नही, अगर ये लोग मारे जाने लायक होते और जिन लोगो ने इन्हे नीचे उतारा है वे इनके जानी दुश्मन होते तो धीरे से उतारने के वदले ऊपर से धक्का देकर नीचे गिरा देते। खैर ज्यादे वातचीत का मौका नही है इस पेड की आड़ में हो जाओ, फिर देखो हम सब पता लगा देते है। बस हटो जल्दी करो।

वेचारे आनन्दसिंह कुछ जवाब न दे सके और वहां से थोडी दूर हटकर एक पेड़ की आड़ में हो गये। इस समय इन्द्रदेव अपनी छावनी की तरफ जा रहे थे और पेडो की आड़ में पड जाने के कारण उस जगह कुछ अन्धकार सा छाया था जहा वे सातो वेहोश पडे थे और इन्द्रजीतसिंह खडे थे।

इन्द्रजीतसिंह हाथ में तिलिस्मी खजर लेकर फुर्ती से उन सातो के वीच में छिप कर लेट रहे और दोनो तरफ से दो आदमियो के लबादे को भी अपने वदन पर लेलिया और पडे पडे ऊपर की तरफ देखने लगे। एक आदमी कमन्द के सहारे नीचे उतरता हुआ दिखाई दिया। जब वह जमीन पर उतर कर उन सातो आदमियो की तरफ आया तो इन्द्रजीतसिंह ने

फुर्ती से हाथ बढ़ाकर तिलिस्मी खंजर उसके पैर से लगा दिया, साथ ही वह आदमी कांपा और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। इन्द्रजीतसिंह पुनः उसी तरह लेटे लेटे ऊपर की तरफ देखने लगे। थोडी देर बाद एक और आदमी उसी कमन्द के सहारे नीचे उतरा और गौर से उन सातों को तरफ घूम घूम के देखने लगा, जब वह कुमार के पास आया कुमार ने उसके पैर से भी तिलिस्मी खंजर लगा दिया और वह भी पहिले की तरह बेहोश होकर जमीन पर गिर पडा। कुअर इन्द्रजीतसिंह लेटे लेटे और भी किसी के आने का इन्तजार करने लगे मगर कुछ देर हो जाने पर भी कोई तीसरा दिखाई न पड़ा। कुमार उठ खड़े हुए और आनन्दसिंह भी उनके पास चले आये।

इन्द्रजीत०। तुम इसी जगह मुस्तैद रह कर इन सभों की निगहबानी करो हम इसी कमन्द के सहारे ऊपर जाकर देखते हैं कि वहां क्या है।

आनन्द०। आप का अकेले ऊपर जाना ठीक न होगा कौन ठिकाना वहां दुश्मनों की बारात लगी हो।

इन्द्रजीत०। कोई हर्ज नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा मगर तुम यहां से मत हिलना।

इतना कहकर इन्द्रजीतसिंह उसी कमन्द के सहारे बहुत जल्द ऊपर चढ़ गये और खिड़की के अन्दर जा कर एक लम्बे चौड़े कमरे में पहुंचे जहां बिल्कुल सन्नाटा था मगर चिराग जल रहा था। इस कमरे में दूसरी तरफ बाहर निकल जाने के लिये एक बड़ा सा दर्वाजा था, कुमार वहां चले गये और एक पैर दर्वाजे के बाहर रख कर झांकने लगे, एक दूसरा कमरा नजर पड़ा जिस में चारो तरफ छोटे कई दर्वाजे थे मगर बन्द

थे और सामने की तरफ एक बड़ा सा खुला हुआ दर्वाजा था। कुमार उस खुले हुए दर्वाजे में चले गये और झांक कर देखने से एक छोटा सा बाग दिखाई दिया जिसके चारो तरफ ऊँची ऊँची इमारत और बीच में एक छोटी सी बावली थी। उस बाग में दो बिगहे से ज्यादे जमीन न थी और फूल पत्तों के पेड़ भी बहुतही कम थे। बावली के पूरब तरफ एक आदमी हाथ में मशाल लिये खड़ा था और उस मशाल मे से बिजली की तरह बहुतही तेज रोशनी निकल रही थी। वह रोशनी स्थर थी अर्थात् हवा लगने से हिलती न थी केवल उस एकही रोशनी से तमाम बाग ऐसा उजाला हो रहा था कि वहा का एक एक पत्ता साफ दिखाई दे रहा था कुअर इन्द्रजीतसिंह ने बड़े गौर से उस आदमी को देखा जिसके हाथ मे मशाल थी, कुमार को निश्चय हो गया कि यह आदमी असली नहीं है बनावटी है अस्तु ताज्जुब से कुछ देर उसकी तरफ देखते रहे, इसी बीच मे बाग के उत्तर तरफ वाले दालान मे से एक आदमी निकलकर बावली की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा और कुमार ने उसे बहुत जल्द पहिचान लिया कि यह राजा गोपालसिंह है। कुमार ने उन्हें पुकारने का इरादा किया ही था कि उसी दालान में से और चार आदमी आते हुए दिखाई दिये और उनकी सूरत शक्ल भी पहिले आदमी के समान थी अर्थात् वे चारो भी राजा गोपालसिंह ही मालूम पड़ते थे जिससे कुअर इन्द्रजीतसिंह को बहुत ही आश्चर्य हुआ और वह बड़े गौर से उनकी तरफ देखने लगे।

वे चारो आदमी जो पीछे आए थे, खाली हाथ न थे बल्कि दो आदमियों की लाशें उठाए हुए थे। धीरे धीरे चल कर वे चारो आदमी उस बनावटी मूरत के पास पहुँचे जिसके हाथ में मशाल थी, वे दोनो लाशें उसी के पास जमीन पर रख दी

और पाचो गोपालसिंह मिल कर धीरे धीरे बाते करने लगे जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह किसी तरह सुन नही सकते थे।

पहिले आदमी को देख कर और गोपालसिंह समझ कर कुमार ने आवाज देना चाहा था मगर जब और भी चार गोपालसिंह निकल आए तब उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ और यह समझ कर कि कदाचित इन पाचों में से एक भी गोपालसिंह न हो चुप रह गए। उन पाचों गोपालसिंह की पौशाक एक ही रग ढग की थी बल्कि उन दोनों लाशों की पौशाक भी ठीक उन्हीं की तरह थी। यद्यपि उन लाशों का सर कटा हुआ और वहा मौजूद न था मगर उन पाचों गोपालसिंह की तरफ खयाल करके देखने वाला उन लाशों को भी गोपालसिंह ही बता सकता था।

कुमार को चाहे इस बात का खयाल हो गया कि इन सभो मे से कोई भी असल गोपालसिंह न होंगे मगर उन सभों को बड़े ताज्जुब और गौर की निगाह से देख रहे थे कि इतने गोपालसिंह बनने की जरूरत क्या थी और उन दोनो लाशो के साथ एसा वर्ताव क्यों किया गया और किसने किया॥

जिस दर्वाजे में कुंअर इन्द्रजीतसिंह खड़े थे उसी के आगे बाईं तरफ घूमती हुई छोटी सीढ़िया नीचे उतर जाने के लिए थीं। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कुछ सोच विचार कर चाहा की इन सीढ़ियों की राह नीचे उतर कर पाचो गोपालसिंह के पास जाय और उन्हें जबर्दस्ती रोक कर असल बात का पता लगावें मगर इसके पहिले ही किसी के आने की आहट मालूम हुई और पीछे घूम कर देखने से कुंअर आनन्दसिंह पर निगाह पड़ी।

इन्द्रजीत०। तुम क्यों चले आए ?

आनन्द०। आप को मैंने कई दफे नीचे से पुकारा मगर उसका आप ने कुछ जवाब न दिया तो लाचार यहां आना पड़ा।

इन्द्रजीत०। क्यों ?

आनन्द०। राजा गोपालसिंह की आज्ञा से।

इन्द्रजीत०। राजा गोपालसिंह कहां हैं ?

आनन्द०। उन दोनो आदमियों में से जो नीचे उतरे थे और जिन्हे आप ने बेहोश कर दिया था एक राजा गोपालसिंह थे, जब आप ऊपर चढ़ आए तब मैंने एक का नकाब हटाया और तिलिस्मी खंजर की रोशनी में चेहरा देखा तो मालूम हुआ कि यह गोपालसिंह हैं, उस समय मुझे इस बात का अफसोस हुआ कि बेहोश करने बाद आप ने उनकी सूरत नहीं देखी, अगर देखते तो उन्हे छोड़ कर यहा न आते। खैर जब मैंने उन्हें पहिचाना तो होश में लाने के लिये उद्योग करना उचित जाना। अस्तु तिलिस्मी खंजर के जोड़ की अंगूठी उनके बदन से लगाई जिससे थोड़ी ही देर बाद वह होश में आये और उठ बैठे। होश में आने बाद पहिले पहिल जो कुछ उनसे मुंह से निकला वह यही था कि "कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने धोखा खाया, भला मुझे बेहोश करने की क्या जरूरत थी ? मै तो खुद उनसे मिलने के लिये यहा आया था।" इतना कह कर उन्होंने मेरी तरफ देखा, यद्यपि उस समय चांदनी वहा से हट गई थी मगर उन्होंने मुझे बहुत जल्द पहिचान लिया पूछा कि "तुम्हारे बड़े भाई कहा हैं ?"

मैंने उनसे कुछ छिपाना उचित न जाना और कह दिया कि इसी कमन्द के सहारे ऊपर चले गए हैं, यह सुनकर बहुत रंज हुए और क्रोध से बोले कि "सब काम लड़कपन और

नादानी का किया करते हैं! उन्हें बहुत जल्द ऊपर से बुला लो।" मैंने आपको कई दफे पुकारा मगर आप न बोले तब उन्होंने घुड़क के कहा कि "क्यों व्यर्थ देर कर रहे हो तुम खुद ऊपर जाओ और जल्द बुला लाओ।"

मैंने कहा कि मुझे यहां से हटने की आज्ञा नहीं है आप खुद जाइये और उन्हें बुला लाइये। इतना सुन कर वे और भी रंज हुए और बोले, "अगर मुझमें ऊपर जाने की ताकत होती तो मैं तुम्हें इतना कहता भी नहीं, बेहोशी के कारण मेरी रग रग कमजोर हो रही है तुम अगर उनको बुला लाने में विलम्ब करोगे तो पछताओगे बस अब मैं इससे ज्यादे और कुछ न कहूंगा जो ईश्वर की मर्जी होगी और जो कुछ तुम लोगों के भाग्य में लिखा होगा सो होगा।"

उनकी बातें ऐसी न थीं कि मैं सुनता और चुपचाप खड़ा रह जाता, आखिर लाचार होकर आपको बुलाने के लिये आना पड़ा अब आप जल्द चलिये देर न कीजिये।

आनन्दसिंह की बात सुन कर इन्द्रजीतसिंह को बहुत रंज हुआ और उन्होंने क्रोध भरी आवाज में कहा :—

इन्द्रजीत०। आखिर तुम से नादानी हो ही गई।

आनन्द०। (आश्चर्य से) सो क्या?

इन्द्रजीत०। तुमने उस दूसरे चेहरे पर से भी नकाब हटा कर देखा कि वह कौन था?

आनन्द०। जी नहीं।

इन्द्रजीत०। तुम्हें कैसे विश्वास हुआ कि वह राजा गोपालसिंह ही हैं? जब चेहरे पर से नकाब हटा कर देखा था तो पानी से मुंह धोकर भी देख लेना था? क्या तुम भूल गये कि राजा गोपालसिंह के पास भी इसी तरह का तिलिस्मी खंजर

मौजूद है। अस्तु उनके ऊपर तिलिस्मी खंजर का असर क्यों होने लगा था?

आनन्द०। (सर नीचा करके) बेशक मुझसे भूल हुई।

इन्द्रजीत०। भारी भूल हुई (छोटे बाग की तरफ बता कर) देखो यहां पांच राजा गोपालसिंह हैं। क्या तुम कह सकते हो कि ये पांचों राजा गोपालसिंह हैं?

आनन्दसिंह ने उस छोटे बागीचे की तरफ झांक कर देखा और कहा, "बेशक मामला गड़बड़ है।"

इन्द्रजीत०। खैर अब तो हमें लौटना ही पड़ा। हम चाहते थे कि इन सभों का कुछ भेद मालूम करें मगर खैर।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह लौट पड़े और उस कमरे को लांघ कर दूसरे कमरे में पहुंचे जिसमें वे सातों खिड़कियां थीं। यकायक इन्द्रजीतसिंह की निगाह एक लिफाफे पर पड़ी जिसे उन्होंने उठा लिया और चिराग के पास ले जाकर पढ़ा। लिफाफा बन्द था और उस पर लिखा हुआ था:—

"इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह योग्य लिखी गोपालसिंह।"

कुमार ने लिफाफा फाड़कर चीठी निकाली और देखते ही कहा, "इस चीठी पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता बेशक यह भाई साहब के हाथ की लिखी है और मामूली निशानी भी है।" इसके बाद चीठी पढ़ने लगे।

आनन्दसिंह ने देखा कि चीठी पढ़ते पढ़ते इन्द्रजीतसिंह के चेहरे का रंग कई दफे बदला और जैसे जैसे चीठी पढ़ते जाते थे रंज की निशानी बढ़ती ही जाती थी और जब कुल चीठी पढ़ चुके तो एक लम्बी सांस लेकर बोले, "अफसोस! बड़ी भूल हुई।" और वह चीठी पढ़ने के लिये आनन्दसिंह के हाथ में दे दी।

आनन्दसिंह ने चीठी पढ़ी, यह लिखा हुआ :—

"किशोरी, कामिनी, लक्ष्मीदेवी, कमलिनी, कमला, लाडिली और इन्दिरा को आप के तिलिस्म में भेजते हैं देखिये इन्हें सम्हालिये और एक क्षण के लिये भी इन से अलग न होइये जब तक कि मुंदर हमारे तिलिस्मी बाग में घुसी हुई है हम आठ आना उसके कब्जे में आ गए हैं, लीला ने धोखा देकर हमारे कुछ भेद मालूम कर लिये जिसका सबब और पूरा पूरा हाल लक्ष्मीदेवी या कमलिनी की जुबानी आपको मालूम होगा उन्हें हमने सब कुछ बता और समझा दिया है, कई बातों के खयाल से सभों को बेहोश करके कमन्द द्वारा आप के पास पहुँचाते हैं, खबरदार एक क्षण के लिये इन लोगों से अलग न होना और किसी बनावटी गोपालसिंह का विश्वास न करना, आज कम से कम बीस पच्चीस गोपालसिंह बने हुए कारवाई कर रहे है, हम जरा तरद्दुद में पड़े हुए हैं मगर कोई चिन्ता नहीं भैरोसिंह हमारे साथ हैं। आप इस बाग के नजं को तोड कर दूसरी जगह पहुँचिये और यह काम रात भर के अन्दर होना चाहिए।"

शिवरामे—गोपाल—मेरावशि

शुलेख।

चीठी पढ़ कर आनन्दसिंह को बड़ा अफसोस हुआ और अपने किये पर पछताने लगे। सच तो यो है कि दोनों भाइयों को इस बात का अफसोस हुआ कि "किशोरी कामिनी इत्यादि को अपने पास आ जाने पर भी देखे और होश में लाये बिना छोड़ कर इधर चले आये और व्यर्थ के झंझट में पड़े।" क्योंकि दोनों कुमार किशोरी और कामिनी की मुलाकात से बढ़कर दुनिया में किसी चीज को पसन्द नहीं करते थे।

दोनों कुमार जल्दी जल्दी उस कमरे के बाहर हुए और उस

खिड़की में पहुंचे जिसमें कमन्द लगा हुआ छोड आए थे मगर आश्चर्य की बात है कि अब उन्होंने उस कमन्द को खिड़की में लगा हुआ न पाया जिसके सहारे वे नीचे उतर आते। शायद किसी नीचे वाले ने उस कमन्द को छुडा लिया हो॥

बारहवां बयान

राजा गोपालसिंह ने जब रामदीन को चीठी और अगूठी दे कर जमानिया भेजा था तो यद्यपि चीठी में लिख दिया था कि "परसों रविवार को शामतक हमलोग वहां (पिपलिया घाटी) पहुँच जायगे।" मगर रामदीन को समझा दिया था कि "रविवार को पिपलिया घाटी पहुँचना हमने योंही लिख दिया है वास्तव में हम वहा सोमवार को पहुँचेंगे अस्तु तुम भी सोमवार को पिपलिया घाटी पहुंचना जिसमें ज्यादे देर तक हमारे आदमियों को वहा ठहर कर तकलीफ न उठानी पड़े और दो सौ सवारों की जगह केवल बीस सवार लाना।" यह बात तो असली रामदीन को मालूम थी और वह मारा न जाता तो बेशक रथ और सवारों को लेकर राजा साहब की आज्ञानुसार सोमवार को पिपलिया घाटी पहुँचता, मगर नकली रामदीन अर्थात् लीला तो उन्हीं बातों को जान सकती थी जो चीठी मे लिखी हुई थी अस्तु वह रविवार ही को रथ और फौज लेकर पिपलिया घाटी जा पहुँची और जब सोमवार को राजा साहब वहा पहुँचे तो बोली, "आश्चर्य है कि आपके आने में पूरे आठ पहर को देर हुई।"

यह सुनते ही राजा साहब समझ गए कि यह असली रामदीन नहीं है, उसी समय से उन्होंने अपनी कार्रवाई का ढग बदल दिया और लीला तथा मायारानी का सब बन्दोबस्त

मिट्टी में मिल गया। वह उसी समय दो चार बातें करके पीछे लौट गये और दूसरे दिन औरतों को अपने साथ न ला कर केवल भैरोसिंह और इन्द्रदेव को साथ लिये हुए पिपलिया घाटी में आये।

इस जगह यह भी लिख देना उचित जान पड़ता है कि दूसरे दिन पिपलिया घाटी में पहुँच कर लीला के लाए हुए सवारों के साथ रथ पर चढ़ कर जमानिया पहुचनेवाले गोपालसिंह असली न थे बल्कि नकली थे और भैरोसिंह ने लीला के साथ जो कुछ सलूक किया वह असली राजा गोपालसिंह का इशारा था। अब हमारे पाठक यह जाना चाहते होंगे कि "यदि वह राजा गोपालसिंह नकली थे तो असली गोपालसिंह कहा गये या वह किस सूरत में गये ?" तो इसके जवाब में केवल इतना ही कह देना काफी होगा कि "असली गोपालसिंह भी उन्हीं नकली गोपालसिंह के साथ इन्द्रदेव की सूरत बन कर रथ पर सवार हुए थे और जमानिया पहुँचने के पहिले ही नकली गोपालसिंह को समझा बुझा कर रथ से उतर किसी तरफ चले गए।" यह सब हाल यद्यपि पिछले बयानों से पाठकों को मालूम हो गया होगा परन्तु शक मिटाने के लिये यहा पुन. लिख दिया गया।

राजा गोपालसिंह के होशियार हो जाने के कारण मायारानी ने तिलिस्मी बाग मे तरह तरह के तमाशे देखे, जिसका कुछ हाल तो लिखा जा चुका है और बाकी आगे चल कर लिखा जायगा, क्योंकि इस समय हम इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल लिखना उचित समझते हैं।

कुंवर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने जब खिड़की मे कमन्द लगा हुआ न पाया तो उन्हें ताज्जुब और रंज हुआ, थोड़ी देर तक खड़े उसी बाग की तरफ देखते रहे और फिर आनन्द-

सिंह से बोले, 'क्या हम लोग यहा से कूद नहीं सकते ?"

आनन्द०। क्यों नहीं कूद सकते, अगर इस बात का ख्याल हो कि नीचा बहुत है तो कमरबन्द खोल कर इस दवाजे के सीकचे में बाध और उसके सहारे कुछ नोचे लटक कर कूदने में कुछ भी न मालूम पड़ेगा।

इन्द्रजीत०। हां तुमने यह बहुत ठीक कहा, दोनो कमरबन्द के सहारे हम लाग आधी दूर तक लटक सकते हैं मगर खराबी यह है कि दोना कमरबन्द से हाथ धोना पड़ेगा और इस तिलिस्म में नहाने धाने का सुभीता इसी कमरबन्द की बदौलत है। खैर काई चिन्ता नहीं लगोट से भी काम निकल सकता है, अच्छा लाओ कमरबन्द खोलो।

दोनों भाइयों ने कमरबन्द खोलने बाद दोनों को एक साथ जोडा और उसका एक सिरा दर्वाजे में लगे हुए सीखचे के साथ बाध कर दोनों भाई बारी से नीचे लटक गये।

कमरबन्द ने आधी दूर तक दोनों भाइयों को नीचे पहुँचा दिया इसके बाद दोनों भाइयों को कूद जाना पड़ा। कूदने के साथ ही नीचे एक झाड़ी के अन्दर से आवाज आई, "शाबाश !! इतनी ऊंचाई से कूद पड़ना आपही लोगों का काम है मगर अब किशोरी, कामिनी इत्यादि से मुलाकात नहीं हो सकती !!'

जितने आदमी कमन्द के सहारे इस बाग में लटके या लटकाये गए थे और जिन सभों को वहा छोड आनन्दसिंह अपने भाई को बुलाने के लिये ऊपर गए थे उन सभों को वहा मौजूद न पाकर और इस शाबाशी देने वाली आवाज को सुन कर दोनों को बडा ही आश्चर्य हुआ, दोनो भाई चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगे मगर किसी की सूरत नजर न पड़ी, हा एक गुना। पेड के नीचे सर्यू को बेहोश पड़े हुए देखा जिससे

उन दोनों का ताज्जुब और भी ज्यादे हो गया।

इन्द्रजीत०। (आनन्द से) यह सब खराबी तुम्हारी जरा सी भूल के सबब से हुई।

आनन्द०। निःसन्देह ऐसा ही है।

इन्द्रजीत०। खैर पहिले सयू को होश मे लाने की फिक्र करो शायद इसकी जबानी कुछ मालूम हो।

आनन्द०। जो आज्ञा।

इतना कह कर आनन्दसिंह सयू को होश में लाने का उद्योग करने लगे। थोड़ी ही देर में सयू की बेहोशी जाती रही और इतने ही में सुबह की सुफेदी ने भी अपनी सूरत दिखाई।

इन्द्रजीत०। (सयू से) तुम्हे किसने बेहोश किया ?

सयू०। एक नकाबपोश ने आ कर एक चादर जबरदस्ती मेरे ऊपर डाल दी जिससे मैं बेहोश हो गई। मैं दूर से सब तमाशा देख रही थी। जब आप कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गए और उसके कुछ देर बाद छोटे कुमार भी आप को कई दफे पुकारने बाद उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गए तब उन्हीं में से एक नकाबपोश ने उन सभो को सचेत किया जो (हाथ का इशारा करके) उस जगह बेहोश पड़े हुए थे या जो ऊपर से लटकाए गए थे। इसके बाद सब कोई मिल कर उस (हाथ से बता कर) दीवार की तरफ गए और कुछ देर तक आपुस में बात करते रहे, सो बीच में छिप कर उनकी बाते सुनने की नीयत से मैं भी धीरे धीरे अपने को छिपाती हुई उस तरफ बढ़ी मगर अफसोस ! वहा तक पहुंचने भी न पाई थी कि एक नकाबपोश मेरे सामने आ पहुंचा और उसने उसी ढंग से मुझे बेहोश कर दिया जैसा कि मैं अभी कह चुकी हू। शायद उसी बेहोशी की अवस्था में मैं इस जगह पहुंचाई गई।

मयूं की बातें सुनकर दोनों कुमार कुछ देर तक सोचते रहे, इसके बाद सयूं का साथ लिये हुए उसी दीवार की तरफ गए जिधर उन लोगों का जाना सयूं ने बताया था, जो कमन्द के सहारे इस बाग में उतारे गये थे। जब वहां पहुँचे तो देखा कि दीवार की लम्बाई के बीचाबीच में दर्वाजे का निशान बना हुआ है और उसके पासही में नीचे की जमीन कुछ खुदी हुई है।

आनन्द०। (इन्द्रजीत से) देखिये यहां की जमीन उन लोगों ने खोदी है और तिलिस्म के अन्दर जाने का दर्वाजा निकाला है क्योंकि दीवार में अब वह गुण तो रहा नहीं जो उन दोनों को ऐसा करने से रोकता।

इन्द्रजीत०। बेशक! यह वही दर्वाजा है, जिस राह से हम लोग तिलिस्म के दूसरे दर्जे में जाने वाले थे। तो इससे जाना जाता है कि वे लोग तिलिस्म के अन्दर घुस गये।

आनन्द०। जरूर ऐसाही है और यह काम सिवाय गोपाल-भाई के दूसरा नहीं कर सकता, अस्तु अब मैं जरूर यह कहने की हिम्मत करूंगा कि वह दूसरा नहीं था जिसके कहे मुताबिक मैं आपको बुलाने के लिये मकान के ऊपर चला गया था।

इन्द्रजीत०। तुम्हारी बात मान लेने की इच्छा तो होती है मगर क्या तुम उस खास निशान को देख कर भी कह सकते हो कि वह चीठी गोपाल भाई की नहीं थी जो मुझे उस मकान में कमरे के अन्दर मिली थी।

आनन्द०। जी नहीं, यह तो मैं कदापि नहीं कह सकता कि वह चीठी किसी दूसरे की लिखी हुई थी मगर यह खयाल भी मेरे दिल से दूर नहीं हो सकता कि मैं उन्हीं (गोपालसिंह) की आज्ञा से आपको बुलाने गया था।

इन्द्रजीत०। हो सकता है। तो क्या उन्हीं ने हम लोगों के

साथ चालाकी की ?

आनन्द०। जो हो।

इन्द्र०। यदि ऐसा ही है तो उनकी लिखावट पर भरोसा कर के हम कैसे कह सकते हैं कि किशोरी कामिनी इत्यादि इस बाग में पहुँच गई थीं।

आनन्द०। क्या यह हो सकता है कि वह तिलिस्मी किताब जो गोपाल भाई के पास थी किसी हमारे दुश्मन के हाथ लग गई हो और वह उस किताब की मदद से अपने साथियों सहित यहां पहुंच कर हमलोगों को नुक्सान पहुँचाने की नीयत से तिलिस्म के अन्दर चला गया हो।

इन्द्रजीत०। यह तो हो सकता है कि उनकी किताब किसी दुश्मन ने चुरा ली हो मगर यह नहीं हो सकता कि उसका मतलब भी हर कोई समझ ले, खुद मैं ही "रिक्तग्रन्थ" का मतलब ठीक ठीक नहीं समझ सकता था, आखिर जब उन्होंने बताया तब कहीं तिलिस्म के अन्दर जाने लायक हुआ (कुछ रुक कर) आज के मामले तो कुछ अजब बेढंगे ही दिखाई दिये . . . . खैर कोई चिन्ता नहीं आखिर हम लोगों का इसी दर्वाजे की राह तिलिस्म के अन्दर जाना ही है चलो। फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

आनन्द०। यद्यपि सूर्योदय हो जाने के कारण प्रात कृत्य से छुट्टी पा लेना आवश्यक जान पड़ता है, यह सोच कर कि क्या जाने कैसा मौका पड़े तथापि आज्ञानुसार तिलिस्म के अन्दर चलने के लिए मैं तैयार हूं, चलिए।

आनन्दसिंह की बात सुन कर इन्द्रजीतसिंह कुछ गौर में पड़ गए और कुछ सोचने बाद बोले, "कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जायगा।"

दीवार के नीचे जो जमीन खुदी हुई थी उसकी लम्बाई चौड़ाई पांच पाच गज से ज्यादे न थी। मिट्टी हट जाने के कारण एक पत्थर की पटिया (ताज्जुब नही वह लोहे या पीतल की हो) दिखाई दे रही थी और उसे उठाने लिए बीच में लोहे की कड़ी लगी हुई थी जिस का एक सिरा दीवार के साथ सटा हुआ था। इन्द्रजीतसिंह ने कडी में हाथ डालकर जोर किया और उस पटिये (छोटे चट्टान) को उठा कर किनारे पर रख दिया। नीचे उतरने के लिये सीढिया दिखाई दी और दोनो भाई सर्यू को साथ लिये हुए नीचे उतर गए।

लगभग बीस सीढी के नीचे उतर जाने बाद एक छोटी सी कोठडी मिली जिसकी जमीन किसी धातु की बनी हुई थी और खूब चमक रही थी। ऊपर दो तीन सूराख (छेद) भी इस ढग से बने हुए थे कि जिस से दिन भर उस कोठडी मे कुछ कुछ रोशनी बनी रह सकती थी। आनन्दसिंह ने चारो तरफ गौर से देख कर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "भैया! रिक्तग्रन्थ मे लिखा था कि यही कोठड़ी तुम्हे तिलिस्म के अन्दर पहुँचावेगी मगर मेरी समझ मे नही आता कि यह कोठडी किस तरह हमलोगो को तिलिस्म के अन्दर पहुँचावेगी क्यो कि इसमें न तो कही दर्वाजा दिखाई देता है और न कोई ऐसा निशान मालूम पड़ता है जिस को हम लोग दर्वाजा बनाने के काम में लावे।"

इन्द्रजीत०। हम भी इसी सोच विचार मे पडे हुए हैं मगर कुछ समझ में नही आता ८।

इसी बीच में दोनो कुमार और सर्यू के पैरो मे झुनझुनी और कमजोरी मालूम होने लगी और वह बात की बात मे इतनी ज्यादे बढी कि वे लोग वहा से हिलने लायक भी न रहे, आखिर तमाम बदन में सनसनाहट और कमजोरी ऐसी बढ़

गई कि वे तीनों बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़े और फिर तनाबदन की सुध न रही।

घंटे भर के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह की बेहोशी जाती रही और वह उठ कर बैठ गए मगर चारो तरफ घोर अन्धकार छाया रहने के कारण यह नहीं जान सकते थे कि वह किस अवस्था में कहां पड़े हुए हैं। सबसे पहिले उन्हें तिलिस्मी खंजर की फिक्र हुई, कमर में हाथ लगाने पर उसे मौजूद पाया अस्तु उसे निकाल कर और उसका कब्जा दबाकर रोशनी पैदा की और ताज्जुब की निगाह से चारो तरफ देखने लगे।

जिस स्थान में इस समय कुमार थे वह सुर्ख पत्थर से बना हुआ था और दीवारों पर पत्थर के फूल बूटों का काम बहुत खूबी खूबसूरती और कारीगरी का अनूठा नमूना दिखाने वाला बना हुआ था। चारों तरफ की दीवारों मे चार दर्वाजे थे मगर उनमें कवाड़ के पल्ले लगे हुए न थे। पास ही में कुंअर आनन्दसिंह भी पड़े हुए थे परन्तु सर्यू का कहीं पता न था जिससे कुमार को बहुतही ताज्जुब हुआ। उसी समय आनन्दसिंह की बेहोशी भी जाती रही और वह उठ कर घबराहट के साथ चारों तरफ देखते हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास आ खड़े हुए और बोले:—

आनन्द०। हम लोग यहां क्योंकर आए?

इन्द्रजीत०। मुझे मालूम नहीं, तुमसे थोड़ी ही देर पहिले मैं होश में आया हूं और ताज्जुब के साथ चारों तरफ देख रहा हूं।

आनन्द०। और सर्यू कहां चली गई?

इन्द्रजीत०। यह भी नहीं मालूम, तुम चारो तरफ की दीवारों में चार दर्वाजे देख रहे हो शायद वह हम से पहिले

होश मे आकर इन दर्वाजों में से किसी एक के अन्दर चली गई हो !!

आनन्द०। शायद ऐसा ही हो, चलकर देखना चाहिये। रिक्तग्रन्थ का कहना बहुत ठीक निकला, आखिर उसी कोठड़ी ने हम लोगों को यहा पहुँचा दिया, मगर किस ढग मे पहुँचाया सो मालूम नही होता (छत की तरफ देखकर) शायद वह कोठडी इसके ऊपर ही हो और उसकी छत ने नीचे उतर कर हम लोगों को यहा लुड़का दिया हो।

इन्द्रजीत०। (कुछ मुसकुरा कर) शायद ऐसाही हो, निश्चय नही कह सकते, हा अब व्यर्थ न खडे रह कर सयूं और उन नकाबपोशो का पता लगाना चाहिये।

इन्द्रजीतसिंह ने इतना कहा ही था कि दीवार वाले एक दर्वाजे के अन्दर से आवाज आई, "वेशक, वेशक !!"

तेरहवां बयान

"वेशक, वेशक" की आवाज ने दोनो कुमारो को चौंका दिया। वह आवाज सयूं की न थी और न किसी ऐसे आदमी की थी जिसे कुमार पहिचानते हो यह सबब उनके चौंकने का और भी था। दोनो कुमारों को निश्चय हो गया कि यह आवाज उन्हीं नकाबपोशो मे से किसी की है जो तिलिस्म के अन्दर लटकाये गये थे और जिन्हे हम लोग खोज रहे है। ताज्जुब नहीं कि सयूं भी इन्हीं लोगो के सबब से गायब होगई हो ! क्योंकि एक कमजोर औरत की बेहोशी हम लोगो की बनिस्पत जल्द दूर नही हो सकती ।

दोनो भाइयो के विचार एक से थे अतएव दोनो ने एक दूसरे की तरफ देखा और इसके बाद इन्द्रजीतसिंह और उनके

पीछे पीछे आनन्दसिंह उस दर्वाजे के अन्दर चले गए जिसमें से किसी के बोलने की आवाज आई थी।

कुछ आगे जाने पर कुमार को मालूम हुआ कि यह रास्ता सुरंग के ढंग का बना हुआ है मगर बहुत छोटा और केवल एक ही आदमी के जाने लायक है अर्थात् उसकी चौड़ाई डेढ़ हाथ से ज्यादे नहीं है।

लगभग बीस हाथ के जाने बाद दूसरा दर्वाजा मिला जिसे लांघ कर दोनों भाई एक छोटे से बाग में गए जिसमें सब्जी की बनिस्बत इमारत का हिस्सा बहुत ज्यादे था अर्थात् उसमें कई दालान, कई कोठड़ियां और कई कमरे थे जिन्हें देखते ही इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "इसके अन्दर थोड़े से आदमियों का पता लगाना भी कठिन होगा।"

दोनों कुमार दो ही चार कदम आगे बढ़े थे कि पीछे से दर्वाजे के बन्द होने की आवाज आई, घूम कर देखा तो उस दर्वाजे को बन्द पाया जिसे लांघ कर इस बाग में पहुंचे थे। दर्वाजा लोहे का और एकही पल्ले का था जिसने चूहेदानी की तरह ऊपर से गिर कर दर्वाजे का मुंह बन्द कर दिया था। उस दर्वाजे के पल्ले पर मोटे मोटे अक्षरों में यह लिखा हुआ था.—

"तिलिस्म का यह हिस्सा टूटने लायक नहीं है, हां तिलिस्म का तोड़ने वाला यहां का तमाशा देख सकता है।"

इन्द्रजीत०। यद्यपि तिलिस्म का तमाशा दिलचस्प होता है मगर हमारा यह समय बड़ा नाजुक है तमाशा देखने लायक नहीं क्योंकि तरह तरह के तरद्दुदों ने दुःखी कर रक्खा है, देखा चाहिये इस तमाशबीनी से कब छुट्टी मिलती है।

आनन्द०। मेरा भी यही खयाल है बल्कि मुझे तो इस बात

का अफसोस है कि इस बाग में क्यों आए, अगर किसी दूसरे दर्वाजे के अन्दर गए होते तो अच्छा होता।

इन्द्रजीत०। (कुछ आगे बढ़ कर ताज्जुब से) देखो तो सही उस पेड़ के नीचे कौन बैठा है। कुछ पहिचानते हो ?

आनन्द०। यद्यपि पोशाक में बहुत बड़ा फर्क है मगर सूरत भैरोसिंह की सी मालूम पड़ती है।

इन्द्रजीत०। मेरा भी यही खयाल है, आओ उसके पास चल कर देखें।

आनन्द०। चलिये।

इस बाग के बीचाबीच में एक कदम्ब का बहुत बड़ा पेड़ था जिसके नीचे एक आदमी हाथ पर गाल रक्खे बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। उसी को देख कर दोनों कुमार चौंके थे और उसी पर भैरोसिंह के होने का शक हुआ था। जब दोनों भाई उसके पास पहुंचे तो शक जाता रहा और अच्छी तरह पहिचान कर इन्द्रजीतसिंह ने पुकारा और कहा, "क्यों यार भैरोसिंह! तुम यहां कैसे पहुंचे ?"

उस आदमी ने सर उठाकर ताज्जुब से दोनों कुमारों की तरफ देखा और हलकी आवाज में जवाब दिया, "तुम दोनों कौन हो ? मैं तो सात वर्ष से यहां रहता हूं मगर आज तक किसी ने भी मुझसे यह न पूछा कि तुम यहां कैसे आ पहुंचे ?"

आनन्द०। कुछ पागल तो नहीं हो गये ?

इन्द्रजीत०। क्योंकि तिलिस्म की हवा बड़े बड़े चालाकों और ऐयारों को पागल बना देती है।

भैरो०। (शायद वह भैरोसिंह ही हो) कदाचित ऐसा ही हो मगर मुझे तो आज तक किसी ने भी नहीं कहा कि तू पागल हो गया है। मेरी स्त्री भी यहां मेरे साथ रहती है, वह भी मुझे

बुद्धिमान ही समझता है।

आनन्द०। (मुसकुरा कर) तुम्हारी स्त्री कहां है? उसे मेरे सामने बुलाओ, मैं उससे पूछूंगा कि वह तुम्हें पागल समझती है या नहीं।

भैरो०। वाह वाह! तुम्हारे कहने से मैं अपनी स्त्री को तुम्हारे सामने बुला लूं? कहीं तुम उस पर आशिक हो जाओ या वही तुम पर मोहित हो जाय तो क्या हो?

इन्द्रजीत०। (हंस कर) वह भले ही मुझ पर आशिक हो जाय मगर मैं वादा करता हूं कि उस पर मोहित न होऊंगा।

भैरो०। सम्भव है कि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूं मगर उसकी नौजवानी मुझे उस पर विश्वास नहीं करने देती। अच्छा ठहरो मैं उसे बुलाता हूं। अरी एरी मेरी नौजवान स्त्री भोली ई ई ई . ॥

एक तरफ से आवाज आई, "मैं आप ही चली आ रही हूं तुम क्यों चिल्ला रहे हो? कम्बख्त को जब देखो भोली भोली करके चिल्लाया करता है।"

भैरो०। देखो कम्बख्त को! साठ घड़ी में एक पल भी सीधी तरह बात नहीं करती, नौजवान औरतें ऐसी ही हुआ करती हैं।

इतने में दोनों कुमारों ने देखा कि बाईं तरफ से एक नब्बे वर्ष की बुढ़िया छड़ी टेकती धीरे धीरे चली आ रही है जिसे देखते ही भैरोसिंह उठा और यह कहता हुआ उसकी तरफ बढ़ा, "आओ मेरी प्यारी भोली! तुम्हारी नौजवानी तुम्हें अकड़ कर चलने नहीं देती तो मैं अपने हाथों का सहारा देने के लिये तैयार हूं।"

भैरोसिंह ने बुढ़िया को हाथ का सहारा देकर अपने पास ला बैठाया और आप भी उसी जगह बैठ कर बोला, 'मेरी

का अफसोस है कि इस बाग में क्यों आए, अगर किसी दूसरे दर्वाजे के अन्दर गए होते तो अच्छा होता।

इन्द्रजीत०। (कुछ आगे बढ़ कर ताज्जुब से) देखो तो सही उस पेड़ के नीचे कौन बैठा है। कुछ पहिचानते हो?

आनन्द०। यद्यपि पौशाक में बहुत बड़ा फर्क है मगर सूरत भैरोसिंह की सी मालूम पड़ती है।

इन्द्रजीत०। मेरा भी यही खयाल है, आओ उसके पास चल कर देखें।

आनन्द०। चलिये।

इस बाग के बीचोबीच में एक कदम्ब का बहुत बड़ा पेड़ था जिसके नीचे एक आदमी हाथ पर गाल रक्खे बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। उसी को देख कर दोनो कुमार चौंके थे और उसी पर भैरोसिंह के होने का शक हुआ था। जब दोनो भाई उसके पास पहुचे तो शक जाता रहा और अच्छी तरह पहिचान कर इन्द्रजीतसिंह ने पुकारा और कहा, "क्यो यार भैरोसिंह! तुम यहा कैसे पहुचे?"

उस आदमी ने सर उठाकर ताज्जुब से दोनो कुमारों की तरफ देखा और हलकी आवाज में जवाब दिया, "तुम दोनों कौन हो? मैं तो सात वर्ष से यहा रहता हू मगर आज तक किसी ने भी मुझसे यह न पूछा कि तुम यहा कैसे आ पहुँचे?"

आनन्द०। कुछ पागल तो नहीं हो गये?

इन्द्रजीत०। क्योंकि तिलिस्म की हवा बड़े बड़े चालाकों और ऐयारो को पागल बना देती है।

भैरो०। (शायद वह भैरोसिंह ही हो) कदाचित ऐसा ही हो मगर मुझे तो आज तक किसी ने भी नहीं कहा कि तू पागल हो गया है। मेरी स्त्री भी यहा मेरे साथ रहती है, वह भी मुझे

बुद्धिमान ही समझती है।

आनन्द०। (मुसकुरा कर) तुम्हारी स्त्री कहां है? उसे मेरे सामने बुलाओ, मैं उससे पूछूंगा कि वह तुम्हें पागल समझती है या नहीं।

भैरो०। वाह वाह! तुम्हारे रहने से मैं अपनी स्त्री को तुम्हारे सामने बुला लूं? कहीं तुम उस पर आशिक हो जाओ या वही तुम पर मोहित हो जाय तो क्या हो?

इन्द्रजीत०। (हंस कर) वह भले ही मुझ पर आशिक हो जाय मगर मैं वादा करता हूं कि उस पर मोहित न होऊंगा।

भैरो०। सम्भव है कि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूं मगर उसकी नौजवानी मुझे उस पर विश्वास नहीं करने देती। अच्छा ठहरो मैं उसे बुलाता हूं। अरी एरी मेरी नौजवान स्त्री भोली ई ई ई ॥

एक तरफ से आवाज आई, "मैं आप ही चली आ रही हूं तुम क्यों चिल्ला रहे हो? कम्बख्त को जब देखो भोली भोली करके चिल्लाया करता है।"

भैरो०। देखो कम्बख्त को! साठ घड़ी में एक पल भी सीधी तरह बात नहीं करती, नौजवान औरतें ऐसी ही हुआ करती हैं।

इतने में दोनों कुमारों ने देखा कि बाईं तरफ से एक नब्बे वर्ष की बुढ़िया छड़ी टेकती धीरे धीरे चली आ रही है जिसे देखते ही भैरोसिंह उठा और यह कहता हुआ उसकी तरफ बढ़ा, "आओ मेरी प्यारी भोली! तुम्हारी नौजवानी तुम्हें अकड़ कर चलने नहीं देती तो मैं अपने हाथों का सहारा देने के लिये तैयार हूं।"

भैरोसिंह ने बुढ़िया को हाथ का सहारा देकर अपने पास ला बैठाया और आप भी उसी जगह बैठ कर बोला, 'मेरी

प्यारी भोली! देखो ये दोनों नये आदमी आज यहां आए हैं जो मुझे पागल बताते हैं, तूही बता कि क्या मैं पागल हूं।"

बुढिया०। राम राम! ऐसा कभी हो सकता है? मैं अपनी नौजवानी की कसम खाकर कह सकती हूं कि तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान बुड्ढे को पागल कहने वाला स्वयं पागल है! (दोनों कुमारों की तरफ देखकर) ये दोनों उजड्ड यहां कैसे आ पहुंचे? क्या किसी ने इन्हें रोका नहीं?

भैरो०। मैंने इनसे अभी कुछ भी नहीं पूछा कि ये कौन हैं और यहां कैसे आ पहुंचे क्योंकि मैं तुम्हारी मुहब्बत में डूबा हुआ तरह तरह की बातें सोच रहा था, अब तुम आई हो तो जो कुछ पूछना हो स्वयं पूछ लो।

बुढिया०। (कुमारों से) तुम दोनों कौन हो?

भैरो०। (कुमारों से) बताओ बताओ सोचते क्या हो? आदमी हो, जिन्न हो, भूत हो, प्रेत हो, कौन हो कहते क्यों नहीं! क्या तुम नहीं देखते कि मेरी नौजवान स्त्री को तुमसे बात करने में कितना कष्ट होता है?

भैरोसिंह और उस बुढ़िया की बातचीत और अवस्था पर दोनों कुमारों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और कुछ सोचने बाद इन्द्रजीतसिंह ने भैरोसिंह से कहा, "अब मुझे निश्चय हो गया कि तुम्हें किसी ने इस तिलिस्म में ला फसाया है और कोई चीज ऐसी दिखाई या खिलाई है कि जिससे तुम पागल हो गए हो, ताज्जुब नहीं कि यह सब बदमाशी इसी बुढ़िया की हो, अब अगर तुम होश में न आओगे तो मैं तुम्हें मार पीट कर होश में लाऊंगा।"

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह की तरफ बढ़े और उसी समय बुढ़िया ने यह कह कर चिल्लाना शुरू किया,

"दौड़ियो दौड़ियो, हाय रे, मारा रे, मरे रे, चोर चोर, डाकू डाकू, दौड़ो दौड़ो, ले गया, ले गया, ले गया !!"

बुढ़िया चिल्लाती ही रही मगर कुमार ने उसकी एक भी न सुनी, भैरोसिंह का हाथ पकड़ के अपनी तरफ खैंच ही लिया मगर बुढ़िया का चिल्लाना भी व्यर्थ न गया। उसी समय चार पांच खूबसूरत लड़के दौड़ते हुए वहां आ पहुंचे और दोनों कुमारों को चारो तरफ से घेर लिया। उन लड़कों के गले में छोटी छोटी झोलियां लटक रही थीं और उनमें आटे की तरह कोई चीज भरी हुई थी। आने के साथ ही उन लड़कों ने अपनी झोली में से वह आटा निकाल निकाल कर दोनों कुमारों की तरफ फेंकना शुरू किया।

नि सन्देह उस बुकनी में तेज बेहोशी का असर था जिसने दोनों कुमारों को बात की बात में बेहोश कर दिया और दोनों कुमार चक्कर खाकर जमीन पर लेट गए। जब आंख खुली तो दोनों ने अपने को एक मजे सजाए कमरे में फर्श के ऊपर पड़े पाया।

चौदहवां बयान

जिस कमरे में दोनों कुमारों की बेहोशी दूर होजाने के कारण आंख खुली थी वह लम्बाई में बीस और चौड़ाई में पन्द्रह गज से कम न था। इस कमरे की सजावट कुछ विचित्र ढङ्ग की थी और दीवारों में भी एक तरह का अनूठापन था। रोशनी के शीशों (हांड़ी और कन्दीलों) की जगह उसमें दो दो हाथ लम्बी तरह तरह की खूबसूरत पुतलियां लटक रही थीं और दीवारगीरों की जगह पचासों किस्म के जानवरों के चेहरे दीवारों में लगे हुए थे। दीवार इस कमरे की लहरदार बनी

हुई थी और उसपर तरह तरह की चित्रकारी की हुई थी। ऊपर की तरफ छत से कुछ नीचे हट कर चारो तरफ छोटी छोटी खिडकियां थीं जिससे जान पडता था कि ऊपर कोई गुलाम-गर्दिश या मकान है मगर इस समय सब खिडकियां बन्द थीं और इस कमरे में से कोई रास्ता ऊपर जाने का नहीं दिखाई देता था।

कुअर आनन्दसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "भैया! वह बुढ़िया तो अजब आफत की पुडिया मालूम होती है। और उन लडकों की तेजी भी भूलने योग्य नहीं है।"

इन्द्रजीत०। बेशक ऐसाही है, ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि उन्हो ने हम लोगो को जीता छोड दिया। हमें भैरोसिंह की बातो पर आश्चर्य मालूम होता है! क्या हम उसे वास्तव में कोई ऐयार समझें!!"

आनन्द०। यदि वह ऐयार होता तो नि सन्देह हम लोगो को धोखा देने के लिये भैरोसिंह बना होता और साथही इसके पोशाक भी वैसी ही रखता जैसी भैरोसिंह पहिरा करता है, इसके सिवाय वह स्वय अपने को भैरोसिंह प्रगट करके हम लोगों का साथी बनता, ऐसा न कहता कि 'मै भैरोसिंह नहीं हू।" मगर उसकी नौजवान औरत (बुढ़िया) के विषय में

इन्द्रजीत०। उस बुढ़िया की बात जाने दो, अगर वह वास्तव में भैरोसिंह है तो ताज्जुब नहीं कि मसखरापन करता है या पागल हो गया है और अगर वह पागल हो गया है तो निःसन्देह उसी बुढ़िया की बदौलत, जो उसकी आखो में अभी तक नौजवान बनी हुई है।

आनन्द०। उस बुढ़िया को जिस तरह हो गिरफ्तार करना चाहिये।

इन्द्रजीत०। मगर उसके पहिले अपने को बेहोशी से बचाने का बन्दोबस्त कर लेना चाहिये क्योंकि लड़ाई दंगे से तो हम-लोग डरते ही नहीं।

आनन्द०। जी हां जरूर ऐसा करना चाहिये, दवा तो हम-लोगों के पास मौजूद ही है और ईश्वर की कृपा से कमरे का दर्वाजा भी खुला है।

दोनों भाइयों ने कमर में से डिबिया निकाली जिसमें किसी तरह की दवा थी और उसे खाने के बाद कमरे के बाहर निकला ही चाहते थे कि ऊपर वाले छोटे छोटे दर्वाजों में से एक दर्वाजा खुला और पुनः उसी नौजवान बुढ़िया के खसम भैरोसिंह की सूरत दिखाई दी। दोनों भाई रुक गए और आनन्दसिंह ने भैरो-सिंह की तरफ देखकर कहा, 'अब आप यहां क्यों आ पहुंचे?'

भैरो०। आपके हाल चाल की खबर लेने और साथ ही इसके अपनी नौजवान औरत की तरफ से आपको ज्याफत का न्योता देने आया हूं। मालूम होता है वह तुम लोगों पर आशिक हो गई है तभी तो खातिरदारी का बन्दोबस्त कर रही है। उसने तुम लोगों के लिये अच्छी अच्छी चीजें खाने की तैयार की हैं और अभी तक बनाती ही जाती है।

आनन्द०। (हंस कर) उन चीजों में जहर कितना मिलाया है?

भैरो०। केवल डेढ़ छटाक, मैं उम्मीद करता हूं कि इतने से तुम लोगों की जान न जायगी।

आनन्द०। आपकी इस कृपा का मैं धन्यवाद देता हूं और आपसे बहुत ही प्रसन्न होकर आपको कुछ इनाम दिया चाहता हूं, आप मेहरबानी करके जरा यहां आइये तो अच्छी बात है।

भैरो०। बहुत अच्छा बहुत अच्छा, इनाम लेने में देर करना भले आदमी का काम नहीं है।

इतना कह कर भैरोसिंह वहा से हट गया और थोड़ी ही देर बाद सदर दर्वाजे की राह से कमरे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया। जब कुअर आनन्दसिंह के पास आया तो बोला, "लाइये क्या इनाम देते हैं ?"

आनन्दसिंह ने फुर्ती से तिलिस्मी खजर उसके हाथ पर रख दिया जिसके असर से वह एक दफे कापा और बेहोश होकर जमीन पर लम्बा हो गया। तब आनन्दसिंह ने अपने भाई से कहा, "अब इसे अच्छी तरह जाच कर देख लेना चाहिये कि यह भैरोसिह है या कोई और।"

इन्द्रजीत०। हा अब बखूबी पता लग जायगा, पहिले इसके दाहिनी बगल वाला मसा देखो।

आनन्द०। (भैरो की बगल देख कर) देखिये वह मसा मौजूद है! अब कमर वाला दाग देखिये। लीजिये वह भी मौजूद है, अब इसके भैरोसिह होने में मुझे तो किसी तरह का सन्देह नही रहा।

इन्द्रजीत०। अब सन्देह हो ही नहीं सकता, मैंने उस मसे को अच्छी तरह खैच कर भी देख लिया, अच्छा अब इसे होश में लाना चाहिये।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिह ने अपना वह हाथ जिसमे तिलिस्मी खजर के जोड की अंगूठी थी भैरोसिह के बदन पर फेरा। भैरोसिह तुरत होश मे आकर उठ बैठा और ताज्जुब से चारो तरफ देखता हुआ बोला, "वाह वाह !! मै यहा क्योकर आ गया ? और आप लोगों ने मुझे कहा पाया ?"

आनन्द०। मालूम होता है अब आपका पागलपन दूर हो गया।

भैरो०। (ताज्जुब से) पागलपन कैसा ?

इन्द्रजीत० । इसके पहिले तुम किस अवस्था में थे और क्या करते थे कुछ याद है ।

भैरो० । मुझे कुछ भी याद नहीं ।

इन्द्रजीत० । अच्छा यह बताओ कि तुम इस तिलिस्म के अन्दर कैसे पहुँचे ?

भैरो० । केवल मुझी को नहीं बल्कि किशोरी, कामिनी, कमला, लक्ष्मीदेवी, लाडिली, कमलिनी और इन्दिरा को भी राजा गोपालसिंह ने इस तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिया है, बल्कि मुझे तो सब के आखीर में पहुँचाया है । आपके नाम की चीठी भी दी थी, मगर अफसोस ! आप से मुलाकात होने न पाई और मेरी अवस्था बदल गई ।

इन्द्रजीत० । वह चीठी कहां है ?

भैरो० । (इधर उधर देख कर) जब मेरे बटुए ही का पता नहीं है तो चीठी के बारे में क्या कह सकता हूं ।

आनन्द० । मगर यह तो तुम्हें याद होगा कि उस चीठी में क्या लिखा था ?

भैरो० । क्यों नहीं, मेरे सामने ही तो वह चीठी लिखी गई थी । उसमें कोई विशेष बात न थी, केवल इतना ही लिखा था कि "उस गुप्त स्थान से किशोरी, कामिनी इत्यादि को लेकर मैं जमानिया जा रहा था मगर मायारानी की कुटिलता के कारण अपने इरादे में बहुत कुछ उलट फेर करना पड़ा । जब यह मालूम हुआ कि मायारानी तिलिस्म के अन्दर घुस गई है तब लाचार होकर सब औरतों को तिलिस्म के अन्दर पहुँचाता हूं, बाकी हाल भैरोसिंह से सुन लेना ।" बस इतना लिखा था । मालूम होता है कि पहिले का हाल वह आपसे कह चुके हैं ।

इन्द्रजीत०। हां पहिले ही बहुत हाल वह हमलोगों से कह चुके हैं।

भैरो०। क्या यह भी कहा था कि कृष्णाजिन्न का रूप भी उन्हीं कृपानिधान ने धारण किया था?

आनन्द०। नहीं, सो तो साफ साफ नहीं कहा था मगर उनकी बातों से हम लोग कुछ कुछ जान गये थे कि कृष्णाजिन्न वही बने थे। अब तुम खुलासा बताओ कि क्या क्या हुआ?

भैरोसिंह ने वह सब हाल दोनो कुमारों से कहा जो ऊपर के बयानों में लिखा जा चुका है और जिसमें का बहुत कुछ हाल राजा गोपालसिंह की जुबानी दोनो कुमार सुन चुके थे। इसके बाद भैरोसिंह ने कहा कि "जब राजा गोपालसिंह को मालूम हो गया कि मायारानी बहुत से आदमियों को लेकर तिलिस्मी बाग के अन्दर जा घुसी है, तब वे एक गुप्त राह से छिप कर सब औरतों को साथ लिये हुए उस मकान में पहुँचे जिसमें से कमन्द के सहारे सभों को लटकाते हुए आपने देखा होगा।"

इन्द्रजीत०। हां देखा था, तो क्या उस समय औरतें बेहोश थीं?

भैरो०। जी हां, न मालूम किस खयाल से उन्होंने सब औरतों को बेहोश कर दिया था। मगर इसके पहिले यह कह दिया था कि "तुम्हें तिलिस्म के अन्दर पहुँचा देते हैं जहां दोनों कुमार हैं, यद्यपि वहां पहुँचना कठिन था मगर अब एक दीवार वाले तिलिस्म को दोनों कुमार तोड चुके हैं इसलिये वहां तक पहुँचा देने में कोई कठिनता न रही।"

इन्द्रजीत०। तो क्या तुम भी उन औरतों के साथ ही उस बाग में उतारे गये थे?

भैरो०। पहिले तो उन्होंने इन्द्रदेव को बहुत सी बातें समझाई बुझाई जिन्हें मैं समझ न सका। इसके बाद इन्द्रदेव को तो गोपालसिंह बनाया और इन्द्रदेव के एक ऐयार को भैरोसिंह बना कर दोनों को खास बाग के अन्दर भेजा। इस काम से छुट्टी पाकर सब औरतों को और मुझे साथ लिये उस मकान में आए। सभों को तो उस कमरे में बैठा दिया जिसमें से कमन्द के सहारे सबको लटकाया था और मुझे उनकी हिफाजत के लिये छोड़ने बाद कमलिनी को साथ लिये हुए कहीं चले गए और घंटे भर के बाद वापस आए। उस समय कमलिनी के हाथ में एक छोटी सी किताब थी जिसे उन्होंने कई दफे तिलिस्मी किताब के नाम से सम्बोधन किया था। इसके बाद उन्होंने सभों को बेहोश करके नीचे लटका दिया। इस काम से छुट्टी पाकर उन्होंने आपके नाम की दो चीठी लिखी, एक तो उसी कमरे में रक्खी और दूसरी चीठी जिसका मैं अभी जिक्र कर चुका हूं मुझे देकर कहा कि जब कुमारों से तुम्हारी मुलाकात हो तो यह चीठी उन्हें देना और सब काम कमलिनी की आज्ञानुसार करना, यहां तक कि यदि कमलिनी तुम्हें सामना हो जाने पर भी कुमारों से मिलने के लिये मना करे तो तुम कदापि न मिलना। इत्यादि कहकर मुझे नीचे उतर जाने के लिये कहा (कुछ रुक कर) नहीं नहीं मैं भूलता हूं, मुझे उन्होंने पहिले ही नीचे उतार दिया था क्योंकि सभों की गठड़ी मैं ही ने नीचे से थामी थी, सभों को नीचे उतार देने के बाद जब मैं उनकी आज्ञानुसार पुनः ऊपर गया तब उन्होंने ये सब बातें मुझे समझाई और आपके नाम की चीठी दी। उसी समय इन्द्रदेव भी वहां आ पहुंचे जो गोपालसिंह की सूरत बने हुए थे। इन्द्रदेव ने राजा गोपालसिंह से कुछ कहना चाहा मगर उन्होंने रोक दिया और

मुझसे कहा कि अब तुम भी कमन्द के सहारे नीचे उतर जाओ और इन्द्रदेव के आने का इन्तजार करो। मैं उनकी आज्ञानुसार नीचे उतर आया। मैं अन्दाज से कहता हू कि उन बेहोशों में आप या छोटे कुमार छिपे हुए थे और आप ही दोनों में से किसी एक ने मेरे बदन के साथ तिलिस्मी खंजर लगाया था जिससे मैं बेहोश हो गया।

इन्द्रजीत०। हा ठीक है ऐसा ही हुआ था।

भैरो०। फिर तो मैं बेहोश ही हो गया, मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि इन्द्रदेव जो गोपालसिंह की सूरत में थे कब नीचे आये और क्या हुआ।

आनन्द०। ठीक है, वह भी थोड़ी ही देर बाद नीचे उतरे और तुम्हारी तरह से वह भी बेहोश किए गए। (इन्द्रजीतसिंह से) अब मालूम हुआ कि इन्द्रदेव ही के कहे मुताबिक मैं आपको बुलाने के लिये ऊपर गया था।

भैरो०। हा जब हमलोगों को उन्होंने चैतन्य किया तो कहा था कि दोनो कुमार ऊपर गए हुए है। आखिर इन्द्रदेव ने कमन्द खैंच ली और हम लोगो को लिये हुए दूसरी दीवार की तरफ गए, वहा कमलिनी ने जमीन खोद कर एक दर्वाजा पैदा किया। ताज्जुब नही कि उसी दर्वाजे की राह से आपलोग यहा तक आए हों, और उस कोठडी में अवश्य पहुंचे हो गे जहा की जमीन लोगो को बेहोश करके तिलिस्म के अन्दर पहुँचा देती है।

आनन्द०। हा हमलोग भी उसी रास्ते से यहा तक आए हैं, अच्छा तो क्या इन्द्रदेव भी तुम लोगो के साथ यहा आए हैं?

भैरो०। जी नहीं, वह तो ऊपर ही रह गये, बोले कि मुझे तिलिस्म के अन्दर जाने की आज्ञा नही है, तुम लोग जाओ, मै इसी बाग में छिप कर रहूगा, जब दोनों कुमार यहा आ जायगे

तब उनसे छिप कर पुनः कमन्द के सहारे ऊपर चला जाऊंगा और राजा गोपालसिंह के साथ मिल कर काम करूंगा।

आनन्द०। (इन्द्रजीत से) ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ही ने सर्यू को बेहोश किया हो।

इन्द्रजीत०। जरूर ऐसा ही है (भैरो से) अच्छा तब क्या हुआ?

भैरो०। नीचे उतर कर जब हमलोग उस कोठड़ी में पहुंचे जहां की जमीन थोड़ी ही देर में लोगों को बेहोश कर देती है तब नियमानुसार सभों के साथ मैं भी बेहोश हो गया। उस समय से इस समय तक का हाल मुझे मालूम नहीं है, मैं कुछ भी नहीं जानता कि उसके बाद क्या हुआ और मैं किस अवस्था में होकर क्यों इस तरह अपने को यहां पाता हूं।

पन्द्रहवां बयान

भैरोसिंह की बातें सुन कर दोनों कुमार देर तक तरह तरह की बातें सोचते रहे और अपना किस्सा भैरोसिंह से कह सुनाया। बुढ़िया वाली बात सुन कर भैरोसिंह हंस पड़ा और बोला, "मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है कि वह बुढ़िया कौन और कहां है, यदि अब मैं उसे पाऊं तो जरूर उसकी बदमाशी का मजा उसे चखाऊं, मगर अफसोस तो यह है कि मेरा ऐयारी का बटुआ मेरे पास नहीं है जिसमें बड़ी बड़ी अनमोल चीजें थीं। हाय! वे तिलिस्मी फूल भी उसी बटुए में थे जिसके देने में मेरा बाप भी मुझे टल्ली बताया चाहता था मगर महाराज ने दिलवा दिया। इस समय उस बटुए का न होना मेरे लिए बड़ा ही दुःखदायी है! और आप कह रहे हैं कि उन लड़कों ने एक तरह की बुकनी उड़ा कर हमें बेहोश कर दिया। कहिये अब मैं क्योंकर

अपने दिल का हौसला निकाल सकता हूं ?

इन्द्रजीत०। निःसन्देह उस बटुए का जाना बहुत ही बुरा हुआ ? वास्तव में उसमें बड़ी बड़ी अनूठी चीजें थीं मगर इस समय उसके लिये अफसोस करना फजूल है। हां इस समय में दो चीजों से तुम्हारी मदद कर सकता हूं।

भैरो०। वह क्या ?

इन्द्रजीत०। एक तो वह दवा हम दोनों के पास मौजूद है जिसके खाने से बेहोशी असर नहीं कर सकती और वह मैं तुम्हें खिला सकता हूं, दूसरे हमलोगों के पास दो दो हर्बे मौजूद हैं बल्कि यदि तुम चाहो तो तिलिस्मी खंजर भी दे सकता हूं।

भैरो०। जी नहीं तिलिस्मी खंजर मैं न लूंगा क्योंकि आप के पास उसका रहना तब तक बहुत ही जरूरी है जब तक आप तिलिस्म तोड़ने का काम समाप्त न कर लें, मुझे बस मामूली तलवार दे दीजिये, मैं अपना काम उसी से चला लूंगा और वह दवा खिला कर मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं उस बुढिया के पास से अपना बटुआ निकालने का उद्योग करूं।

दोनों कुमारों के पास तिलिस्मी खंजर के अतिरिक्त एक एक तलवार भी थी। इन्द्रजीतसिंह ने अपनी तलवार भैरोसिंह को दे दी और डिबिये में से निकाल कर थोड़ी सी दवा भी खिलाई और कहा, "मैं तुमसे कह चुका हूं कि जब हम दोनों भाई इस बाग में पहुंचे तो चूहेदानी के पल्ले की तरह वह दर्वाजा बन्द हो गया जिस राह से हम दोनों आए थे और उस दर्वाजे पर लिखा हुआ था कि यह तिलिस्म टूटने लायक नहीं है।"

भैरो०। हां आप कह चुके हैं।

आनन्द०। (इन्द्रजीत से) भैया मुझे तो उस लिखावट पर विश्वास नहीं होता।

इन्द्रजीत०। यही हम भी कहने को थे क्योंकि रिक्तगन्थ की चानों से तिलिस्म का यह हिस्सा भी टूटने योग्य जान पड़ता है (भैरोसिंह से) इसी से हम कहते हैं कि इस बाग में जरा समझ बूझ के घूमना।

भैरो०। अस्तु इस समय तो मैं आपके साथ ही चलता हूं, चलिये बाहर निकलिये।

आनन्द०। (भैरो से) तुम्हें याद है कि तुम ऊपर से उतर कर इस कमरे में किस राह से आए थे?

भैरो०। मुझे कुछ भी याद नहीं।

इतना कह कर भैरोसिंह उठ खड़ा हुआ और दोनों कुमार भी उठ कर कमरे के बाहर निकलने के लिये तैयार हो गए।

सोलहवां बयान

तीनों आदमी कमरे के बाहर निकल कर सहन में आए, उस समय कुमार को मालूम हुआ कि यह कमरा बाग के पूरब तरफ वाली इमारत के सब से निचले हिस्से में बना हुआ है और इस कमरे के ऊपर और भी दो मंजिल की इमारत है मगर वे दोनों मंजिलें बहुत छोटी छोटी हैं और इसके साथ ही दोनों तरफ इमारतों का सिलसिला बराबर चला गया है। दिन बहुत चढ़ आया था और नित्यकर्म न किए जाने के कारण दोनों कुमारों की तबीयत कुछ खराब हो रही थी।

जैसा कि इस तिलिस्म में पहिले और दूसरे बाग के अन्दर नहर की बदौलत पानी की कमी न थी उसी तरह इस बाग में भी नहर का पानी छोटी छोटी नालियों के जरिये चारो तरफ घूमा हुआ था और दस पांच मेवे के पेड़ भी थे जिनमें बहुतायत के साथ मेवे लगे हुए थे।

दोनों कुमार और भैरोसिंह टहलते हुए बाग के बीचोबीच में उसी कदम्ब के पेड़ तले आए जिनके नीचे पहिले पहिल भैरोसिंह के दर्शन हुए थे। कुछ बातचीत करने के बाद तीनों ने जरूरी कामों से छुट्टी पा और हाथ मुंह धोकर स्नान किया और सन्ध्योपासन से छुट्टी पा करके बाग के मेवे और नहर के जल से संतोष किया और बैठ कर यों बातचीत करने लगे :—

इन्द्रजीत०। मै उम्मीद करता हू कि कमलिनी किशोरी और कामिनी वगैरह से इसी बाग में मुलाकात होगी।

आनन्द०। नि सन्देह ऐसा ही है, इस बाग में अच्छी तरह घूमना और यहा की हर एक बातों का पूरा पूरा पता लगाना हमलोगों के लिये जरूरी है।

भैरो०। मेरा दिल भी यही गवाही देता है कि वे सब जरूर इसी बाग में होंगी मगर कहीं ऐसा न हुआ हो कि मेरी तरह से उन लोगों का दिमाग भी किसी कारण विशेष से बिगड़ गया हो।

इन्द्रजीत०। कोई ताज्जुब नहीं कि ऐसा ही हुआ हो मगर तुम्हारी जुबानी मैं सुन चुका हू कि राजा गोपालसिंह ने कमलिनी को बहुत कुछ समझा बुझा कर एक तिलिस्मी किताब भी दी है।

भैरो०। हा बेशक मैं कह चुका हू और ठीक कह चुका हू।

इन्द्रजीत०। तो मैं भी उम्मीद कर सकता हू कि कमलिनी को इस तिलिस्म का कुछ हाल मालूम हो गया हो और वह किसी के फन्दे में न फसे।

भैरो०। इस तिलिस्म में और है कौन जो उन लोगों के साथ दगा करेगा।

आनन्द०। बहुत ठीक ! शायद आप अपनी नौजवान स्त्री और उसके हिमायती लड़कों को बिल्कुल ही भूल गए, या हम-

लोगों की जुबानी सब हाल सुन कर भी आपको उसका कुछ खयाल न रहा।

भैरो०। (मुस्कुरा कर) आपका कहना ठीक है मगर उन सभों को.. ...

इतना कह कर भैरोसिंह चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। दोनों कुमार भी किसी बात पर गौर करने लगे और कुछ देर बाद भैरोसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से कहा :—

भैरो०। आपको याद होगा कि लड़कपन में एक दफे मैंने पागलपन की नकल की थी।

इन्द्रजीत०। हां याद है, तो आज भी तुम जान बूझकर पागल बने हुए थे?

भैरो०। नहीं नहीं, मेरे कहने का यह मतलब नहीं है बल्कि मै यह कहता हूं कि इस समय भी उसी तरह का पागल बन के शायद कोई काम निकाल सकूं।

आनन्द०। हां ठीक तो है, आप पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को बुलाइये जिस ढंग से पहिले बुलाता था, और वह ढंग मैं बताता हूं।

कुमार के बताये हुए ढंग से भैरोसिंह ने पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को कई दफे बुलाया मगर उसका नतीजा कुछ भी न निकला, न तो कोई उसके पास आया और न किसी ने उसकी बात का जवाब ही दिया, आखिर इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "बस करो मालूम हो गया कि अब इस चिल्लाने का कोई नतीजा न निकलेगा, उसे किसी तरह मालूम हो गया कि तुम्हारा पागलपन जाता रहा, अब हम लोगों का फसाने के लिये वह कोई दूसरा ही ढङ्ग लावेगी।"

आखिर भैरोसिंह चुप हो रहा और थोड़ी देर के बाद तीनों

आदमी इधर उधर का तमाशा देखने के लिये वहां से रवाना हुए, इस समय दिन बहुत कम बाकी था।

तीनों आदमी बाग के पश्चिम तरफ गये जिधर संगमर्मर की एक बारहदरी थी और उसके दोनों तरफ दो इमारतें और थीं जिनके दर्वाजे बन्द रहने के कारण यह नहीं जाना जाता था कि इसके अन्दर क्या है, मगर बारहदरी खुले ढंग की बनी हुई थी अर्थात् उसके तीन तरफ दीवार और आगे की तरफ केवल तेरह खम्भे लगे हुए थे जिनमें दर्वाजा चढ़ाने की जगह न थी।

इस बारहदरी के मध्य में एक सुन्दर चबूतरा बना हुआ था जिस पर कम से कम पन्द्रह आदमी बखूबी बैठ सकते थे। उस चबूतरे के ऊपर बीचोबीच में एक लोहे का चौखूटा तख्ता था जिसमें उठाने के लिये एक कड़ी लगी हुई थी और उस चबूतरे के सामने दीवार में एक छोटा सा दर्वाजा था जो इस समय खुला हुआ था और उसके अन्दर दो चार हाथ के बाद अन्धकार सा जान पड़ता था, भैरोसिंह ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यदि आज्ञा हो तो इस छोटे से दर्वाजे के अन्दर जा कर देखूं कि क्या है।"

इन्द्रजीत०। यह तिलिस्म का मकान है खिलवाड़ नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि तुम उसके अन्दर जाओ और दर्वाजा बन्द हो जाय। फिर तुम्हारी क्या हालत होगी सो तुम्हीं सोच लो।

आनन्द०। पहिले यह तो देखो कि वह दर्वाजा लकड़ी का है या लोहे का?

इन्द्रजीत०। भला तिलिस्म बनाने वाले इमारत के काम में लकड़ी क्यों लगाने लगे जिसके थोड़े ही दिन में बिगड़ जाने का खयाल होता है। मगर शक मिटाने के लिये यदि चाहो तो देख लो।

भैरो०। (उस दर्वाजे को अच्छी तरह जांच कर) यह बेशक लोहे का बना हुआ है। इसके अन्दर कोई भारी चीज डाल कर देखना चाहिये कि बन्द होता है या नहीं, यदि किसी आदमी के जाने से बन्द हो जाता होगा तो मालूम हो जायगा।

आनन्द०। (चबूतरे की तरफ इशारा करके) पहिले इस तख्ते को उठा कर देखो कि इसके अन्दर क्या है?

"बहुत अच्छा" कह कर भैरोसिंह चबूतरे के ऊपर चढ़ गया और कड़ी में हाथ डाल के उस तख्ते को उठाया। तख्ता किसी कब्जे या पेंच के सहारे उसमें जड़ा हुआ न था बल्कि चारो तरफ से अलग था इस लिये भैरोसिंह ने उसे उठा कर चबूतरे के नीचे रख दिया, झांक कर देखने से मालूम हुआ कि नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं।

भैरोसिंह ने नीचे उतरने के लिए आज्ञा मांगी मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह उसे रोक कर स्वयं नीचे उतर गए और भैरोसिंह तथा आनन्दसिंह को ऊपर मुस्तैद रहने के लिये ताकीद कर गए।

नीचे उतरने के लिये चक्करदार सीढ़ियां बनी हुई थीं और हर एक सीढ़ी के दोनों तरफ बनावटी पेड़ गदे के बने हुए थे जो सीढ़ी पर पैर रखने के साथ ही झुक जाते और पैर (या बोझ) हट जाने से पुनः ज्यों के त्यों खड़े हो जाते। इस तमाशे को देखते हुए इन्द्रजीतसिंह कई सीढ़ियां नीचे उतर गए और जब अन्धेरे में पहुंचे तो तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी पैदा कर ली और जब आखिरी सीढ़ी पर पहुंचे तो एक बन्द दर्वाजा मिला जिसे उस समय कुमार ने कुछ खुला हुआ देखा था जब वहां तक पहुंचने में तीन चार सीढ़ियां बाकी थीं अर्थात् कुमार के देखते ही देखते वह दर्वाजा बन्द हो गया था।

कुमार को ताज्जुब मालूम हुआ और जब उद्योग करने पर

भी दर्वाजा न खुला तो कुमार ऊपर की तरफ लौटे। तीन सीढ़िया ऊपर चढ़ने बाद घूम कर देखा तो उस दर्वाजे को पुनः कुछ खुला हुआ पाया और जब नीचे उतरे तो फिर बन्द हो गया।

इन्द्रजीतसिंह को विश्वास हो गया कि इस दर्वाजे का खुलना ओर बन्द होना भी इन्हीं सीढ़ियों के आधीन है। आखिर लाचार होकर कुछ सोचते विचारते चले आए। ऊपर आते समय भी सीढ़ियों के दोनों तरफ वाले पेड़ों की वही दशा हुई अर्थात् जिस सीढ़ी पर पैर रक्खा जाता उसके दोनों तरफ वाले पेड़ झुक जाते और जब उस पर से पैर हट जाता तो फिर ज्यो के त्यो हो जाते।

ऊपर आकर इन्द्रजीतसिंह ने कुल हाल आनन्दसिंह और भैरोसिंह से कहा और इस बात पर विचार करने की आज्ञा दी कि हम नीचे उतर कर किस तरह उस दर्वाजे को खुला हुआ पा सकते है।

भैरोसिंह ने कहा कि मैं उन पेड़ों का मतलब समझ गया, यदि आप मुझे अपने साथ ले चलें तो मैं ऐसी तर्कीब कर सकता हूं कि वह दर्वाजा आपको खुला हुआ मिले।

इस समय सन्ध्या हो चुकी थी इस लिये सभों की राय नीचे उतरने की न हुई। कुमार की आज्ञानुसार भैरोसिंह ने उस गडहे का मुंह ज्यों का त्यो ढाप दिया और उसी बारहदरी मे निश्चिन्ती के साथ बैठकर बातचीत करने लगे क्यो कि आज की रात इसी बारहदरी मे होशियारी के साथ रह कर बिताने का निश्चय कर लिया था और भैरोसिंह के जिद्द करने से यह बात भी तै पाई थी कि इन्द्रजीतसिंह आराम के साथ सोवें और आनन्दसिंह तथा भैरोसिंह बारी बारी से जाग कर पहरा दे।

सत्रहवां बयान

आधी रात का समय है, तिलिस्मी बाग में चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, इमारत के किसी ऊपरी हिस्से पर चन्द्रमा की कुछ योंही सी चांदनी जरा जरा झलक मार रही है और बाकी सब तरफ अन्धकार छाया हुआ है। कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह सोए हुए हैं और भैरोसिंह एक खम्भे के सहारे बैठे हुए बारहदरी के सामने वाली इमारत को देख रहे हैं।

बारहदरी के सामने वाली इमारत दो मंजिली थी, उसकी लम्बाई तो बहुत ज्यादे मगर चौड़ाई बहुत कम थी। इमारत के ऊपर वाली मंजिल में बाग की तरफ छोटे छोटे दर्वाजे एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर एक ही रंग ढंग के बने हुए थे। दर्वाजों के बीच में केवल एक एक खम्भे का फासला था और वे खम्भे सब भी एक ही ढंग के नक्काशीदार बने हुए थे जिसकी खूबी इस समय कुछ भी मालूम नहीं पड़ती थी मगर एक दर्वाजे के अन्दर यकायक कुछ रोशनी की झलक मालूम पड़ जाने के कारण भैरोसिंह एकटक उसी तरफ देख रहे थे।

थोड़ी ही देर बाद ऊपर वाली मंजिल का एक दर्वाजा खुला और पीठ पर गठड़ी लादे हुए एक आदमी बाईं तरफ से दाहिनी तरफ जाता हुआ दिखाई दिया। भैरोसिंह चैतन्य होकर सम्हल बैठा और बड़ी दिलचस्पी के साथ ध्यान देकर उस तरफ देखने लगा। कुछ देर बाद वह दर्वाजा बन्द हो गया और उसके दाहिनी तरफ चार दर्वाजे छोड़ कर पांचवां दर्वाजा खुला जिसके अन्दर हाथ में चिराग लिए हुए एक और आदमी इस तरह खड़ा दिखाई दिया जैसे किसी के आने का इन्तजार

कर रहा हो। थोड़ी देर में चार पांच औरतें मिलकर किसी लटकते बोझ को लिये हुए उसी आदमी के पास से निकल गईं जिसके हाथ में चिराग था और उन्हीं के पीछे पीछे वह आदमी भी चिराग लिए चला गया। दर्वाजा बन्द नहीं हुआ मगर उसके अन्दर अन्धकार हो गया।

भैरोसिंह ने यह समझ कर कि शायद हम और भी कुछ तमाशा देखेंगे दोनों कुमारों को चैतन्य कर दिया और जो कुछ देखा था बयान किया।

हम कह आये हैं कि इस बारहदरी में पिछली दीवार के नीचे बीच में अर्थात चबूतरे के सामने एक छोटा दर्वाजा था जिसके अन्दर भैरोसिंह ने जाने का इरादा किया था। इस समय यकायक उसी दर्वाजे के अन्दर चिराग की रोशनी देख-कर भैरोसिंह और दोनों कुमार चौंक पड़े और उठकर उस दर्वाजे के सामने गये और झांक कर देखने लगे। मालूम हुआ कि इस छोटे से दर्वाजे के अन्दर एक बहुत बड़ा कमरा है जिसके दोनों तरफ की लोहे वाली शहतीर (या बड़ी धरन) बड़े बड़े चौखूटे खम्भों के ऊपर हैं और उसकी छत लदावों की बनी हुई है। उस कमरे के दोनों तरफ अर्थात् दोनों तरफ के खम्भों के बाद भी एक एक दालान है और दालान की दीवारों में कई बड़े बड़े दर्वाजे बने हैं जिनमें कुछ खुले और कुछ बन्द हैं।

दोनों कुमार और भैरोसिंह ने देखा कि उसी कमरे के मध्य में एक आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी, हाथ में चिराग लिये हुए छत की तरफ देख रहा है। कुछ देर तक देखने के बाद वह आदमी एक खम्भे के सहारे चिराग रखकर पीछे की तरफ लौट गया।

भैरोसिंह और दोनों कुमार आड़ में खड़े होकर सब तमाशा देख रहे थे और जब वह आदमी चिराग रख कर चला गया तब भी यह सोच कर खड़े ही रहे कि जब चिराग रख कर चला गया है तो पुनः आवेहीगा।

उस नकाबपोश को चिराग रख कर गये हुए दस बारह पल से ज्यादे न बीते होंगे कि दूसरी तरफ वाले दर्वाजे के अन्दर से कोई दूसरा आदमी निकल कर तेजी के साथ उसी कमरे के मध्य में आ पहुँचा और हाथ की हवा देकर उस चिराग को बुझा दिया जिसे पहला आदमी एक खम्भे के सहारे रख कर चला गया था। इसके बाद कमरे में अन्धकार हो जाने के कारण कुछ मालूम न हुआ कि यह दूसरा आदमी चिराग बुझा कर चला गया या उसी जगह कहीं आड़ देकर छिप रहा।

यह दूसरा आदमी भी जिसने कमरे में आकर चिराग बुझा दिया था अपने चेहरे पर स्याह नकाब डाले हुए था, केवल नकाब ही नहीं बल्कि उसका तमाम बदन स्याह कपड़े से ढंका हुआ था और कद में छोटा रहने के कारण इसका पता नहीं लग सकता था कि वह मर्द है या औरत।

थोड़ी ही देर बाद दोनों कुमार और भैरोसिंह के कान में किसी के बोलने की आवाज सुनाई दी जैसे किसी ने उस अंधेरे कमरे में आकर ताज्जुब के साथ कहा हो कि—है! चिराग कौन बुझा गया?"

इसके जवाब में किसी ने कहा, "अपने को सम्हाले रहो और जल्दी से हट जाओ, कोई दुश्मन न आ पहुँचा हो।"

इसके बाद चौथाई घड़ी तक न तो किसी तरह की आवाज ही सुनाई दी और न कोई दिखाई ही पड़ा, मगर दोनों कुमार और भैरोसिंह अपनी जगह से न हिले।

आधी घड़ी के बाद वही आदमी पुनः हाथ में चिराग लिए हुए आया जो खम्भे के सहारे चिराग रख कर चला गया था। इस आदमी का बदन गठीला और फुर्तीला मालूम पड़ता था। इसका पायजामा, अगा, पटूका, मुंडासा और नकाब पीले कपड़े का बना हुआ था। अबकी दफे वह बाए हाथ में चिराग और दाहिने में नगी तलवार लिये हुए था, शायद उसे अपने उस दुश्मन का खयाल हो जिसने चिराग बुझा दिया था, इसलिये उसने चिराग जमीन पर रख दिया और तलवार लिये हुए चारो तरफ घूम घूम कर किसी को ढूंढने लगा। वह आदमी जिसने चिराग बुझा दिया था एक खम्भे की आड़ में छिपा हुआ था। जब पीले कपड़े वाला उस खम्भे के पास पहुँचा तो उस आदमी पर निगाह पड़ी, उसी समय वह स्याह नकाबपोश भी सम्हल गया और तलवार खैंच कर सामने खड़ा हो गया। पीले कपड़े वाले ने तलवार वाला हाथ ऊंचा करके पूछा, "सच बता तू कौन है ?"

इसके जवाब में स्याह नकाबपोश ने यह कहते हुए उस पर तलवार का वार किया कि मेरा नाम इसी तलवार की धार पर लिखा हुआ है ?

पीले कपड़े वाले ने बडी चालाकी से दुश्मन का वार बचा कर अपना वार किया और इसके बाद दोनो में अच्छी तरह लड़ाई होने लगी।

दोनो कुमार और भैरोसिंह लडाई के बड़े ही शौकीन थे इस लिए बड़ी चाह से ध्यान देकर उन दोनो की लडाई देखने लगे। निःसन्देह दोनो नकाबपोश लडने भिड़ने में होशियार और बहादुर थे, एक दूसरे के वार को बडी खूबी से बचाकर अपना वार करता था जिसे देख कर इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से

कहा, "दोनों अच्छे हैं, चिराग की रोशनी एकही तरफ पड़ती है दूसरी तरफ सिवाय तलवार की चमक के और कोई सहारा वार बचाने के लिए नहीं हो सकता, ऐसे समय में इस खूबी के साथ लड़ना मामूली काम नहीं है।"

इस बीच में स्याह नकाबपोश ने अपने हाथ की तलवार जमीन पर फेंक दी और एक खम्भे की आड़ से घूमता हुआ खंजर खैंच लिया और उसका कब्जा दबा कर बोला, "अब तू अपने को किसी तरह नहीं बचा सकता।"

निःसन्देह वह तिलिस्मी खंजर था जिसकी चमक से उस कमरे में दिन की तरह उजाला हो गया। पीले नकाबपोश ने भी उसका जवाब तिलिस्मी खंजर ही से दिया क्योंकि उसके पास भी तिलस्मी खंजर मौजूद था। तिलिस्मी खंजरों से लड़ाई अभी पूरे तौर से होने भी न पाई थी कि एक तरफ से आवाज आई, "पीले मकरन्द! लेना जाने न पावे, अब मुझे मालूम हो गया कि भैरोसिंह के तिलिस्मी खंजर और बटुए का चोर यही है, देखो इसकी कमर में वही बटुआ लटक रहा है, अगर तुम इस बटुए के मालिक बन जाओगे तो फिर इस दुनिया में तुम्हारा मुकाबला करने वाला कोई भी न रहेगा क्योंकि यह तुम्हारे ही ऐसे ऐयारों के पास रहने योग्य है।"

यह एक ऐसी बात थी जिसने सब से ज्यादे भैरोसिंह को चौंका दिया। उसने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "बस अब आप कृपा कर के अपना तिलस्मी खंजर मुझे दीजिये, मैं स्वयं उसके पास जाकर अपनी चीज ले लूंगा, क्योंकि यहां पर तिलिस्मी खंजर के बिना काम न चलेगा और यह मौका भी हाथ से गंवा देने लायक नहीं है।"

इन्द्रजीत०। हां बेशक ऐसा ही है, अच्छा चलो मैं तुम्हारे

साथ चलता हू ।

आनन्द० । और मै ?

इन्द्रजीत० । तुम इसी जगह खड़े रहो, दोनो भाइयो का एक साथ वहा चलना ठीक नहीं है, मैं अकेलाही उन दोनो के लिये काफी हू ।

आनन्द० । फिर भैरोसिंह जा कर क्या करेंगे। तिलिस्मी खजरो की चमक मे इनकी आख खुली नहीं रह सकती ।

इन्द्रजीत० । सो तो ठीक है।

भैरो० । अजी आप इस समय ज्यादे सोच विचार न कीजिये ! आप खजर मुझे दीजिये मैं निपट लूगा ।

इन्द्रजीतसिंह ने खजर जमीन पर रख दिया और उसके जोड़ की अगूठी भैरोसिह की उगली में पहिरा देने बाद खजर उठा लेने के लिये कहा। भैरोसिंह ने तिलिस्मी खजर उठा लिया और उस छोटे दरवाजे के अन्दर जा कर ललकारा—"मैं भैरोसिह स्वय आ पहुंचा।"

भैरोसिंह के अन्दर जाते ही दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया और दोनो कुमार ताज्जुब से एक दूसरे की तरफ देखने लगे ॥

❋ सत्रहवां हिस्सा समाप्त ❋

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

अट्ठारहवा हिस्सा

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित



प्रकाशक

लहरी बुक डिपो

बनारस सिटी

प्रकाशक—

दुर्गाप्रसाद खत्री
प्रोप्रा० लहरी बुक डिपो
बनारस सिटी

मुद्रक—

दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी प्रेस
काशी

॥ श्रीः ॥



चन्द्रकान्ता सन्तति

अठारहवां हिस्सा

पहिला बयान

कह सकते हैं कि तारासिंह के हाथ में नानक का मुकद्दमा दे ही दिया गया। राजा बीरेन्द्रसिंह ने तारासिंह को इस काम पर मुकर्रर किया था कि वह नानक के घर जाय और उसकी चाल चलन तथा उसके घर के सच्चे सच्चे हाल की तहकीकात करके लौट आवे। मगर इसके पहिले कि तारासिंह नानक की चालचलन और उसकी नीयत का हाल जाने, उसने नानक के घर ही की तहकीकात शुरू कर दी और उसकी स्त्री का भेद जानने के लिये उद्योग किया। जब नानक की स्त्री सहज ही में तारासिंह

के पास आ गई तो उसे उसकी बदचलनी का विश्वास हो गया और उसने चाहा कि किसी तरह नानक की स्त्री को टाल दे और इसके बाद नानक की नीयत का अन्दाजा करे मगर उसकी कार्रवाई में उस समय विघ्न पड़ गया जब नानक की स्त्री तारासिंह के सामने जा बैठी और उसी समय बाहर से किसी के चिल्लाने की आवाज आई।

हम कह चुके है कि नानक के यहा एक मजदूरनी थी वह नानक के काम की चाहे न हो मगर उसकी स्त्री के लिये उपयुक्त पात्र थी और उसके द्वारा नानक की स्त्री का सब काम चलता था। मगर इस तारासिंह वाले मामले मे नानक की स्त्री श्यामा की बातचीत हनुमान छोकरे की मारफत हुई थी इस लिये बीच वाले मुनाफे की रकम में उस मजदूरनी के हाथ झाझी कौडी भी न लगी थी जिसका उसे बहुत रज हुआ और वह दोस्ती के बदले मे दुश्मनी करने पर उतारू हो गई। इस लिये कि श्यामारानी को उससे किसी तरह का पर्दा तो था ही नही उसने मजदूरनी से अपना भेद तो सब कह दिया मगर उसके हानि लाभ पर ध्यान न दिया। इस लिये वह मजदूरनी चुपचाप सब कार्रवाई देखती सुनती और समझती रही, मगर जब श्यामारानी तारासिह के यहा चली गई और कुछ देर बाद नानक घर में आया तो उसने अपना नाम प्रगट न करने का वादा करा के सब हाल नानक से कह दिया और तारासिह का मकान दिखा देने के लिये भी तैयार हो गई क्योंकि उसे पता ठिकाना तो मालूम हो ही चुका था।

नानक ने जब सुना कि उसकी स्त्री किसी परदेसी के घर गई है तब उसे बडा ही क्रोध आया और उसने ऐयारी के सामान से लैस हो कर अकेले ही अपनी स्त्री का पीछा किया।

नानक ने यद्यपि किसी कारण से लोकलाज को तिलांजुली दे दी थी मगर ऐयारी को नहीं। उसे अपनी ऐयारी पर बहुत भरोसा था और वह दस पांच आदमियों में अकेला घुस कर लड़ने की हिम्मत भी रखता था। यही सबब था कि उसने किसी संगी साथी का खयाल न कर के अकेले ही श्यामारानी का पीछा किया, हां यदि उसे यह मालूम होता कि श्यामारानी का उपपति तारासिंह है तो कदापि अकेला न जाता।

नानक औरत के भेष में घर के बाहर निकला और जब उस मकान के पास पहुँचा जिसमें तारासिंह ने डेरा डाला था, तो कमन्द लगा कर मकान के ऊपर चढ़ गया और धीरे धीरे उस कोठरी के पास जा पहुँचा जिसके अन्दर तारासिंह और श्यामारानी थी और बाहर तारासिंह का चेला और नानक का हनुमान लौंडा हिफाजत कर रहा था। वहां पहुँचते ही उसने एक लात अपने नौकर की कमर में ऐसी जमाई कि वह तिलमिला गया और जब वह चिल्लाया तो उसे चिढ़ाने की नीयत से नानक स्वयं भी औरतों ही की तरह चिल्ला उठा।

यही वह चिल्लाने की आवाज थी जिसे कोठरी के अन्दर बैठे हुए तारासिंह और श्यामा ने सुना था। चिल्लाने की आवाज सुनते ही तारासिंह उठ खड़ा हुआ और हाथ में खञ्जर लिये हुए कोठरी के बाहर निकला। वहां अपने चेले और हनुमान के अतिरिक्त एक औरत को और खड़ा देख ताज्जुब करने लगा और उसने औरत अर्थात् नानक से पूछा, "तू कौन है?"

नानक०। पहिले तू ही बता कि तू कौन है जिसमें तुझे मार डालने के बाद यह तो मालूम रहे कि मैंने फलाने को मारा था।

तारा०। तेरी ढिठाई पर मुझे ताज्जुब ही नहीं होता बल्कि यह भी मालूम होता है कि तू औरत नहीं कोई ऐयार है।

नानक० । (गम्भीरता के साथ) बेशक मैं ऐयार हूं तभी तो अकेले तेरे घर में घुस आया हूं ! शैतान, तू नहीं जानता कि बुरे कर्मों का फल क्यों कर मिलता है और वह कितना बड़ा ऐयार है जिसकी स्त्री को तूने धोखा दे कर बुला लिया है ?

तारा० । (जोर से हंस कर) अहहह ! अब मुझे विश्वास हो गया कि बेहया नानक तू ही है और शायद अपनी पतिव्रता की आमदनी गिनाने के लिये यहां आ पहुँचा है ! अच्छा तो अब तुझे यह भी जान लेना चाहिये कि जिसका तू मुकाबला कर रहा है उसका नाम तारासिंह है और वह राजा वीरेन्द्रसिंह की आज्ञानुसार तेरे चालचलन की तहकीकात करने यहां आया है।

तारासिंह और राजा वीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही नानक सन्न हो गया। उधर उसकी स्त्री ने जब यह जाना कि इस कोठरी के बाहर उसका पति खड़ा है तो वह नखरे से रोने और सर पीटने लगी तथा यह कहती हुई कोठरी के बाहर निकल कर नानक के पैरों पर गिर पड़ी कि मुझे तो तुम्हारा नाम ले कर हनुमान यहां ले आया है !!

नानक थोड़ी देर तक सन्नाटे में रहा, इसके बाद तारासिंह की तरफ देख के बोला —

नानक० । क्या ऐयारों का यही धर्म है कि दूसरे की औरतों को खराब करें और बदकारी का बच्चा अपने नाम के साथ लगावें ?

तारा० । नहीं नहीं, ऐयारों का यह काम नहीं है और ऐयारों को यह भी उचित नहीं है कि सब तरफ का खयाल छोड़ केवल औरत की कमाई पर गुजारा करें। मैंने तेरी औरत को किसी बुरी नीयत से नहीं बुलाया बल्कि चालचलन का हाल जानने के [illegible] किया है। जो कुछ बातें तेरे बारे में सुनी गई हैं और

जो कुछ यहा आने पर मैने मालूम की है उनसे जाना जाता है कि तू बड़ा ही कमीना और नमकहराम है। नमकहराम इसलिए कि मालिक के काम की तुझे कुछ भी फिक्र नहीं है और इसका सबूत केवल वह मनोरमा ही बहुत है जिसके साथ तू शादी किया चाहता था और जिसने जूतियों से तेरी पूजा ही नही की बल्कि तिलिस्मी खंजर भी तुझसे ले लिया।

नानक०। यह कोई आवश्यक नहीं है कि ऐयारों का काम सदैव पूरा ही उतरा करे कभी धोखा खाने मे न आवे। यदि मनोरमा की ऐयारी मुझ पर चल गई तो इसके बदले मे कमीना और नमकहराम कहे जाने लायक मै नहीं हो सकता। क्या तुमने और तुम्हारे बाप ने कभी धोखा नही खाया? और मेरी स्त्री को जो तुम बदनाम कर रहे हो यह तुम्हारी भूल है। वह तो खुद कह रही है कि मुझे तो तुम्हारा नाम लेकर हनु-मान यहा ले आया है। मेरी स्त्री बदकार नहीं है बल्कि वह साध्वी और सती है, असल मे बदमाश तू है जो इस तरह धोखा दे कर पराई स्त्री को अपने घर मे बुलाता है और मुझे यहा पर अकेला जान कर गालिया देता है, नहीं तो मै तुझसे किसी बात मे कम नहीं हू।

तारा०। नहीं नहीं, तू बहुत बातो मे मुझसे बढ़ के है, और मैं भी अकेला समझ के तुझे गालिया नहीं देता बल्कि दोषी जान कर गालिया देता हू। यदि लडने का इरादा हो तो मै अकेला ही तुझसे लडने को भी तैयार हू। तू अपनी स्त्री को साध्वी सती छोड के चाहे माता से भी बढ़ कर समझ ले, मेरी कोई हानि नहीं है। मै वास्तव मे जिस काम के लिए आया था उसे कर चुका, अब यहा से जा कर मालिक से सब हाल कह दूंगा और तेरे गम्भीर स्वभाव की प्रशंसा भी करूंगा जिसे

सुन कर तेरा बाप बहुत ही प्रसन्न होगा जो अपनी एक भूल के कारण हद से ज्यादे पछता रहा है और बदनामी का टीका मिटाने के लिए जी जान से उद्योग कर रहा है मगर तुझ कपूत के मारे कुछ भी करने नहीं पाता ! (हंस कर) ऐसी कुलटा स्त्री को सती और साध्वी समझने वाला अपने को ऐयार कहे यही आश्चर्य है !!

नानक०। तो क्या मेरे ऐयार होने में तुम्हें कुछ शक है !!

तारा०। कुछ ! अजी बिल्कुल शक है !!

नानक०। यदि तुम ऐसा समझ भी लो तो इसमें मेरी कुछ हानि नहीं है। इससे ज्यादे तुम और कुछ भी नहीं कर सकते कि यहां से जा कर राजा वीरेन्द्रसिंह से मेरी झूठी झूठी शिकायतें करो, मगर इस बात को भी समझ लो कि मैं किसी का ताबेदार नहीं हूं।

तारा०। (क्रोध में) तू किसी का ताबेदार नहीं है ?

तारासिंह को क्रोधित देख कर नानक डर गया, केवल इस लिए कि इस जगह वह अकेला था और अकेले ही इस मकान में तारासिंह का मुकाबला करना अपनी ताकत से बाहर समझता था जिसके दो चेले भी यहां मौजूद थे, अस्तु समय पर ध्यान दे कर वह चुप हो रहा मगर दिल में वह तारासिंह का जानी दुश्मन हो गया। उसने मन में निश्चय कर लिया कि तारासिंह को किसी न किसी ढंग से अवश्य नीचा दिखाना बल्कि मार डालना चाहिये।

नानक ने और भी न मालूम क्या सोच कर अपनी जुबान को रोका और सिर नीचा कर के चुपचाप खड़ा रह गया। तारासिंह ने कहा, "बस अब तू जा और अपनी साध्वी तथा नौकर को भी अपने साथ लेता जा !"

नानक ने इस आज्ञा को गनीमत समझा और चुपचाप वहां से रवाना हो गया। उसकी स्त्री और नौकर भी उसके पीछे पीछे चल पड़े।

उसी समय तारासिंह ने भी अपना डेरा कूच कर दिया और शहर के बाहर हो चुनार का रास्ता लिया, मगर दिल में सोच लिया कि कम्बख्त नानक अवश्य मेरा पीछा करेगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि धोखा दे कर जान लेने की फिक्र भी करे।

दूसरा बयान

सन्ध्या हुआ ही चाहती है। पटने की बहुत बड़ी सराय के दर्वाजे पर मुसाफिरों की भीड़ हो रही है। कई भठियारे भी मौजूद हैं जो तरह तरह के आराम का लालच दे अपनी अपनी तरफ मुसाफिरों को ले जाने का उद्योग कर रहे हैं और मुसाफिर लोग भी अपनी अपनी इच्छानुसार उनके साथ जा जा कर डेरा डाल रहे हैं। मुसाफिरों को भठियारी के सुपुर्द कर के भठियारे पुनः सराय के फाटक पर लौट आते और नये मुसाफिरों को अपनी तरफ ले जाने का उद्योग करते हैं।

यह सराय बहुत बड़ी और इसका फाटक मजबूत तथा बड़ा था। फाटक के दोनों तरफ (मगर दर्वाजे के अन्दर) बारह सिपाही और एक जमादार का डेरा था जो इस सराय में रहने वाले मुसाफिरों की हिफाजत के लिये राजा की तरफ से मुकर्रर थे मगर उनकी तनखाह सराय के भठियारों से वसूल की जाती थी। ये ही सिपाही बारी बारी से घूम घूम कर सराय के अन्दर पहरा दिया करते थे और जब मुसाफिरों को किसी तरह की तकलीफ होती तो सीधे राजदीवान के पास जाकर रपट किया करते थे।

थोड़ी देर बाद जब सब मुसाफिरों के टिकने का बन्दोबस्त हो गया और सराय के फाटक पर कुछ सन्नाटा हुआ तो उन सिपाहियों का जमादार अपनी जगह से उठ कर सराय के अन्दर इसलिये घूमने लगा कि देखे सब मुसाफिरों का ठीक ठीक बन्दोबस्त हो गया या नहीं। वह जमादार केवल घूमता ही न था बल्कि भठियारों से भी तरह तरह के सवाल करके मुसाफिरों का हाल दरियाफ्त करता जाता था।

जमादार घुमता हुआ जब उत्तर तरफ वाले उस कमरे के पास पहुँचा जो इस सराय में सब से अच्छा ऊंचा दोमञ्जिला और अमीरों के रहने लायक बना और सजा हुआ था तो कुछ देर के लिये अटक गया और उस कमरे तथा उसमें रहने वालों की तरफ ध्यान दे कर देखने लगा, क्योंकि उसमें एक जवहरी का डेरा पड़ा हुआ था जो बहुत मालदार मालूम होता था। वह जवहरी भी जमादार को देख कर कमरे के बाहर निकल आया और इशारे से जमादार को अपने पास बुलाया।

पास पहुँचने पर जमादार ने उस जवहरी को एक रोआब-दार और अमीर आदमी पा कर सलाम किया और सलाम का जवाब पाने बाद बोला, "कहिये क्या ..?"

जवहरी०। मालूम होता है कि इस सराय की हिफाजत महाराज की तरफ से तुम्हारे ही सुपुर्द है और ये फाटक पर रहने वाले सिपाही सब तुम्हारे ही आधीन हैं।

जमादार०। जी हां।

जवहरी०। तो पहरे का इन्तजाम क्या है? किस ढंग से पहरा दिया जाता है?

जमादार०। मेरे पास बारह सिपाही हैं जिनके तीन हिस्से कर देता हूं, चार चार आदमी एक एक दफे घुम घुम कर पहरा

देते हैं।

जवहरी०। एक ही साथ रह कर?

जमादार०। जी नहीं, चारो अलग अलग रहते हैं, घूमने समय थोड़ी थोड़ी देर में मुलाकात हुआ करती है।

जवहरी०। मगर ऐसा तो (कुछ रुक कर) यों खड़े खड़े बातें करना मुनासिब न होगा, आओ कमरे में जरा बैठ जाओ, हमें तुमसे कई जरूरी बातें करनी हैं।

इतना कह कर जवहरी कमरे के अन्दर चला गया और उसके पीछे पीछे जमादार भी यह कहता हुआ चला गया, 'कुछ देर तक आपके पास ठहरने में हर्ज नहीं है, मगर ज्यादे देर"

वह कमरा कुछ तो पहिले ही से दुरुस्त था और कुछ जवहरी साहब ने उसे अपने सामान से रौनक दे दिया था। फर्श के एक तरफ बड़ा सा ऊनी गालीचा बिछा हुआ था, उसी पर जा कर जवहरी साहब बैठ गये और जमादार भी उन्हीं के पास मगर गालीचे के नीचे बैठ गया। बैठने के साथ ही जवहरी साहब ने जेब में से पांच अशर्फियां निकालीं और जमादार की तरफ बढ़ा के कहा, "अपने फायदे के लिए मैं तुम्हारा समय नष्ट कर रहा हूं और करूंगा अस्तु उसका हर्जाना पहिले ही दे देना उचित है।"

जमादार०। नहीं नहीं, इसकी क्या जरूरत है? इतने समय में मेरा कोई हर्ज न होगा!

जवहरी०। समय का व्यर्थ नष्ट होना ही हर्ज कहलाता है, मैं जिस तरह अपने समय की प्रतिष्ठा करता हूं उसी तरह दूसरे के समय की भी।

जमादार०। हां ठीक है मगर मैं तो आपका

जवहरी० । नहीं नहीं, इसे अवश्य लेना होगा ।

यों तो जमादार ऊपर के मन से चाहे जो कहे मगर अशर्फी देख कर उसके मुंह मे पानी भर आया। उसने सोचा कि यह जवहरी एक मामूली बात के लिए जब पाच अशर्फियां देता है तो अगर मै इसका कोई काम करूंगा तो बेशक बहुत बडी रकम मुझे देगा । ऐसा देने वाला तो आज तक मैने देखा ही नहीं, अस्तु इस रकम को हाथ से न जाने देना चाहिये ।

जमादार० । (अशर्फिया ले कर) कहिये क्या आज्ञा होती है ?

जवहरी० । हा तो चार आदमी का पहरा बंधा है ?

जमादार० । जी हा ।

जवहरी० । तो तुम्हे तो न घूमना पडता होगा ?

जमादार० । जी नहीं, मै अपने ठिकाने उसी फाटक मे बैठा रहता हू और बाकी के आठ आदमी भी मेरे पास ही सोये रहते है, जब पहरा बदलने का समय होता है तो घण्टे की आवाज से होशियार करके दूसरे चार को पहरे पर भेज देता हू और उन चारो को बुला कर आराम करने की आज्ञा देता हू । आप अपना मतलब तो कहिये ।

जवहरी० । मेरा मतलब केवल इतना ही है कि मै आज चार दिन का जागा हुआ हू, सफर मे आराम करने की नौबत नहीं आई, मगर आज सब दिन की कसर मिटाना अर्थात् अच्छी तरह सोना चाहता हू ।

जमादार० । तो आप आराम से सोइये कोई हर्ज नहीं ।

जवहरी० । मै क्योंकर बेफिक्री के साथ सो सकता हू !! मेरे साथ बहुत बडी रकम है । (कमरे मे रक्खे हुए सन्दूकों की तरफ इशारा करके) इन सभो मे जवाहिरात की चीजें भरी

हुई हैं। जब तक मेरे मन माफिक इनकी हिफाजत का बन्दोबस्त न हो जायगा तब तक मुझे नींद ही नहीं आ सकती।

जमादार०। आप इन्हें बहुत बड़ी हिफाजत के अन्दर समझिये क्योंकि इस सराय के अन्दर से कोई चोर चोरी करके बाहर नहीं निकल सकता, इसलिये कि फाटक बन्द करके ताली अपने पास रखता हूं, और सिवाय फाटक के दूसरे किसी तरफ से किसी के निकल जाने का रास्ता ही नहीं है।

जवहरी०। ठीक है, मगर आखिर बहुत सवेरे फाटक खुलता ही होगा। कौन ठिकाना मैं कई दिनों का जागा हुआ गहरी नींद में सो जाऊं और मेरे आदमी भी मुझे बेफिक्र देख खुर्राटे लेने लगें और दिन चढ़े तक किसी की आंख ही न खुले, तो ऐसी हालत में कोई चोरी करेगा भी तो प्रात समय फाटक खुलने पर उसका निकल जाना कोई बड़ी बात न होगी।

जमादार०। ठीक है मगर मैं वादा करता हूं कि सुबह को आपसे पूछ कर फाटक खोलूंगा।

जवहरी०। हो सकता है, परन्तु कदाचित् चोरी हो ही जाय और चोर पकड़ा भी जाय तो मुझे राजा या किसी राजकर्मचारी के पास सबूत देने के लिए जाना ही पड़ेगा और ऐसा होने से मेरा बहुत बड़ा हर्ज होगा, ताज्जुब नहीं कि राजा साहब या राजकर्मचारी मुझे ठहरने की आज्ञा दे, मगर मैं एक दिन भी नहीं रुक सकता, इत्यादि बहुत सी बातों को सोच कर मैं चाहता हूं कि चोरी होने का कोई शक ही न रहे और मैं आराम के साथ टांगें फैला कर सोऊं और यह बात यदि तुम चाहो तो सहज ही में हो सकती है, इसके बदले में मैं तुम्हें अच्छी तरह खुश कर दूंगा।

जमादार०। कोई चिन्ता नहीं, मैं अपने सिपाहियों को

हुक्म दे दूंगा कि चार में से एक आदमी सिर्फ आपके दर्वाजे पर और तीन आदमी तमाम सराय में घूम घूम कर पहरा दिया करें।

जवहरी०। बस बस, इतने ही से मैं बेफिक्र हो जाऊंगा। अपने सिपाहियों को यह भी ताकीद कर देना कि मेरे सिपाहियों को सोने न दें। यद्यपि मैं भी अपने आदमियों को जागने के लिये सख्त ताकीद कर दूंगा मगर वे कई दिन के जागे हुए हैं नींद आ जाय तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है। हां एक तर्कीब मुझे और सूझी है जो इससे भी सहज में हो सकती है अर्थात् तुम स्वयं अकेले भी यदि यहां अपने सोने का बन्दोबस्त रक्खोगे तो तमाम रात यहां रमन चमन बना रहेगा पहरा बदलने के समय

जमादार०। मैं आपका मतलब समझ गया, मगर नहीं, ऐसा करने में मेरी बदनामी हो जायगी, मुझे हरदम फाटक पर मौजूद रहना चाहिये क्योंकि रात भर पचासों दफे लोग फाटक पर मेरे पास तरह तरह की फरियाद करने आया करते हैं। खैर आप इस बारे में चिन्ता न कीजिये, मै आपके माल असबाब की निगहबानी का पूरा इन्तजाम कर दूंगा, अगर आपका कुछ नुक्सान हो तो मेरा जिम्मा।

कुछ और बातचीत करने बाद जमादार अपने स्थान पर चला गया और थोड़ी देर बाद प्रतिज्ञानुसार उसने पहरे का बन्दोबस्त भी कर दिया।

पाठक! यह सौदागर महाशय हमारे उपन्यास का कोई नवीन पात्र नहीं है बल्कि बहुत प्राचीन पात्र तारासिंह है जो नानक की चालचलन का पता लगा के चुनारगढ़ लौटा जा रहा है। इसे इस बात का विश्वास हो गया है कि नानक मेरा पीछा

करेगा और ऐयारी कायदे को छप्पर पर रख के जहां तक हो सकेगा मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा, इसी लिये वह इस ढंग से सफर कर रहा है। हकीकत मे तारासिंह का ख्याल बहुत ठीक था। नानक तारासिंह को नुकसान पहुँचाने बल्कि जान से मार डालने की कसम खा चुका था. केवल इतना ही नहीं बल्कि वह अपने बाप का तथा राजा वीरेन्द्रसिंह का भी विपक्षी बन गया था क्योंकि अब उसे किसी तरफ स किसी तरह की उम्मीद न रही थी। अस्तु वह (नानक) भी अपने शागिर्दों को साथ लिये हुए तारासिंह के पीछे पीछे सफर कर रहा है और आज उसका भी डेरा इसी सराय मे पड़ा है क्योंकि पहले ही से पता लगाये रहने के कारण वह तारासिंह की पूरी खबर रखता है और जानता है कि तारासिंह सौदागर बन कर इसी सराय मे उतरा हुआ है। नानक यद्यपि तारासिंह को फासने का उद्योग कर रहा है मगर उसे इस बात की खबर कुछ भी नहीं है कि तारासिंह भी मेरी तरफ से गाफिल नहीं है और उसे मेरा रत्ती रत्ती हाल मालूम है। अस्तु देखा चाहिये अब किसकी चालाकी कहा तक चलती है।

रात आधी से ज्यादे जा चुकी है। सराय के अन्दर बिल्कुल सन्नाटा ता नहीं है मगर पहरा देने वालो के अतिरिक्त बहुत कम आदमी ऐसे हैं जिन्हे अपनी कोठड़ी के बाहर की खबर हो। सराय का बड़ा फाटक बन्द है, पहरे के सिपाहियों मे स एक तो तारासिंह (सौदागर) के दर्वाजे पर टहल रहा है और बाकी के तीन घूम घूम कर इस बहुत बड़ी सराय के अन्दर पहरा दे रहे हैं।

तारासिंह के साथ दो आदमी तो उसके शागिर्द ही हैं और दो नौकर ऐसे भी हैं जिन्हें तारासिंह ने रास्ते ही में महीना

मुकर्रर कर के रख लिया था, मगर ये दोनो नौकर तारासिंह के सच्चे हाल को कुछ भी नहीं जानते, इन्हे केवल इतना ही मालूम है कि तारासिंह एक अमीर सौदागर है। इस समय ये दोनो नौकर कमरे के बाहर दालान में पड़े खुर्राटे ले रहे है और तारासिंह तथा उसके शागिर्द कमरे के अन्दर बैठे आपुस मे कुछ बातचीत कर रहे है। कमरे का दर्वाजा भिड़काया हुआ है।

तारासिंह का एक शागिर्द कमरे के बाहर निकला और उसने चारो तरफ एक निगाह दौडाने के बाद पहरे वाले सिपाही से कहा, 'तुम्हे सौदागर साहब बुला रहे है जाओ सुन आओ, तब तक तुम्हारे बदले मै पहरा देता हू। अन्दर जा कर दर्वाजा भिडका देना, खुला मत रखना।"

हुक्म पाते ही लालची सिपाही, जिसे विश्वास था कि हमारे जमादार को कुछ मिल चुका है और मुझे भी अवश्य मिलेगा, कमरे के अन्दर घुस गया और बहुत देर तक बाहर न आया। तब तक तारासिंह को शागिर्द इधर उधर टहलता रहा। इसी बीच मे उसने देखा कि एक आदमी कई दफे इस तरफ आया मगर एक आदमी को टहलता देख कर लौट गया।

बहुत देर के बाद कमरे के अन्दर से दो आदमी बाहर निकले एक तो तारासिंह का (दूसरा) शागिर्द और दूसरा स्वयम् सौदागर भेषधारी तारासिंह। तारासिंह के हाथ मे सिपाही का ओढना मौजूद था जिसे अपने शागिर्द को जो पहरा दे रहा था दे कर उसने कहा, "इसे तुम ओढ़ कर एक किनारे सो जाओ, मगर कोई तुम्हारे पास आ कर बेहोशी की दवा भी सुघावे तो बेखटके सूघ लेना और मुझको अपने से दूर न समझना।"

तारासिंह के शागिर्द ने ओढ़ना ले लिया और कहा—'जब से मै टहल रहा हू तब से दो तीन दफे दुश्मन आया मगर मुझे

होशियार देख कर लौट गया।"

तारा०। हां काम में कुछ देर तो जरूर हो गई है। मैं उस सिपाही को बेहोश करके अपनी जगह सुला आया हूं और चिराग गुल कर आया हूं। (हाथ से बता के) अब तुम इस खंभे के पास लेट जाओ (दूसरे शागिर्द से) और तुम उस दर्वाजे के पास जा लेटो। मैं भी किसी ठिकाने छिप कर तमाशा देखूंगा।

तारासिंह की आज्ञानुसार उसके दोनों शागिर्द बताये हुए ठिकाने पर जा कर लेट गये और तारासिंह अपने दर्वाजे से कुछ दूर जा कर एक दूसरे मुसाफिर की कोठड़ी के आगे लेट रहा मगर इस ढंग से कि अपने तरफ की सब कार्रवाई अच्छी तरह देख सके।

आधे घंटे के बाद तारासिंह ने देखा कि दो आदमी उसके दरवाजे पर आ कर खड़े हो गये हैं जिनकी सूरत अन्धेरे के सबब दिखाई नहीं देती और यह भी नहीं जान पड़ता कि वे दोनों अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए हैं या नहीं। कुछ अटक कर उन दोनों आदमियों ने तारासिंह के आदमियों को देखा भाला, इसके बाद एक आदमी कमरे का दर्वाजा खोल कर अन्दर घुस गया और आधी घड़ी के बाद जब वह कमरे के बाहर निकला तो उसकी पीठ पर एक बड़ी सी गठरी भी दिखाई पड़ी। गठड़ी पीठ पर लादे हुए अपने साथी को साथ ले कर वह आदमी सराय के दूसरे हिस्से की तरफ चला गया। जब वह दूर निकल गया तो तारासिंह अपने दरवाजे पर आया और अपने शागिर्दों को चैतन्य पाने पर समझ गया कि दुश्मन ने उसके आदमियों को बेहोशी की दवा नहीं सुंघाई थी। तारासिंह के दोनों शागिर्द भी उठे मगर तारासिंह उन्हें उसी तरह लेटे

मुकर्रर कर के रख लिया था, मगर ये दोनों नौकर तारासिंह के सच्चे हाल को कुछ भी नहीं जानते, इन्हें केवल इतना ही मालूम है कि तारासिंह एक अमीर सौदागर है। इस समय ये दोनों नौकर कमरे के बाहर दालान में पड़े खुर्राटे ले रहे हैं और तारासिंह तथा उसके शागिर्द कमरे के अन्दर बैठे आपुस मे कुछ बातचीत कर रहे हैं। कमरे का दर्वाजा भिड़काया हुआ है।

तारासिंह का एक शागिर्द कमरे के बाहर निकला और उसने चारो तरफ एक निगाह दौड़ाने के बाद पहरे वाले सिपाही से कहा, "तुम्हें सौदागर साहब बुला रहे है जाओ सुन आओ, तब तक तुम्हारे बदले मैं पहरा देता हूं। अन्दर जा कर दर्वाजा भिड़का देना, खुला मत रखना।"

हुक्म पाते ही लालची सिपाही, जिसे विश्वास था कि हमारे जमादार को कुछ मिल चुका है और मुझे भी अवश्य मिलेगा, कमरे के अन्दर घुस गया और बहुत देर तक बाहर न आया। तब तक तारासिंह का शागिर्द इधर उधर टहलता रहा। इसी बीच मे उसने देखा कि एक आदमी कई दफे इस तरफ आया मगर एक आदमी को टहलता देख कर लौट गया।

बहुत देर के बाद कमरे के अन्दर से दो आदमी बाहर निकले एक तो तारासिंह का (दूसरा) शागिर्द और दूसरा स्वयम् सौदागर भेषधारी तारासिंह। तारासिंह के हाथ मे सिपाही का ओढ़ना मौजूद था जिसे अपने शागिर्द को जो पहरा दे रहा था दे कर उसने कहा, "इसे तुम ओढ कर एक किनारे सो जाओ, अगर कोई तुम्हारे पास आ कर बेहोशी की दवा भी सुंघावे तो बेखटके सूंघ लेना और मुझको अपने से दूर न समझना।"

तारासिंह के शागिर्द ने ओढ़ना ले लिया और कहा—'जब से मैं टहल रहा हूं तब से दो तीन दफे दुश्मन आया मगर मुझे

होशियार देख कर लौट गया।"

तारा०। हां काम में कुछ देर तो जरूर हो गई है। मैं उस सिपाही को बेहोश करके अपनी जगह सुला आया हूं और चिराग गुल कर आया हूं। (हाथ से बता के) अब तुम इस खंभे के पास लेट जाओ। (दूसरे शागिर्द से) और तुम उस दर्वाजे के पास जा लेटो। मैं भी किसी ठिकाने छिप कर तमाशा देखूंगा।

तारासिंह की आज्ञानुसार उसके दोनों शागिर्द बताये हुए ठिकाने पर जा कर लेट गये और तारासिंह अपने दर्वाजे से कुछ दूर जा कर एक दूसरे मुसाफिर की कोठड़ी के आगे लेट रहा मगर इस ढंग से कि अपने तरफ की सब कार्रवाई अच्छी तरह देख सके।

आधे घंटे के बाद तारासिंह ने देखा कि दो आदमी उसके दरवाजे पर आ कर खड़े हो गये हैं जिनकी सूरत अन्धेरे के सबब दिखाई नहीं देती और यह भी नहीं जान पड़ता कि वे दोनों अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए हैं या नहीं। कुछ अटक कर उन दोनों आदमियों ने तारासिंह के आदमियों को देखा भाला, इसके बाद एक आदमी कमरे का दर्वाजा खोल कर अन्दर घुस गया और आधी घड़ी के बाद जब वह कमरे के बाहर निकला तो उसकी पीठ पर एक बड़ी सी गठरी भी दिखाई पड़ी। गठड़ी पीठ पर लादे हुए अपने साथी को साथ ले कर वह आदमी सराय के दूसरे हिस्से की तरफ चला गया। जब वह दूर निकल गया तो तारासिंह अपने दरवाजे पर आया और अपने शागिर्दों को चैतन्य पाने पर समझ गया कि दुश्मन ने उसके आदमियों को बेहोशी की दवा नहीं सुंघाई थी। तारासिंह के दोनों शागिर्द भी उठे मगर तारासिंह उन्हें उसी तरह लेटे

रहने की आज्ञा दे कर अपने कमरे के अन्दर चला गया और भीतर से दर्वाजा वन्द कर लिया। रोशनी करने के बाद तारासिंह ने देखा कि दुश्मन ने उसकी कोई चीज नहीं चुराई है, वह केवल उस सिपाही को उठा कर ले गया है जिसे तारासिंह अपनी सूरत का सौदागर बना कर अपनी जगह लिटा गया था।

तारासिंह अपनी कार्रवाई पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कमरे के बाहर निकल कर अपने दोनों शागिर्दों को उठाया और कहा, "हमारा मतलब सिद्ध हो गया, अब इसमें कोई सन्देह नहीं कि कम्बख्त नानक अपनी मुराद पूरी हो गई समझ के इसी समय सराय का फाटक खुलवा कर निकल जायगा और मैं भी ऐसा ही चाहता हू, अस्तु अब उचित है कि तुम दोनों में से एक आदमी तो यहा पहरा दे और एक आदमी सराय के फाटक की तरफ जाय और छिप कर मालूम करे कि नानक कब सराय के बाहर निकलता है। जिस समय वह सराय के बाहर हो उसी समय मुझे इत्तला मिले।"

इतना कह कर तारासिंह कमरे के अन्दर चला गया और भीतर से दरवाजा बन्द कर लेने बाद कमरे की छत पर चढ़ गया, इस लिये कि वह कमरे के ऊपर से अपने मतलब की बात बहुत कुछ देख सकता था।

इस समय नानक की खुशी का कोई ठिकाना न था। वह समझे हुए था कि हमने तारासिंह को गिरफ्तार कर लिया, अस्तु जहा तक जल्द हो सके सराय के बाहर निकल जाना चाहिये। इसी खयाल से उसने अपना डेरा कूच कर दिया और सराय के फाटक पर आ कर जमादार को बहुत कुछ कह सुन के या दे दिला के दर्वाजा खुलवाया और बाहर हो गया।

तारासिंह को जब मालूम हुआ कि नानक सराय के बाहर निकल गया तब उसने अपने यहां चोरी हो जाने की खबर मशहूर करने का बन्दोबस्त किया। उसके पास जो सन्दूक थे, जिनमें कीमती माल होने का लोगों या जमादार को गुमान था उनका ताला तोड़ कर खोल दिया क्योंकि वास्तव में वे सन्दूक बिल्कुल खाली केवल दिखाने के लिए थे। इसके बाद अपने नौकरों को होशियार किया और खूब रोशनी कर के 'चोर' 'चोर' का हल्ला मचाया और जाहिर किया कि हमारी लाखों रुपै की चीज (जवाहिरात) चोरी हो गई।

चोरी की खबर सुन बेचारा जमादार दौड़ा हुआ तारासिंह के पास आया जिसे देखते ही तारासिंह ने रोनी सूरत बना कर कहा, "देखो जमादार, मैं पहिले ही कहता था कि मेरे असबाब की खूब हिफाजत होनी चाहिये। आखिर मेरे यहां चोरी हो ही गई! मालूम होता है कि तुम्हारे सिपाही ने मिल कर चोरी करवा दी क्योंकि तुम्हारा सिपाही भी दिखाई नहीं देता। कहो अब हम अपने लाखों रुपै के माल का दावा किस पर करें?"

तारासिंह की बात सुनते ही जमादार के तो होश उड़ गये। उसने टूटे हुए सन्दूकों को भी अपनी आंखों से देख लिया और खोज करने पर उस सिपाही को भी न पाया जिसका इस समय पहरे पर मौजूद रहना वाजिब था। यद्यपि जमादार ने उसी समय सिपाहियों को फाटक पर होशियार रहने का हुक्म दे दिया मगर इस बात का उसे बहुत ही रंज हुआ कि उसने थोड़ी ही देर पहले एक आदमी को डेरा उठा कर सराय के बाहर चले जाने दिया। उसने तुरन्त कई सिपाहियों को उसकी गिरफ्तारी के लिए रवाना किया और तारासिंह से कहा, "मैं इसी समय इस मामले की इत्तला करने राजदीवान के पास जाता हूं।"

तारा० । तुम जहां चाहो वहां जाओ मगर हमारा तो नुक-सान हो ही गया । अस्तु हम भी अपने मालिक के पास इस बात की इत्तला करने जाते हैं ।

जमादार० । (ताज्जुब से) तो क्या आप स्वयम् मालिक नहीं हैं ?

तारा० । नहीं, हम मालिक नहीं हैं बल्कि मालिक के गुमाश्ते हैं । हमे इस बात का बहुत रंज है कि तुमने हमसे पूछे बिना सराय का फाटक खोल दिया और चोर को सराय के बाहर निकल जाने की इजाजत दे दी । यद्यपि तुम मुझसे कह चुके थे कि आपसे पूछे बिना सराय का फाटक न खोलेंगे और इसी हिफाजत के लिए हमने अपने जेब की अशर्फियां तुम्हारे जेब में डाल दी थी, मगर अफसोस मुझे इस बात की बिल्कुल खबर थी कि तुम हद से ज्यादे लालची हो । हमारा माल चोरी करवा दोगे और चोर से गहरी रकम रिश्वत में ले कर उसे फाटक के बाहर निकल जाने की आज्ञा दोगे, और मैं यह भी नहीं जानता था कि इस सराय के हिफाजत करने वाले इस किस्म का रोजगार करते हैं, अगर जानता तो ऐसी सराय में कभी थूकने भी न आता ।

तारासिंह ने धमकी के ढंग पर ऐसी ऐसी बातें जमादार से कहीं कि वह डर गया और सोचने लगा कि नाहक मैंने इनसे पूछे बिना सराय का फाटक खोल कर किसी को जाने दिया, अगर किसी को जाने न देता तो बेशक इनका माल सराय के अन्दर ही से निकल आता, अब तो बेशक मैं दोषी ठहरता हूं, ताज्जुब नहीं कि सौदागर की बातों पर दीवान साहब को भी यह शक हो जाय कि जमादार ने रिश्वत ली है । अगर ऐसा हुआ तो मैं कहीं का भी न रहूंगा, मेरी बड़ी दुर्गति की जायगी ।

चोरी भी ऐसी नहीं है कि जिसे मैं अपने पल्ले से पूरी कर सकूं—इत्यादि बातें सोचता हुआ जमादार बहुत ही घबड़ा गया और बड़ी नर्मी और आजिजी के साथ तारासिंह से माफी मांग कर बोला, "निःसन्देह मुझसे बड़ी भूल हो गई, मगर मैं आपसे वादा करता हूं कि उस चोर को जो मुझे धोखा दे कर और फाटक खुलवा कर चला गया है गिरफ्तार कर दूंगा, परन्तु मेरी जिन्दगी अब आपके हाथ में है, अगर आप मुझ पर दया कर के फाटक खोल देने वाले मेरे कसूर को छिपावेंगे तो मेरी जान बच जायगी नहीं तो राजा साहब मेरा सिर कटवा डालेंगे और इससे आपका कुछ लाभ न होगा। मैं कसम खा कर कहता हूं कि मैंने उससे एक कौड़ी भी रिश्वत नहीं ली है। मुझे उस कम्बख्त ने पूरा धोखा दिया, मगर मैं उसे निःसन्देह गिरफ्तार करूंगा और आपकी रकम जाने न दूंगा। यदि आपको मुझ पर शक हो और आप समझते हों कि मैंने रिश्वत ली है तो फाटक पर चल कर मेरी कोठडी की तलाशी ले लीजिये और जो कुछ निकले चाहे वह आपका दिया हो या मेरा खास हो, वह सब आप ले लीजिये मगर मेरी जान बचाइये।।"

जमादार ने तारासिंह की हद से ज्यादे खुशामद की और यहां तक गिड़गिड़ाया कि तारासिंह का दिल हिल गया मगर अपना काम निकालना भी बहुत जरूरी था इस लिये चालबाजी के साथ उसने जमादार का कसूर माफ कर के कहा, "अच्छा मैं कसूर तो तुम्हारा माफ कर देता हूं मगर इस समय जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं उसे बड़ी होशियारी के साथ करना होगा, अगर कसर करोगे तो तुम्हारे हक में अच्छा न होगा।"

जमादार०। नहीं नहीं, मैं जरा भी कसर न करूंगा, जो कुछ आप हुक्म देंगे वही करूंगा, कहिये क्या आज्ञा होती है?

तारासिंह० । एक तो मैं अपनी जुबान से झूठ कदापि न बोलूंगा ।

जमादार० । (कांप कर) तब मेरी जान कैसे बचेगी ?

तारासिंह० । तुम मेरी बात तो पूरी हो लेने दो—दूसरे मुझे यहां से तुरत चले जाने की जरूरत भी है, इसलिये मैं अपने इन (अपने शागिर्दों की तरफ इशारा कर के) दोनों साथियों को यहां छोड़ जाता हूं, तुम जब चोर को गिरफ्तार करके अपने राजदीवान या राजा के पास जाना तो इन्हीं दोनों को ले जाना, ये दोनों आदमी अपने को मेरा नौकर कह कर चोरी गई हुई चीजों को बखूबी पहिचान लेंगे और वे चोरी के समय मेरा यहां मौजूद रहना तथा तुम्हारा कसूर कुछ भी जाहिर न करेंगे और तुम भी इस बात को जाहिर मत करना कि सौदागर या सौदागर का गुमाश्ता भी यहां मौजूद था। ये दोनों आदमी अपने काम को पूरी तरह से अंजाम दे लेंगे। हां एक बात कहना तो भूल ही गया, इस सराय के अन्दर जितने आदमी हैं उन सभों की भी तलाशी ले लेना।

जमादार० । (दिल में खुश होकर) जरूर उन सभों की तलाशी ले ली जायगी और जो कुछ आपने आज्ञा दी है वही किया जायगा, आप अपना हर्ज न कीजिये और जाइये, यहां मैं किसी तरह का नुकसान होने न दूंगा।

सौदागर (तारासिंह) चला जायगा यह जान कर जमादार अपने दिल में बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि इनके रहने से उसे अपना कसूर प्रगट हो जाने का डर भी था।

जमादार से और भी कुछ बात करने बाद तारासिंह अपने दोनों शागिर्दों को एकान्त में ले गया और हर तरह की बातें समझाने के बाद यह भी कहा, "तुम लोग मेरे चले जाने बाद

किसी तरह घवड़ाना नहीं और हर वक्त मुझे अपने पास मौजूद समझना।"

इन सब बातों से छुट्टी पा कर तारासिंह अकेला हो वहां से रवाना हो गया।

तीसरा बयान

तारासिंह के चले जाने बाद सराय में चोरी की खबर बड़ी तेजी के साथ फैल गई। जितने मुसाफिर उसमे उतरे हुए थे सब रोके गये। राजदीवान को भी खबर हो गई, वह भी बहुत से सिपाहियों को साथ लेकर सराय मे आ मौजूद हुआ। खूब ही हल्ला मचा, चारो तरफ तलाशी और तहकीकात की कार्रवाई होने लगी, मगर सभो को निश्चय इसी बात का था कि चोर सिवाय उसके और कोई भी नहीं है जो रात रहते ही फाटक खुलवा कर सराय के बाहर निकल गया है। पहरे वाले सिपाही के गायब हो जाने से और भी परेशानी हो रही थी। चोर की गिरफ्तारी में कई सिपाही तो जा ही चुके थे मगर दीवान साहब के हुक्म से और भी बहुत से सिपाही भेजे गये, आखिर नतीजा यह निकला कि दोपहर के पहिले ही हजरत नानक-परसाद गिरफ्तार हो कर सराय के अन्दर आ पहुंचे जो अपने खयाल मे तारासिंह को गिरफ्तार कर ले गये थे और अभी तक सौदागर का चेहरा धो कर देखने भी न पाये थे मगर उन कृपानिधान को ताज्जुब था तो इस बात का कि वे चोरी के कसूर मे गिरफ्तार किये गये थे।

अभी तक दीवान साहब सराय के अन्दर मौजूद थे। नानक के आते ही चारो तरफ से मुसाफिरों की भीड़ आ टूटी और हर तरफ से नानक पर गालियों की बौछार होने लगी।

जिस कमरे में तारासिंह उतरा हुआ था उसी के आगे वाले दालान में सुन्दर फर्श के ऊपर दीवान साहब विराज रहे थे और उनके पास ही तारासिंह के दोनों शागिर्द भी अपनी असली सूरत में बैठे हुए थे। सामने आते ही दीवान साहब ने क्रोध भरी आवाज में नानक से कहा, "क्यों बे! तेरा इतना बड़ा हौसला हो गया कि तू हमारी सराय में आकर इतनी बड़ी चोरी करे!!"

नानक०। (अपने को बेतरह फंसा हुआ देख हाथ जोड़ के) मुझ पर चोरी का इलजाम किसी तरह नहीं लग सकता, मुझे यह मालूम होना चाहिये कि यहां किसकी चोरी हुई है और मुझ पर चोरी का इलजाम कौन लगाता है?

दीवान०। (तारासिंह के दोनों शागिर्दों की तरफ इशारा करके) इनका माल चोरी गया गया है और यहां के सभी आदमी तुझे चोर कहते हैं।

नानक०। झूठ, बिल्कुल झूठ!

तारासिंह का एक शागिर्द०। (दीवान से) यदि हर्ज न हो तो पहिले इसका चेहरा धुलवा दिया जाय।

दीवान०। क्या तुम्हें कुछ दूसरे ढंग का भी शक है? अच्छा (जमादार से) पानी मंगा कर इस चोर का चेहरा धुलवाओ।

जमादार०। जो हुक्म।

नानक०। चेहरा धुलवा के क्या कीजियेगा? मैं तो ऐयार हूं और ऐयारों की सूरत हर दम बदली ही रहती है, खास कर सफर में।

दीवान०। तू ऐयार है! ऐयार लोग भी कहीं चोरी करते हैं!

नानक०। जी मैं कह चुका हूं कि चोरी का इलजाम मुझ पर नहीं लग सकता।

तारा का एक शागिर्द॰। चोरी तो अच्छी तरह साबित हो जायगी, जरा अपने माल असबाब की तलाशी तो होने दो! (दीवान से) लीजिये पानी भी आ गया, अब इनका चेहरा धुलवाइये।

जमादार॰। (पानी की गगरी नानक के आगे धर के) लो अब पहिले अपना चेहरा साफ कर डालो।

नानक॰। मै अभी अपना चेहरा साफ कर डालता हू, चेहरा धोने मे मुझे कोई उज्र नही है, क्योंकि मै पहिले ही कह चुका हू कि ऐयारो की सूरत प्रायः बदली रहती है और मै भी एक ऐयार हू।

इतना कह कर नानक ने अपना चेहरा साफ कर डाला और दीवान साहब से कहा, "कहिये अब क्या हुक्म होता है?"

दीवान॰। अब तुम्हारी तलाशी ली जायगी।

नानक॰। तलाशी देने मे भी मुझे कुछ उज्र न होगा, मगर मुझे पहिले उन चीजों की फिहरिस्त मिल जानी चाहिये जो चोरी गई है। कही ऐसा न हो कि मेरी कुल चीजो को ये नकली सौदागर साहब अपनी ही चीज बतावें, उस समय ताज्जुब नही कि मै अपनी ही चीजो का चोर बन जाऊ।

दीवान॰। चीजो की फिहरिस्त जमादार के पास मौजूद है, तुम्हारी चीजो का तुम्हे कोई चोर नही बना सकता। हां तुमने इन्हे नकली सौदागर क्यो कहा?

नानक॰। इसलिये कि ये दोनो भी मेरी तरह से ऐयार हैं और इनके मालिक तारासिह को मैने गिरफ्तार कर लिया है, दुश्मनी से नही बल्कि आपुस की दिल्लगी से, क्योंकि हम दोनो एक ही आदमी अर्थात् राजा वीरेन्द्रसिह के ऐयार है, आपुस में धोखा देने की शर्त लग गई थी।

राजा वीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही दीवान साहब के कान खडे हो गये और वे ताज्जुब के साथ तारासिंह के दोनो शागिर्दों की तरफ देखने लगे। तारा के एक शागिर्द ने कहा, 'इसने तो झूठ बोलने पर कमर बांध रक्खी है। यह चाहे राजा वीरेन्द्रसिंह का ऐयार हो मगर हम लोगो को उनसे कोई सरोकार नहीं है। हमलोग न तो ऐयार हैं और न हमलोगों का कोई मालिक ही हमारे साथ था जिसे इसने गिरफ्तार कर लिया हो। यह तो अपने को ऐयार बताता ही है फिर अगर झूठ बोल के आपको धोखा देने का उद्योग करे तो ताज्जुब ही क्या है? इसकी झुठाई सचाई का हाल इतने ही में खुल जायगा कि एक तो इसकी तलाशी ले ली जाय दूसरे इससे ऐयारी की सनद मांगी जाय जो राजा वीरेन्द्रसिंह की तरफ से नियमानुसार इसे मिली होगी।

दीवान०। तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, ऐयारो के पास उनके मालिक की सनद जरूर हुआ करती है। अगर यह प्रतापी महाराज वीरेन्द्रसिंह का ऐयार होगा तो इसके पास सनद जरूर होगी और तलाशी लेने पर यह भी मालूम हो जायगा कि इसने जिसे गिरफ्तार किया है वह कौन है। (नानक से) अगर तुम राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयार हो तो उनकी सनद हमको दिखाओ। हां, और यह भी बताओ कि अगर तुम ऐयार हो तो इतनी जल्दी गिरफ्तार क्यो हो गये क्योंकि ऐयार लोग जहा कब्जे के बाहर हुए तहा उनका गिरफ्तार होना कठिन हो जाता है।

नानक०। मैं गिरफ्तार कदापि न होता मगर अफसोस, मुझे यह बात बिल्कुल मालूम न थी कि तारासिंह को मेरी पूरी पूरी खबर है और वह मेरी तरफ से होशियार है तथा उसने पहिले ही से मुझे गिरफ्तार करा देने का बन्दोबस्त कर रक्खा है।

दीवान०। खैर तुम ऐयारी को सनद तो दिखाओ।

नानक०। (कुछ लाजवाब सा होकर) सनद मुझे अभी नहीं मिली है।

तारासिंह का शा०। (दीवान से) देखिये मैं कहता न था यह झूठा है।

दीवान०, (क्रोध से) बेशक झूठा है और चोर है। (जमादार से) हां अब इसकी तलाशी ली जाय।

जमादार०। जो आज्ञा।

नानक की तलाशी ली गई और दो ही तीन गठड़ियों के बाद वह बड़ी गठड़ी खोली गई जिसमें सराय का सिपाही बेचारा बंधा हुआ था।

नानक ने उस बेहोश सिपाही की तरफ इशारा करके कहा, 'देखिये यही तारासिंह है जो सौदागर बना हुआ सफर कर रहा था।'

तारासिंह का शा०। (दीवान से) यह बात भी इसकी झूठ निकलेगी, आप पहिले इस बेहोश का चेहरा धुलवाइये।

दीवान०। हां मेरा भी यही इरादा है। (जमादार से) इसका चेहरा तो धोकर साफ करो।

नानक०। मैं खुद इसका चेहरा धोकर साफ कर देता हूं और तब आपको मालूम हो जायगा कि मैं झूठा हूं या सच्चा।

नानक ने उस सिपाही का चेहरा धोकर साफ किया मगर अफसोस, नानक की मुराद पूरी न हुई और वह सिर से पैर तक झूठा साबित हो गया। अपने यहां के सिपाही को ऐसी अवस्था में देख कर जमादार और दीवान साहब को भी क्रोध चढ़ आया। जमादार ने किसी तरह का खयाल न करके एक लात नानक के कमर पर ऐसी जमाई कि वह लुढ़क गया मगर वह।

जल्द सम्हल कर जमादार को मारने के लिये तैयार हुआ। नानक का हर्बा पहिले ही ले लिया गया था और अगर इस समय उसके पास कोई हर्बा मौजूद होता तो बेशक वह जमादार की जान ले लेता मगर वह कुछ भी न कर सका उलटा उसे जोश मे आता हुआ देख सभी को क्रोध चढ आया। सराय में उतरे हुए मुसाफिर भी उसकी तरफ से चिढ़े हुए थे क्योंकि वे बेचारे बेकसूर रोके गये थे और उन पर शक भी किया गया था अतएव एक दम से बहुत से आदमी नानक पर टूट पड़े और मनमानती पूजा करने के बाद उसे हर तरह से बेकाबू कर दिया, इसके बाद दीवान साहब की आज्ञानुसार उसकी और उसके साथियों की मुश्कें कस दी गईं।

दीवान साहब ने जमादार को आज्ञा दी कि—यह शैतान (नानक) बेशक झूठा और चोर है, इसने बहुत ही बुरा किया कि सर्कारी नौकर को गिरफ्तार कर लिया, तुम कह चुके हो कि उस समय यही सिपाही सौदागर के दर्वाजे पर पहरा दे रहा था। बेशक चोरी करने के लिए ही इस सिपाही को इसने गिरफ्तार किया होगा। अब इसका मुकद्दमा थोड़ी देर मे निपटने वाला नहीं है और इस समय बहुत देर भी हो गई है अस्तु तुम इसे और इसके साथियो को कैदखाने मे भेज दो तथा इसका माल असबाब इसी सराय की किसी कोठडी मे बन्द कर के ताली मुझे दे दो और सराय के सब मुसाफिरो को छोड़ दो। (तारासिंह के शागिर्दों की तरफ देख के) क्यों साहब, अब मुसाफिरो को रोकने की तो कोई जरूरत नहीं है?

तारासिंह का शा०। बेशक बेचारे मुसाफिरो को छोड़ देना चाहिये क्योंकि उनका कोई कसूर नहीं। मेरा माल इसी ने चुराया है। अगर इसके असबाब में से कुछ न भी निकलेगा तो भी हम

यही समझेंगे कि सराय के बाहर दूर जा कर इसने किसी ठिकाने चोरी का माल गाड़ दिया है।

दीवान०। बेशक ऐसा ही है! (जमादार से) अच्छा जो कुछ हुक्म दिया गया है उसे जल्द पूरा करो।

जमादार०। जो आज्ञा।

बात की बात में वह सराय मुसाफिरों से खाली हो गई, नानक हवालात में भेज दिया गया और उसका माल असबाब एक कोठड़ी में रख कर ताली दीवान साहब को दे दी गई। उस समय तारासिंह के दोनों शागिर्दों ने दीवान साहब से कहा, "इस शैतान का मामला दो एक दिन में निपटता नजर नहीं आता, इसलिये हम लोग भी चाहते हैं कि यहां से जा कर अपने मालिक को इस मामले की खबर कर दें और उन्हें भी सर्कार के पास ले आवें, अगर ऐसा न करेंगे तो मालिक की तरफ से हम लोगों पर बहुत बड़ा दोष लगाया जायगा। यदि आप चाहें तो जमानत में हमारा माल असबाब रख सकते हैं।"

दीवान०। तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, हम खुशी से इजाजत देते हैं कि तुम लोग जाओ और अपने मालिक को ले आओ, जमानत में तुम लोगों का माल असबाब रखना हम मुनासिब नहीं समझते, इसे तुम लोग ले जाओ।

तारा के दोनों शागिर्द०। (दीवान साहब को सलाम कर के) आपने बड़ी कृपा की जो हम लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, हम लोग बहुत जल्द अपने मालिक को ले कर हाजिर होंगे।

तारासिंह के दोनों शागिर्दों ने भी डेरा कूच कर दिया और बेचारे नानक को खटाई में डाल गये। देखा चाहिये अब उस

पर क्या गुजरती है, वह भी इन लोगों से बदला लिये बिना रहता नजर नहीं आता।

चौथा बयान

भैरोसिंह के चले जाने बाद दर्वाजा बन्द हो जाने से दोनों कुमारों को ताज्जुब ही नहीं हुआ बल्कि उन्हें भैरोसिंह की तरफ से एक प्रकार की फिक्र लग गई। आनन्दसिंह ने अपने बड़े भाई की तरफ देख कर कहा, "अब इस रात के समय भैरोसिंह के लिये हमलोग क्या कर सकते हैं?"

इन्द्रजीत०। कुछ भी नहीं मगर भैरोसिंह के हाथ में तिलिस्मी खञ्जर है, वह यकायक किसी के कब्जे में न आ सकेगा।

आनन्द०। पहिले भी तो उनके पास तिलिस्मी खञ्जर था बल्कि ऐयारी का बटुआ भी मौजूद था, तब उन्होंने क्या कर लिया था?

इन्द्रजीत०। सो तो ठीक कहते हो, तिलिस्म के अन्दर हर तरह से बचे रहना मामूली काम नहीं है, मगर रात के समय अब क्या हो ही सकता है?

आनन्द०। मेरी राय है कि तिलिस्मी खञ्जर से इस छोटे से दरवाजे को काटने का उद्योग किया जाय, शायद .

इन्द्रजीत०। अच्छी बात है, कोशिश करो।

आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खंजर का वार उस छोटे से दरवाजे पर किया मगर कोई नतीजा न निकला, आखिर दोनों भाई लाचार हो कर वहां से हटे और उसी दालान में एक किनारे बैठ कर बातचीत में रात बिताने का उद्योग करने लगे।

रात के साथ ही साथ दोनों कुमारों की उदासी भी कुछ कुछ जाती रही और फूलों की महक से लसी हुई सुबह की ठण्ढी

ठण्डी हवा ने उद्योग और उत्साह का सञ्चार किया। दोनों के पराधीन और चुटीले दिलों में किसी की याद ने गुदगुदी पैदा कर दी और चार पर्दे के अन्दर से भी खुशबू फैलाने वाली मगर कुछ दिनों तक नाउम्मीदों के पाले से गन्धहीन भई हुई कलियों पर आशारूपी वायु के झपेटे से बहक कर आए हुए शृंगार-रूपी भ्रमर इस समय पुनः गुंजार करने लग गये।

क्या आज दिन भर की मेहनत से भी अपने प्रेमी का पता न लगा सकेंगे? क्या आज दिन भर के उद्योग की सहायता से भी इस छोटी सी मगर अनूठी रङ्गशाला के नेपथ्य में से किसी को खोज निकालने में सफल मनोरथ न होंगे? क्या आज दिन भर की कार्रवाई भी हमें विश्वास न दिला सकेगी कि इस जानोदिल का मालिक इसी स्थान में आ पहुंचा है जैसा कि सुन चुके हैं, और क्या आज दिन भर की उपासना का फल भी जुदाई की उस काली घटा को दूर न कर सकेगा जिसने इन चकोरों को जीवनदान देने वाले पूर्णचन्द्र को छिपा रक्खा है? नहीं नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता, आज दिन भर में हम बहुत कुछ कर सकेंगे और उनका पता अवश्य लगावेंगे जिन पर अपनी जिन्दगी का भरोसा समझते हैं और जिनके मिलाप से बढ़ कर इस दुनिया में और किसी चीज को नहीं मानते।

इसी तरह की बातें सोचते हुए दोनों कुमार खड़े हो गये। नहर के किनारे आकर हाथ मुंह धोने बाद घड़ी भर के अन्दर ही जरूरी कामों से छुट्टी पा वे बाग में घूमने और वहां की हर एक चीजों को बड़े गौर से देखने लगे और थोड़ी ही देर में बारहदरी के सामने वाली उस दोमंजिली इमारत के नीचे जा पहुंचे जिसके ऊपर वाले मंजिल में रात को कोई काम करते हुए भैरोसिंह ने कई आदमियों को देखा था।

इस इमारत का नीचे वाला हिस्सा ऊपर वाले हिस्से के विपरीत दर्वाजे वल्कि दर्वाजे के किसी निशान तक से भी खाली था। बाग की तरफ वाली नीचे की दीवार साफ तथा चिकने संगमर्मर की बनी हुई थी और बीचोबीच में चार हाथ ऊचा और दो हाथ चौड़ा स्याह पत्थर का एक टुकड़ा लगा हुआ था। उसमे नीचे लिखे हुए मोटे मोटे छत्तीस अक्षर खुदे हुए थे जिसे दोनो कुमार वडे गौर से देखने और उसका मतलब जानने के लिए उद्योग करने लगे।

वे अक्षर ये थे —

ने	इ	तो	के	स्म	स्सो
हि	को	ड़	की	उ	ति
स्से	का	स	लि	हि	न
या	से	न	न	टू	र
य	क	ल	सै	जो	गे
रो	स	हा	टें	क	रो

दो घडी तक गौर करने पर कुअर इन्द्रजीतसिंह उसका मतलव समझ गये और अपने छोटे भाई कुअर आनन्दसिह को समझाया, इसके वाद दोनों भाइयों ने जोर कर के उस पत्थर को दवाया तो वह अन्दर की तरफ घुस कर जमीन के वरावर हो गया और अन्दर जाने लायक एक खासा दर्वाजा दिखाई देने लगा, साथ ही इसके भीतर की तरफ अन्धकार भी मालूम हुआ। इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी करके आगे आगे चलने के लिये आनन्दसिंह से कहा।

तिलिस्मी खंजर की रोशनी के सहारे दोनों भाई उस दर्वाजे के अन्दर चले गये और एक छोटे से कमरे मे पहुंचे जिसके बीचोबीच मे ऊपर की मञ्जिल मे जाने के लिये छोटी छोटी

चक्करदार सीढ़ियां बनी हुई थीं। उन्हीं सीढ़ियों की राह से दोनों कुमार ऊपर वाली मञ्जिल पर चढ़ गये और एक ऐसी कोठड़ी में पहुचे जिसकी बनावट अर्धचन्द्र के ढग की थी और जिसमें पाच दर्वाजे थे, दो तो कोठड़ी के दोनों तरफ और तीन दर्वाजे बाग की तरफ उस बारहदरी के ठीक सामने थे जिसमें रात को दोनों कुमारों ने आराम किया था।

बाग की तरफ वाले तीनों दर्वाजे खोल देने से उस कोठडी के अन्दर अच्छी तरह उजाला हो गया, उस समय आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खजर की रोशनी बन्द की और उसे कमर में रखने बाद अपने भाई से कहा —

आनन्द०। इसी कोठड़ी में रात को भैरोसिंह ने कई आदमियों को चलते फिरते तथा काम करते देखा था और मालूम होता है कि इसके दोनों तरफ की कोठड़ियों का सिलसिला एक दूसरे से लगा हुआ है और सभों का एक दूसरे से सम्बन्ध है।

इन्द्रजीत०। मैं भी ऐसा ही विश्वास करता हूं। इस दाहिने बगल वाली दूसरी कोठडी का दर्वाजा खोलो और देखो कि इसके अन्दर क्या है।

बडे कुमार की आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने बगल वाली दूसरी कोठडी का दर्वाजा खोला, उसी समय दोनों कुमारों को ऐसा मालूम हुआ कि कोई आदमी तेजी के साथ इस कोठडी में से निकल कर उसके बाद वाली दूसरी कोठड़ी में चला गया। दोनों कुमारों ने तेजी के साथ उसका पीछा किया दूसरी कोठडी में गये जिसका दर्वाजा मजबूती के साथ बन्द था, तो नानक पर निगाह पडी। यद्यपि उस कोठडी के वे दरवाजे जो बाग की तरफ पड़ते थे बन्द थे मगर दिन का समय होने के कारण भिलमिलियों की दरारों में से पडने वाली रोशनी

ने उसमे इतना उजाला जरूर कर रक्खा था कि आदमी की सूरत शक्ल बखूबी दिखाई दे जाय, यही सबब था कि निगाह पड़ते ही दोनों कुमारो ने नानक को बखूबी पहिचान लिया। इसी तरह नानक ने भी दोनो कुमारो को पहिचान कर प्रणाम किया और कहा, "मै किसी दुश्मन का होना अनुमान कर के भागा था मगर जब आवाज सुनी तो पहिचान कर रुक गया। मै कल से आप दोनों भाइयों को खोज रहा हू मगर पता न लगा सका क्योंकि तिलिस्मी कारखाने में बिना समझे बूझे दखल देना उचित न जान कर अपनी बुद्धिमानी या जबर्दस्ती से किसी दर्वाजे को खोल न सका और इसीलिये बाग में भी पहुंचने की नौबत न आई। कहिये आप लोग कुशल से तो है ?"

इन्द्र०। हा हम लोग बहुत अच्छी तरह हैं, तुम बताओ कि यहा कब कैसे क्यों और किस राह से आये ?

नानक०। कमलिनी से मिलने के लिये घर से निकला था मगर जब मालूम हुआ कि वे राजा गोपालसिंह के साथ जमानिया गई तब मैं राजा गोपालसिह के पास आया और इन्हीं की आज्ञानुसार यहा आपके पास आया हू।

इन्द्रजीत०। किनकी आज्ञानुसार ? राजा गोपालसिंह की या कमलिनी की ?

नानक०। कमलिनी की आज्ञानुसार।

नानक की बात सुन कर आनन्दसिंह ने एक भेद की निगाह इन्द्रजीतसिंह पर डाली और इन्द्रजीतसिह ने कुछ मुस्कुराहट के साथ आनन्दसिंह की तरफ देख कर कहा—"बाग की तरफ जो दरवाजे पड़ते हैं उन्हें खोल दो, चादना हो जाय।"

आनन्दसिंह ने दर्वाजे खोल दिये और फिर नानक के पास आ कर पूछा, "हा तो कमलिनी की आज्ञानुसार यहा आये ?"

नानक०। जी हां।

आनन्द०। कमलिनी को कहां छोड़ा ?

नानक०। राजा गोपालसिंह के तिलिस्मी बाग में।

इन्द्रजीत०। वह अच्छी तरह से तो हैं न ?

नानक०। जी हां बहुत अच्छी तरह से हैं।

आनन्द०। घोड़े पर से गिर पड़ने के कारण उनकी टांग जो टूट गई थी वह अच्छी हुई ?

नानक०। यह खबर आपको कैसे मालूम हुई ?

आनन्द०। अजी वाह ! मेरे सामने ही तो घोड़े पर से गिरी थीं, भैरोसिंह ने उनका इलाज किया था, अच्छी हो गई थी मगर कुछ कुछ दर्द बाकी था जब मैं इधर चला आया।

नानक०। जी हां, अब तो वह बहुत अच्छी हैं।

आनन्द०। (हंस कर) अच्छा यह तो बताओ कि तुम किस रास्ते से यहां आये हो ?

नानक०। उसी बुर्ज वाले रास्ते से आया हूं।

आनन्द०। मुझे अपने साथ ले चल कर वह रास्ता बता तो दो।

नानक०। बहुत अच्छा, चलिये मैं बता देता हूं, मगर मुझसे कमलिनीजी ने कहा था कि जब तुम बाग में पहुंच जाओगे तो लौटने का रास्ता बन्द हो जायगा।

आनन्द०। यह तो उन्होंने ठीक कहा था। हम दोनों भाइयों को भी उन्होंने यही कहला भेजा था कि मैं नानक को तुम्हारे पास भेजूंगी, तुम उसको जुबानी सब हाल सुन कर हिफाजत के साथ उसे तिलिस्म के बाहर कर देना।

नानक०। (कुछ शर्माना सा हो कर) जी ई ई ई, आप तो दिल्लगी करते हैं ! मालूम होता है कि आपको मुझ पर कुछ शक

है और आप समझते हैं कि मैं आपके दुश्मन का ऐयार हू और नानक की सूरत बन कर आया हू, अस्तु आप जिस तरह चाहे मेरी आजमाइश कर सकते हैं।

इतने ही में एक तरफ से आवाज आई, "जब तुम कमलिनीजी के भेजे हुए आये हो तो आजमाइश करने की जरूरत ही क्या है ? थोड़ी देर में कमलिनीजी का सामना आप ही हो जायगा।"

इस आवाज ने दोनो कुमार को तो कम मगर नानक को हद से ज्यादे परेशान कर दिया। उसके चेहरे पर हवाई सी उड़ने लगी और वह घबड़ा कर पीछे को तरफ देखने लगा। इस कोठड़ी में से दूसरी कोठड़ी में जाने के लिये जो दर्वाजा था वह इस समय मामूली तौर पर बन्द था इसलिये किसी गैर पर उसकी निगाह न पड़ी, अतएव उस दर्वाजे को खोल कर नानक अगली कोठड़ी में चला गया मगर साथ ही आनन्दसिंह ने भी वहा पहुँच कर उसकी कलाई पकड़ ली और कहा, "बस इतने ही मे घबड़ा गये ? इसी हौसले पर तिलिस्म के अन्दर आये थे ? आओ आओ, हम तुम्हे बाग मे ले चलते हैं जहा निश्चिन्ती से बैठ कर अच्छी तरह बातें कर सकेंगे।"

उसी समय दो दरवाजे खुले और स्याह लबादा ओढ़े हुए चार पाच आदमी उसके अन्दर से निकल आये जो नानक को जबर्दस्ती घसीट कर ले गये, साथ ही वे दर्वाजे भी उसी तरह बन्द हो गये जैसे पहिले थे। दोनो कुमारो ने भी कुछ सोच कर आपत्ति न की और उसे ले जाने दिया।

और कोठरियों की बनिस्बत इस कोठड़ी मे दर्वाजे ज्यादे थे अर्थात् दो दर्वाजे दोनो तरफ तो थे ही मगर बाग की तरफ चार और दो दर्वाजे पिछली तरफ भी थे और उसी पिछली तरफ

वाले दोनो दरवाजों मे से वे लोग आये थे जो नानक को घसीट कर ले गये। नानक को ले जाने बाद आनन्दसिंह ने उन्हीं पिछली तरफ वाले दरवाजो में से एक दरवाजा खोला और अन्दर की तरफ झाक के देखा। भीतर बहुत लम्बा चौड़ा एक कमरा नजर आया जिसमे अन्धकार का नाम निशान भी न था बल्कि अच्छी तरह उजाला था। दोनो कुमार उस कमरे मे चले गये और तब मालूम हुआ कि वे दरवाजे एक ही कमरे में जाने के लिये है। इस कमरे मे दोनो कुमारों ने एक बहुत बूढ़े आदमी को देखा जो चारपाई के ऊपर लेटा हुआ कोई किताब पढ़ रहा था। कुमारो को देखते ही वह चारपाई के नीचे उतर कर खडा हो गया और सलाम करके बोला, "आज कई दिनो स मैं आप दोनो भाइयों के आने का इन्तजार कर रहा हू।"

इन्द्रजीत०। तुम कौन हो ?

बुड्ढा०। जी मैं इस बाग का दारोगा हू।

इन्द्रजीत०। तुम हमलोगो का इन्तजार क्यो कर रहे थे ?

दारोगा०। इसलिये कि आप लोगो को यहा की इमारतो और अजायबातों की सैर करा के अपने सर से एक भारी बोझ उतार दूं।

इन्द्रजीत०। क्या इधर दो तीन दिन के बीच मे कोई और भी इस बाग में आया है ?

दारोगा०। जी हा, दो मर्द और कई औरतें आई है।

इन्द्रजीत०। क्या उन लोगो के नाम बता सकते हो ?

दारोगा०। नानक और भैरोसिह के सिवाय मैं और किसी का नाम जानता ही नहीं (कुछ सोच कर) हा एक औरत का भी नाम जानता हू, शायद उसका नाम कमलिनी है, क्योकि वह दो एक दफे इसी नाम से पुकारी गई थी, बडी ही धूर्त और

चालाक है, अपनी अक्ल के सामने किसी को कुछ समझती ही नहीं अस्तु विना धोखा खाये नहीं रह सकती।

इन्द्रजीत०। क्या यह बता सकते हो कि वे सब इस समय कहां हैं और उनसे मुलाकात क्योंकर हो सकती है?

दारोगा०। जी मुझे उन लोगों का पता नहीं मालूम है क्योंकि कमलिनी ने उन सभों को मेरी बात मानने न दी और अपनी इच्छानुसार उन सभों को लिये हुए चारो तरफ घूमती रही, इसी से मुझे रंज हुआ और मैंने उनकी खबरगीरी छोड़ दी।

इन्द्रजीत०। अगर तुम यहां के दारोगा हो तो खबरदारी न रखने पर भी यह तो जरूर जानते ही होवोगे कि वे सब कहां हैं?

दारोगा०। मुझे यहां का दारोगा समझने और न समझने का तो आपको अख्तियार है मगर मैं यह जरूर कहूंगा कि मुझे उन सभों का पता नहीं मालूम है।

आनन्द०। (हंस कर) यही हाल है तो यहां की हिफाजत क्या करते हो?

दारोगा०। इसका हाल तो तभी मालूम होगा जब आप मेरे साथ चल कर यहां की सैर करेंगे।

आनन्द०। अच्छा यह बताओ कि अभी हमारे देखते ही देखते जो लोग नानक को ले गये वे कौन थे?

दारोगा०। वे सब मेरे ही नौकर थे। वह झूठा और शैतान है तथा आपको नुकसान पहुंचाने की नीयत से धोखा देकर यहां घुस आया है, इसी लिये मैंने उसे गिरफ्तार करने का हुक्म दिया।

आनन्द०। तुम्हारे आदमी लोग कहां रहते हैं? यहां तो मैं तुमको अकेले ही देखता हूं!

दारोगा०। यह कमरा तो मेरा एकान्त स्थान है जब पढ़ने

या किसी विषय पर गौर करने की जरूरत पड़ती है तब मैं इस कमरे में आ कर बैठता या लेटता हूं। मगर यहां खड़े खड़े बातें करने में तो आपको तकलीफ होगी, आप मेरे स्थान पर चले चलें तो उत्तम हो या बाग ही में चलिये जहां और भी कई..

इन्द्रजीत०। खैर यह सब तो होता रहेगा पहिले हम लोगों को यह मालूम होना चाहिये कि तुम हमारे दोस्त हो दुश्मन नहीं और तुम्हारी यह सूरत असली है बनावटी नहीं। इसके बाद मैं तुमसे दिल खोल कर बातें कर सकूंगा।

दारोगा०। इस बात का पता तो आपको मेरी कार्रवाइयों से लग सकेगा मेरे कहने का आपको एतबार कब होगा, मगर इस बात को खूब समझ

दारोगा की बात पूरी न होने पाई थी कि एक तरफ से आवाज आई, "अजी तुम्हें कुछ खाने पीने की भी सुध है या योंही बकवाद किया करोगे।"

दोनों कुमार ताज्जुब के साथ उस तरफ देखने लगे जिधर से आवाज आई थी। उसी समय एक बुढ़िया उसी तरफ से कमरे के अन्दर आती दिखाई पड़ी और वह दारोगा के पास आ कर फिर बोली, "मैं बड़ी ही बदकिस्मत थी जो तुम्हारे साथ ब्याही गई। मैंने जो कहा तुमने कुछ सुना या नहीं !!"

दारोगा०। (क्रोध से) आ गई शैतान की नानी !!

दोनों कुमारों ने देखते ही उस बुढ़िया को पहिचान लिया कि यह वही बुढ़िया है जो भैरोसिंह का जोरू उस समय बनी हुई थी जब भैरोसिंह पागल भया हुआ इसी बाग में हमलोगों को दिखाई दिया था।

इन्द्रजीतसिंह ने ताज्जुब और दिल्लगी की निगाह से उस बुढ़िया की तरफ देखा और कहा, "अभी कल की बात है कि तू

भैरोसिंह पागल की जोरू बनी हुई थी और आज इस दारोगा को अपना मालिक बना रही है ।"

पांचवां बयान

कुअर इन्द्रजीतसिंह की बात सुन कर वह बुढ़िया चमक उठी और नाक भौं चढ़ा कर बोली, "बुड्ढी औरतों से दिल्लगी करते तुम्हें शर्म नहीं मालूम होती !"

इन्द्र० । क्या मैं झूठ कहता हू ?

बुढ़िया० । इससे बढ़ कर झूठ और क्या हो सकता है ! लोग किसी के पीछे झूठ बोलते हैं मगर आप मुंह पर झूठ बोल के अपने को सच्चा बनाने का उद्योग करते है ! भला इस तिलिस्म में दूसरा आ ही कौन सकता है ? और वह भैरोसिंह कौन है जिसका नाम आपने लिया ?

इन्द्रजीत० । बस बस, मालूम हो गया, मैं अपने को तुम्हारी जुबान से

बुड्ढा० । (इन्द्रजीतसिंह को रोक कर) अजी आप किससे बात कर रहे हैं ! यह तो पागल है । इसकी बातों पर ध्यान देना आप ऐसे बुद्धिमानों का काम नहीं है । (बुढ़िया से) तुझे यहां किसने बुलाया जो चली आई ? तेरे ही दुःख से तो भाग कर मैं यहां एकान्त में आ बैठा हू मगर तू ऐसी शैतान की नानी है कि यहां भी आये बिना नहीं रहती ! सवेरा हुआ नहीं और खाने खाने की रट लग गई !"

बुड्ढी० । अजी तो क्या तुम कुछ खाओ पीओगे नहीं ?

बुड्ढा० । जब मेरी इच्छा होगी तब खा लूगा, तुझे इससे मतलब ? देखती नहीं कि मैं कैसे भारी आदमी से बातचीत कर रहा हू ! (दोनों कुमारों से) आप इस कम्बख्त का खयाल

छोड़िये और मेरे साथ चले आइये। मैं आपको ऐसी जगह ले चलता हूं जहां इसकी आत्मा भी न जा सके। उसी जगह हम लोग बातचीत करेंगे, फिर आप जैसा मुनासिब समझियेगा आज्ञा दीजियेगा।

यह बात उस बुड्ढे ने ऐसे ढंग से कही और इस तरह पलटा खा कर चल पड़ा कि दोनों कुमारों को उसकी बातों का जवाब देने या उस पर शक करने का मौका न मिला और वे दोनों भी उसके पीछे पीछे रवाना हो गये।

उस कमरे के बगल ही में एक कोठरी थी और उस कोठड़ी में ऊपर की छत पर जाने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं। वह बुड्ढा दोनों कुमारों को साथ लिये हुए उस कोठड़ी में और वहां से सीढ़ियों की राह चढ़ कर उसके ऊपर वाली छत पर ले गया। उस मञ्जिल में भी छोटी छोटी कई कोठड़ियां और कमरे थे। बुड्ढे के कहे मुताबिक दोनों कुमारों ने एक कमरे की जालीदार खिड़की में से झांक कर देखा तो इस इमारत के पिछले हिस्से में एक और छोटा सा बाग दिखाई दिया जो बनिस्बत इस बाग के जिसमें कुमार एक दिन रात रह चुके थे ज्यादे खूबसूरत और सरसब्ज था। उसमें फूलों के पेड़ बहुतायत से थे और पानी का एक छोटा सा साफ चश्मा भी बह रहा था जो इस मकान की दीवार से दूर और उस बाग के पिछले हिस्से की दीवार के पास था, और उसी चश्मे के किनारे पर कई औरतों को भी बैठे हुए दोनों कुमारों ने देखा।

पहिले तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को यही गुमान हुआ कि वे औरतें किशोरी कामिनी और कमलिनी इत्यादि होंगी मगर जब उनकी सूरत पर गौर किया तो दूसरी ही औरतें मालूम हुईं जिन्हें आज के पहिले दोनों कुमारों ने

कभी नहीं देखा था।

इन्द्रजीत०। (बुड्ढे से) क्या ये वे ही औरत हैं जिनका जिक्र तुमने किया था? और जिनमें से एक औरत का नाम तुमने कमलिनी बताया था?

बुड्ढा०। जी नहीं, उनकी तो मुझे कुछ भी खबर नहीं कि वे कहां गईं और क्या हुईं।

आनन्द०। फिर ये सब कौन हैं?

बुड्ढा०। इन सभों के बारे में इससे ज्यादे और मैं कुछ नहीं जानता कि ये सब राजा गोपालसिंह की रिश्तेदारिनें हैं और किसी खास सबब से राजा गोपालसिंह ने इन लोगों को यहां रख छोड़ा है।

इन्द्रजीत०। ये सब यहां कब से रहती हैं?

बुड्ढा०। सात वर्ष से।

इन्द्रजीत०। इनकी खबरगीरी कौन करता है और खाने पीने तथा कपड़े लत्ते का इन्तजाम क्योंकर होता है?

बुड्ढा०। इसको मुझे कुछ भी खबर नहीं। यदि मैं इन सभों से कुछ बातचीत करता या इनके पास जाता तो कदाचित् कुछ मालूम हो जाता मगर राजा साहब ने मुझे सख्त ताकीद कर दी है कि इन सभों से कुछ बातचीत न करूं बल्कि इनके पास भी न जाऊं।

इन्द्रजीत०। खैर यह बताओ कि अब हम लोग इनके पास जा सकते हैं या नहीं?

बुड्ढा०। इन सभों के पास जाना न जाना आपकी इच्छा पर है, मैं किसी तरह की रुकावट नहीं डाल सकता और न कुछ राय ही दे सकता हूं।

इन्द्रजीत०। अच्छा इस बाग में जाने का रास्ता तो बता

सकते हो ?

बुड्ढा० । हां मैं खुशी से आपको रास्ता बता सकता हूं मगर स्वयम् आपके साथ वहां तक नहीं जा सकता, इसके अतिरिक्त यह कह देना भी उचित जान पड़ता है कि यहां से उस बाग में जाने का रास्ता बहुत पेचीला और खराब है इस लिये वहां जाने में कम से कम एक पहर तो जरूर लगेगा, इससे यही बेहतर होगा कि यदि आप उस बाग में या उन सभों के पास जाना चाहते हैं तो कमन्द लगा कर इसी खिड़की की राह से नीचे उतर जाय । यदि ऐसा आप किया चाहें तो आज्ञा दें मैं एक कमन्द आपको ला दूं ।

इन्द्रजीत० । हां यह बात मुझे पसन्द है, यदि एक कमन्द ला दो तो हम दोनों भाई उसी के सहारे नीचे उतर जायं ।

वह बुड्ढा दोनों कुमारों को उसी तरह उसी जगह छोड़ कर कहीं चला गया और थोड़ी ही देर में एक बहुत बड़ी कमन्द हाथ में लिये हुए आकर बोला, "लीजिये यह कमन्द हाजिर है ।"

इन्द्रजीत० । (कमन्द लेकर) अच्छा तो अब हम दोनों इस कमन्द के सहारे उस बाग में उतर जाते हैं ।

बुड्ढा० । जाइये मगर यह बताते जाइये कि आप लोग यहां लौट कर कब आवेंगे और मुझे आपको यहां की सैर कराने का मौका कब मिलेगा ?

इन्द्रजीत० । सो तो मैं ठीक नहीं कह सकता मगर तुम यह बता दो कि अगर हमलोग लौटें तो यहां किस राह से आवें ?

बुड्ढा० । इसी कमन्द के जरिये इसी राह से आ जाइयेगा, मैं यह खिड़की आपके लिये खुली छोड़ दूंगा ।

आनन्द० । अच्छा यह बताओ कि भैरोसिंह की भी कुछ खबर है ?

बुड्ढा०। कुछ भी नहीं।

इसके बाद दोनों कुमारों ने उस बुड्ढे से कुछ भी न पूछा और खिड़की खोलने बाद कमन्द लगा कर उसी के सहारे दोनों नीचे उतर गये।

दोनों कुमारों ने यद्यपि उन औरतों को ऊपर से बखूबी देख लिया था क्योंकि वह बहुत दूर नहीं पड़ती थीं मगर इस बात का गुमान न हुआ कि उन औरतों ने भी उन्हें उस समय या कमन्द के सहारे नीचे उतरती समय देखा या नहीं।

जब दोनों कुमार नीचे उतर गये तो कमन्द को भी खैंच कर ले लिया और टहलते हुए उसी तरफ रवाना हुए जिधर चश्मे के किनारे बैठी हुई वे औरतें कुमार ने देखी थीं। थोड़ी ही देर में कुमार उस चश्मे के पास जा पहुँचे और उन औरतों को उसी तरह बैठे हुए पाया। कुमार चश्मे के इस पार थे और वे सब औरत जो गिनती में सात थीं चश्मे के उस पार सब्ज घास के ऊपर बैठी हुई थीं।

किसी गैर को अपनी तरफ आते देख वे सब औरतें चौकन्नी हो कर उठ खड़ी हुई और बड़े गौर के साथ मगर क्रोध भरी निगाहों से कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की तरफ देखने लगीं।

जिस जगह वे औरतें बैठी थीं उससे थोड़ी ही दूर पर दक्खिन तरफ बाग की दीवार के साथ ही एक छोटा सा मकान भी बना हुआ था जो पेड़ों की आड़ में होने के कारण दोनों कुमारों को ऊपर से दिखाई नहीं दिया था मगर अब नहर के किनारे आ जाने पर बखूबी दिखाई देता था।

वे औरतें जिन्हें नहर के किनारे कुमार ने देखा था, सब की सब नौजवान और हसीन थीं। यद्यपि इस समय वे सब

बनाव शृङ्गार और जेवरों के ढकोसलों से खाली थीं मगर उनका कुदरती हुस्न ऐसा न था जो किसी तरह की खूबसूरती को अपने सामने ठहरने देता। यहां पर यदि ऐसी केवल एक औरत होती तो हम उसकी खूबसूरती के बारे में कुछ लिखते भी, मगर एक दम से सात ऐसी औरतों की तारीफ मे कलम चलाना हमारी ताकत के बाहर है जिन्हें प्रकृति ने खूबसूरत बनाने के समय हर तरह पर अपनी उदारता का नमूना दिखाया हो।

कुअर इन्द्रजीतसिंह ने जब उन औरतों को अपनी तरफ क्रोध भरी निगाहों से देखते देखा तो एक औरत से मुलायम और गम्भीर शब्दों में कहा, "तुम लोग क्रोध भरी निगाहों से हमारी तरफ क्यों देखती हो। हमलोग तुम्हारे पास किसी तरह की तकलीफ देने की नीयत से नहीं आये हैं बल्कि यह कहने के लिये आये हैं कि किस्मत ने हमलोगों को अकस्मात् यहां पहुँचा कर तुम लोगों का मेहमान बनाया है। हम लोग लाचार और राह भूले हुए मुसाफिर है और तुम लोग यहां की रहने वाली और दयावान हो, क्योंकि जिस ईश्वर ने तुम्हें इतना सुन्दर बना कर अपनी कारीगरी का नमूना दिखाया है उसने तुम्हारे दिल को कठोर बना कर अपनी भूल का परिचय कदापि न दिया होगा, अतएव उचित है कि तुम लोग ऐसे समय में हमारी सहायता करो और बताओ कि अब हम दोनों भाई क्या करें और कहां जायें?"

औरतें खुशामदपसन्द तो होती ही है, कुअर इन्द्रजीतसिंह की मीठी और खुशामद भरी बातें सुन कर उन सभों की चढ़ी हुई त्योरियां उतर गईं और होठों पर कुछ मुस्कुराहट दिखाई देने लगी। एक ने जो सब मे ज्यादे चंचल और चालाक जान

पडती थी, आगे बढ कर कुअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "जब आप हमारे मेहमान बनते है और इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि हमारे साथ दगा न करेंगे तो हमलोग भी नि.सन्देह आपको अपना मेहमान स्वीकार करके जहा तक हो सकेगा आपकी सहायता करेंगा, अच्छा ठहरिये हम लोग आपुस मे जरा सलाह कर लें।"

इतना कह कर वह चुप हो गई। उन लोगों ने आपुस मे धीरे धीरे कुछ बातें की और इसके बाद फिर उसी औरत ने इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर कहा —

औरत०। (हाथ का इशारा कर के) उस तरफ एक छोटा सा पुल बना हुआ है, उसी पर से होकर आप इस पार चले आइये।

इन्द्र०। क्या इस नहर में पानी बहुत ज्यादे है ?

औरत०। पानी तो ज्यादे नही है मगर इसमे लोहे के तेज नोक वाले गोखरू बहुत पडे है इसलिये इस राह से आपका आना असम्भव है।

इन्द्र०। अच्छा तो हम उसी पुल पर से होकर आवेंगे।

इतना कह कुमार उस तरफ रवाना हुए जिधर उस औरत ने हाथ के इशारे से उस पुल का होना बताया था। थोडी दूर जाने बाद एक गुजान और खुशनुमा झाड़ी के अन्दर वह छोटा सा पुल दिखाई दिया। इस जगह नहर के दोनों तरफ पारिजात के कई पेड थे जिनकी डालिया ऊपर से मिली हुई थीं और उन पर खूबसूरत फूल पत्तो वाली वेले इस ढंग से चढी हुई थीं कि उनकी सुन्दर छाया मे छिपा हुआ वह छोटा सा पुल बहुत खूबसूरत और स्थान रमणीक मालूम होता था। इस जगह से न तो दोनों कुमार उन औरतों को देख सकते थे और न उन औरतो

की निगाह उन पर पड़ सकती थी।

जब दोनों कुमार पुल की राह पार उतर कर और घूम फिर कर उस जगह पहुँचे जहां उन औरतों को छोड़ आये थे तो केवल दो औरतों को मौजूद पाया जिनमें से एक तो वही थी जिससे कुंअर इन्द्रजीतसिंह से बातचीत हुई थी और दूसरी उससे उम्र में कुछ कम मगर खूबसूरती में कुछ ज्यादे थी। बाकी औरतों का पता न था कि क्या हुईं और कहां गईं। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने ताज्जुब में आकर उस औरत से जिसने पुल की राह इधर आने का उपदेश किया था पूछा, "यहां तुम दोनों के सिवाय और कोई नहीं दिखाई देता, सब कहां चली गईं?"

औरत०। आपको उन औरतों से क्या मतलब?

इन्द्रजीत०। कुछ नहीं, यों ही पूछता हूं।

औरत०। (मुस्कुराती हुई) वे सब आप दोनों भाइयों की मेहमानदारी का इन्तजाम करने चली गईं, अब आप मेरे साथ चलिये।

इन्द्रजीत०। कहां ले चलोगी?

औरत०। जहां मेरी इच्छा होगी, जब आपने मेरी मेहमानी कबूल ही कर ली तब .

इन्द्रजीत०। खैर अब इस किस्म की बात न पूछूंगा और जहां ले चलोगी चला चलूंगा।

औरत०। (मुस्कुरा कर) अच्छा तो आइये।

दोनों कुमार उन दोनों औरतों के पीछे पीछे रवाना हुए। हम कह चुके हैं कि जहां ये औरतें बैठी थीं वहां से थोड़ी ही दूर पर एक छोटा सा मकान भी बना हुआ था। वे दोनों औरत कुमारों को लिये हुए उसी मकान के दरवाजे पर पहुँचीं जो इस समय बन्द था मगर कोई जंजीर कुंडा या ताला उसमें दिखाई

नहीं देता था। कुमारों को यह भी मालूम न हुआ कि किस खटके को दबा कर या क्यों कर उसने वह दर्वाजा खोला। दर्वाजा खुलने पर उस औरत ने पहिले दोनों कुमारों को उसके अन्दर जाने के लिये कहा, जब दोनों कुमार उसके अन्दर चले गये तब इन दोनों ने भी दरवाजे के अन्दर पैर रक्खा और इसके बाद एक हलकी आवाज के साथ वह दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया। इस समय दोनों कुमारों ने अपने को एक ऐसी सुरंग में पाया जिसमे अन्धकार के सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देता था और जिसकी चौडाई तीन हाथ और ऊंचाई चार हाथ से किसी तरह ज्यादे न थी। इसी जगह कुमार को इस बात का खयाल हुआ कि कहीं इन औरतों ने मुझे धोखा तो नहीं दिया मगर यह सोच कर चुप रह गये कि अब तो जो कुछ होना था हो ही गया और ये औरतें भी तो आखिर हमारे साथ ही है जिनके पास किसी तरह का हर्बा देखने मे नहीं आया था।

दोनों कुमारों ने अपना हाथ पसार कर दीवाल को टटोला और मालूम किया कि यह सुरंग है, उसी समय पीछे से उस औरत की यह आवाज आई, "आप दोनों भाई किसी तरह का अन्देशा न कीजिये और सीधे चले चलिये, इस सुरंग मे बहुत दूर तक जाने की तकलीफ आप लोगों को न होगी।"

वास्तव में यह सुरंग बहुत बडी न थी, चालीस पचास क़दम से ज्यादे कुमार न गये होंगे कि सुरंग का दूसरा दर्वाजा मिला और उसे लांघ कर कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अपने को एक दूसरे ही बाग में पाया जिसकी जमीन का बहुत बडा हिस्सा मकान कमरों बारहदरियों तथा और इमारतों के काम मे लगा हुआ था और थोडे हिस्से मे मामूली ढंग का एक छोटा सा बाग था। हां उस बाग के बीचोबीच में एक छोटी सी खूबसूरत

बावली जरूर थी जिसकी चार चार अंगुल ऊंची सीढ़ियां सुफेद लहरदार पत्थरों से बनी हुई थीं। इसके चारों कोनों पर चार पेड़ कदम्ब के लगे हुए थे और एक पेड के नीचे एक चबूतरा संगमर्मर का इस लायक था कि उस पर बीस पचीस आदमी खुले तौर पर बैठ सकें। इमारत का हिस्सा जो कुछ इस बाग में था वह सब बाहर से तो देखने में बहुत ही खूबसूरत था मगर अन्दर से वह कैसा और किस लायक था सो नहीं कह सकते।

बावली के पास पहुँच कर उस औरत ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यद्यपि इस समय धूप बहुत तेज हो रही है मगर इस पेड (कदम्ब) की घनी छाया में इस संगमर्मर के चबूतरे पर थोडी देर तक बैठने में आपको किस तरह की तकलीफ न होगी, मैं बहुत जल्द (सामने की तरफ इशारा कर के) इस कमरे को खुलवा कर आपके आराम करने का इन्तजाम करूंगी, केवल आधी घडी के लिये आप मुझे बिदा दें।

इन्द्र०। खैर जाओ मगर इतना बताती जाओ कि तुम दोनों का क्या नाम है जिसमें यदि कोई आवे और कुछ पूछे तो यह तो कह सकें कि हम लोग फलाने के मेहमान हैं।

औरत०। (हंस कर) जरूर जानना चाहिये, केवल इसी लिये नहीं बल्कि कई कामों के लिये हम दोनों बहिनों का नाम जान लेना आपको आवश्यक है। मेरा नाम 'इन्द्रानी' (दूसरी की तरफ इशारा कर के) और इसका नाम 'आनन्दी' है, यह मेरी सगी छोटी बहिन है।

इतना कह कर वे औरतें तेजी के साथ एक तरफ चली गईं और इस बात का कुछ भी इन्तजार न किया कि कुमार कुछ जवाब देंगे या और कोई बात पूछेंगे। उन दोनों औरतों के चले

जाने बाद कुअर आनन्दसिंह ने अपने भाई से कहा, 'इन दोनों औरतो के नाम पर आपने कुछ ध्यान दिया ?'

इन्द्र०। हा यदि इनका यह नाम इनके बुजुर्गों का रक्खा हुआ और इनके शरीर का सब से पहिला साथी नहीं है तो कह सकते है कि हम दोनो ने धोखा खाया।

आनन्द०। जी मेरा भी यही खयाल है, मगर साथ ही इसके मै यह भी खयाल करता हू कि अब हम लोगो को चालाक बनना... ..

इन्द्र०। (जल्दी से) नहीं नहीं, अब हम लोगो को जब तक छुटकारे की साफ सूरत दिखाई न दे जाय, प्रगट मे नादान बने रहना ही लाभदायक होगा।

आनन्द०। नि सन्देह, मगर इतना तो मेरा दिल अब भी कह रहा है कि ये सब हमारी जिन्दगी के धागे मे किसी तरह का खिंचाव पैदा न करेंगी।

इन्द्र०। मगर उसमें लगर की तरह लटकने के लिये इतना बड़ा बोझ जरूर डाल देंगी कि जिसका सहन करना असम्भव नहीं तो असह्य अवश्य होगा।

आनन्द०। जी हा, अब यदि हम लोगो को कुछ सोचना है तो इसी के विषय मे

इन्द्रजीत०। अफसोस! ऐसे समय मे भैरोसिंह को भी इत्तफाक ने हम लोगो से अलग कर दिया, ऐसे मौको पर उसकी बुद्धि अनूठा काम किया करती है। (कुछ रुक कर) देखो तो सामने से कौन आ रहा है?

आनन्द०। (खुशी भरी आवाज मे ताज्जुब के साथ) है तो भैरोसिंह ही! अब कोई परवाह की बात नहीं है अगर यह वास्तव मे भैरोसिंह ही है!!

अपने से थोड़ी ही दूर पर दोनों कुमारों ने भैरोसिंह को देखा जो एक कोठरी के अन्दर से निकल कर इन्हीं की तरफ आ रहा था। दोनों कुमार उठ खड़े हुए और मिलने के लिये खुशी खुशी भैरोसिंह की तरफ रवाना हुए। भैरोसिंह ने भी इन्हें दूर से देखा और तेजी के साथ चल कर इन दोनों भाइयों के पास आया। दोनों भाइयों ने खुशी से भैरोसिंह को गले लगाया और उसे साथ लिये हुए उसी चबूतरे पर चले आये जिस पर इन्द्रानी उनको बैठा गई थी।

इन्द्रजीत०। (चबूतरे पर बैठ कर) भैरो भाई! यह तिलिस्म का कारखाना है, यहां फूंक फूंक के कदम रखना चाहिये, अस्तु यदि मैं तुम पर शक कर के तुम्हें जांचने का उद्योग करूं तो तुम्हें खफा न होना चाहिये।

भैरो०। नहीं नहीं, मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूं कि आप लोगों की चालाकी और बुद्धिमानी की बातों से खफा होऊं, तिलिस्म और दुश्मन के घर में दोस्तों की जांच बहुत जरूरी है, बगल वाला मसा और कमर का दाग दिखलाने के अतिरिक्त बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन्हें सिवाय मेरे और आपके दूसरा कोई भी नहीं जानता जैसे 'लड़कपन वाला मजनू!'

इन्द्रजीत०। (हंस कर) बस बस, मुझे जांच करने की कोई जरूरत नहीं रही, अब यह बताओ कि तुम्हारा बटुआ तुम्हें मिला या नहीं?

भैरो०। (ऐयारी का बटुआ कुमार के आगे रख कर) आपके तिलिस्मी खंजर की बदौलत मेरा यह बटुआ मुझे मिल गया। शुक्र है कि इसमें की कोई चीज नुकसान नहीं गई सब ज्यों की त्यों मौजूद है। (तिलिस्मी खंजर और उसके जोड़ की अंगूठी देकर) लीजिये अपना तिलिस्मी खंजर, अब, मुझे इसकी कोई

भी जरूरत नहीं, मेरे लिये मेरा बटुआ काफी है।

इन्द्र०। (अंगूठी और तिलिस्मी खंजर लेकर) अब यद्यपि तुम्हारा किस्सा सुनना बहुत जरूरी है क्योंकि हम लोगों ने एक आश्चर्य घटना के अन्दर तुम्हें छोड़ा था, मगर इस समय सब के पहिले अपना हाल तुम्हे सुना देना उचित जान पडता है क्योंकि एकान्त का समय बहुत कम है और उन दोनों औरतों के आ जाने में बहुत विलम्ब नहीं है जिनकी बदौलत हम लोग यहा आये हैं और जिनके फेर में अपने को पड़ा हुआ समझते हैं।

भैरो०। क्या किसी औरत ने आप लोगों को धोखा दिया!

इन्द्रजीत०। निश्चय तो नहीं कह सकता कि धोखा दिया मगर जो कुछ हाल है उसे सुन के राय दो कि हमलोग अपने को धोखे में फंसा हुआ समझें या नहीं?

इसके बाद कुअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना कुल हाल भैरोसिंह से जुदा होने के बाद से इस समय तक का कह सुनाया। इसके जवाब में अभी भैरोसिंह ने कुछ कहा भी न था कि सामने वाले कमरे का दर्वाजा खुला और उसमें से इन्द्रानी को निकल कर अपनी तरफ आते देखा।

इन्द्रजीत०। (भैरो से) लो वह आ गई! एक तो यही औरत है, इसी का नाम इन्द्रानी है, मगर इस समय वह दूसरी औरत इसके साथ नहीं है जिसे यह अपनी सगी छोटी बहिन बताती है।

भैरो०। (ताज्जुब से उस औरत की तरफ देख कर) इसे तो मैं पहिचानता हूं मगर यह नहीं जानता था कि इसका नाम 'इन्द्रानी' है।

इन्द्र०। तुमने इसे कब देखा?

भैरो०। तिलिस्मी खंजर लेकर आपसे जुदा होने के बाद

बटुआ पाने के सम्बन्ध में इसने मेरी बड़ी मदद की थी, जब मैं अपना हाल आपको सुनाऊंगा तब आपको मालूम होगा कि यह कैसी नेक औरत है मगर इसकी छोटी बहिन को मैं नहीं जानता, शायद उसे भी देखा हो।

इतने ही में इन्द्रानी वहां आ पहुंची जहां भैरोसिंह और दोनों कुमार बैठे बातचीत कर रहे थे। जिस तरह भैरोसिंह ने इन्द्रानी को देखते ही पहिचान लिया था उसी तरह इन्द्रानी ने भी भैरोसिंह को देखते ही पहिचान लिया और कहा, "क्या आप भी यहां आ पहुंचे? अच्छा हुआ, क्योंकि आपके आने से दोनों कुमारों का दिल बहलेगा और इसके अतिरिक्त मुझ पर भी किसी तरह का शक शुबहा न रहेगा।"

भैरो०। जी हां मैं भी यहां आ पहुंचा और आपको दूर से देखते ही पहिचान लिया बल्कि कुमार से कह भी दिया कि इन्होंने मेरी बड़ी सहायता की थी।

इन्द्रानी०। यह तो बताओ कि स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा चुके हो या नहीं?

भैरो०। हां मैं स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा चुका हूं और हर तरह से निश्चिन्त हूं।

इन्द्रानी०। (दोनों कुमारों से) और आप लोग?

इन्द्र०। हम दोनों भाई भी।

इन्द्रानी०। अच्छा तो अब आप लोग कृपा करके उस कमरे में चलिये।

भैरो०। बहुत अच्छी बात है, (दोनों कुमारों से) चलिये।

भैरोसिंह को लिये हुए कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उस कमरे में गये जिसे इन्द्रानी ने इनके लिये खोला था। कुमार ने इस कमरे को देख कर बहुत पसन्द किया क्योंकि यह

कमरा बहुत बड़ा और खूबसूरती के साथ सजाया हुआ था। इसकी छत बहुत ऊंची और रंगीन थी, दीवारों पर भी मुसौवर ने अनोखा काम किया था। कुछ दीवारों पर जंगल पहाड़ खोह कदरा घाटी और शिकारगाह तथा बहते हुए चश्मे का अनोखा सीन ऐसे अच्छे ढग से दिखाया गया था कि देखने वाला नित्य पहरों देखा करे और उसका चित्त न भरे। मौके मौके से जंगली जानवरों की तसवीरें भी ऐसी बनी थीं कि देखने वालों को उनके असली होने का धोखा होता था। दीवारों पर बनी हुई तस्वीरों के अतिरिक्त कागज और कपड़ों पर बनी हुई तथा सुन्दर चौखटों में जड़ी हुई तस्वीरों की भी इस कमरे में कमी न थी। ये तस्वीरें केवल हसीन और नौजवान औरतों की थीं जिनकी खूबसूरती और भाव को देख कर देखने वाला प्रेम से दीवाना हो सकता था। इन्हीं तस्वीरों में इन्द्रानी और आनन्दी की तस्वीर भी थी जिन्हें देखते ही कुंअर इन्द्रजीतसिंह हंस पड़े और भैरोसिंह की तरफ देख के बोले, "देखो यह तस्वीर इन्द्रानी की और यह उनकी बहिन आनन्दी की है, इन्हें तो तुमने न देखा होगा?"

भैरो०। जी इनकी छोटी बहिन को तो मैंने नहीं देखा।

इन्द्र०। ये स्वयम् जैसी खूबसूरत है वैसी ही तस्वीर भी बनी है। (इन्द्रानी की तरफ देख कर) मगर अब हमें इस तस्वीर के देखने की कोई जरूरत नहीं।

इन्द्रानी०। (हंस कर) बेशक, क्योंकि अब आप स्वतन्त्र और लड़के नहीं रहे।

इन्द्रानी का जवाब सुन कर भैरोसिंह तो खिलखिला कर हंस पड़ा मगर आनन्दसिंह ने मुश्किल से हंसी रोकी।

इस कमरे में रोशनी का सामान (दीवारगीर डोल हांडी

इत्यादि) भी बेशकीमत खूबसूरत और अच्छे ढंग से लगा हुआ था। सुन्दर बिछावन और फर्श के अतिरिक्त चांदी और सोने की कई कुर्सियां भी उस कमरे में मौजूद थीं जिन्हें देख कर कुअर इन्द्रजीतसिंह ने एक सोने की कुरसी पर बैठने का इरादा किया मगर इन्द्रानी ने सभ्यता के साथ रोक कर कहा—"पहिले आप लोग भोजन कर लें क्योंकि भोजन का सब सामान तैयार है और ठण्ढा हो रहा है।"

इन्द्र०। भोजन करने की तो इच्छा नहीं है।

इन्द्रानी०। (चेहरा उदास बना कर) तो फिर आप हमारे मेहमान क्यों बने थे? क्या अब आप अपने को बेमुरौवत और झूठा बनाया चाहते हैं?

इन्द्रानी ने कुमार को हर तरह से कायल और मजबूर कर के भोजन करने के लिये तैयार किया। इस कमरे में एक छोटा सा दर्वाजा दूसरे कमरे में जाने के लिये बना हुआ था, उसी राह से दोनों कुमार और भैरोसिंह को लिये हुए इन्द्रानी दूसरे कमरे में पहुँची। यह कमरा बहुत छोटा और राजाओं के पूजा पाठ तथा भोजन इत्यादि ही के योग्य बना हुआ था। कुमार ने देखा कि दोनों भाइयों के लिये उत्तम से उत्तम भोजन का सामान चांदी और सोने के बर्तनों में तैयार है और हाथ में सुन्दर पंखा लिये आनन्दी उसकी हिफाजत कर रही है। इन्द्रानी ने आनन्दी के हाथ से पंखा ले लिया और कहा, "भैरोसिंह भी आ पहुंचे हैं, इनके वास्ते भी सामान बहुत जल्द ले आओ।"

आज्ञा पाते ही आनन्दी चली गई और थोड़ी देर में कई औरतों के साथ भोजन का सामान लिये हुए लौट आई। करीने से सब सामान लगाने बाद उसने उन औरतों को बिदा कर दिया जिन्हें अपने साथ लाई थी।

दोनों कुमार और भैरोसिंह भोजन करने के लिये बैठे, उस समय इन्द्रजीतसिंह ने भेद भरी निगाह से भैरोसिंह की तरफ देखा। भैरोसिंह ने भी इशारे ही मे लापरवाही दिखा दी। इस बात को इन्द्रानी और आनन्दी ने भी ताड लिया कि कुमार को इस भोजन मे बेहोशी की दवा का शक हुआ मगर कुछ बोलना मुनासिब न समझ कर चुप रह गई। जब तक दोनों कुमार भोजन करते रहे तब तक आनन्दी पंखा हाकती रही। दोनों कुमार इन दोनों औरतों का बर्ताव देख कर बहुत खुश हुए और मन मे कहने लगे कि ये औरतें जितनी खूबसूरत हैं उतनी ही नेक भी हैं, जिनके साथ ये ब्याही जायगी उनके बडभागी होने मे कोई सन्देह नहीं (क्योंकि ये दोनों कुमारी मालूम होती थीं)।

भोजन समाप्त होने पर आनन्दी ने दोनों कुमार और भैरोसिंह के हाथ धुलाये और इसके बाद फिर दोनों कुमार और भैरोसिंह, इन्द्रानी और आनन्दी के साथ साथ उसी पहिले वाले कमरे मे आये। इन्द्रानी ने कुअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "अब थोडी देर आप लोग आराम करें और मुझे इजाजत दें तो ..."

इन्द्रजीत०। मेरा जी तुम लोगों का हाल जानने के लिये बेचैन हो रहा है इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम एक पल के लिये भी कहीं जाओ जब तक कि मेरी बातों का पूरा पूरा जवाब न दे लो, मगर यह तो बताओ कि तुम लोग भोजन कर चुकी हो या नहीं?

इन्द्रानी०। जी अभी तो हम लोगों ने भोजन नहीं किया है जैसी मर्जी हो

इन्द्रजीत०। तब मै इस समय नहीं रोक सकता, मगर इस

बात का वादा जरूर ले लूंगा कि तुम घण्टे भर से ज्यादे देर न लगाओगी और मुझे अपने इन्तजार का दु:ख न दोगी।

इन्द्रानी०। जी मैं वादा करती हूं कि घण्टे भर के अन्दर ही आपकी सेवा में लौट आऊंगी।

इतना कह कर आनन्दी को साथ लिये हुए इन्द्रानी चली गई और दोनों कुमार तथा भैरोसिंह को बातचीत करने का मौका दे गई।

छठवां बयान

इन्द्रानी और आनन्दी के चले जाने के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और भैरोसिंह में यों बातचीत होने लगी —

इन्द्रजीत०। (भैरो से) असल बात जो कुछ मैं इन्द्रानी से पूछा चाहता था उसका मौका तो अभी तक मिला ही नहीं।

भैरो०। यही कि तुम कौन और कहां की रहने वाली हो इत्यादि ?

इन्द्रजीत०। और किशोरी कामिनी कमलिनी इत्यादि कहां हैं ? तथा उनसे मुलाकात क्यों कर हो सकती है ?

आनन्द०। (भैरो से) इस बात का कुछ पता तो शायद तुम भी दे सकोगे, क्योंकि हम लोगों के पहिले तुम इन्द्रानी को जान चुके हो और कई ऐसी जगहों में घूम भी चुके हो जहां हम लोग अभी तक नहीं गये हैं।

इन्द्रजीत०। हां पहिले तुम अपना हाल तो कहो।

भैरो०। सुनिये—अपना बटुआ पाने की उम्मीद में जब मैं उस दर्वाजे के अन्दर गया तो जाते ही मैंने उन दोनों को ललकार के कहा, 'मैं भैरोसिंह स्वयं आ पहुंचा।' इतने ही में वह दर्वाजा जिस राह से मैं उस कमरे में गया था बन्द हो गया।

यद्यपि उस समय मुझे एक प्रकार का भय मालूम हुआ परन्तु बटुए की लालच ने मुझे उस तरफ देर तक ध्यान न देने दिया और मैं सीधा उस नकाबपोश के पास चला गया जिसकी कमर मे मेरा बटुआ लटक रहा था।

मैं समझे हुए था कि 'पीला मकरन्द' अर्थात पीली पोशाक वाला नकाबपोश स्याह नकाबपोश का दुश्मन तो है ही अतएव स्याह नकाबपोश का मुकाबला करने मे 'पीले मकरन्द' से मुझे कुछ मदद अवश्य मिलेगी, मगर मेरा खयाल गलत था। मेरा नाम सुनते ही वे दोनों नकाबपोश मेरे दुश्मन हो गये और यह कह कर मुझसे लड़ने लगे कि यह ऐयारी का बटुआ अब तुझे नहीं मिल सकता, जब रहेगा तो हम दोनों में से किसी एक के पास ही रहेगा।

परन्तु मैं इस बात से भी हताश न हुआ। मुझे उस अपने बटुए की लालच ऐसी न थी कि उन दोनों के धमकाने से डर जाता और अपने बटुए के पाने से नाउम्मीद हो कर अपने बचाव की सूरत देखता, इसके अतिरिक्त आपका तिलिस्मी खंजर भी मुझे हताश नहीं होने देता था, अस्तु मैं उन दोनों के वारों का जवाब उन्हें देने और दिल खोल कर लड़ने लगा और थोड़ी ही देर में विश्वास करा दिया कि राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का मुकाबला करना हंसी खेल नहीं है।*

थोड़ी देर तक तो दोनों नकाबपोश मेरा वार बहुत अच्छी तरह बचाते चले गये मगर इसके बाद जब उन दोनों ने देखा कि अब उनमें वार बचाने की कुदरत नहीं रही और तिलिस्मी खञ्जर जिस जगह बैठ जायगा दो टुकडे किये बिना न रहेगा तब पीले मकरन्द ने ऊंची आवाज में कहा, "भैरोसिंह, ठहरो

* बहुत ठीक, सत्य बचन।

ठहरो, जरा मेरी बात सुन लो तो लड़ना ! ओ स्याह नकाबवाले, क्यों अपनी जान का दुश्मन बन रहा है ? जरा ठहर जा और मुझे भैरोसिंह से दो दो बातें कर लेने दे।"

पीले मकरन्द की बात सुन कर स्याह नकाबपोश ने और साथ ही मैंने भी लड़ाई से हाथ खैंच लिया मगर तिलिस्मी खंजर की रोशनी को कम होने न दिया। इसके बाद पीले मकरन्द ने मुझसे पूछा, "तुम हम लोगों से क्यों लड़ रहे हो ?"

मैं०। (स्याह नकाबपोश की तरफ बता कर) इसके पास मेरा ऐयारी का बटुआ है जिसे मैं लिया चाहता हूं।

पीला मकरन्द०। तो मुझसे क्यों लड़ते हो ?

मैं०। तुमसे नहीं लड़ता तुम खुद मुझसे लड़ते हो ?

पीला मक०। (स्याह नकाबपोश से) क्यों, अब क्या इरादा है, इनका बटुआ खुशी से इन्हें दे दोगे या लड़ कर अपनी जान दोगे ?

स्याह नकाबपोश०। जब बटुए का मालिक स्वयम् आ पहुंचा है तो बटुआ देने में मुझे क्यों इन्कार हो सकता है ? हां यदि ये न आते तो मैं तुम्हें बटुआ कदापि न देता।

पी० मक०। जब ये न आते तो मैं भी देख लेता कि तुम वह बटुआ मुझे कैसे नहीं देते, खैर अब इनका बटुआ इन्हें दे दो और पीछा छुड़ाओ।

स्याह नकाबपोश ने बटुआ खोल कर मेरे आगे रख दिया और कहा, "अब तो मुझे छुट्टी मिली ?" इसके जवाब में मैंने कहा, "नहीं, पहिले मुझे देख लेने दो कि मेरी अनमोल चीजें इसमें हैं या नहीं।"

मैंने उस बटुए के बन्धन पर निगाह पड़ते ही पहिचान लिया कि मेरे हाथ की दी हुई गिरह ज्यों की त्यों मौजूद है तथापि

होशियारी के तौर पर बटुआ खोल कर देख लिया और जब निश्चय हो गया कि मेरी सब चीजें इसमें मौजूद है तो खुश हो कर बटुआ कमर मे लगा लिया और स्याह नकाबपोश से बोला, "अब मेरी तरफ से तुम्हे छुट्टी है मगर यह तो बता दो कि कुमार के पास मैं किस राह से जा सकता हू ?" इसका जवाब स्याह नकाबपोश ने यह दिया कि यह सब हाल मै नहीं जानता, तुम्हे जो कुछ पूछना है पीले मकरन्द से पूछ लो।

इतना कह कर स्याह नकाबपोश न मालूम किधर चला गया और मै पीले मकरन्द का मुंह देखने लगा। पीले मकरन्द ने मुझसे पूछा, "अब तुम क्या चाहते हो ?"

मैं०। अपने मालिक के पास जाया चाहता हू।

पीला मक०। तो जाते क्यो नही ?

मैं०। क्या उस दरवाजे की राह से जा सकूगा जिधर से आया था ?

पीला मक०। क्या तुम देखते नही कि वह दर्वाजा बन्द हो गया और अब तुम्हारे खोलने से वह नहीं खुल सकता।

मैं०। तब मै क्यो कर बाहर जा सकता हू ?

इसके जवाब मे पीले मकरन्द ने कहा, 'तुम मेरी सहायता के बिना यहा से निकल कर बाहर नही जा सकते क्योकि रास्ता बहुत कठिन और चक्करदार है खैर तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ मैं तुम्हे यहा से बाहर कर दूगा।"

पीले मकरन्द की बात सुन कर मै उसके साथ साथ जाने के लिये तैयार हो गया मगर फिर भी अपना दिल भरने के लिये मैंने एक दफे उस दरवाजे को खोलने का उद्योग किया जिधर से उस कमरे में गया था। जब वह दर्वाजा न खुला तब लाचार हो कर मैंने पीले मकरन्द का सहारा लिया मगर दिल मे इस

वात का खयाल जमा रहा कि कहीं वह मेरे साथ दगा न करे।

पीले मकरन्द ने चिराग उठा लिया और मुझे अपने पीछे पीछे आने के लिये कहा और मैं तिलिस्मी खजर हाथ में लिये हुए उसके पीछे पीछे रवाना हुआ। पीले मकरन्द ने विचित्र ढग से कई दरवाजे खोले और मुझे कई कोठरियो में घुमाता हुआ मकान के वाहर ले गया। मैं तो समझे हुए था कि अब आपके पास पहुँचा चाहता हू मगर जब बाहर निकलने पर देखा तो अपने को किसी और ही मकान के दरवाजे पर पाया। चारो तरफ सुवह की सुफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी और मै ताज्जुव की निगाहो से चारो तरफ देख रहा था। उस समय पीले मकरन्द ने मुझे उस मकान के अन्दर चलने के लिये कहा मगर इस जगह वह स्वयम् पीछे हो गया और मुझे आगे चलने के लिये कहा। उसकी इस वात से मुझे शक पैदा हुआ, मैंने उससे कहा कि जिस तरह अभी तक तुम मेरे आगे आगे चले आये हो उसी तरह अब भी इस मकान के अन्दर क्यो नहीं चलते ? मैं तुम्हारे पीछे पीछे चला चलूगा। इसके जवाब मे पीले मकरन्द ने सिर हिलाया और कुछ कहा ही चाहता था कि मेरे पीछे की तरफ से आवाज आई, "ओ भैरोसिंह ! खबरदार ! इस मकान के अन्दर पैर न रखना ! और इस पीले मकरन्द को पकड रखना, भागने न पावे !!"

मैं घूम कर पीछे की तरफ देखने लगा कि यह आवाज देने वाला कौन है ! इतने ही मे इस इन्द्रानी पर मेरी निगाह पडी जो तेजी के साथ चल कर मेरी तरफ आ रही थी। पलट कर मैंने पीले मकरन्द की तरफ देखा तो उसे मौजूद न पाया, न मालूम वह यकायक क्योंकर गायब हो गया। जब इन्द्रानी मेरे पास पहुँची तो उसने कहा, "तुमने बडी भूल की जो उस शैतान मक-

रन्द को पकड न लिया। उसने तुम्हारे साथ धोखेबाजी की! बेशक वह तुम्हारे बटुए की लालच में तुम्हारी जान लिया चाहता था। ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि मुझे खबर लग गई और मैं दौड़ी हुई यहा तक चली आई। वह कम्बख्त मुझे देखते ही भाग गया।"

इन्द्रानी की बात सुन कर मैं ताज्जुब में आ गया और उसका मुंह देखने लगा। सब से ज्यादे ताज्जुब मुझे इस बात का था कि इन्द्रानी जैसी खूबसूरत और नाजुक औरत को देखते ही वह शैतान मकरन्द भाग क्यों गया। इसके अतिरिक्त देर तक तो मैं इन्द्रानी की खूबसूरती ही को देखता रह गया। (मुस्कुरा कर) माफ कीजियेगा बुरा न मानियेगा क्योंकि मैं सच कहता हू कि इन्द्रानी को मैंने किशोरी से भी बढ़ कर खूबसूरत पाया। सुबह के सोहावने समय में उसका चेहरा दिन की तरह दमक रहा था।

इन्द्रजीत०। यह तुम्हारी खुशनसीबी थी कि सुबह के वक्त ऐसी खूबसूरत औरत का मुंह देखा।

भैरो०। उसी का यह फल मिला कि जान बच गई और आपसे मिल सका।

इन्द्रजीत०। खैर तब क्या हुआ?

भैरो०। मैंने धन्यवाद देकर इन्द्रानी से पूछा कि तुम कौन हो और यह मकरन्द कौन था? इसके जवाब में इन्द्रानी ने कहा कि यह तिलिस्म है, यहा के भेदों को जानने का उद्योग न करो, जो कुछ आप से आप मालूम होता जाय उसे समझते जाओ। इस तिलिस्म मे तुम्हारे दोस्त और दुश्मन बहुत हैं। अभी तो आये हो, दो चार दिन मे बहुत सी बातों का पता लग जायगा, हा अपने बारे में मैं इतना जरूर कह दूंगी कि मैं इस तिलिस्म

की रानी हूं और तुम्हें तथा दोनों कुमारों को अच्छी तरह जानती हूं।

इन्द्रानी इतना कह के चुप हो गई और पीछे की तरफ देखने लगी। उसी समय और भी चार पांच औरतें आ पहुँची जो खूबसूरत कमसिन और अच्छे गहने कपडे पहिने हुए थीं। मैंने किशोरी कामिनी वगैरह का हाल इन्द्रानी से पूछना चाहा मगर उसने बात करने की मोहलत न दी और यह कह कर मुझे एक औरत के सुपुर्द कर दिया कि यह तुम्हें कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास पहुँचा देगी। इतना कह कर बाकी औरतों को साथ लिये हुए इन्द्रानी चली गई और मुझे तरद्दुद मे छोड गई। अन्त में उसी औरत की मदद से मैं यहां तक पहुंचा।

इन्द्रजीत०। आखिर उस औरत से भी तुमने कुछ पूछा या नहीं?

भैरो०। पूछा तो बहुत कुछ मगर उसने जवाब एक बात का भी न दिया मानो वह कुछ सुनती ही न थी। हां एक बात कहना तो मैं भूल ही गया।

इन्द्र०। वह क्या?

भैरो०। इन्द्रानी के चले जाने बाद जब मैं उस औरत के साथ इधर आ रहा था तब रास्ते में एक लपेटा हुआ कागज मुझे मिला जो जमीन पर इस तरह पड़ा हुआ था जैसे किसी राह चलते की जेब से गिर गया हो। (कमर से कागज निकाल कर और कुंअर इन्द्रजीतसिंह के हाथ मे देकर) लीजिये पढ़िये, मैं तो इसे पढ़ कर पागल सा हो गया था।

भैरोसिंह के हाथ मे कागज लेकर कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने पढ़ा और उसे अच्छी तरह देख कर भैरोसिंह से कहा, "बडे आश्चर्य की बात है! मगर यह हो नहीं सकता, क्योंकि हमारा

दिल हमारे कब्जे में नहीं है और न हम किसी के आधीन हैं ॥"

आनन्द०। भैया! जरा मैं भी देखूं यह कागज कैसा है और इसमें क्या लिखा है?

इन्द्रजीत०। (वह कागज दे कर) लो देखो।

आनन्द०। (कागज पढ़ कर और उसे अच्छी तरह देख कर) यह तो अच्छी जबर्दस्ती है, मानो हम लोग कोई चीज ही नहीं है! (भैरो से) जिस समय यह चीठी तुमने जमीन पर से उठाई थी उस समय उस औरत ने भी देखा या तुमसे कुछ कहा था कि नहीं जो तुम्हारे साथ थी?

भैरो०। उसे इस बात की कुछ भी खबर नहीं थी क्योंकि वह मेरे आगे आगे चल रही थी। मैंने जमीन पर से चीठी उठाई भी और पढ़ी भी मगर उसे कुछ भी मालूम न हुआ। मुझे शक होता है कि वह गूंगी बहरी तथा हद से ज्यादे सूधी या बेवकूफ थी।

आनन्द०। इस पर मोहर इस ढंग की पड़ी हुई है जैसे किसी राजदर्बार की हो।

भैरो०। बेशक ऐसी ही मालूम पड़ती है! (हंस कर इन्द्रजीतसिंह से) चलिये आपके लिये तो पौबारह है, किस्मत का धनी होना इसे कहते हैं॥

इन्द्र०। तुम्हारी ऐसी की तैसी"

पाठकों के सुबीते के लिये हम उस चीठी की नकल यहां लिख देते हैं जिसे पढ़ कर और देख कर दोनो कुमारों और भैरोसिंह को ताज्जुब मालूम हुआ था —

पूज्यवर!

पत्र पाकर चित्त प्रसन्न हुआ। आपकी राय बहुत अच्छी है। उन दोनों के लिये कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ऐसा वर मिलना

कठिन है, इसी तरह दोनों कुमारों को भी ऐसी स्त्री नहीं मिल सकती। बस अब इसमें सोच विचार करने की कोई जरूरत नहीं, आपकी आज्ञानुसार मैं आठ पहर के अन्दर ही सब सामान दुरुस्त कर दूंगा, बस परसों ब्याह हो जाना ही ठीक है। बड़े लोग इस तिलिस्म में जो कुछ दहेज की रकम रख गये हैं वह इन्हीं दोनों कुमारों के योग्य है। यद्यपि इन दोनों का दिल चुटीला हो चुका है परन्तु हमारा प्रताप भी तो कोई चीज है! जब तक दोनों कुमार आपकी आज्ञा न मानेंगे तब तक जा कहां सकते हैं, अन्त को वह होना आवश्यक है जो आप चाहते हैं।

मोहर

द०—मु० मा०।"

इस चीठी को कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने पुनः पढ़ा और ताज्जुब करते हुए अपने छोटे भाई की तरफ देख के कहा, "ताज्जुब नहीं कि यह चीठी किसी ने दिल्लगी के तौर पर लिख कर भैरोसिंह के रास्ते में डाल दी हो और हम लोगों को तरद्दुद में डाल कर तमाशा देखा चाहता हो।"

आनन्द०। कदाचित ऐसा ही हो! अगर कमलिनी से मुलाकात हो गई होती तो

भैरो०। तब क्या होता? मैं यह पूछता हूं कि इस तिलिस्म के अन्दर आ कर आप दोनों भाइयों ने क्या किया! अगर इसी तरह से समय बिताया जायगा तो देखियेगा कि आगे चल कर क्या क्या होता है।

इन्द्रजीत०। तो तुम्हारी क्या राय है, बिना समझे बूझे तोड़ फोड़ मचाऊं?

भैरो०। बिना समझें बूझे तोड फोड मचाने की क्या जरूरत है ! तिलिस्मी किताब और तिलिस्मी बाजे से आपने क्या पाया और वह किस दिन काम आवेगा ! क्या इन बागों का हाल उसमे लिखा हुआ न था ?

इन्द्रजीत०। लिखा हुआ तो था मगर साथ ही इसके यह भी अन्दाज मिलता था कि तिलिस्म के य हिस्से टूटने वाले नही है।

भैरो०। यह तो मै भी बिना तिलिस्मी किताब पढ़े ही समझ सकता हू कि तिलिस्म के ये हिस्से टूटने वाले नहीं हैं, अगर टूटने वाले होते तो किशोरी कामिनी वगैरह को राजा गोपालसिंह हिफाजत के लिये यहा न पहुँचा देते, मगर यहा से निकल जाने का या तिलिस्म के उस हिस्से मे पहुचने का रास्ता तो जरूर होगा जिसे आप तोड़ सकते है।

आनन्द०। हा इसमे क्या शक है।

भैरो०। अगर शक नहीं है तो उसे खोजना चाहिये।

इतने ही मे इन्द्रानी और आनन्दी भी आ पहुँची जिन्हे देख दोनों कुमार बहुत प्रसन्न हुए और इन्द्रजीतसिंह ने इन्द्रानी से कहा—"मै बहुत देर से तुम्हारे आने का इन्तजार कर रहा था।"

इन्द्रानी०। मेरे आने मे वादे से ज्यादे देर तो नही हुई !

इन्द्रजीत०। न सही मगर एक ऐसे आदमी के लिये जिसका दिल तरह तरह के तरद्दुदों और उलझेडों मे पड कर खराब हो रहा हो, इतना इन्तजार भी कम नहीं है।

इस समय इन्द्रानी और आनन्दी यद्यपि सादी पोशाक में थीं मगर किसी तरह की सजावट की मुहताज न रहने वाली इनकी खूबसूरती देखने वाले का दिल, चाहे वह परले सिरे का

त्यागी क्यों न हो, अपनी तरफ खैंचे बिना नहीं रह सकती थी। नुकीले हर्बों से ज्यादे काम करने वाली उनकी बड़ी बड़ी आखों में मारने और जिलाने वाली दोनों तरह की शक्तियां मौजूद थी। गालों पर इत्तफाक से आ पड़ी हुई घुघराली लट शान्त बैठे हुए मन को भी चाबुक लगा कर अपनी तरफ मुतवज्जह कर रही थी। सूधेपन और नेकचलनी का पता देने वाली सीधी और पतली नाक तो जादू का काम कर ही रही थी मगर उनके खूबसूरत पतले और लाल लाल ओठों को हिलते देखने और उनमें से तुले हुए तथा मन लुभाने वाले शब्दों के निकलने की लालसा से दोनों कुमारों को छुटकारा नहीं मिल सकता था और उनकी सुराहीदार गर्दनों पर गर्दन देने वालों की कमी नहीं हो सकती थी। केवल इतना ही नहीं, उनके सुन्दर सुडौल और उचित आकार वाले अंगों की छटा बड़े बड़े कवियों और चित्रकारों को भी चक्कर में डाल कर लज्जित कर सकती थी।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के आग्रह से वे दोनों उनके सामने बैठ गई मगर अदब का पल्ला लिये और सर नीचा किये हुए।

इन्द्रानी०। इस जल्दी और थोड़े समय में हमलोग आपकी खातिरदारी और मेहमानी का इन्तजाम कुछ भी न कर सकीं मगर मुझे आशा है कि कुछ देर के बाद इस कसूर की माफी का इन्तजाम अवश्य कर सकूंगी।

इन्द्रजीत०। इतना क्या कम है कि मुझ ऐसे नाचीज मुसाफिर के साथ यहां की रानी होकर तुमने ऐसा अच्छा बर्ताव किया। अब आशा है कि जिस तरह तुमने अपने बर्ताव से मुझे प्रसन्न किया है, उसी तरह मेरे सवालों का जवाब देकर भी मेरा सन्देह दूर करोगी।

इन्द्रानी०। आप जो कुछ पूछना चाहते हों पूछें, मुझे जवाब देने में किसी तरह का उज्र न होगा।

इन्द्रजीत०। किशोरी कामिनी कमलिनी और लाडिली वगैरह इस तिलिस्म के अन्दर आई हैं?

इन्द्रानी०। जी हां आई तो हैं।

इन्द्रजीत०। क्या तुम जानती हो कि इस समय वे सब कहां हैं?

इन्द्रानी०। जी हां, मैं अच्छी तरह जानती हूं। इस बाग के पीछे सटा हुआ एक और तिलिस्मी बाग है, सभों को लिये हुए कमलिनी उसी में चली गई हैं और उसी में रहती हैं।

इन्द्रजीत०। क्या हमलोगों को तुम उसके पास पहुंचा सकती हो?

इन्द्रानी०। जी नहीं।

इन्द्रजीत०। क्यों?

इन्द्रानी०। वह बाग एक दूसरी औरत के आधीन है जिससे बढ़ कर मेरा दुश्मन इस दुनिया में कोई नहीं।

इन्द्रजीत०। तो क्या तुम उस बाग में कभी नहीं जाती?

इन्द्रानी०। जी नहीं, क्योंकि एक तो दुश्मनी के खयाल से मेरा जाना वहां नहीं होता, दूसरे उसने रास्ता भी बन्द कर दिया है, इसी तरह मैं भी उसके पक्षपातियों को अपने बाग में नहीं आने देती।

इन्द्रजीत०। तो हमारी उनकी मुलाकात क्योंकर हो सकती है।

इन्द्रानी०। यदि आप उन सभों से मिला चाहें तो तीन चार दिन और सब्र करें क्योंकि अब ईश्वर की कृपा से ऐसा प्रबन्ध हो गया है कि तीन चार दिन के अन्दर ही वह बाग

भी मेरे कब्जे में आ जाय और उसका मालिक मेरा कैदी बने। मेरे दारोगा ने तो कमलिनी को उस बाग में जाने से मना किया था मगर अफसोस कि उसने दारोगा की बात न मानी और धोखे में पड़ कर अपने को एक ऐसी जगह जा फसाया जहा से हमलोगो का सम्बन्ध कुछ भी नही।

इन्द्रजीत०। तो क्या तुम लोग राजा गोपालसिह के आधीन नहीं हो ?

इन्द्रानी०। हम लोग जरूर राजा गोपालसिंह के आधीन है। मैं खूब जानती हू कि आप यहा के तिलिस्म को तोड़ने के लिय आये हैं, अस्तु इस बात को तो जानते ही होंगे कि यहा के बहुत से ऐसे हिस्से हैं जिन्हे आप तोड़ नहीं सकेंगे।

इन्द्रजीत०। हा जानते हैं।

इन्द्रानी०। उन्ही हिस्सों में से जो टूटने वाले नही हैं, कई दर्जे ऐस हैं जो केवल सैर तमाशे के लिय बनाये गये हैं और वहा जमानिया का राजा प्राय अपने मेहमानो को भेज कर सैर तमाशा दिखाया करता है, अस्तु इसलिये कि वह जगह हमेशे अच्छी हालत मे बनी रहे हमलोगो के कब्जे में दी गई है और नाम मात्र के लिये हमलोग तिलिस्म की रानी कहलाती है, मगर हा इतना जरूर है कि हमलोगो को सोना चादी और जवाहिरात की (यहा की बदौलत) कमी नही है।

इन्द्रजीत०। जिन दिनों राजा गोपालसिंह को मायारानी ने कैद कर लिया था उन दिनों यहा की क्या अवस्था थी ? मायारानी भी कभी यहा आती थी या नहीं ?

इन्द्रानी०। जी नहीं, मायारानी को इन सब बातो औ जगहो की कुछ खबर ही न थी इसलिये वह अपने समय में यहा कभी नहीं आई और तब तक हमलोग स्वतन्त्र बने रहे।

अब इधर जब से आपने राजा गोपालसिंह को कैद से छुड़ा कर हम लोगों को पुनः जीवन दान दिया है तब से केवल तीन दफे राजा गोपालसिंह यहां आये हैं और चौथी दफे परसों मेरी शादी में यहां आवेंगे।

इन्द्रजीत०। (चौंक कर) क्या परसों तुम्हारी शादी होने वाली है"!

इन्द्रानी०। (कुछ शर्मा कर) जी हां, मेरी और (आनन्दी की तरफ इशारा करके) मेरी इस छोटी बहिन की भी।

इन्द्रजीत०। किसके साथ?

इन्द्रानी०। मुझे मालूम नहीं।

इन्द्रजीत०। शादी करने वाले कौन है? तुम्हारे मां बाप होंगे?

इन्द्रानी०। जी, मेरे मां बाप नहीं है केवल गुरुजी महाराज हैं जिनकी आज्ञा मुझे मां बाप की आज्ञा से भी बढ़ कर माननी पड़ती है।

भैरो०। (इन्द्रानी से) इस तिलिस्म के अन्दर कल परसों में किसी और का ब्याह भी होने वाला है?

इन्द्रानी०। नहीं।

भैरो०। मगर हमने सुना है।

इन्द्रानी०। कदापि नहीं, अगर ऐसा होता तो हम लोगों को पहिले खबर होती।

इन्द्रानी का जवाब सुन कर भैरोसिंह ने मुस्कुराते हुए कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की तरफ देखा और दोनों कुमारों ने भी उनका मतलब समझ कर सर नीचा कर लिया।

इन्द्रजीत०। (इन्द्रानी से) क्या तुम लोगों में पर्दे का कुछ खयाल नहीं रहता?

इन्द्रानी०। पर्दे का खयाल बहुत ज्यादे रहता है मगर उस आदमी से पर्दे का वर्ताव करना पाप समझा जाता है जिसको ईश्वर ने तिलिस्म तोड़ने की शक्ति दी है। तिलिस्म तोड़ने वाले को हम ईश्वर समझें यही उचित है।

आनन्द०। तो तुम राजा गोपालसिंह के पास जा सकती हो? या हमारी चीठी उनके पास पहुंचा सकती हो?

इन्द्रानी०। मैं स्वयं राजा गोपालसिंह के पास जा सकती हू और अपना आदमी भी भेज सकती हू मगर आज कल ऐसा करने का मौका नहीं क्योंकि आज कल मायारानी वगैरह खास बाग मे आई हुई है और उनसे तथा राजा गोपालसिंह से बदाबदी हो रही है, अस्तु आज कल राजा गोपालसिंह भी एक से अनेक बने हुए हैं, शायद यह बात आपको भी मालूम होगी।

इन्द्रजीत०। हा मालूम है।

इन्द्रानी०। ऐसी अवस्था मे हमलोगो का या हमारे आदमियो का वहा जाना अनुचित ही नहीं बल्कि दुखदाई होगा।

इन्द्रजीत०। हा सो तो जरूर है।

इन्द्रानी०। मगर मैं आपका मतलब समझ गई, आप उसके विषय में राजा गोपालसिंह को लिखा चाहते है जिसके हिस्से मे किशोरी कामिनी वगैरह पड़ी हुई है, मगर ऐसा करने की कोई जरूरत नही है, दो रोज सब्र कीजिये तब तक स्वयम् राजा गोपालसिंह ही यहा आकर आपसे मिलेंगे।

इन्द्रजीत०। अच्छा यह बताओ कि हमारी चीठी किशोरी या कमलिनी के पास पहुंचवा सकती हो?

इन्द्रानी०। जी हा बल्कि उसका जवाब भी मगवा सकती हू, मगर ताज्जुब की बात है कि कमलिनी ने आपके पास कोई

पत्र क्यों नहीं भेजा! इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्हें आप लोगों का यहां आना मालूम है।

इन्द्रजीत०। शायद कोई सबब होगा, अच्छा तो मैं कमलिनी के नाम से एक चीठी लिख दूं ?

इन्द्रानी०। हां लिख दीजिये, मैं उसका जवाब मंगा दूंगी।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने भैरोंसिंह की तरफ देखा। भैरोंसिंह ने अपने बटुए में से कलम दावात और कागज निकाल कर कुमार के सामने रख दिया और कुमार ने कमलिनी के नाम से इस मजमून की चीठी लिख कर और बन्द करके इन्द्रानी के हवाले कर दी—

वृथा ही है, क्योंकि तुम अपनी आप मुख्तार हो, मुझसे मिलो चाहे न मिलो यह तुम्हारी इच्छा है, मगर अपना तथा अपने साथियों का कुशल मङ्गल तो लिख भेजो, या यदि अब मुझे इस योग्य भी नहीं समझती तो जाने दो।

क्या कहें, किसका—

इन्द्रजीत।"

कुअर आनन्दसिंह की भी इच्छा थी कि अपने दिल का कुछ हाल कामिनी और लाडिली को लिखे परन्तु कई बातों का खयाल करके रह गये। इन्द्रानी कुंअर इन्द्रजीतसिंह की लिखी हुई चीठी लेकर उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई अपनी छोटी बहिन को साथ लिये चली गई कि अब मैं चिराग जले के बाद आप लोगों से मिलूंगी, तब तक आप लोग यदि इच्छा हो तो इस बाग की सैर करें मगर किसी मकान के अन्दर जाने का उद्योग न करें।

सातवां बयान

अब हम थोड़ा सा हाल गोपालसिंह का लिखते हैं। जब वह बरामदे पर से झांकने वाला आदमी मायारानी के चलाये हुए तिलिस्मी तमञ्चे की तासीर से बेहोश हो कर नीचे आ गिरा और भीमसेन उसके चेहरे की नकाब हटाने और सूरत देखने पर चौंक कर बोल उठा कि वाह वाह! यह तो राजा गोपालसिंह हैं! तब मायारानी बहुत ही प्रसन्न हुई और भीमसेन से बोली, "बस अब विलम्ब करना उचित नहीं है, एक ही बार में सिर धड़ से अलग कर देना चाहिए।"

भीम०। नहीं नहीं, इसे एक दम से मार डालना उचित न

होगा बल्कि कैद कर के तिलिस्म का कुछ हाल मालूम करना लाभदायक होगा।

माया०। मैंने इसे कैद में रख कर हद से ज्यादे तकलीफें दी तब तो इसने तिलिस्म का कुछ हाल कहा ही नहीं अब क्या कहेगा, बस इसे मार डालना ही मुनासिब है।

इसके जवाब में उसी बरामदे पर से जिस पर से वह आदमी लुढक कर नीचे आ रहा था किसी ने कहा, "तिलिस्म का हाल जानने का शौक अभी तक लगा ही हुआ है! इस बात की खबर नहीं कि अब तुम लोगों के मरने में केवल सात घण्टे की देर रह गई है।"

सभों ने चौंक कर उधर की तरफ देखा और पुनः एक आदमी को उसी बरामदे में टहलते हुए पाया मगर अबकी दफे इस आदमी का चेहरा नकाब से खाली था और एक बलती हुई मोमबत्ती बायें हाथ में मौजूद थी जिससे उसका रोबीला चेहरा साफ साफ दिखाई दे रहा था। मायारानी और उसके साथियों को यह देख कर बड़ा ही ताज्जुब हुआ कि यह दूसरा आदमी भी राजा गोपालसिंह ही मालूम पडता था, बल्कि बनिस्बत पहिले आदमी के ठीक राजा गोपालसिंह मालूम होता था। इस कैफियत ने मायारानी का कलेजा हिला दिया और वह डर से काँपती हुई उसकी तरफ इस तरह देखने लगी जैसे कोई लाचार जंगल में अकस्मात आ पड़े हुए शेर की तरफ देखता हो।

सभों को अपनी तरफ ताज्जुब के साथ देखते देख उस आदमी ने पुनः कहा, "न तो यह राजा गोपालसिंह है और न इसकी जुबानी तिलिस्म का कोई भेद ही तुम लोगों को मालूम हो सकता है! जरा आ [illegible] मायारानी, तू तो वर्षों मेरे

साथ रह चुकी है, क्या तू भी मुझे नहीं पहिचानती? राजा गोपालसिंह मैं हूं या वह है? क्या तू उसके नाटे कद को नहीं देखती? अगर वह गोपालसिंह होता तो क्या उस तिलिस्मी तमंचे की एक गोली खा कर गिर पड़ता? भला मुझ पर भी तो एक नहीं पचास गोली चला, देख क्या असर होता है!"

इस नये गोपालसिंह की इस बात ने मायारानी की रही सही ताकत भी हवा कर दी और अब उसे अपने सामने मौत की सूरत दिखाई देने लगी। यद्यपि उसने इस गोपालसिंह पर भी तिलिस्मी तमंचा चलाने का इरादा किया था मगर अब उसके हाथों में इतनी ताकत न रही कि तमंचे में गोली डाल कर चला सके। उसी की तरह उसके साथी भी घबड़ा कर इन नये राजा गोपालसिंह की तरफ देखने और अपने मन में सोचने लगे, "व्यर्थ इस मायारानी के फेर में पड़ कर यहां आये!"

इस नये गोपालसिंह ने पुनः पुकार कर मायारानी से कहा, "हां हां, सोचती क्या है? तिलिस्मी तमंचा चला और तमाशा देख, या कह तो मैं स्वयं तेरे पास चला आऊं? और भीमसेन वगैरह! तुम लोग क्यों इसके फेर में पड़ कर अपनी अपनी जान दे रहे हो! क्या तुम समझ रहे हो कि यह तिलिस्म की रानी हो जायगी और तुम्हें अपना हिस्सेदार बना लेगी? कदापि नहीं, अब इसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती और मैं अभी नीचे आ कर तुम सभों का काम तमाम करता हूं! हां अगर तुम लोग अपनी जान बचाया चाहते हो तो मैं तुम्हें कहता हूं कि मायारानी का खयाल न कर के उसे इसी जगह छोड़ दो और तुम लोग उस सुफेद संगमर्मर के चबूतरे पर भाग कर चले जाओ, खबरदार दूसरी जगह मत खड़े होना और मेरे नीचे आने के पहिले ही पहिले यहां से हट कर उस

होगा बल्कि कैद कर के तिलिस्म का कुछ हाल मालूम करना लाभदायक होगा।

माया०। मैंने इसे कैद में रख कर हद्द मे ज्यादे तकलीफें दीं तब तो इसने तिलिस्म का कुछ हाल कहा ही नहीं अब क्या कहेगा, बस इसे मार डालना ही मुनासिब है।

इसके जवाब मे उसी बरामदे पर से जिस पर से वह आदमी लुढ़क कर नीचे आ रहा था किसी ने कहा, 'तिलिस्म का हाल जानने का शौक अभी तक लगा ही हुआ है! इस बात की खबर नहीं कि अब तुम लोगों के मरने में केवल सात घण्टे की देर रह गई है।"

सभों ने चौंक कर उधर की तरफ देखा और पुनः एक आदमी को उसी बरामदे मे टहलते हुए पाया मगर अबकी दफे इस आदमी का चेहरा नकाब से खाली था और एक बलती हुई मोमबत्ती बायें हाथ मे मौजूद थी जिससे उसका रोबीला चेहरा साफ साफ दिखाई दे रहा था। मायारानी और उसके साथियों को यह देख कर बड़ा ही ताज्जुब हुआ कि यह दूसरा आदमी भी राजा गोपालसिंह ही मालूम पड़ता था, बल्कि बनिस्बत पहिले आदमी के ठीक राजा गोपालसिंह मालूम होता था। इस कैफियत ने मायारानी का कलेजा हिला दिया और वह डर से कांपती हुई उसकी तरफ इस तरह देखने लगी जैसे कोई व्याध जंगल में अकस्मात् आ पड़े हुए शेर की तरफ देखता हो।

सभों को अपनी तरफ ताज्जुब के साथ देखते देख उस आदमी ने पुनः कहा, "न तो वह राजा गोपालसिंह हैं और न उसकी जुबानी तिलिस्म का कोई भेद ही तुम लोगों को मालूम हो सकता है! अरी ओ कम्बख्त मायारानी, तू तो बर्षों मेरे

साथ रह चुकी है, क्या तू भी मुझे नहीं पहिचानती? राजा गोपालसिंह मैं हूं या वह है? क्या तू उसके नाटे कद को नहीं देखती? अगर वह गोपालसिंह होता तो क्या उस तिलिस्मी तमंचे की एक गोली खा कर गिर पड़ता? भला मुझ पर भी तो एक नहीं पचास गोली चला, देख क्या असर होता है।"

इस नये गोपालसिंह की इस बात ने मायारानी की रही सही ताक़त भी हवा कर दी और अब उसे अपने सामने मौत की सूरत दिखाई देने लगी। यद्यपि उसने इस गोपालसिंह पर भी तिलिस्मी तमंचा चलाने का इरादा किया था मगर अब उसके हाथों में इतनी ताकत न रही कि तमंचे में गोली डाल कर चला सके। उसी की तरह उसके साथी भी घबड़ा कर इन नये राजा गोपालसिंह की तरफ देखने और अपने मन में सोचने लगे, "व्यर्थ इस मायारानी के फेर में पड़ कर यहां आये।"

इस नये गोपालसिंह ने पुनः पुकार कर मायारानी से कहा, "हां हां, सोचती क्या है? तिलिस्मी तमंचा चला और तमाशा देख, या कह तो मैं स्वयं तेरे पास चला आऊं? और भीमसेन वगैरह! तुम लोग क्यों इसके फेर में पड़ कर अपनी अपनी जान दे रहे हो! क्या तुम समझ रहे हो कि यह तिलिस्म की रानी हो जायगी और तुम्हें अपना हिस्सेदार बना लेगी? कदापि नहीं, अब इसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती और मैं अभी नीचे आ कर तुम सभों का काम तमाम करता हूं! हां अगर तुम लोग अपनी जान बचाया चाहते हो तो मैं तुम्हें कहता हूं कि मायारानी का खयाल न कर के उसे इसी जगह छोड़ दो और तुम लोग उस सुफेद संगमर्मर के चबूतरे पर भाग कर चले जाओ, खबरदार दूसरी जगह मत खड़े होना और मेरे नीचे आने के पहिले ही पहिले यहां से हट कर उस

चबूतरे पर चले जाना नहीं तो पछताओगे !"

इतना कह कर नये गोपालसिंह ने मोमबत्ती नीचे की तरफ फेंक दी और पीछे की तरफ हट कर उन लोगों की नजरों से गायब हो गया।

अब भीमसेन और माधवी वगैरह को निश्चय हो गया कि मायारानी के किये कुछ न होगा और इसका साथ करके हम लोगों ने व्यर्थ अपने को आफत में ला फसाया। इस तिलिस्मी बाग तथा राजा गोपालसिंह की माया का पता नहीं लग सकता, अस्तु अब मायारानी का साथ देना और गोपालसिंह की बात न मानना निःसन्देह अपना गला अपने हाथ से काटना है। इतना सोचते सोचते ही वे लोग गोपालसिंह के कहे मुताबिक उस सगमर्मर के चबूतरे पर चले गये जो उनसे थोड़ी ही दूर पर उनके पीछे की तरफ था।

होना तो ऐसा ही चाहिये था कि गोपालसिंह की बातों से डर कर मायारानी भी उन लोगों के साथ ही साथ उसी सग-मर्मर वाले चबूतरे पर चली जाती मगर न मालूम क्या सोच कर उसने ऐसा न किया और वहां से भाग कर उन फौजी सिपाहियों की भीड़ मे जा छिपी जो इस बाग मे पडे हुए इस समय की बातें सुन तो नहीं सकते थे मगर ताज्जुब के साथ सब कुछ देख जरूर रहे थे।

वह सगमर्मर का चबूतरा जिस पर भीमसेन वगैरह चले गये थे, उनके जाने के थोड़ी ही देर बाद इस तेजी के साथ जमीन के अन्दर धंस गया कि उन लोगों को कूद कर भागने की भी मोहलत न मिली। कुछ देर बाद उन सभों को न मालूम कहां उलट कर वह चबूतरा फिर ऊपर चला आया और ज्यों का त्यों अपने स्थान पर जम गया।

इस समय केवल सुबह की सुपेदी ही ने चारों तरफ अपना दखल नहीं जमा लिया था बल्कि आसमान पर पूरब तरफ सूर्य की लालिमा भी कुछ दूर तक फैल चुकी थी, इस लिये उस चबूतरे पर जाने वाले भीमसेन और माधवी वगैरह का जो हाल हुआ था वह माधवी के फौजी सिपाहियों ने भी बखूबी देख लिया था। अपने मालिक और उनके साथियों की यह दशा देख फौजी सिपाही भी घबडा गये और चाहने लगे कि यदि कहीं रास्ता मिल जाय तो हम लोग भी यहां से भाग अपनी जान बचावें। इन्हें अपने झुन्ड में मायारानी का आ जाना बहुत ही बुरा मालूम हुआ और उन्होंने बडी बेमुरोवती के साथ मायारानी से कहा, "तुम्हारी ही बदोलत हमलोगों की यह दशा हुई और हमारे मालिकों पर भी आफत आई, अस्तु अब तुम हमारा मण्डली में से चली जाओ नहीं तो हम लोग जूते से तुम्हारे सर की खबर लेंगे! तुम्हारे चले जाने बाद हमलोगों पर जो कुछ बीतेगी सह लेंगे।"

अफसोस! अपनी करतूतों के कारण आज मायारानी इस दशा को पहुंच गई कि अपने सिपाहियों की भिड़की सहे और जूतियां खाय। सिपाहियों की बात जब मायारानी ने न मानी तो कई सिपाहियों ने जूतियों से उसकी खबर ली, उसी समय ऊपर से किसी के पुकारने की आवाज आई।

जिस जगह वे सिपाही लोग थे उससे थोड़ी ही दूर पर एक बुर्ज था। इस समय उसी बुर्ज पर चढे हुए राजा गोपालसिंह को उन सिपाहियों ने देखा और मालूम किया कि यह आवाज उन्हीं ने दी थी।

इनकी कैफियत देख कर सिपाहियों का कलेजा पहिले ही दहल चुका था परन्तु अब इस बात का हौसला नहीं कर सकते

थे कि उनका मुकाबला करें। देखने के साथ ही उस फौज का अफसर हाथ जोड कर खड़ा हो गया और बोला, "आज्ञा ?"

गोपालसिंह ने कहा, "हम खूब जानते है कि तुम लोग बेकसूर हो और जो कुछ कसूर है वह तुम्हारे मालिकों का है, सो तुमने देख ही लिया कि वे अपनी सजा को पहुँच गये, अब वे जीते नहीं हैं जो तुमसे आकर मिलेंगे, अस्तु अब तुम लोगों को हुक्म दिया जाता है कि तुम लोग अपनी अपनी जान बचा कर यहा से निकल जाओ। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम्हारे जाने के लिये दर्वाजा खोल दिया जाय और तुम लोग बाग से बाहर हो कर जहां इच्छा हो चले जाओ। यदि तुम लोग चाहोगे अ र नेकचलनी का वादा करोगे तो हमारी फौज में तुम लोगों को जगह भी मिल जायगी।"

फौजी अफसर०। (हाथ जोडे हुए) आप स्वयं राजा है और जानते हैं कि सिपाही लोग तनखाह के वास्ते लड़ते है। जो राज्य या जमीन के वास्ते लडे और सिपाहियों की तनखाह दे कसूर उसी का समझा जाता है। हमारे मालिक नादान थे, आपके प्रताप का खयाल न करके मायारानी की बातों में आ कर नष्ट हो गये, अब हम लोग आपके आधीन हैं और चाहते हैं कि हम लोगों को इस कैद से छुटकारा ही नहीं बल्कि आपके सरकार में नौकरी भी मिले, इस समय हम लोग अपने को आपही का ताबेदार समझते हैं।

गोपाल०। अच्छा तो जैसा तुम चाहते हो वैसा ही होगा। इस समय से तुम्हें अपना नौकर समझ के हुक्म दिया जाता है कि मायारानी को जो तुम लोगों के बीच मे चली आई है जूतिया लगाकर अलग कर दो और (हाथ का इशारा कर के) उस तरफ की दीवार के पास चले जाओ। वहा तुम्हें एक छोटा

सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई देगा, बस उसी राह से तुम लोग बाहर चले जाना और किसी ठिकाने मैदान में डेरा जमाना। हमारा राजदीवान स्वयम तुम्हारे पास पहुँच कर सब इन्तजाम ठीक कर देगा। मगर खबरदार! इस बात का खूब ख्याल रखना कि मायारानी तुम लोगों के साथ बाहर न जाने पावे और तुम लोगों में से एक आदमी भी उसका साथ न दे।

फौजी अफसर०। जो हुक्म।

मायारानी बेइज्जत तो हो ही चुकी थी मगर फिर भी दूर खड़ी यह सब कार्रवाई और बातें देख सुन रही थी। उसे इन सिपाहियों की नमकहरामी पर बड़ा क्रोध आया और वह वहां से भाग कर पश्चिम की तरफ वाले दालान में चली गई तथा एक कोठड़ी के अन्दर घुस कर गायब हो गई। शायद इस कोठड़ी में कोई तहखाना या रास्ता था जिसका हाल उसे मालूम था। उसी राह हो कर वह मकान की दूसरी मंजिल पर चली गई और उसी जगह से छिप कर तिलिस्मी तमंचे की गोली उन फौजी सिपाहियों पर चलाने लगी जो राजा गोपालसिंह की आज्ञानुसार दर्वाजे की तरफ जा रहे थे। इन गोलियों की तासीर का हाल हम पहिले कई जगह लिख आये हैं और बता आए हैं कि इन गोलियों में से निकला हुआ धूआं आले दर्जे की बेहोशी का असर बात की बात बात में पैदा करता था, अस्तु बेचारे सिपाहियों को दर्वाजे तक पहुँचने की भी मोहलत न मिली और तीन ही चार गोलियों में से निकले हुए धूए ने उन सभों को बेहोश करके जमीन पर लेटा दिया।

अपनी इस कार्रवाई को देख कर मायारानी बहुत प्रसन्न हुई मगर उसकी प्रसन्नता ज्यादा देर तक कायम न रही क्योंकि उसी समय उसने राजा गोपालसिंह को उन सिपाहियों की तरफ

जाते देखा वह ताज्जुब मे आ कर उसी जगह खडी खडी देखने लगी कि अब क्या होना है। उसने देखा कि राजा गोपाल-सिह ने उन सिपाहियो के मध्य मे पहुँच कर एक गोला जमीन पर पटका जो गिरते ही एक भारी आवाज के साथ फट गया और उसमे से इतना ज्यादा धूँआ निकला कि उसने क्रमश फैल कर हर तरफ से उन सिपाहियो को घेर लिया और फिर हलका हो कर आस्मान को तरफ उठ गया। उस धूए की तासीर से सब सिपाहियो की बेहोशी जाती रही और वे लोग उठ कर ताज्जुब के साथ एक दूसरे का मुह देखने लगे। सिपा-हियों के अफसर ने अपने पास गोपालसिह को मौजूद पाया और निगाह पडते ही हाथ जोड कर बोला, "आपने तो हम लोगो को बाहर चले जाने कि आज्ञा दे दी थी, फिर हम लोग बेहोश क्यो कर दिये गये।"

इसके जवाब मे गोपालसिह ने कहा, "तुम लोगो को हमने नही बल्कि कम्बख्त मायारानी ने बेहोश किया था, हमने यहा पहुँच कर तुम लोगो की बेहोशी दूर कर दी, अब तुम लोग एक सागत भी विलम्ब न करो और शीघ्र ही यहा से चले जाओ।"

उस अफसर ने झुक कर सलाम किया और अपने सिपा-हियो को कुछ इशारा कर के वहा से चल पडा। यह हाल देख मायारानी ने पुन तिलिस्मी तमचे की गोलिया उन लोगो पर चलाई मगर इसका असर कुछ भी न हुआ और वे सब सिपाही राजा गोपालसिह की बदौलत थोडी ही देर मे इस तिलिस्मी बाग के बाहर हो गये। फिर मायारानी को यह भी न मालूम हुआ कि राजा गोपालसिह कहा गए और क्या हुए॥

आठवाँ बयान

वास्तव में भूतनाथ का हाल बड़ा ही विचित्र है। अभी तक उसका असल भेद खुलने में नहीं आता। वह जहां जाता है वहां ही एक विचित्र घटना देखने में आती है, जिससे मिलता है उसी में एक नई बात पैदा होती है, और जब जो कुछ करता है उसी में एक अनूठापन मालूम होता है। इस समय वह बलभद्रसिंह के साथ चुनारगढ़ वाले तिलिस्म में मौजूद है और वहां पहुँचने के साथ ही वह सुन चुका है कि कल राजा वीरेन्द्रसिंह भी इस जगह आने वाले हैं। वीरेन्द्रसिंह को तो आये हुए आज कई दिन हो चुके होते मगर उन्होंने जान बूझ कर रास्ते में बहुत देर लगा दी। नकली किशोरी कामिनी और कमला की क्रिया कर्म का बखेड़ा (जिसका करना लोगों को धोखे में डालने के लिये आवश्यक था) चुनार में ले जाना उन्होंने पसन्द न किया बल्कि रास्ते ही में निपटा डालना उचित जाना, इस लिये और पन्द्रह बीस दिन की देर उन्हें रास्ते ही में हो गई और इसी से वहां पहुँच जाने पर भूतनाथ ने सुना कि राजा वीरेन्द्रसिंह कल आने वाले हैं।

उस खंडहर में पहुंचने पर रात के समय भूतनाथ ने जो कुछ तमाशा देखा था उसका विचित्र हाल तो हम ऊपर के किसी बयान में लिख ही चुके हैं, आज उसी के आगे का हाल लिख कर हम अपने पाठकों के चित्त में भूतनाथ की तरफ से पुनः एक तरह का खुटका पैदा किया चाहते हैं।

बलभद्रसिंह ने जब अपने सिर्हाने वाला लिफाफा उठा कर शमादान के सामने खोला तो उसके अन्दर से एक अंगूठी निकली जिसे देखते ही वह चिल्ला उठा और तब बिना कुछ

कहे अपनी चारपाई पर आ कर बैठ गया। भूतनाथ ने उससे पूछा, "क्यों यह अंगूठी कैसी है और इसे देख कर तुम घबड़ा क्यों गये ?"

बलभद्र०। इस अंगूठी ने मुझे कई ऐसी बात याद दिला दी जिन्हे मैं स्वप्न की तरह कभी कभी याद करके चौंक पड़ता था, मगर आज नही मैं फिर कभी इसका खुलासा हाल तुमसे कहूगा।

भूत०। भला देखो तो सही उस लिफाफे के अन्दर कोई चीठी भी है या केवल यह अंगूठी ही थी।

बलभद्र०। (लिफाफा भूतनाथ के हाथ में दे कर) लो तुम्ही देखो।

भूत०। (शमादान के पास लिफाफा ले जा कर और उसे अच्छी तरह देख कर) हा हा इसमें चीठी भी तो है।

बलभद्र०। (भूतनाथ के पास जा कर) देखे।

भूतनाथ ने वह चीठी बलभद्रसिंह के हाथ में दे दी और बलभद्रसिंह ने बड़े शौक से उसे पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

'यह अंगूठी दे कर तुम्हे विश्वास दिलाते हैं कि तुम हमारे हो और हम तुम्हारे हैं। भूतनाथ को अपना सच्चा सहायक समझो और जो कुछ वह कहे उसे करो। भूतनाथ यह नहीं जानता कि हम कौन हैं मगर हम कल उससे मिल कर अपना परिचय देंगे और जो कुछ कहना होगा कहेंगे।"

इस चीठी को पढ़ कर दोनों के जी मे एक तरह का खुटका पैदा हो गया और बिना कुछ विशेष बातचीत किये दोनों अपनी अपनी चारपाई पर जा कर लेट रहे, मगर बची हुई रात दोनों ने अपनी आंखों में ही काटी, किसी को नींद न आई।

दूसरे दिन सवेरे ही पन्नालाल उन दोनों के पास पहुंचे और रात भर का कुशल मंगल पूछा। दोनों ही ने दुनियादारी के तौर

पर कुशल मंगल कह कर बातचीत की मगर रात के विचित्र हाल को अपने दिल के अन्दर ही छिपा रक्खा।

दिन भर इन दोनों की बड़े चैन और आराम से बीती, जीतसिंह से भी मुलाकात और तरह तरह की बातें हुई मगर जीतसिंह और उनकी आज्ञानुसार किसी ऐयार ने भी उन दोनों से मुकद्दमे की बाबत किसी तरह का सवाल न किया क्योंकि यह बात पहिले ही से तय पा चुकी थी कि बिना राजा बीरेन्द्रसिंह के आये इस बारे में किसी तरह की बातचीत भूतनाथ से न की जायगी।

आज किसी समय राजा बीरेन्द्रसिंह के आने की खबर थी मगर वे न आये। सन्ध्या के समय हरकारे ने आ कर जीतसिंह को खबर दी कि राजा साहब कल सन्ध्या के समय यहां आवेंगे, भूतनाथ और बलभद्रसिंह के आने की खबर उन्हें हो गई है।

सन्ध्या होने के साथ ही भूतनाथ और बलभद्रसिंह के दिल में धुकधुकी पैदा हो गई कि देखा चाहिये कि आज की रात कैसी गुजरती है, तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से कौन निकलता है, और क्या कहता है!

रात आधी से ज्यादे जा चुकी है। कल की तरह आज भी इस लम्बे चौड़े मकान के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ है। भूतनाथ और बलभद्रसिंह अपनी अपनी चारपाई पर लेटे हुए हैं मगर नींद किसी की आंखों में नहीं है और दोनों का ध्यान उसी तिलिस्मी चबूतरे की तरफ है। कल की तरह आज भी उस चबूतरे वाले दालान में कन्दील जल रही है जिसके सबब से वह पत्थर वाला चबूतरा साफ दिखाई दे रहा है।

भूतनाथ ने देखा कि कल की तरह आज भी उस पत्थर वाले चबूतरे का दर्वाजा खुला और उसके अन्दर से एक

स्याह लबादा ओढ़े हुए निकला। धीरे धीरे घूमता फिरता वह उस कमरे के दर्वाजे पर पहुँचा जिसमें भूतनाथ और बलभद्रसिंह आराम कर रहे थे। कमरे का दर्वाजा खुलने के साथ ही वे दोनों उठ बैठे और उस आदमी को कमरे के अन्दर पैर रखते हुए देखा।

उस आदमी ने हाथ के इशारे से बलभद्रसिंह को बैठने के लिये कहा और भूतनाथ को अपने पास बुलाया। भूतनाथ चारपाई के नीचे उतर पडा और अपना तिलिस्मी खंजर जो खूंटी के साथ लटक रहा था लेकर उस आदमी के पास गया। वह आदमी भूतनाथ को अपने साथ कमरे के बाहर वाले दालान में ले गया। और वहां से सीढ़ी की राह नीचे उतरने के लिये कहा। भूतनाथ चुपचाप उसके साथ नीचे चला गया।

यहां भी एक कन्दील जल रही थी और चारो तरफ सन्नाटा था। उस आदमी ने अपना चेहरा खोल दिया और भूतनाथ को अपनी तरफ अच्छी तरह देखने के लिये कहा। भूतनाथ सूरत देखते ही चौंक पडा और बोला—"हैं! यह मैं किसकी सूरत देख रहा हूं! क्या धोखा तो नहीं है?"

आदमी०। नहीं नहीं, धोखा नहीं है, 'मेमकुलचे' कहने से शायद तुम्हारा शक जाता रहेगा।

भूतनाथ०। बस अब मेरा शक जाता रहा, मगर आप कहां? क्या मुझे किसी तरह का विचित्र हुक्म दिया जायगा? या मुझे राजा साहब से माफी मांगने की मोहलत ही न मिलेगी?

आदमी०। हां तुम्हें एक विचित्र हुक्म दिया जायगा मगर यह बताओ कि राजा साहब के बारे में तुमने क्या सुना है? वे कब तक यहां आयेंगे?

भूत०। राजा वीरेन्द्रसिंह कल यहां अवश्य आ जायंगे,

आज हरकारे ने आ कर यह पक्की खबर जीतसिंह को दी है।

आदमी०। (कुछ सोच कर) तब तो बड़ी मुश्किल हुई, हमारे लिये नही बल्कि तुम्हारे लिये।

भूत०। (काप कर) सो क्या? मैंने अब कौन सा नया अपराध किया है?

आदमी०। नया अपराध किया तो नही मगर करना पड़ेगा।

भूत०। नही नही, मैं अब कोई अपराध न करूंगा जो कुछ कर चुका हू उसी का कलंक मिटना मुश्किल हो रहा है।

आदमी०। मगर क्या किया जाय, लाचारी है, अपराध तो करना ही होगा और सो भी इसी समय।

भूत०। (कुछ सोच कर) भला यह तो बताइये कि अपराध क्या है और क्या करना होगा?

आदमी०। यह तो जानते ही हौ कि बलभद्रसिंह हमारा है।

भूत०। जी हा मगर इस समय तो मेरी जान बचाने वाला है।

आदमी०। बेशक।

भूत०। तब आप क्या चाहते है?

आदमी०। यही कि इस समय बलभद्रसिंह को बेहोश करके हमारे हवाले कर दो। हम तो उन्हें कल ही उठा ले गये होते मगर कल हमें निश्चय हो गया था कि तुम जाग रहे हौ, अतएव लड़ने के लिये अवश्य तैयार हो जाओगे, इसी लिये सोचा कि पहिले तुम्हें अपना परिचय दे लें तब वह काम करें जिसमें तुम्हारा दिल भी खुटके में न रहे।

भूत०। यह बड़ी मुश्किल हुई, अच्छा तो कल राजा वीरेन्द्रसिंह से उनकी मुलाकात करा लेने दीजिये।

आदमी०। यह नहीं हो सकता, उन्हें हम आज ही ले जायगे

नहीं तो हमारा हर्ज होगा और उस हर्ज में तुम्हारा भी नुक्सान है।

भूत०। हाय! नुक्सान और दुःख भोगने के लिये तो मैं पैदा ही हुआ हूं! न जाने मेरी क़िस्मत मे निश्चिन्त होना भी बदा है या नहीं! राजा बीरेन्द्रसिंह सुन चुके हैं कि भूतनाथ बलभद्रसिंह को छुडा लाया है, अब अगर इस समय आप उन्हे ले जायगे और कल राजा बीरेन्द्रसिंह उन्हे मुझसे मांगेंगे तो मैं क्या जवाब दूंगा?

आदमी०। कह देना कि मै रात को सोया हुआ था, न मालूम बलभद्रसिंह कहा चले गये! मुझे खबर नहीं, आप अपने पहरे वालों से पूछिये।

भूत०। हा यदि आप न मानेंगे तो ऐसा करना ही पड़ेगा।

आदमी०। तो बस अब विलम्ब न करो, झटपट जाओ और उन्हें बेहोश करके हमारे पास ले आओ।

भूत०। जिस समय मैंने बलभद्रसिंह को छुड़ाया था उस समय उन्हें विश्वास नहीं होता था कि मैं उनके साथ नेकी कर रहा हूं, बड़ी मुश्किल से तो उन्हे विश्वास दिलाया, इस समय आप जानते हैं कि वे भी जाग रहे हैं, आप ही उन्हे बैठे रहने के लिये कह आये है, अब जो मैं उन्हें जबर्दस्ती बेहोश करूंगा तो उनके दिल में क्या आवेगा? क्या वे यह नहीं समझेंगे कि भूतनाथ ने नेकनीयती के साथ मेरी जान नहीं बचाई?

आदमी०। अगर ऐसा समझेंगे तो समझने दो, तुम सोच क्या रहे हो? क्या मेरा हुक्म न मानोगे?

भूत०। मेरी क्या मजाल जो आपका हुक्म न मानूं!!

इतने ही मे उसी तरह का स्याह लबादा ओढ़े और भी एक आदमी वहां आ पहुंचा। भूतनाथ समझ गया कि वह आदमी

इसी का साथी है और कल भी यहां आया था। उस नये आये हुए आदमी ने पहिले आदमी से खास बोली (भाषा) में कुछ बातचीत की जिसे भूतनाथ कुछ भी न समझ सका, इसके बाद उसने भी परदा हटा के अपनी सूरत भूतनाथ को दिखा दी।

अब भूतनाथ के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा, वह एक दम घबडा के बोल उठा, "नहीं नहीं, मैं जागता नहीं हू बल्कि जो कुछ देख रहा हू सब स्वप्न है!"

दूसरा आदमी०। भूतनाथ! तुम पागल हो गये हो!!

भूत०। बेशक यही बात है, या तो मैं स्वप्न देख रहा हू या पागल हो गया हू।

पहिला आदमी०। न तो तुम स्वप्न देख रहे हो और न पागल ही हो गये हो, जो कुछ देख सुन रहे हो सब ठीक है। अच्छा अब तुम हमलोगों के साथ आओ, किसी दूसरी जगह अन्धेरे मे खड़े हो कर बातचीत करेगे, यहां केवल इस लिये खड़े हो गये थे कि तुम्हे अपनी सूरत दिखा दें।

इतना कह कर वे दोनों आदमी भूतनाथ को ... वार
हुए दूसरे दालान मे जहां बिल्कुल अन्धकार था ... हुए ? इस
बातचीत करने लगे। इस जगह उन तीनों में ... और जीतसिंह
यह ऐयारी भाषा मे हुई इसलिये लिख न स... उस खडहर वाले
कर इन बातों का जो कुछ नतीजा निकलेग... और तहखानों को
हो जायगा, हां इतना कह देना जरूरी ...गा। भूतनाथ से भी
तीनों मे खूब बाते होती रहीं, इस बी... इससे भी कुछ फायदा न
जोर से हसने की आवाज आई,
बलभद्रसिंह के कानों तक भी प... सिंह की सवारी उस तिलिस्मी
वहां से रवाना होकर बलभद्रसि... ाजा वीरेन्द्रसिंह तथा तेजसिंह

रह सब कोई उसी खडहर वाले मकान में उतरे। पहर भर रात जाते तक तो इन्तजामी हो हल्ला मचता रहा, इसके बाद लोगों की राजा साहब से मुलाकात करने की नौबत पहुँची मगर राजा साहब ने वहा पहुँचने के साथ ही भूतनाथ और बलभद्रसिंह का हाल जीतसिंह से पूछा था और बलभद्रसिंह के बारे मे जो कुछ हुआ था उन्होंने राजा साहब से वह सुनाया था। पहर रात जाने बाद जब भूतनाथ आज्ञानुसार दबार मे हाजिर हुआ तब राजा वीरेन्द्रसिंह ने उससे पूछा, "कहो भूतनाथ, अच्छे तो हो ?"

भूतनाथ०। (हाथ जोड कर) महाराज के प्रताप से प्रसन्न हूं।

वीरेन्द्र०। सफर में हमको जो कुछ रञ्ज और गम हुआ तुमने सुना ही होगा ?

भूतनाथ०। ईश्वर न करे महाराज को कभी रञ्ज और गम हो मगर हा समयानुकूल जो कुछ होना था हो ही गया।

वीरेन्द्र०। (ताज्जुब से) क्या तुम्हे इस बारे मे कुछ मालूम हुआ है ?

भूतनाथ०। जी हा।

वीरेन्द्र०। कैसे ?

भूतनाथ०। इसका जवाब तो देना कठिन है क्योंकि भूतनाथ बनिस्बत जुबान और कान के अन्दाज से ज्यादे काम लेता है।

वीरेन्द्र०। (मुस्कुरा कर) तुम्हारी होशियारी और चालाकी मे तो कोई शक नहीं है मगर अफसोस इसी बात का है कि तुम्हारे रहस्य तुम्हारी ही तरह दुविधा में डालने वाले है। अभी कल की बात है कि हमको तुम्हारे बारे मे इस बात की खुश-

खबरी मिली थी कि तुम बलभद्रसिंह को किसी भारी कैद से छुड़ा कर ले आये, मगर आज कुछ और ही बात सुनता हूं।

भूतनाथ०। जी हां, मैं तो हर तरह से अपनी किस्मत को सुलझाने का उद्योग करता हूं मगर विधाता ने उसमें ऐसी उलझन डाल दी है कि अब इस शरीर को चुनारगढ़ के कैदखाने का आनन्द अवश्य भोगना पड़ेगा।

वीरेन्द्र०। नहीं नहीं भूतनाथ, यद्यपि बलभद्रसिंह का यकायक गायब हो जाना तरह तरह के खुटके पैदा करता है मगर हमें तुम्हारे ऊपर किसी तरह का सन्देह नहीं हो सकता। अगर तुम्हें ऐसा करना ही होता तो इतनी आफत उठा कर उन्हें क्यों छुड़ाते और क्यों यहां तक लाते! अस्तु तुम हमारी खफगी से तो बेफिक्र रहो, मगर इस बात के जानने का उद्योग जरूर करो कि बलभद्रसिंह कहां गये और क्या हुए।

भूतनाथ०। (सलाम कर के) ईश्वर आपको सदैव प्रसन्न रक्खे, मैं आशा करता हूं कि एक सप्ताह के अन्दर ही बलभद्रसिंह का पता लगा कर उन्हें सरकार में उपस्थित करूंगा।

वीरेन्द्र०। शाबाश, अच्छा अब तुम जा कर आराम करो।

आज्ञानुसार भूतनाथ वहां से उठ कर अपने डेरे पर चला गया और बाकी लोग भी अपने अपने ठिकाने कर दिये गये। जब राजा वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह अकेले रह गये तब उन दोनों में यों बातचीत होने लगी :—

वीरेन्द्र०। कुछ समझ में नहीं आता कि यह रहस्य कैसा है? भूतनाथ की बातों से भी किसी तरह का खुटका नहीं होता।

तेज०। जहां तक पता लगाया गया है उससे यही जाहिर होता है कि बलभद्रसिंह इस इमारत के बाहर नहीं गये मगर इस बात का भी विश्वास करना कठिन हो रहा है।

वीरेन्द्र०। नि सन्देह ऐसा ही है।

तेज०। अब देखा चाहिये भूतनाथ एक सप्ताह के अन्दर क्या कर दिखाता है।

वीरेन्द्र०। यद्यपि मैंने भूतनाथ की दिलजमई कर दी है परतु उसका जी शान्त नहीं हो सकता। जो हो, मगर तुम उसे अपनी हिफाजत मे समझो और पता लगाओ कि यह मामला कैसा है।

तेज०। ऐसा ही होगा।

दूसरा बयान

मायारानी ने जब समझा कि वे फौजी सिपाही इस बाग के बाहर हो गये और गोपालसिंह को भी वहा न देखा तब हिम्मत करके अपने ठिकाने से निकली और पुनः बाग में आकर उस तरफ रवाना हुई जिधर उस गोपालसिंह को बेहोश छोड आई थी जो उसके चलाये हुए तिलिस्मी तमचे की गोली के असर से बेहोश होकर बरामदे के नीचे आ रहा था, मगर वहा पहुंचने के पहिले ही उसने उस दूसरे कूए के ऊपर एक गोपालसिंह को देखा जिसे फौजी सिपाहियों ने मिट्टी से पाट दिया था। मायारानी एक पेड की आड मे खडी हो गई और उसी जगह से तिलिस्मी तमचे वाली एक गोली उसने गोपालसिंह पर चलाई। गोली लगते ही गोपालसिंह लुडक कर जमीन पर आ रहा और मायारानी दौडती हुई उसके पास जा पहुंची। थोडी देर तक तो उसकी सूरत देखती रही, इसके बाद कमर से खञ्जर निकाल कर गोपालसिंह का सर काट डाला और तब खुशी भरी निगाहों से चारो तरफ देखने लगी यद्यपि उसे पूरा पूरा विश्वास न था कि मैने असली गोपालसिंह को मार डाला है।

[illegible] दिन बहुत चढ चुका था मगर अभी तक उसे जरूरी

कामों से निपटने या कुछ खाने पीने की परवाह न थी या यों कहिये कि उसे इन बातों की मोहलत ही नहीं मिल सकती थी। गोपालसिंह की लाश को उसी जगह छोड़ कर वह बाग के तीसरे दर्जे में जाने की नीयत से अपने दीवानखाने में आई और उसी मामूली राह से बाग के तीसरे दर्जे में चली गई जिस राह में एक दिन तेजसिंह भी वहां पहुंचाये गये थे।

वहां भी उसने दूर ही से नम्बर दो वाली कोठड़ी के दर्वाजे पर एक गोपालसिंह को बैठे बल्कि कुछ करते हुए देखा। मायारानी ताज्जुब में आकर थोड़ी देर तक तो उस गोपालसिंह को देखती रही इसके बाद उसे भी उसी तिलिस्मी तमंचे वाली गोली का निशाना बनाया। जब वह गोपालसिंह भी बेहोश होकर जमीन पर लेट गया तब मायारानी ने वहां पहुंच कर उसका सर भी काट डाला और एक लम्बी सांस लेकर आप ही आप बोली—"क्या अब भी असली गोपालसिंह न मरा होगा! मगर अफसोस, उस एक गोपालसिंह पर तो ऐसी गोली ने कुछ भी असर न किया था। कदाचित असली गोपालसिंह वही न हो!"

इसके जवाब में किसी ने कोठड़ी के अन्दर से कहा, "हां असली गोपालसिंह यह भी न था और असली गोपालसिंह अभी तक नहीं मरा!"

इस बात ने मायारानी का कलेजा दहला दिया और वह कांपती हुई ताज्जुब के साथ कोठड़ी के अन्दर देखने लगी।

अकस्मात कोठड़ी के अन्दर से निकलते हुए नानक पर मायारानी की निगाह पड़ी। नानक को देखते ही मायारानी का पुराना क्रोध (जो नानक के बारे में था) पुनः उसके चेहरे पर दिखाई देने लगा। वह कुछ देर तक तो नानक को देखती रही और इसके बाद उस तिलिस्मी गोली का निशाना बनाना चाहा

मगर नानक मायारानी की अवस्था देख कर हंस पड़ा और बोला, "क्या अब भी आप मुझे अपना पक्षपाती नहीं समझतीं !"

माया०। क्यों ? तूने कौन सा ऐसा काम किया है जिससे मैं तुझे अपना पक्षपाती समझूं ?

नानक०। क्या आपको इस बात की खबर न लगी होगी कि राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान तथा ऐयारों से मेरी गहरी दुश्मनी हो गई ? मेरा बाप गिरफ्तार करके दोषी ठहराया गया, वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने उसे बहुत तंग किया और इसी के साथ ही साथ मेरी बहुत बड़ी बेइज्जती की। मेरा बाप अपने बचाव की फिक्र कर रहा है और मैं उन सभों से बदला लेने का बन्दोबस्त कर रहा हूं। इस समय मैं इसी लिये यहां आया हूं कि आप मेरी सहायता करें और मैं आपका साथ दूं।

माया०। यदि तेरा कहना वास्तव में सच है तो बड़ी खुशी की बात है।

नानक०। जो कुछ मैं कह रहा हूं उसके सच होने में किसी तरह का सन्देह न कीजिये, मैं उन लोगों को बुराई में जान तक खर्च करने का संकल्प कर चुका हूं।

माया०। यदि तू पहिले ही मेरी बात मान चुका होता तो आज मुझे और तुझे दोनों ही को यह दिन देखना नसीब न होता। खैर आज भी अगर तू राह पर आ जाय तो हम लोग मिल जुल कर बहुत कुछ कर सकते हैं।

नानक०। उन दिनों मुझे हरी हरी सूझती थी और उस दरबार से बहुत कुछ पाने की आशा थी मगर इस बात की खबर न थी कि उनके ऐयार अपनी मंडली के सिवाय किसी नये या दूसरे ऐयार को अपने दर्बार में देखना पसन्द नहीं करते। मुझे कमलिनी ने जितनी उम्मीदें दिलाई थीं उसका एक अंश भी पूरा

न निकला. उल्टे मेरा बाप दोषी ठहराया गया।

माया०। भूतनाथ पर जो कुछ इलजाम लगाया गया है मुझे उसकी पूरी पूरी खबर लग चुकी है। अब भूतनाथ बिना मेरी मदद के किसी तरह अपनी जान नहीं बचा सकता और न वह बलभद्रसिंह का ही पता लगा सकता है। सच तो यों है कि भूतनाथ ने मुझे भी बड़ा धोखा दिया है।

नानक०। उन दिनों जो कुछ उन्होंने किया सो किया क्योंकि कमलिनी की दिखाई हुई उम्मीदों ने उन्हें भी अन्धा कर दिया था, मगर अब तो उन्हें कमलिनी से भी दुश्मनी हो गई है, और मैं भी यह सुन कर कि कमलिनी वगैरह को राजा गोपालसिंह ने इसी बाग में ला कर रक्खा है उससे बदला लेने का खयाल कर के यहां आया हूं।

माया०। यहां का रास्ता तुझे किसने बताया?

नानक०। यहां के बहुत से रास्तों का हाल कमलिनी ने मुझे बताया था, मैं एक दफे यहां पहिले भी आ चुका हूं।

माया०। कब?

नानक०। जब तेजसिंह को आपने कैद किया था और जब चण्डूल ने आ कर आप लोगों को छकाया था।

माया०। (उन बातों की याद से कांप कर) तब तो तुम्हें मालूम होगा कि वह चण्डूल कौन था?

नानक०। वह कमलिनी थी और मैं उसके साथ था।

माया०। (कुछ सोच कर) हां . . ठीक है.. .. तब तो तुम्हें अच्छा अच्छा तुम मेरे पास आओ, पहिले मैं निश्चय कर लूं कि तुम ईमानदारी से मेरा साथ देने के लिये तैयार हो या यह सब बातें धोखा देने के लिये कह रहे हो, इसके बाद अगर तुम सच्चे निकले तो हम दोनों आदमी

मिल कर बहुत बड़ा काम कर सकेंगे और तुम्हें भी बहुत सी खैर तुम इधर आओ और एकान्त में मेरे साथ चलो।

नानक०। (मायारानी के पास आ कर) और यहां तीसरा कौन है जो हम लोगों की बातें सुनेगा?

माया०। चाहे न हो मगर शक है।

मायारानी नानक को लिये हुए दूसरी तरफ चली गई।

ग्यारहवां बयान

सन्ध्या होने में अभी दो घण्टे से कुछ ज्यादे देर थी जब कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और भैरोसिंह कमरे से बाहर निकल कर बाग के उस हिस्से में घूमने लगे जो तरह तरह के खुशनुमा पेड़ फूल पत्तों गमलों और फैली हुई लताओं से सुन्दर और सुहावना मालूम पड़ता था क्योंकि इन तीनों को इन्द्रानी के मुंह से निकले हुए ये शब्द बखूबी याद थे कि— "मगर आप लोग किसी मकान के अन्दर जाने का उद्योग न करें।"

भैरो०। (घूमते हुए एक फूल तोड़ कर) यहां एक तो बागीचे के लिये बहुत कम जमीन छोड़ी गई है दूसरे जो कुछ जमीन छोड़ी गई है उससे भी काम खूबी और खूबसूरती के साथ नहीं लिया गया है, जहां पर जिस ढंग के पेड़ होने चाहिये वैसे नहीं लगाये गये हैं।

आनन्द०। बाग के शौकीन लोग प्रायः बेला चमेली जूही और गुलाब इत्यादि खुशबूदार फूलों के पेड़ क्यारियों के बीच में लगाते हैं।

इन्द्रजीत०। ऐसा न होना चाहिये, क्यारियों के अन्दर केवल पहाड़ी गुल बूटों के ही लगाने में मजा है, जहां बेला मोतिया आदि देशी खुशबूदार फूलों को रविशों के दोनों तरफ लगाना

चाहिये जिसमे सैर करने वाला घूमता फिरता जब चाहे एक दो फूल तोड़ के सूंघ सके।

आनन्द०। वेशक, ऐसा न होना चाहिये कि खुशबूदार फूल तोडने की लालच में कहीं सैर करने वाला बुद्धि विसर्जन कर के क्यारी के बीच मे पैर रक्खे और जूते समेत फिल्ली तक जमीन के अन्दर जा रहे, क्योंकि सिचाव का पानी क्यारियों में जमा हो कर कीचड करता है, इसलिये क्यारियों के बीच में उन्हीं पेड़ पौधों का होना आवश्यक है जिन्हें केवल देखने ही से तृप्ति हो जाय और जिनमें ज्यादे सर्दी और पानी के वर्दाश्त करने की ताकत हो।

भैरो०। मेरी भी यही राय है, मगर साथ ही इसके यह भी कहूंगा कि गुलाब के पेड रविशों के दोनों तरफ न लगाने चाहियें जिसमें कांटों की वदौलत सैर करने वालों के (यदि वह भूल से कुछ किनारे की तरफ जा रहे तो) कपडों की गात हो जाय। उसके लिये क्यारी अलग ही होनी चाहिये जिसकी जमीन बहुत नम न हो।

इन्द्रजीत०। ठीक है, इसी तरह चमेली के पेडों की कतार भी ऐसी जगह लगाना चाहिये जहां टट्टी बना कर आड कर देने का इरादा हो।

भैरो०। आड का काम तो मेंहदी की टट्टी से भी लिया जाता है।

इन्द्रजीत०। हां लिया जाता है मगर जमीन के उस हिस्से में जो बीच वाली या खास जलसे वाली इमारत से कुछ दूर हो, क्योंकि मेंहदी जब फूलती है तो अपने सिवाय और फूलों की खुशबू का आनन्द लेने की इजाजत नहीं देती।

आनन्द०। जैसे कि अब भैरोसिंह को हम लोग अपने साथ

चलने की इजाजत न देंगे।

भैरो०। (चौंक कर) हैं! इसका क्या मतलब !!

आनन्द०। इसका मतलब यही है कि अब आप थोड़ी देर के लिये हम दोनों भाइयों का पिन्ड छोड़िये और कुछ दूर हट कर उधर की रविशों पर पैर थकाइये।

भैरो०। (कुछ चिढ़ कर) क्या अब मुझ ऐसे साथी और ऐयार से भी बात छिपाने की नौबत आ गई!

आनन्द०। (इन्द्रजीत का इशारा पा कर) इसलिये कि बात छिपाने का कायदा तुम्हारी तरफ से जारी हो गया।

भैरो०। सो कैसे?

आनन्द०। अपने दिल से पूछो!

भैरो०। क्या मैं वास्तव में भैरोसिंह नहीं हूं?

आनन्द०। तुम्हारे भैरोसिंह होने में कोई शक नहीं है बल्कि तुम्हारी बातों की सचाई में शक है।

भैरो०। यह शक कब से हुआ?

आनन्द०। जब से तुमने स्वयम् कहा कि राजा गोपालसिंह ने तुम्हें इस तिलिस्म में पहुंचाती समय ताकीद कर दी थी कि सब काम कमलिनी की आज्ञानुसार करना यहां तक कि यदि कमलिनी तुम्हें सामना हो जाने पर भी कुमार से मिलने के लिये मना करे तो तुम कदापि न मिलना।*

भैरो०। (कुछ सोच कर) हां ठीक है मगर आपको यह कैसे निश्चय हुआ कि मैंने राजा गोपालसिंह की बात मान ली?

इन्द्र०। यह इसी से मालूम हो गया कि तुमने अपने बटुए का जिक्र करती समय तिलिस्मी खञ्जर का जिक्र छोड़ दिया।

भैरो०। (कुछ सोच कर और शर्मा कर) बेशक यह मुझसे

* हिस्सा सत्रह बयान चौदह देखिये।

भूल हुई।

आनन्द०। कि उस तिलिस्मी खञ्जर के लिये भी कोई अनूठा क़िस्सा गढ़ कर हम लोगों को सुना न दिया।

भैरो०। (और भी शर्मा कर) नहीं ऐसा नहीं है, उस समय मैं इतना कहना भूल गया कि ऐयारी के बटुए के साथ साथ वह तिलिस्मी खञ्जर मुझे उस नकाबपोश या पीले मकरन्द से नहीं मिला, उन्होंने कसम खा कर कहा कि तुम्हारा खञ्जर हममें से किसी के पास नहीं है।

आनन्द०। हां—और तुमने मान लिया !

भैरो०। (हिचकता हुआ) इस जरा सी भूल के हो जाने पर ऐसा न होना चाहिये कि आप लोग अपना विश्वास मुझ पर से उठा लें।

इन्द्रजीत०। नहीं नहीं, इससे हमलोगों का खयाल ऐसा नहीं हो सकता कि तुम भैरोसिंह नहीं हो या अगर हो भी तो हमारे दुश्मनों के साथी बन कर हमें नुक्सान पहुंचाया चाहते हो ? कदापि नहीं ! हम लोग अब भी तुम्हारा उतना ही भरोसा रखते हैं जितना रखते थे मगर कुछ देर के लिये जिस तरह तुम असली बातों को छिपाते हो उसी तरह हम भी छिपावेंगे।

अभी भैरोसिंह इस बात का जवाब सोच ही रहे थे कि सामने से एक औरत आती हुई दिखाई पड़ी। तीनों का ध्यान उसी तरफ चला गया। कुछ पास आने और ध्यान देने पर दोनों कुमारों ने उसे पहिचान लिया कि इसे हम इस बाग में आने के पहिले इन्द्रानी और आनन्दी के साथ नहर के किनारे देख चुके हैं।

आनन्द०। यह भी उन्हीं औरतों में से है जिन्हें हमलोग इन्द्रानी और आनन्दी के साथ पहिले बाग में नहर के किनारे देख चुके हैं।

इन्द्रजीत०। बेशक, मगर सब की सब एक ही खानदान की मालूम पडती हैं यद्यपि उम्र में इन सभों के बहुत फर्क नहीं है।

आनन्द०। देखा चाहिये यह क्या सन्देसा लाती है॥

इतने मे वह औरत कुमार के पास आ पहुची और हाथ जोड़ कर दोनो कुमारों की तरफ देखती हुई बोली, "इन्द्रानी और आनन्दी ने हाथ जोड़ कर आप दोनों स इस बात की माफी मागी है कि अब वे दोनो आप लोगो के सामने हाजिर नही हो सकती।"

इन्द्रजीत०। (ताज्जुब से) सो क्यो ?

औरत०। उन्हे इस बात का बहुत रज है कि वे आप लोगा की खातिरदारी अच्छी तरह से न कर सकी और उनके गुरु महाराज ने उन्हे आप लोगो का सामना करने से रोक दिया।

इन्द्रजीत०। आखिर इसका कोई सबब भी है ?

औरत०। इसके सिवाय तो और कोई सबब नही जान पडता कि उन दोनो की शादी आप दोनो भाइयो के साथ होने वाली है।

इन्द्रजीत०। (ताज्जुब के साथ) मुझसे और आनन्द से॥

औरत०। जी हा।

इन्द्रजीत०। हमारे या हमारे बुजुर्गों की इच्छा के बिना ही ?

औरत०। जी हा।

इन्द्रजीत०। चाहे हम लोग राजी हो या न हो ?

औरत०। जी हा।

इन्द्रजीत०। तब तो यह खासी जबर्दस्ती ठहरी॥

औरत०। जी हा।

इन्द्रजीत०। क्या उनके गुरू महाराज मे इतनी सामर्थ है कि अपनी इच्छानुसार हम लोगो के साथ बर्ताव करे ?

औरत० । जी हां ।

इन्द्रजीत० । (झुंझला कर) कभी नहीं, कदापि नहीं !

आनन्द० । ऐसा हो नहीं सकता ! (औरत से, जो जाने के लिये अपना मुंह फेर चुकी थी) क्या तुम जाती हो ?

औरत० । जी हां ।

इन्द्रजीत० । बस इतना ही कहने के लिये तुम आई थी ?

औरत० । जी हां ।

इन्द्र० । क्या भेजने वालों ने तुम्हें कह दिया था कि 'जी हां' के सिवाय और कुछ मत बोलना ?

औरत० । जी हां ।

इन्द्रजीतसिंह की झुंझलाहट देख कर उस औरत को भी हंसी आ गई और वह मुसकुराती हुई जिधर से आई थी उधर ही चली गई तथा थोड़ी दूर जाकर नजरों से गायब हो गई। तब भैरोसिंह ने दिल्लगी के तौर पर कुमार से कहा, "आप लोगों की खुशकिस्मती का भी कोई ठिकाना है ! रम्भा और उर्वशी के समान औरत जबर्दस्ती आप लोगों के गले मढ़ी जाती है, तिस पर मजा यह है कि आप लोग नखरा करते जाते हैं ! ऐसा ही है तो मुझे कहिये मैं आपकी सूरत बन कर व्याह कर लूं !!

इन्द्रजीत० । तब कमला किसके नाम की हांडी चढ़ावेगी ?

भैरो० । अजी कमला से क्या जाने कब मुलाकात हो और क्या हो ? यह तो परोसी हुई थाली ठहरी !!

इन्द्रजीत० । ठीक है मगर भैरोसिंह ! जहां तक मेरा खयाल है मैं समझता हूं कि तुम्हें इस व्याह शादी वाले मामले की कुछ न कुछ खबर जरूर है ।

भैरो० । अगर खबर हो भी तो अब मैं कुछ कहने का साहस नहीं कर सकता ।

आनन्द०। सो क्यों ?

भैरो०। इसलिये कि आप लोग मुझे झूठा समझ ही चुके हैं।

इन्द्र०। सो तो जरूर है।

भैरो०। (चिढ कर) अगर ऐसा ही खयाल है तो अब मैं आप लोगों के साथ रहना भी मुनासिब नहीं समझता।

इन्द्र०। मेरी भी यही राय है।

भैरो०। अच्छा तो (सलाम करता हुआ) जय माया की!

इन्द्र०। जय माया की।

आनन्द०। जय माया की, मगर यह तो मालूम हो कि आप जायगे कहा ?

भैरो०। इससे आपको कोई मतलब नही।

इन्द्र०। हा साहब, इससे हमलोगों को कोई मतलब नही, आप जाइये और जल्द जाइये!

इसके जवाब में भैरोसिह ने कुछ भी न कहा और वहा से रवाना होकर पूरब तरफ वाली इमारत के नीचे वाली एक कोठडी में घुस गया, इसके बाद मालूम न हुआ कि भैरोसिह क्या हुआ और कहा गया। उसके जाने बाद दोनों कुमार भी धीरे धीरे उसी कोठड़ी मे चले गये मगर वहा भैरोसिह दिखाई न पड़ा और न उस कोठडी मे से किसी तरफ जाने का रास्ता ही मालूम हुआ।

इन्द्रजीत०। (आनन्द से) क्यों! हमलोगों का खयाल ठीक निकला न ?

आनन्द०। निःसन्देह वह झूठा था, अगर ऐसा न होता तो जानकारों की तरह इस कोठडी में घुस कर गायब न हो जाता।

इन्द्र०। बात तो यह है कि तिलिस्म के इस हिस्से में बहुत समझ बूझ कर काम करना चाहिये जहा की आबोहवा अपने

को भी पराया कर देती है।

आनन्द०। मामला तो ऐसा ही नजर आता है। मेरी राय में तो अब यहा चुपचाप बैठना भी व्यर्थ जान पड़ता है। यहा से किसी तरफ जाने का उद्योग करना चाहिये।

इन्द्र०। अब आज की रात तो सब्र करके बिता दो, कल सवेरे कुछ न कुछ बन्दोबस्त जरूर करेंगे।

इसके बाद दोनों भाई वहा से हटे और टहलते हुए बावली के पास आकर सगमर्मर वाले चबूतरे पर बैठ गये और उसी समय एक आदमी को अपने सामने वाली इमारत के अन्दर से निकल कर अपनी तरफ आते देखा।

यह शख्श वही बुड्ढा दारोगा था जिससे पहले बाग मे मुलाकात हो चुकी थी, जिसने नानक को गिरफ्तार किया था, और जिसके दिये हुए कमन्द के सहारे दोनों कुमार उस दूसरे बाग में उतर कर इन्द्रनी और आनन्दी से मिले थे।

जब वह कुमार के पास आ पहुँचा तो साहब सलामत के बाद कुमारों ने उसे इज्जत के साथ अपने पास बैठाया और यों बातचीत होने लगी —

इन्द्रजीत०। आज पुन आपसे मुलाकात होने की आशा तो न थी!

दारोगा०। बेशक मुझे भी इस बात का गुमान न था परन्तु एक आवश्यक कार्य के कारण मुझे आप लोगो की सेवा मे उपस्थित होना पडा। क्षमा कीजियेगा, जिस समय आप कमन्द के सहारे उस बाग में उतरे थे उस समय मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि उन औरतों में जिन्हे देख कर आप उस बाग में गये थे दो औरतें ऐसी हैं जिन्हे और बातों के अतिरिक्त यहा की रानी कहलाने की प्रतिष्ठा भी प्राप्त है। जिन्दगी का पि०

हिस्सा इस बुढौती के लिबास मे काट रहा हूं इसलिये आंखों की रोशनी और ताकत ने भी एक तौर पर जवाब ही दे दिया है, इसलिये मैं उन औरतों को पहिचान भी न सका।

इन्द्र०। खैर तो यह बात ही क्या थी जिसके लिये आप माफी माग रहे हैं और इससे मेरा हर्ज भी क्या हुआ ? आप उस काम का जिक्र कीजिये जिसके लिये आपको यहां आने की तकलीफ उठानी पड़ी।

दारोगा०। इस समय वे ही दोनों अर्थात् इन्द्रानी और आनन्दी मेरे यहा आने का सबब हुई है। मैं आपके पास इस बात की इत्तला करने के लिये भेजा गया हू कि परसों उन दोनों औरतों की शादी आप दोनों भाइयों के साथ होने वाली है, आशा है कि आप दोनों भाई इसे स्वीकार करेंगे।

इन्द्र०। मैं अफसोस के साथ यह जवाब देने पर मजबूर हू कि हम लोग इस शादी को मञ्जूर नहीं कर सकते और इसके कोई सबब है।

दारोगा०। ठीक है मुझे भी पहिले पहिल यही जवाब सुनने की आशा थी मगर मैं आपको अपनी तरफ से भी नेकनीयती के साथ यह राय दूंगा कि आप इस शादी से इन्कार न करें और मुझे उन सब बातों के कहने का मौका न दें जिन्हें लाचारी की हालत से निवेदन कर के समझाना पड़ेगा कि आप इस शादी से इन्कार नहीं कर सकते, बाकी रही यह बात कि इन्कार करने की कई सबब है, सो यद्यपि मै उन कारणों के जानने का दावा तो नहीं कर सकता मगर इतना तो जरूर कह सकता हू कि सब से बड़ा सबब जो है वह केवल मुझी का नहीं बल्कि सभों को यहा तक कि इन्द्रानी और आनन्दी को भी मालूम है मैं आपको भरोसा दिलाता हू कि किशोरी और कामिनी

को भी इस शादी से किसी तरह का दुःख न होगा क्योंकि उन्हे इस बात की पूरी पूरी खबर है कि यह शादी ही आपकी और उनकी मुलाकात का सबब होगी, बिना इस शादी के हुए वे आपको और आप उन्हे देख भी नही सकते।

इन्द्र०। मै आपकी बातों पर विश्वास करने की कोशिश करूंगा परन्तु मै सब बातों को किनारे रख कर आपसे पूछता हू कि यह शादी किस रीति के अनुसार हो रही है? व्याह के आठ प्रकार शास्त्र ने कहे हैं, यह उनमे से कौन सा प्रकार है और ऐसी शादी का नतीजा क्या निकलेगा? यद्यपि इसमे मेरी कुछ हानि नहीं हो सकती परन्तु मेरी अनिच्छा के कारण जो कुछ हानि हो सकती है इसका विचार लडकी वालो के सिर है।

दारोगा०। ठीक है, मगर जहा तक मैं सोचता हू इन सब बातो पर अच्छी तरह विचार किया जा चुका है और ज्योतिषी ने भी निश्चय दिला दिया है कि इस शादी का नतीजा दोनो तरफ बहुत अच्छा निकलेगा। यद्यपि आप इस समय प्रसन्न नहीं होते परन्तु अन्त मे बहुत ही प्रसन्न होगे। अच्छा इस समय तो मै जाता हू क्योंकि मै केवल इत्तला करने के लिये आया था वादाविवाद करने के लिये नहीं, परन्तु इसका जवाब पाने के लिये कल प्रात काल अवश्य आऊगा।

इतना कह कर दारोगा उठ खडा हुआ और जवाब का इन्तजार कुछ भी न करके जिधर से आया था उधर ही चला गया। इसके जाने बाद कुछ देर तक तो दोनो भाई उसी जगह बातचीत करते रहे और इसके बाद जरूरी कामो से छुट्टी पा और इसी बावली पर सन्ध्या वन्दन कर पुनः उस कमरे मे चले आये जिसमे दोपहर बिता चुके थे। इस समय सन्ध्या हो चुकी थी और कुमारो को यह देख कर ताज्जुब हो रहा था कि इस कमरे

में रोशनी हो चुकी थी मगर किसी गैर की मूरत दिखाई नहीं देती थी।

कुमार को उस कमरे मे गये बहुत देर न हुई होगी कि इन्द्रानी और आनन्दी वहां आ पहुंची जिन्हे देख कुमार बहुत खुश हुए और इन्द्रजीतसिंह ने इन्द्रानी से कहा, "तुमने तो कहला भेजा था कि अब मैं मुलाकात नहीं कर सकती!"

इन्द्रानी०। बेशक ऐसा ही है मगर मैं छिप कर आपसे कुछ कहने के लिये आई हू।

इन्द्रजीत०। वह कौन सी बात है जिसने तुम्हे छिप कर यहा आने के लिए मजबूर किया और वह कौन सा कसूर है जिसने मुझे तुम्हारा मेहमान

इन्द्रानी०। (बात काट कर और मुस्कुरा कर) मै आपकी सब बातो का जवाब दूगी, आप मेहरबानी करके ज़रा मेरे साथ इस दूसरे कमरे में आइये।

इन्द्रजीत०। क्या मेरी चीठी का जवाब भी लाई हो?

इन्द्रानी०। जी हा, जवाब की चीठी भी इसी समय आपको दूगी। (इन्द्रजीतसिंह और आनन्द को उठते देख कर आनन्द से) आप इसी जगह ठहरिये, (आनन्दी से) तू भी इसी जगह ठहर, मैं अभी आती हू।

इन्द्रजीतसिंह यद्यपि इन्द्रानी के साथ शादी करने से इन्कार करते थे मगर इन्द्रानी (और आनन्दी) की खूबसरती बुद्धिमानी सभ्यता और उनकी मीठी बातें इस योग्य न थी कि कुमार के दिल पर गहरा असर न करती और सामना होने पर उसे अपनी तरफ न खैंचती। इन्द्रजीतसिंह इन्द्रानी की बात से इन्कार न कर सके और खुशी खुशी उसके साथ दूसरे कमरे मे चले गये।

हम नहीं कह सकते कि इन्द्रजीतसिंह और इन्द्रानी में दो घण्टे तक क्या बात हुई और इधर आनन्दसिंह और आनन्दी में कैसी ठहरी, मगर इतना जरूर कहेंगे कि जब इन्द्रजीतसिंह और इन्द्रानी दोनों आदमी लौट कर कमरे में आये तो बहुत खुश थे और इसी तरह आनन्दी और आनन्दसिंह के चेहरे पर भी खुशी की निशानी पाई जाती थी। इन्द्रानी और आनन्दी के चले जाने बाद कई औरतें खाने पीने का सामान ले कर हाजिर हुई और दोनों भाई खुशी खुशी भोजन कर के सो रहे। सुबह को जब वह दारोगा अपनी बातों का जवाब लेने के लिये आया तो दोनों कुमार उससे खुशी खुशी मिले और जवाब में बोले कि हम दोनों भाइयों को इन्द्रानी और आनन्दी के साथ ब्याह करना स्वीकार है।

बारहवाँ बयान

कुअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने इन्द्रानी और आनन्दी से ब्याह करना स्वीकार कर लिया और इस सबब से उस छोटे से बाग में ब्याह की तैयारी दिखाई देने लगी। इन दोनों कुमारों के ब्याह का बयान धूमधाम से लिखने के लिये हमारे पास कोई मसाला नहीं है। इस शादी में न तो बारात है न बाराती न गाना है न बजाना, न धूम है न धड़क्का, न महफिल है न हिफाजत, अगर कुछ बयान किया भी जाय तो किसका? हां इसमें कोई शक नहीं कि ब्याह कराने वाले पण्डित अविद्वान और लालची न थे तथा शास्त्र की रीति से ब्याह कराने में किसी तरह की त्रुटि भी दिखाई नहीं देती थी। बावली के ऊपर संग-मर्मर वाला चबूतरा ब्याह का मड़वा बनाया गया था और उसी पर दोनों शादियां एक साथ ही हुई थीं, अस्तु ये बातें भी इस

योग्य नहीं कि जिनके बयान में तूल दिया जाय और दिलचस्प मालूम हो, हां इस शादी के सम्बन्ध में कुछ बातें ऐसी जरूर हुईं जो ताज्जुब और अफसोस की थीं और उनका बयान इस जगह कर देना हम आवश्यक समझते हैं।

इन्द्रानी के कहे मुताबिक कुंअर इन्द्रजीतसिंह को आशा थी कि राजा गोपालसिंह से मुलाकात होगी मगर ऐसा न हुआ। ब्याह के समय पांच सात औरतों के (जिन्हें कुमार देख चुके थे मगर पहिचानते न थे) अतिरिक्त केवल चार मर्द वहां मौजूद थे। एक वही बुड्ढा दारोगा, दूसरे ब्याह कराने वाले पण्डितजी, तीसरे एक आदमी और जो पूजा इत्यादि की सामग्री इधर से उधर समयानुकूल रखता था और चौथा आदमी वह था जिसने कन्यादान (दोनों) किया था। चाहे वह इन्द्रानी और आनन्दी का बाप हो या गुरु हो, या चचा इत्यादि जो कोई भी हो, मगर उसकी सूरत देख कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। यद्यपि उसकी उम्र पचास से ज्यादे न थी मगर वह साठ वर्ष से भी ज्यादे उम्र का बुड्ढा मालूम होता था। उसके खूबसूरत चेहरे पर जर्दी छाई थी, बदन में हड्डी ही हड्डी दिखाई देती थी और मालूम होता था कि इसकी उम्र का सबसे बड़ा हिस्सा रञ्ज गम और मुसीबत ही में बीत चुका है। इसमें कोई शक नहीं कि वह किसी जमाने में खूबसूरत दिलेर और बहादुर होगा मगर अब तो अपनी सूरत शक्ल से देखने वालों के दिल में दुःख ही पैदा करता था। दोनों कुमार ताज्जुब की निगाहों से उसे देखने लगे और उसका असल हाल जानने की इच्छा उन्हें बेचैन कर रही थी।

या तोहफे के तौर पर) दी और इसके बाद सभों की इच्छानुसार दोनों भाई उठ कर उसी कमरे में चले गये जो एक तौर पर उनके बैठने या रहने का स्थान हो चुका था। इस समय रात घण्टे भर से कुछ कम बाकी थी।

दोनों कुमारों को उस कमरे में बैठे पहर भर से ज्यादे बीत गया मगर किसी ने आ कर खबर न ली कि वे दोनों क्या कर रहे हैं और उन्हें किसी चीज की जरूरत है या नहीं। आखिर राह देखते देखते लाचार हो कर दोनों कुमार कमरे के बाहर निकले और बाग में चारो तरफ सन्नाटा देख कर उन्हें बड़ा ही ताज्जुब हुआ। इस समय न तो उस बाग में कोई आदमी था और न ब्याह शादी के सामान में से कुछ दिखाई देता था, यहां तक कि उस सगमर्मर के चबूतरे पर भी (जिस पर ब्याह का मड़वा था) हर तरह से सफाई थी और यह नहीं मालूम होता था कि आज रात को इस पर कुछ हुआ था।

बेशक यह बात ताज्जुब की थी बल्कि इससे भी बढ़ कर यह बात ताज्जुब की थी कि दिन भर बीत जाने पर भी किसी ने इनकी खबर न ली। जरूरी कामों से छुट्टी पा कर दोनों कुमारों ने बावली में स्नान ध्यान किया और दो चार फल जो कुछ उस बगीचे में मिल सके खा कर उसी पर सन्तोष किया।

दोनों भाइयों ने तरह तरह के सोच विचार में दिन तो ज्यों त्यों कर के बिता दिया मगर सन्ध्या होते होते जो कुछ वहां पर उन्होंने देखा उसके बर्दाश्त करने की ताकत उन दोनों के कोमल कलेजों में न थी।

सन्ध्या होने में थोड़ी ही देर थी जब उन दोनों ने उस बुड्ढे दारोगा को तेजी के साथ अपनी तरफ आते हुए देखा। उसकी सूरत पर हवाई उड़ रही थी और वह घबड़ाया हुआ सा

मालूम पड़ रहा था। आने के साथ ही उसने कुंअर इन्द्रजीत-सिंह की तरफ देख के कहा, "बड़ा अंधेर हो गया! आज का दिन हम लोगों के लिये प्रलय का दिन था इसी लिये आपकी सेवा में कोई उपस्थित न हो सका!"

इन्द्रजीत०। (घबड़ाहट और ताज्जुब के साथ) क्या हुआ?

दारोगा०। आश्चर्य है कि इसी बाग में दो दो खून हो गये और आपको कुछ मालूम न हुआ?

इन्द्रजीत०। (चौंक कर) कहा और कौन मारा गया?

दारोगा०। (हाथ का इशारा कर के) उस पेड़ के नीचे चल कर देखने से आपको मालूम होगा कि एक दुष्ट ने इन्द्रानी और आनन्दी को इस दुनिया से उठा दिया! लेकिन बड़ी कारीगरी से मैंने खुनी को गिरफ्तार कर लिया है।

यह एक ऐसी बात थी जिसने इन्द्रजीतसिंह और आनन्द-सिंह के होश उड़ा दिये। दोनों घबड़ाये हुए उस बुड्ढे दारोगा के साथ पूरब तरफ चले गये और एक पेड़ के नीचे इन्द्रानी और आनन्दी की लाश देखी। उनके बदन में कपड़े और गहने सब वही थे जो आज रात को व्याह के समय कुमार ने देखे थे, और पास ही एक पेड़ के साथ बंधा हुआ नानक भी उसी जगह मौजूद था। उन दोनों लाशों को देखने के साथ ही इन्द्रजीतसिंह ने नानक से पूछा—"क्या इन दोनों को तूने मारा है?"

इसके जवाब में नानक ने कहा, "हां, इन दोनों को मैं ही ने मारा है और इनाम पाने का काम किया है, ये दोनों बड़ी ही शैतान थीं!!"

॥ अठारहवां हिस्सा समाप्त ॥